पश्चिमी यूरोप

द्वितीय भाग

अनुवादक—

श्रीराजवल्लभ सहाय

[illegible]दक—श्रीमुकुन्दीलाल श्रीवास्तव

श्री काशी विद्यापीठ, काशी

द्वितीय भाग

अनुवादक—

श्रीराजवल्लभ सहाय

सम्पादक—श्रीमुकुन्दीलाल श्रीवास्तव

श्री काशी विद्यापीठ, काशी ।

प्रथम संस्करण १५०० | १९८८ | मूल्य २।) रुपया

प्रकाशक—
मन्त्री, श्री काशी विद्यापीठ
बनारस छावनी।

मुद्रक—
माधव विष्णु पराड़कर
ज्ञानमण्डल यन्त्रालय, कबीरचौरा, काशी।

विषय-सूची

अध्याय	विषय	पृष्ठ

३४—राज्यक्रान्तिके पूर्व फ्रांसकी अवस्था १
३५—फ्रांसीसी राज्यक्रान्ति २५
३६—फ्रांसका प्रथम प्रजातन्त्र ४४
३७—नेपोलियन बोनापार्ट ६६
३८—यूरोप और नेपोलियन ८३
३९—वियेनाकी कांग्रेसके बादका यूरोप १०६
४०—इटली और जर्मनीका संघटन १२६
४१—वर्त्तमान यूरोप १६०
४२—यूरोपीय राजनीतिके पिछले दस वर्ष १७५
४३—महासमरके कारण २०६
४४—संसारव्यापी युद्ध २२८
अनुक्रमणिका २८७
४५—महासमरके बादका यूरोप ३१३

मानचित्रोंकी सूची

१. पोलेण्डका बँटवारा ५६
२. संवत् १८७२ के बादका यूरोप १०८
३. संवत् १९७१ के शुरूका यूरोप १५६
४. जर्मन आक्रमणकी चरम सीमा २३०
५. १९१७ ई० के अन्तमें जर्मनी इ० के अधीन मध्य यूरोप ... २५२
६. वर्त्तमान यूरोप (रंगीन) २८३

S.V.A. SARMA

पश्चिमी यूरोप

द्वितीय भाग।

अध्याय ३४

राज्यक्रान्तिके पूर्व फ्रांसकी अवस्था।

'फ्रांसीसी राज्यक्रान्ति' इन दो शब्दोंके श्रवण मात्रसे ही हमलोगोंके स्मृतिपटलपर सूलीका, सूलीपर चढ़ाये गये सैकड़ों मनुष्योंका, बैस्टीलके पतनका और उन पेरिसनिवासियोंका दृश्य अंकित हो जाता है जो हतभाग्य कुलीनोंके सिरोंको बर्छोंकी नोकपर लिये हुए तथा गीत गाते हुए सड़कोंपर फेरा लगाया करते थे। फ्रांसीसी इतिहासकी इस भीषण घटनासे प्रायः सभी लोग परिचित हैं। वास्तवमें बादकी सन्ततिपर इसका इतना गहरा प्रभाव पड़ा है कि हमलोग 'पैशाचिक शासन' को ही फ्रांसीसी राज्यक्रान्ति मान बैठते हैं। किन्तु केवल अशान्ति और रक्तपातसे मानवजातिका काम नहीं चल सकता, अतः यह निश्चित है कि राज्यक्रान्तिसे फ्रांस तथा यूरोपमें कुछ ऐसे महत्वपूर्ण और स्थायी परिवर्तन अवश्य हुए होंगे जिनसे यह, "नवयुग" और प्रोटेस्टेएट विद्रोहकी ही तरह, गत छः सदियोंके तीन महान्

परिवर्तनोंमें परिगणित हुई । बात तो यह है कि पैशाचिक शासन वास्तविक क्रान्तिके बादकी घटना है ।

फ्रांसीसी राज्यक्रान्ति वस्तुतः महान् और स्थायी सुधारकी द्योतक है । इसने कई घृणित एवं कष्टदायक विधानों और रूढ़ियोंका अन्त किया और ऐसी कितनी ही बुराइयोंको दूर किया जिनसे सारा राष्ट्र—राजासे लेकर अदने कृषक तक—तंग आ गया था । अठारहवीं सदीके अन्तमें जब कोई फ्रांसीसी व्यक्ति अपनी देश-दशाके ऊपर सूक्ष्म दृष्टि डालता तो उसे वे अधिकांश संस्थाएँ, जिनके बीचमें उसे जीवन व्यतीत करना पड़ता था, बुद्धि और मनुष्यत्वके प्रतिकूल, बुराइयोंसे परिपूर्ण ही नज़र आती थीं । ये दुराचारपूर्ण संस्थाएँ, जिनको राज्यक्रान्तिने सर्वदाके लिए नष्ट कर दिया, 'प्राचीन प्रणाली' के नामसे परिचित हैं । फ्रांसीसी राज्यक्रान्तिके कारणोंके सम्बन्धमें बड़ी बड़ी पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं, पर उसका वास्तविक कारण सहजहीमें इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है—"प्राचीन पद्धति बुरी थी और बड़ेसे लेकर छोटेतक प्रायः सभी लोगोंके दिलमें यह बात जम गयी थी कि यह पद्धति सदोष है ।" फलतः उन्होंने उस पद्धतिको नष्टकर चिरकालागत अव्यवस्थाके स्थानमें आधुनिक और समुचित व्यवस्था जारी की ।

राज्यक्रान्तिने जिन बुराइयोंका अन्त किया उनमें सबसे बड़ी वह गड़बड़ी थी जो अठारहवीं सदीमें फ्रांस राज्यके सुसंघटित न होने और उसके नागरिकोंके अधिकार समान न होनेके कारण उत्पन्न हुई थी । लगातार कई राजाओंने येन-केन-प्रकारेण, थोड़ा थोड़ा करके, फ्रांसराज्यकी सीमा-वृद्धि की थी । विजय तथा समझौतेसे, वैवाहिक सम्बन्ध द्वारा तथा जागीरोंका नाशकर ह्यू-कैपेटके वंशजोंने उसके उस संकुचित राज्यको, जो

सिर्फ पेरिस तथा आरलियन्सके ही इर्द-गिर्द था, धीरे धीरे यहाँ तक विस्तृत किया कि जब संवत् १८३१ (सन् १७७४) में सोलहवाँ लूई सिंहासनासीन हुआ तो वे सभी प्रदेश उसके शासनके अन्तर्गत थे जो वर्तमान फ्रांसमें सम्मिलित हैं।

लौंगडौक, प्रोवेन्स, ब्रिटनी और नवार जैसे कितने ही प्रदेश, जिनको फ्रांसके राजाओंने अपने शासनाधीन किया, स्वयं एक एक विशाल राज्यके रूपमें थे और प्रत्येकमें अपनी अपनी शासनपद्धति और अपने अपने विधान तथा रूढ़ियाँ प्रचलित थीं। जब ये प्रदेश, भिन्न भिन्न समयोंपर, फ्रांसीसी राजाके अधीन हुए तो उसने इन प्रदेशोंके विधानोंको बदलकर अपने अन्य प्रदेशोंके विधानोंके अनुरूप नहीं बनाया। नवविजित प्रदेशोंके नियमपूर्वक कर अदा कर देने और सरकारी कर्मचारियोंकी प्रतिष्ठा करनेसे ही राजा सन्तुष्ट हो जाता था। कुछ प्रदेशोंने तो अपनी स्थानीय सभा भी कायम रखी और किसी सीमातक अपने राज्यका प्रबन्ध खुद ही करते रहे, फलतः राज्यक्रान्तिके पूर्व फ्रांस राज्यके प्रदेशोंका जो विभाग था वह वर्तमान कालकी तरह, शासन-कार्यकी सुगमताकी दृष्टिसे किया गया विभाग नहीं था बल्कि वास्तविक ऐतिहासिक पार्थक्यका परिचायक था। यद्यपि दक्षिणी फ्रांसके अधिकांशमें रोमन विधान अब भी प्रचलित था, तो भी मध्य भागों तथा पश्चिम और उत्तरमें कोई २८५ प्रकारके भिन्न भिन्न स्थानीय दण्डसंग्रह प्रचलित थे, यहाँतक कि एक नगर-निवासी यदि पड़ोसके किसी नगरमें जाता तो उसे बिलकुल विभिन्न कानूनी प्रथा देख पड़ती थी।

व्यावसायिक दृष्टिसे भी फ्रांस एक राज्य न था। फ्रांसीसी सीमाके भीतर प्रवेश करते समय विदेशी मालपर चुंगी नहीं लगायी जाती थी क्योंकि फ्रांस राज्यके भीतर ही चुंगीकी भिन्न

भिन्न सीमाएँ नियत थीं, यहाँ तक कि पेरिसके निकटस्थ मध्यप्रदेश बाहरके प्रदेशोंसे विदेशी राज्यकी भाँति ही पृथक् थे। यदि बोर्डोका कोई सौदागर अपना माल पेरिस भेजता तो चुंगीकी सीमा पार करते समय ही उसे चुंगी देनी पड़ती थी, इसी प्रकार यदि पेरिसका कोई सौदागर चुंगीकी सीमाके बाहर माल भेजता तो उसे भी वहीं चुंगी देनी पड़ती थी।

सबसे प्राचीन और सबसे असह्य कर अर्थात् लवणकरकी विषमतासे फ्रांसकी अठारहवीं सदीकी विचित्र गड़बड़ीका और भी स्पष्ट पता चलता है। लवण-विक्रयपर सरकारका एकाधिकार था। वह इसे अधिक मूल्यपर बेचकर लवण-कर वसूल कर लेती थी। यदि सर्वत्र एक ही दरसे मूल्य लिया जाता तो इससे कोई विशेष हानि न होती, पर विचित्रता तो यह थी कि किसी एक नगरके निवासियोंसे अपने पड़ोसियोंकी अपेक्षा तीस गुना मूल्य वसूल किया जा सकता था। एक उदाहरणसे यह बात स्पष्ट हो जायगी। डिजनमें नमकके जिस परिमाणके लिए सात फ्रैंक कीमत देनी पड़ती थी, कुछ ही मील पूर्व, फ्रांश-कोम्टेमें प्रवेश करनेपर उसी परिमाणके लिए २५ फ्रैंक (लगभग तेरह रुपये) देने पड़ते थे, उत्तरकी ओर बर्गण्डीमें ५८ फ्रैंक, दक्षिणकी ओर अल्प लवण-कर प्रदेशमें २८ फ्रैंक और उससे भी दक्षिण जेक्समें कुछ भी नहीं देना पड़ता था। भिन्न भिन्न जिलोंकी सीमापर निगरानी करनेमें सरकारको बहुत अधिक व्यय करना पड़ता था क्योंकि अल्प लवणकर वाले प्रदेशोंसे, जहाँ नमक सस्ता मिलता था, अधिक लवण-कर वाले प्रदेशोंमें चोरीसे नमक ले जानेके लिये विशेष प्रलोभन था।

इन दुर्भाग्यजनक स्थानीय भेदोंके अतिरिक्त जातियोंमें भी परस्पर भेदभाव वर्तमान होनेसे असन्तोषकी मात्रा बहुत बढ़ गयी

थी। सभी फ्रांसीसी लोगोंको नागरिकताके समान अधिकार प्राप्त नहीं थे। दो अल्पसंख्यक पर प्रसिद्ध श्रेणियों—कुलीनों और पादरियों—के साथ सरकार जो बर्त्ताव करती थी वह साधारण जनताके प्रति किये गये बर्त्तावसे सर्वथा विभिन्न होता था। गुरुतम करोंमेंसे 'टेल' नामक दुःखदायी कर इनलोगोंको नहीं देना पड़ता था और कोई न कोई बहाना कर ऐसे अन्य करोंके बोझसे भी ये बच जाया करते थे जो अन्य नागरिकोंको वहन करने पड़ते थे। उदाहरणार्थ, इन्हें सैनिक सेवा नहीं करनी पड़ती थी और सड़कोंके बनानेमें भी इन्हें मदद नहीं देनी पड़ती थी।

मध्ययुगीय धर्मसंस्थाकी शक्ति-सम्पन्नताके विषयमें पहलेही कहा जा चुका है। यूरोपके अन्य कैथलिक देशोंकी तरह, फ्रांसमें इसके १३ वीं सदीके अधिकांश अधिकार १८वीं सदीमें भी सुरक्षित थे और अब भी यह कई प्रसिद्ध सार्वजनिक कार्योंका सम्पादन करती थी। शिक्षाका तथा रोगियों और गरीबोंकी सहायताका काम इसीकी देखभालमें था। इसके पास धन भी खूब था और ऐसा अनुमान किया जाता है कि फ्रांसकी सारी भूमिका पञ्चमांश इसीके अधिकारमें था। पादरियोंका अब भी यह दावा था, जैसा कि अष्टम बोनिफेसने पहिले पेश किया था, कि हमारी सम्पत्ति, परमेश्वरको समर्पित होनेके कारण, कर-भारसे मुक्त है। फिर भी उन्होंने समय समयपर अपनी इच्छासे कुछ भेंट देकर राजाकी सहायता करना स्वीकार किया था। धर्मसंस्था अब भी सर्वसाधारणसे धार्मिक कर वसूल करती थी और अपनी प्रचुर सम्पत्तिके कारण परम स्वतन्त्र बनी हुई थी। जो लोग रोमन कैथलिक धर्मके अनुयायी न थे वे नागरिकताके कुछ विशेष अधिकारोंसे वञ्चित कर दिये जाते थे। नाण्टका आज्ञापत्र रद्द हो जानेके

बाद कोई प्रोटेस्टेंट न तो वैध विवाह कर सकता था, न अपनी सन्ततिका जन्म रजिस्टरमें दर्ज करा सकता था और न वैध दानपत्र ही लिख सकता था।

धर्मसंस्थाकी प्रचुर आयका अधिक भाग उच्च पादरी, बिशप, आर्कबिशप और मठाधीश लोगोंके जेबमें जाता था। इन्हें राजा ही नियुक्त करता था और ये लोग प्रायः दरबारी होते थे। इन्हें अपने धार्मिक संस्था-सम्बन्धी कर्त्तव्योंका ज़रा भी ध्यान नहीं था। इन्हें हजारों रुपयेकी आय वाले बड़े बड़े सरदार ही कहना चाहिये। ये लोग तो वर्सेल्जमें बैठे बैठे चैनकी बंसी बजाया करते थे और धर्मसंस्था सम्बन्धी कार्य छोटे पादरियोंके मत्थे पड़ता था जो काम तो बड़ी खूबीके साथ करते थे पर पारिश्रमिक इतना कम दिया जाता था कि उससे भली भाँति अपना निर्वाह भी नहीं कर सकते थे। आगे हम देखेंगे कि मुहल्लेके पुरोहित लोगोंने क्रान्तिके समय अपने सरदारोंका साथ न देकर जनताका ही साथ दिया।

पहले कहा जा चुका है कि धर्माचार्योंकी तरह कुलीन लोगोंका विशेषाधिकार भी मध्ययुगसे ही आरम्भ हुआ। इनके अधिकारोंपर भलीभाँति विचार करनेसे विदित होगा कि ग्यारहवीं तथा बारहवीं शताब्दीकी, जब कि अधिकांश लोग कृषक-दास थे और अपने जमींदारकी भूमिपर रहते थे, बहुत सी बातें अभी ज्योंकी त्यों विद्यमान थीं। यद्यपि कहनेके लिए अठारहवीं सदीके बहुत काल पूर्व ही फ्रांससे कृषक-दासता उठ गयी थी, कृषक लोग स्वतंत्र हो गये थे और अपनी भूमि स्वयं रख सकते या ठेकेपर दे सकते थे, फिर भी पुराने ग्रामोंकी सीमाके अन्तर्गत रहने वालोंसे भिन्न भिन्न प्रकारके चिर प्रचलित करोंको वसूल करनेका जमींदारोंका अधिकार अब भी बना ही हुआ था।

फ्रांसके भिन्न भिन्न भागोंके सरदारोंके विशेषाधिकारों और करोंमें भी बहुत अन्तर था। कृषकोंकी उपजके कुछ अंशपर जमींदार (सरदार) के लिए अपना हक़ जाहिर करना साधारण बात थी, वह कभी कभी उन भेड़ों और मवेशियोंपर भी कर वसूल कर सकता था जो उसके मकानके सामनेसे गुजरती थीं। कभी कभी कोई जमींदार मध्ययुगकी तरह अब भी अपने पास एकाध आटे इत्यादिकी कल, शराबका यंत्र इत्यादि रख लेता था और कृषकोंको उसे इस्तेमाल करनेके लिए बाध्य कर उनसे द्रव्य ऐंठता था। यदि कोई कृषक अपनी निजकी भूमि भी बेचता तो प्रत्येक बिक्रीके मूल्यका पंचमांश पड़ोसका जमींदार उससे वसूल कर लेता था। कुलीनोंके मृगया संबंधी विशेषाधिकार सरदारोंको भी प्राप्त थे। मृगयाके जिन पशुओंको वे लोग अपने विनोदके लिए सुरक्षित रखते थे वे कृषकोंकी फसलको बड़ी क्षति पहुँचाया करते थे पर बिचारे कृषक इन खरहों, हरिणों, और कबूतरों आदिके साथ छेड़छाड़ नहीं कर सकते थे।

ये सब विशेषाधिकार उन अधिकारोंके अवशिष्ट अंश थे जिनका उपभोग इन सरदारोंने जागीरदारोंकी प्रथाके दिनोंमें अपनी रियासतोंमें किया था। चौदहवें लूईने इनको अपने अपने स्थानोंको छोड़ वर्सेल्जमें अपने साथ रहनेके लिए बाध्य किया था और इन लोगोंमें जो वर्सेल्जमें रहनेका खर्च बरदाश्त कर सकते थे वे वर्षके कुछ भागमें वहाँ रहते भी थे। राजाके निजी कर्मचारियोंके और धर्मसंस्था-विभागके सर्वोत्तम पद तथा सेनाके ऊंचे पद इन्हीं लोगोंके लिए सुरक्षित रहते थे।

जो लोग इन दोमेंसे किसी भी श्रेणीके न थे वे तीसरी श्रेणीके समझे जाते थे। इस तीसरी श्रेणीमें ही सर्वसाधारण लोग शामिल थे जिनकी संख्या संवत् १८४६ (सन् १७८९)

में लगभग ढाई करोड़ थी। विशेषाधिकारप्राप्त लोगोंकी संख्या दो लाख सत्तर हजारसे अधिक नहीं थी। तीसरी श्रेणी-के अधिकांश लोग ग्रामोंमें रहकर कृषिकार्य करते थे। कई इतिहासकारोंके वर्णनसे विदित होता है कि उनकी अवस्था बड़ी ही शोचनीय थी। यह सच है कि वे घृणित करप्रथासे बहुत ही तंग आगये थे और जमींदारोंके लगानोंसे चिढ़ उठे थे; कभी कभी उन्हें स्थानीय दुर्भिक्षोंका भी शिकार होना पड़ता था, फिर भी इसमें कोई सन्देह नहीं कि उनकी अवस्था-की बुराइयोंका वर्णन अत्युक्तिपूर्ण है। टामस जेफर्सनने, जिसने संवत् १८४४ (सन् १७८७) में फ्रांसका परिभ्रमण किया था, अपनी यात्राके विवरणमें लिखा है कि ग्राम-निवासी सुखी देख पड़ते थे और उनके खानेके लिए भी काफी खाद्य पदार्थ थे। प्रसिद्ध अंग्रेज यात्री, आर्थर यंगने, जिसने लगभग इसी समय फ्रांस देशका परिभ्रमण किया था, लिखा है कि फ्रांस साधा-रणतया समृद्ध और सन्तुष्ट था, यद्यपि कहीं कहीं दरि-द्रताके कुछ चिन्ह अवश्य दृष्टिगोचर होते थे।

इतिहासलेखकोंने दरिद्रताके इन चिन्होंपर अनुचित जोर दिया है। साधारणतः लोगोंका यही खयाल है कि क्रान्तिका उद्भव उन लोगोंके, जो प्राचीन प्रथाओंको और अधिक बर-दाश्त नहीं कर सकते थे, दुःख और नैराश्यसे ही हुआ। यदि प्राचीन-प्रथा-कालके कृषकोंकी दशाकी तुलना आधुनिक अंग्रेजी या अमेरिकन किसानसे न कर उसी कालके प्रशा, आस्ट्रिया या इटलीके कृषकोंके साथ की जाय तो यह स्पष्ट विदित हो जायगा कि फ्रांसकी कृषकश्रेणी यूरोपके अन्य स्थानोंकी अपेक्षा कहीं अधिक समृद्ध थी। उदाहरणतः प्रशाके कृषक उस समय भी कृषकदास थे। उन्हें अपने जमींदारके लिए प्रति सप्ताह

पूरे तीन दिन काम करना पड़ता था, और उस (जमींदार) की स्वीकृतिके विना न तो वे विवाह कर सकते थे और न अपनी भूमि ही बेच सकते थे। इसके अतिरिक्त, यह देखकर कि चौदहवें लूईके युद्धोंके बादसे क्रान्तिके उद्भवकाल तक फ्रांसकी जनसंख्या एक करोड़ सत्तर लाखसे बढ़कर दो करोड़ पचास लाख हो गयी थी, यही कहना पड़ता है कि सर्वसाधारणकी अवस्था खराब होनेके बदले सुधर रही थी।

यूरोपमें सर्वप्रथम फ्रांसनेही क्यों इस कष्टप्रद जमींदारी प्रथाके अवशिष्ट चिन्होंको दूर करनेका तथा महान् सुधारकी योजना आरम्भ करनेका कार्य आरम्भ किया, इसका वास्तविक कारण यह नहीं था कि राष्ट्र दुःखी तथा अत्याचारपीड़ित था। बात यह थी कि जनता इतनी आज़ाद और समझदार हो गयी थी कि वह पुरानी प्रथाकी बुराइयों और अनीतियोंका अनुभव भलीभाँति कर सकती थी। केवल अत्याचार और कष्टोंसे ही क्रान्तिका उद्भव नहीं होता, इनके साथ साथ घोर और वास्तविक असन्तोषका होना ज़रूरी है। कहना नहीं होगा, फ्रांसमें इस असन्तोषकी मात्रा, जैसा कि आगे स्पष्ट होगा, बहुत अधिक बढ़ गयी थी। अब फ्रांसके कृषक जमींदारोंको शासक और रक्षकके रूपमें नहीं देखते थे, बल्कि उन्हें कानून द्वारा समर्थित डाकू समझते थे, क्योंकि वे उनकी अमूल्य फसलमें हिस्सा माँगते, उनके कर्मचारी नदी पार करते समय कर वसूल करते, कृषकोंको स्वेच्छापूर्वक अपनी उपज नहीं बेचने देते और अपने विनोदके लिए रखे हुए कपोतोंसे उन्हें अपने खेतोंकी रक्षा करनेकी आज्ञा नहीं देते थे।

१८ वीं सदीमें भी फ्रांसमें वैसीही स्वेच्छाचारिता बनी हुई थी जैसी चौदहवें लूईके जमानेमें थी। १६ वें लूई ने निम्नलिखित

शब्दोंमें इसका बहुतही अच्छा चित्र खींचा है–"सारा राजकीय अधिकार एकमात्र मेरे हाथमें है। विना किसीकी निर्भरता या सहयोगके कानून बनानेका अधिकार मुझको ही पूर्णतः प्राप्त है। मैं ही समस्त सार्वजनिक शान्तिका प्रवर्त्तक और उसका सर्वोपरि रक्षक हूँ। मेरी सारी प्रजा मेरे साथ है। प्रजाके अधिकार-तथा लाभ मेरे अधिकारों तथा लाभोंसे अभिन्न हैं और वे पूर्ण रूपसे मेरे ही हाथमें हैं।" सारांश यह कि अब भी राजा, चौदहवें लूईकी तरह, अपनेको ईश्वर-प्रेषित शासक समझता था। वह अपने शासन सम्बन्धी कार्योंके लिए परमेश्वरके अतिरिक्त और किसीके प्रति जिम्मेदार नहीं समझता था। निम्नलिखित विवरणसे राजाके अधिकारोंकी भयावह व्यापकता भलीभाँति स्पष्ट हो जायगी।

पहले तो टेल नामक घृणित कर राजा ही लगाया करता था, जिससे विशेषाधिकारप्राप्त श्रेणियाँ मुक्त थीं। इस करसे जो आय होती थी वह राज्यकी सारी आयका षष्ठांश थी। यह रक़म गुप्त रखी जाती थी और इसके तथा राजाकी अन्यान्य आयोंके व्ययका ब्योरा प्रजाको नहीं बतलाया जाता था। जहाँ आंग्लदेशके राजाको व्ययके निमित्त निश्चित रक़म दी जाती थी वहाँ फ्रांसमें राजाकी निजकी आय और राज्यकी आयमें कुछ भेद ही नहीं माना जाता था। फ्रांसका राजा चाहे जितनी बार रुक्के लिख कर रुपये मँगा सकता था और राज्यके अफसरोंको बिना कोई आपत्ति उपस्थित किये रुपया दे देना पड़ता था। कहा जाता है कि १५ वें लूईने इसी प्रकार केवल एक वर्षमें सात करोड़ डालर व्यय किये थे।

प्रजाके केवल धनपर ही नहीं बल्कि शरीरपर भी राजाका ही अधिकार था। वह जिसको चाहे मनमाने तौरपर आज्ञा

निकाल कर गिरफ्तार और बन्दी कर सकता था । यथानियम विचार किये विना ही लोग अनिश्चित कालके लिए कालकोठरी-में डाल दिये जाते थे और जब तक स्वयं राजाको स्मरण न होता या उनके मित्र उसे स्मरण न दिलाते तबतक उन्हें उसी-में सड़ना पड़ता था। गिरफ्तारीके इन आज्ञापत्रोंको "मुहर-युक्त पत्र" कहते थे। राजा या उसके प्रिय पात्रोंपर जिन लोगों-का कुछ प्रभाव होता था उन लोगोंके लिए किसी व्यक्तिके नाम इस प्रकारका आज्ञापत्र निकलवा लेना बाएँ हाथका खेल था। शत्रुओंका अन्त करनेके लिए तो यह बड़ा ही सुगम और उत्तम उपाय था। इन स्वेच्छाचारपूर्ण आज्ञापत्रोंको देखनेसे ही (इंग्लैण्डके) वृहत् अधिकार-पत्रकी शर्तोंकी महत्ताकी प्रशंसा करनी पड़ती है। इस पत्रके अनुसार कोई भी 'स्वतंत्र व्यक्ति' देशके कानूनके मुताबिक न्यायालयसे दण्डित हुए बिना बन्दी नहीं किया जा सकता। अस्तु, राजाकी आज्ञासे उस समयके कुछ विशेष प्रसिद्ध पुरुष केवल इसी कारण बन्दीखानेमें डाल दिये गये थे कि उनकी पुस्तकें या पुस्तिकाएँ राजा या उसके दरबारियोंकी अप्रसन्नताकी कारण हुई थीं। प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ मिराबोको उसके पिताने, उसको लापर-वाहीसे खर्च करनेसे रोकनेके उद्देश्यसे, इन्हीं आज्ञापत्रोंकी सहायता लेकर कई बार जेलकी हवा खिलवायी थी।

यद्यपि फ्रांसीसी राजाका अधिकार अपरिमित प्रतीत होता था और लिखित शासन-विधान तथा प्रतिनिधि सत्तात्मक व्यवस्थापक सभाका सर्वथा अभाव था तो भी राजाको मनमाने कार्य करनेकी पूर्ण स्वाधीनता भी प्राप्त नहीं थी। दो करोड़ पचास लाख मनुष्योंका शासन स्वयं करनेके लिए न तो उसे फुरसत थी और न इस ओर उसकी प्रवृत्ति ही थी। वह अपनी इच्छासे

तथा अनिवार्य रूपसे अधिकतर कार्यभार मंत्रियों और बहुतसे सरकारी नौकरोंपर डाल देता था। इन लोगोंको उन कानूनों तथा नियमोंका पालन करना पड़ता था जो इनके नियंत्रण तथा नियमनके लिए बनाये गये थे।

राजपरिषद्के बाद, राजकीय संस्थाओंमें 'पार्लमेंट' नामक उच्च न्यायालयोंका स्थान सर्वप्रथम था। नामके अतिरिक्त और किसी बातमें अंग्रेजी पार्लमेंटके साथ इसकी समता न थी। ये फ्रांसीसी पार्लमेंट सभाएँ (जिनमें पेरिसकी पार्लमेंट सर्व-प्रसिद्ध थी, इसके अतिरिक्त और और प्रान्तोंमें १२ सभाएँ और थीं) अभियोगोंका विचारही नहीं करती थीं, बल्कि इनका यह भी दावा था (जो सर्वथा न्याय्य था) कि जब राजा कोई नया विधान बनानेका निश्चय करे तो इसकी सूचना उच्च न्याया-लयोंको भी मिलनी चाहिए जिसमें वह विधान रजिस्टरोंमें दर्ज कर लिया जाय, अन्यथा जिन कानूनोंकी रक्षाका दायित्व न्यायालयोंपर है, उनके ठीक ठीक जाननेका और कोई उपाय नहीं रह जाता। यद्यपि ये पार्लमेंट सभाएँ इस बातसे सहमत थीं कि कानून बनानेका अधिकार राजाको ही प्राप्त है, फिर भी जिस कानूनको स्वीकार करना वे ठीक नहीं समझती थीं उसको पुस्तकमें दर्ज न कर उसके सम्बन्धमें राजाके पास विरोधपत्र भेजती थीं। वे इस बातपर जोर देती थीं कि मन्त्रियोंने राजाके विश्वाससे अनुचित लाभ उठाया है। वे अपने विरोध-पत्रोंको पर्चेके रूपमें छपवाकर एक एक आने या दो दो आनेपर बेचनेका भी प्रबन्ध करती थीं। इसका अभिप्राय यही था कि जिसमें जनता यह भलीभांति समझ ले कि पार्लमेंटोंने राजमंत्रियोंके अत्याचारोंसे उसे बचानेका प्रयत्न किया है।

राजाके पास विरोधपत्र पहुँचनेपर उसके लिए केवल दो मार्ग रह जाते थे। पहली हालतमें वह इस अप्रिय आज्ञापत्रको रद्द कर देता या इसमें कुछ परिवर्तन कर न्यायालयके अनुकूल बना देता था। दूसरी हालतमें वह पार्लमेंटको अपने सामने आमंत्रित कर विधानको पुस्तकमें दर्ज करनेके लिए स्वयं आज्ञा देता था। तब तो पार्लमेंटको लाचार होकर अनिच्छापूर्वक उसकी आज्ञाका पालन करना ही पड़ता था। राज्यक्रान्तिके निकट आनेपर यह आग्रह किया जाने लगा कि पार्लमेंटकी इच्छाके प्रतिकूल दर्ज की गयी आज्ञाएँ मान्य नहीं हो सकतीं।

विक्रमकी अठारहवीं शताब्दीके अन्तमें पार्लमेंटों और मन्त्रियोंके बीच प्रायः बखेड़े उठा करते थे। इन्हीं बखेड़ोंने क्रान्तिका मार्ग और भी साफ कर दिया; पहले तो इससे मुख्य मुख्य प्रश्नोंपर जनताका ध्यान आकर्षित होने लगा क्योंकि उस समय न तो समाचारपत्र ही थे और न पार्लमेंट या कांग्रेसके वादविवाद ही थे जो जनताको सरकारकी नीतिका परिचय दिलाते। दूसरे, पार्लमेंटें राजा तथा उसके मन्त्रियोंके मन्तव्यों-की केवल खुल्लमखुल्ला समालोचना ही नहीं करती थीं बल्कि उन्होंने जनताके मनमें यह बात भी बैठा दी कि राजा स्वच्छन्द-तापूर्वक राज्यके मौलिक विधानोंको नहीं बदल सकता। इससे उनका यह अभिप्राय था कि राज्यकी एक अलिखित शासन-विधि है जिसकी रक्षाकी निश्चित जिम्मेदारी उनके ऊपर है और जिसके द्वारा राजाकी शक्ति भी नियंत्रित है। इस प्रकार उन्होंने उस शासनचक्रके प्रति, जो गुप्त रूपसे चलाया जाता था और जिसके कारण जनता राजाके विश्वासपात्र कर्मचारि-योंकी इच्छापर छोड़ दी जाती थी, जनताके वर्द्धमान असन्तो-षको और भी बढ़ा दिया।

किन्तु यह समझना भी भूल है कि प्राचीन प्रणालीके एक-तंत्र शासनकालमें राजाके ऊपर लोकमतका कुछ दबाव न था। सोलहवें लूईके एक मंत्रीके शब्दोंमें, "यह एक गुप्त शक्ति है जो कोष, रक्षकों या सेनाके बिना ही पेरिस और न्यायालयोंपर, यहाँ तक कि राज-प्रासादपर भी, शासन करती है।" उन्नीसवीं सदीका पूर्वार्द्ध स्पष्ट कथन और समाज एवं शासनकी कुरीतियोंकी तीव्र आलोचनाका समय था। सुधारक लोग, जिनमें कई राजमंत्री भी शामिल थे, उस समयकी अनेक बुराइयोंको, और सरकारकी दुराचारपूर्ण नीतिकी, जो उस समयके लोगोंको धीरे धीरे वैसी ही बुरी प्रतीत होने लगी थी जैसी इस समय हम लोगोंको होती है, चिल्ला चिल्लाकर स्पष्ट शब्दोंमें आलोचना कर रहे थे।

यद्यपि उस समय सार्वजनिक प्रश्नोंपर प्रकाश डालनेके लिए दैनिक समाचार-पत्र न थे, फिर भी आवश्यकताके समय अनेकानेक पर्चे लिखकर बँटवा दिये जाते थे। ये पर्चे आज-कलकी सम्पादकीय टिप्पणियोंका ही काम देते थे। कभी कभी ये पर्चे तथा पुस्तकें सरकार, धर्माचार्यों तथा कैथलिक मतपर स्पष्ट रूपसे घृणित शब्दोंमें आक्षेप करती थीं जिससे राजा, धर्माचार्य लोगों, तथा न्यायालयोंने उनका प्रचार रोक देना आवश्यक समझा। पेरिसकी पार्लमेंट कभी कभी आपत्ति-जनक लेखोंको मामूली जल्लादोंसे जलवा देती थी। कई प्रसिद्ध लेखक अपने विचारोंको अत्यधिक स्वच्छन्दतापूर्वक व्यक्त करनेके कारण जेलमें डाल दिये गये और कुछ पुस्तकविक्रेता तथा प्रकाशक देशनिर्वासित कर दिये गये। जो विशेष समझदार थे उन्हें भाषण-स्वातंत्र्य दबानेका यह प्रयत्न अनुचित जँचा। धर्मसंस्था तथा राजाके शासनकी दुर्बलताओं पर स्वतंत्र रूपसे विचार करनेकी प्रवृत्ति रुकनेके बदले बराबर बढ़ती ही गयी।

अठारहवीं सदीका सर्वप्रधान सुधारक वालटेयर था। १४ वें लूईकी मृत्युके २१ वर्ष पूर्व इसका जन्म हुआ था पर १६ वें लूईके सिंहासनारोहणके समयतक वह जीवित ही था। मार्लेने इसके सम्बन्धमें लिखा है—"जब मनुष्योंके मस्तिष्कमें ऐतिहासिक सामंजस्यका पूर्ण विकास होगा तो उन्हें मालूम हो जायगा कि यूरोपकी प्रगतिके इतिहासमें जिस तरह साहित्यका पुनरुज्जीवन या 'सुधार' विख्यात है उसी तरह वालटेयरका नाम भी होना चाहिये। इस असाधारण पुरुषका अस्तित्व, आचरण और जीवन ही एक महत्वपूर्ण नवयुगका द्योतक कहा जा सकता है।" वालटेयरकी जीवनी और ख्यातिका रहस्य मालूम हो जानेसे ही क्रान्तिके पूर्वकी फ्रांसकी स्थितिका ज्ञान हो जायगा। तर्क-बुद्धिको बढ़ाना और लोगोंमें उसे फैलाना ही उसका उद्देश्य था। उस समयकी अधिकांश संस्थाएँ तर्कबुद्धिके बदले परम्परागत प्रथाओंपर अवलंबित होनेके कारण साधारण बुद्धिके प्रतिकूल थीं। तर्क और बुद्धिका स्पर्श होते ही इन संस्थाओंकी अवस्था डाँवाडोल होने लगी।

जिस अतीत कालके फलस्वरूप फ्रांसकी अव्यवस्थित अवस्था और उसको धर्मसंस्थाका जन्म हुआ था उसके प्रति वालटेयरके हृदयमें कोई श्रद्धा नहीं थी। वह अपनी विचक्षण बुद्धिसे वर्तमान व्यवस्थाकी बुराइयाँ निकाल निकाल कर, अनुपम चतुरता और साहित्यिक योग्यताके साथ, अपने उत्सुक पाठकोंके सम्मुख रखा करता था। वह प्रायः प्रत्येक विषयमें दिलचस्पी लेता था। उसने इतिहास, नाटक, दर्शन, भ्रमण, महाकाव्य तथा अपने बहुसंख्यक मित्रोंके नाम अनेकानेक पत्र लिखे। पेट्रार्क तथा इरैज़मसकी तरह वह भी एक प्रकारसे यूरोपका बुद्धि-निर्णायक था। उसके लेखोंकी व्याप-

कता इतनी अधिक थी कि सभी श्रेणियोंके लोगोंका—साधारण पाठकोंसे लेकर लापरवाह नाटक दर्शकों तकका—ध्यान उसके द्वारा उठाये गये निर्भीक प्रश्नोंपर अवश्य जाता था।

इधर तो वालटेयर सफलतापूर्वक जनतापर अपनी आलोचनाओंका प्रभाव जमा रहा था, उधर वह फ्रांसकी सबसे अधिक समादृत तथा शक्तिसम्पन्न संस्था—रोमन कैथलिक सम्प्रदाय—पर निर्दयतापूर्वक आक्रमण कर रहा था। वह राजाके स्वेच्छाचारी शासनको विशेष हानिकारक नहीं समझता था। उसके विचारमें धर्मसंस्था ही समाजोन्नतिका मार्ग पूर्णतः रोके हुई थी क्योंकि उसके मतानुसार यह स्वतंत्र बुद्धिके प्रयोगका कट्टर विरोध करनेवाली और सुधारोंकी शत्रु थी। उसे अपने पत्रोंके अन्तमें "इस नृशंस संस्थाको कुचल डालो" लिखनेकी आदतसी हो गयी थी। धर्मसंस्थाको वालटेयर जैसे भयानक शत्रुसे कभी मुकाबिला नहीं पड़ा था। भिन्न भिन्न तरहसे अलोचना करनेमें तो वह होशियार था ही, साथ ही हजारों विचारवान् तथा अविचारी उसकी प्रशंसा करनेको तैयार रहते थे क्योंकि वे सब भी उन्हीं परिणामोंपर पहुँच चुके थे; हाँ, उनमें अपने भावोंको वालटेयरकी तरह ज़ोर देकर व्यक्त करनेका साहस नहीं था। वालटेयर प्रोटेस्टेंट तथा रोमन कैथलिक दोनों मतोंका खण्डन करता था। फिर भी वह नास्तिक नहीं था जैसा कि उसके अनेक कट्टर शत्रु उसे कहा करते थे। वह ईश्वरमें विश्वास करता था और जेनीवाके निकट अपने जन्मस्थानके ग्राममें उसने ईश्वरके नामपर एक मन्दिर भी बनवाया था। अपने कई समकालीन लोगोंकी तरह वह भी देवतापूजक था और उसका विश्वास था कि ईश्वर बाइबिल तथा गिरजेमें व्यक्त न होकर प्रकृति और हमलोगोंके हृदयमें व्यक्त है।

वह प्रायः किसी बातका निर्णय करनेमें तह तक पहुँचनेका प्रयत्न नहीं करता था और कभी कभी कुछका कुछ परिणाम निकाल बैठता था। उसको धर्मसंस्थामें केवल बुराई ही बुराई नज़र आती थी और मानव-हितके उन कार्योंकी ओर उसका ध्यान ही नहीं जाता था जो अतीत कालमें धर्मसंस्था द्वारा सम्पादित हुए थे। जिन उपदेशोंको महापुरुषोंने भी अंगीकार किया था उनको वह द्वेषवश बुरे उद्देश्योंसे पूर्ण बतलाता था। जेज़ुइट लोगोंकी धोखेबाजी और धर्मशास्त्रियोंके कलहके साथ साथ वह अत्यन्त पवित्र तथा शुद्ध विचारोंकी भी बेतरह हँसी उड़ाया करता था। इन सब बातोंके होते हुए भी वह अन्याय और अनाचारका कट्टर शत्रु था। उसने जिन जिन बुराइयोंका विरोध किया उनमेंसे अधिकांशको क्रान्तिने दूर कर दिया। कई कैथलिक तथा प्रोटेस्टेंट लेखकोंने केवल उसकी त्रुटियों और अत्युक्तियोंपर ही ध्यान दिया है; यह नितान्त अनुचित है क्योंकि इसमें सन्देह नहीं कि राजनीतिक एवं सामाजिक संस्थाकी दृष्टिसे धर्मसंस्थाके स्थायी सुधारके लिए अनुकूल परिस्थिति उत्पन्न करनेमें उसीने सबसे अधिक परिश्रम किया था।

असन्तोषकी मात्रा बढ़ानेवालोंमें वालटेयरके बाद जीन जेक्स रूसो नामक लेखकका स्थान है। उसने अपनी छोटी सी प्रसिद्ध पुस्तक 'दि सोशल कांट्रैक्ट' में यह प्रश्न उठाया कि "किस अधिकारसे एक मनुष्य दूसरेपर शासन करता है ?" पुस्तकका आरम्भ इन वाक्योंसे होता है—"मनुष्य जन्मसे तो स्वतन्त्र है, किन्तु आज वह सर्वत्र बन्धनोंसे ही जकड़ा हुआ है। एक मनुष्य अपनेको दूसरोंका स्वामी समझता है पर वास्तवमें वह उनसे भी बढ़कर गुलाम है। मैं नहीं कह सकता कि

यह परिवर्त्तन कैसे हुआ। हाँ, इतना मैं कह सकता हूँ कि यह किस तरह न्यायानुमोदित हो सकता है।" रूसोका कथन है कि लोकमत ही किसी राज्यको न्याय्य (जायज़, विधिसंगत) बना सकता है। वास्तविक शासक जनता ही है।

राज्यका प्रबन्ध करनेके लिए सर्वसाधारण अपने स्थानमें एक व्यक्ति, राजा, को भलेही नियुक्त कर लें पर विधानोंकी रचना स्वयं उन्हें ही करनी चाहिए क्योंकि उन्हींको इन विधानों-का पालन भी करना पड़ता है। आगे यह बात स्पष्ट हो जायगी कि फ्रांसकी प्रथम शासन-व्यवस्थामें रूसोका यही सिद्धान्त रखा गया है और विधानकी व्याख्या 'ईश्वरकी कृपासे शासन करनेवाले राजाकी इच्छा' न कहकर 'सर्वसाधारणकी इच्छा' की प्रकट रूप कह कर की गयी है।

अठारहवीं सदीके सुप्रसिद्ध राजनीतिक लेखक मांटेस्क्यूने भी आंग्ल देशके नियंत्रित राजतन्त्रकी भूरि भूरि प्रशंसा कर अपने देशके शासनकी बुराइयोंको समझदार फ्रांसीसी लोगोंके सामने रखनेकी कोशिश की। उसने यह दिखलाया कि अंग्रेज लोगोंको जो स्वतन्त्रता प्राप्त है उसका कारण यह है कि वहाँ राज्यकी तीनों शक्तियाँ—कानून बनाना, शासन करना और न्याय करना—फ्रांसकी तरह एकही व्यक्तिके हाथमें नहीं हैं। पार्लमेंट विधान बनाती है, राजा उनको अमलमें लाता है और न्याया-लय, दोनोंसे स्वतन्त्र होकर, यह देखता है कि उनका ठीक ठीक पालन होता है या नहीं। उसका यह विश्वास था कि ज्योंही ये शक्तियाँ किसी एक व्यक्ति या व्यक्ति-समूहके हाथमें आयेंगी त्योंही अंग्रेज लोग अपनी स्वतन्त्रतासे हाथ धो बैठेंगे। 'शक्ति-पार्थक्य' का यह सिद्धान्त अब कई आधुनिक राज्योंमें भी, विशेषकर संयुक्त राज्य अमेरिकामें, माना जाता है।

विक्रमकी अठारहवीं सदीके अन्तमें अर्थशास्त्रकी उत्पत्ति हुई। अर्थशास्त्रियोंने पहलेकी अपेक्षा अधिक सावधानीके साथ राष्ट्रके धनागम और वितरणके मार्गोंकी छानबीन करना शुरू किया। कर लगानेकी अनुचित प्रथा जिससे धनिक श्रेणियाँ सार्वजनिक कार्योंके लिए उचित व्यय-भार वहन करनेसे बच जाती थीं, कर वसूल करनेके बहुव्ययसाध्य तथा कष्टप्रद साधन, फ्रांसके अन्तर्गत चुंगीकी सीमाएँ जिनके कारण एक भागसे दूसरे भागमें माल ले जानेमें असुविधा होती थी, राजपरिवारका अपव्यय, अयोग्य लोगोंको दी गयी पेंशन, इत्यादि अन्यायपूर्ण एवं अव्यवस्थित प्राचीन शासनकी प्रत्येक बुराईकी नये दार्शनिकोंने खूब नुक़्ताचीनी की। इन लोगोंने जनताके हित और विवेककी कसौटीपर ही प्रचलित प्रथाकी जाँच की।

फ्रांसीसी सरकारको प्रायः सभी बातोंके लिए नियम बनानेकी आदत सी पड़ गयी थी। फ्रांसकी बनी वस्तुएँ बाहर शीघ्रताके साथ बिक सकें, इस विचारसे सरकारने वहाँके कारखानोंमें तैयार होने वाले कपड़ोंका मेल, चौड़ाई और रंग निश्चित कर दिया था। अनाज और खाद्य पदार्थोंके व्यापारियोंपर राजमन्त्रियोंकी कड़ी निगाह रहती थी खाद्य वस्तुओंको बाजारके बाहर बेचना या जमा कर रखना मना था। उन्हें आशा थी कि इन उपायोंसे हम माल जमा कर रखने वालोंको दुर्भिक्षके दिनोंमें अनाज अधिक मूल्यपर बेचनेसे रोक सकेंगे।

अब यह मालूम हुआ कि सरकारकी इन कड़ाइयोंके कुछ परिणाम अत्यन्त अहितकर हुए क्योंकि इनसे दुर्भिक्षोंकी रोक नहीं हुई और कारखानोंको नयी नयी बातोंका पता लगाने और नये तरीकोंको काममें लानेका प्रोत्साहन नहीं रह गया। अर्थशा-

स्त्रियोंने यह प्रतिपादित किया कि कारखानेदारोंको अपनी इच्छाके अनुसार कारखाना चलाने देना चाहिए। उन लोगोंने राजासे अनुरोध किया कि यदि आप अपने राज्यकी भलाई चाहते हैं तो सभी कारबारोंको अपनी उन्नति आप करनेके लिए स्वतंत्र छोड़ दीजिये।

चिरकाल तक अप्रतिष्ठाके साथ राज्य करनेके पश्चात् संवत् १८३१ (सन् १७७४) में बूढ़े राजा १५ वें लूईकी मृत्यु हुई। उसके असफल युद्धोंके कारण फ्रांसका दिवाला निकल रहा था और उसके मन्त्री शासन सम्बन्धी कर्त्तव्योंका पालन करनेमें असमर्थ हो रहे थे। करोंकी कड़ाईसे लोगोंमें असन्तोष फैल रहा था, फिर भी सरकारको प्रतिवर्ष २१ करोड़ रुपया कर्ज लेना पड़ता था। उसके पौत्र और उत्तराधिकारी नवयुवक १६ वें लूईके विचार अवश्य ही बहुत अच्छे थे, पर उसकी अवस्था अभी २१ वर्षकी ही थी और उसकी स्त्री, मेरिया थेरिसाकी पुत्री मेरी अएटोनेटकी अवस्था उससे भी छोटी थी। सिंहासनारोहणके बाद युवक राजाने शीघ्रही सर्वश्रेष्ठ अर्थशास्त्री टरगटको राज्यके सर्वोच्च पद अर्थात् मुख्य अर्थ-सचिव (कोष-निरीक्षक) के पदपर नियुक्त किया। विद्वान् होनेके साथ साथ टरगट अनुभवी सरकारी कर्मचारी भी था। वह लिमोजेस नामक प्रान्तमें, जो फ्रांसमें सबसे पिछड़े हुए प्रान्तोंमें गिना जाता था, तेरह वर्ष तक राज-प्रतिनिधिकी हैसियतसे रह चुका था। वहाँ उसे प्रचलित कर-प्रथाके दोषोंको देखनेका काफी अवसर मिला था। इस प्रथाका सुधार करनेके लिए उसने सरकारसे बहुत कुछ अनुरोध भी किया और साथ ही सर्वसाधारणमें अर्थशास्त्रके सिद्धान्तोंका प्रचार करनेका भी प्रयत्न किया। अतः जब वह राज्य-कोषका अधिकारी बनाया

गया तो यह आशा होने लगी कि वह तथा विवेकी नवयुवक राजा दोनों मिलकर चिरकालागत बुराइयोंको दूर करनेका प्रयत्न करेंगे ।

पहला और सबसे स्वाभाविक उपाय व्ययका घटाना था क्योंकि केवल इसी उपायसे सरकार दिवालिया होनेसे बचायी जा सकती थी और करका भार हलका किया जा सकता था। टरगटको वर्सैल्जके राजकीय दरबारके ठाटबाटका खर्च घटाना आवश्यक प्रतीत हुआ। राजा, रानी तथा राजकीय परिवारके लिए राज्यको कोई पौने चार करोड़ रुपये (१२० लाख डालर) वार्षिकसे अधिक व्यय करना पड़ता था। इसके अलावा राजा अपने सभासदोंको मनमाने तौरपर पेन्शन दिया करता था, इसके लिए भी लगभग उतनी ही रकम खर्च करनी पड़ती थी। यह निश्चित था कि इन रकमोंको किसी प्रकार घटानेके नामसे ही सभासद लोग विरोध करते और वस्तुतः फ्रांसके शासक भी यही लोग थे। जिस व्यक्तिके कमखर्च प्रबन्धसे ये लोग असंतुष्ट होते उसके विरुद्ध राजाका दिमाग फेर देनेका पूरा अवसर इन्हें मिलता था। प्रातःकालसे लेकर रातको जब राजा सोने जाता था तबतक ये लोग बराबर उसके साथ ही बने रहते थे और अर्थ-सचिव केवल कार्य-कालमें राजासे मिला करता था, इस कारण राजाको प्रभावित करना इसकी अपेक्षा सभासदोंके लिए अधिक सरल था।

विशेषाधिकारप्राप्त श्रेणियोंने टरगटके सुधारोंका इतना घोर विरोध किया कि वह स्वयं बुराइयोंको दूर न कर सका पर उसने उनके नाशका बीज बो दिया जिसका फल उसके हटनेके बाद शीघ्रही प्रगट हो गया। अधिकारारूढ़ होनेके पश्चात् शीघ्रही उसने गल्लेके व्यापारकी अधिकांश रुकावटें दूर

कर दीं। उसने इस आदेशकी भूमिकामें, व्यापारियोंको स्वेच्छा-पूर्वक चाहे जब और जहाँ गल्ला खरीदने व बेचनेसे रोकनेकी परम्परागत सरकारी नीतिकी स्पष्ट शब्दोंमें निन्दा की। उसने यह दिखलाया कि इससे दुर्भिक्ष रोकनेकी सरकारकी आशा व्यर्थ है, उलटे इससे हानि और कठिनाई बढ़ती है। यदि सरकार इन कामोंमें हस्तक्षेप न करे तो गल्ला उन स्थानोंमें आपही आप पहुँच जायगा जहाँ उसकी सबसे अधिक आवश्यकता होगी क्योंकि उन्हीं स्थानोंमें उसका अधिकसे अधिक मूल्य मिल सकेगा। सर्वसाधारणमें अर्थशास्त्रीय सिद्धान्तोंका प्रचार करनेके लिए ऐसे अवसरोंको टरगट अपने हाथसे नहीं जाने देता था।

इटलीके एक अर्थशास्त्रीने टरगटकी नियुक्तिकी खबर पाकर अपने एक फ्रांसीसी मित्रको लिखा था—"टरगट अब प्रधान अर्थ-सचिव हो गया, किन्तु वह अपने मन्तव्योंको कार्यमें परिणत करनेके लिए उस पदपर अधिक कालतक नहीं बना रह सकता। वह कुछ दुष्टोंको दण्डित करेगा, बकझक करेगा और क्रोधके मारे आपेसे बाहर हो जायेगा। वह भलाई करना चाहेगा पर पद पदपर उसे रुकावटों और दुष्टोंका सामना करना पड़ेगा। सर्वसाधारणका विश्वास उसपरसे उठ जायेगा और लोग उससे घृणा करने लगेंगे। वह अपने पदके अयोग्य समझा जायेगा। लोगोंका जोश ठंढा पड़ जायेगा। वह या तो स्वयं ही अपने पदसे हट जायगा या हटा दिया जायगा और इस प्रकार फ्रांस जैसे राजतंत्र देशमें ऐसे उच्च पदपर टरगट जैसे न्यायी और दार्शनिक व्यक्तिको नियुक्त करनेकी भूलका एक नया उदाहरण देख पड़ेगा।"

उक्त इटली निवासी विद्वान् यदि टरगटके पृथक् किये जानेके बाद भी लिखता तो इससे विशेष नहीं लिख सकता था।

संवत् १८३३ (मई, सन् १७७६) में टरगट पदच्युत कर दिया गया जिससे राजकर्मचारियोंको विशेष सन्तोष हुआ । राजा न्यायी और उदाराशय था पर राज्य-प्रबन्धके कार्योंमें, जिनकी ओर टरगट उसका ध्यान प्रायः आकर्षित किया करता था, उसका जी नहीं लगता था । कार्यक्रमको पुराने ढंगपर चलने देना ही उसके लिए सबसे अधिक सुविधाजनक था । सुधारोंसे केवल उसका कार्य-भार ही नहीं बढ़ता था बल्कि पार्श्ववर्त्तियोंके प्रति अनुग्रह दिखलानेकी जो प्रथा चली आती थी उसे रोकनेके लिए भी उसे बाधित होना पड़ता था । उसकी दृष्टिमें नवयुवती रानी तथा किसी घनिष्ट मित्रका असन्तुष्ट होना दूर रहने वाले किसानोंके दुःखोंकी अपेक्षा कहीं अधिक चिन्ताजनक था ।

टरगटके पदच्युत होनेके कुछ समय बाद नेकर उस पदपर नियुक्त हुआ। इसने दो उपायोंसे भावी राज्यक्रान्तिकी प्रगतिमें सहायता पहुँचायी । पहले तो उसने संयुक्त राज्यके मित्रकी हैसियतसे आँग्लदेशके साथ युद्ध चलानेके निमित्त बहुतसा रुपया ऋण ले लिया जिससे कुछ काल पश्चात् राज्यकोषकी अवस्था बहुत खराब हो गयी और फ्रांसमें उस आर्थिक परि-स्थितिके उत्पन्न होनेमें सहायता पहुँची जो क्रान्तिका तात्कालिक कारण समझी जाती है । दूसरे, उसने राज्यकी आर्थिक परि-स्थितिपर राजाके पास एक रिपोर्ट भेजी जो प्रकाशित कर दी गयी थी । लोगोंने इसे बड़े चावसे पढ़ा। यह पहला ही अवसर था कि जनताको इस बातका पता लगा कि राज्यकी आय किस प्रकार खर्च की जाती है । टेल नामक कर और नमक-करसे वास्तवमें कितनी आय होती है और राजा अपने तथा अपने पार्श्ववर्त्तियोंके लिए कितना खर्च करता है इसका प्रथम ज्ञान लोगोंको इसी समय हुआ ।

नेकरके बाद शीघ्र ही कैलोनकी नियुक्ति हुई । उसने उस प्रसिद्ध सुधारको शीघ्रतासे शुरू कर दिया जो क्रान्तिका आरम्भिक रूप समझा जाता है। पहले तो राजा और उसके सभासदोंमें उसका खूब मान था क्योंकि वह अपने पूर्व पदाधिकारियोंसे भी अधिक लापरवाहीसे रुपया खर्च करता था किन्तु शीघ्र ही वह ऐसे संकटमें पड़ा कि उसको और रुपया मिलना असम्भवसा हो गया। शान्तिकालमें ऋण लेनेकी अनुमति पार्लमेंटें नहीं दे सकती थीं और करोंकी मात्रा चरम सीमापर पहिलेसे पहुँची हुई थी । अन्ततः कैलोनने निराश होकर राजाको यह सूचना दी कि राज्यका दिवाला निकलनेही पर है, इसे बचानेके लिए सारी व्यवस्थाका पूर्ण सुधार आवश्यक है। कैलोनकी इसी रिपोर्टसे क्रान्तिका आरम्भ समझना चाहिए, क्योंकि यह उस घटनावलीकी पहली घटना थी जिसने फ्रांसकी उस प्रतिनिधि सभाको आमन्त्रित किया जिसने पुरानी प्रथाको उठाकर वहाँ लिखित शासन-प्रणालीकी नियोजना की।

अध्याय ३५

फ्रांसीसी राज्यक्रान्ति।

राज्यको विनाशसे बचानेके लिए राज्यगत सभी बुराइयोंका दूर करना कैलोनने आवश्यक बतलाया। इसलिए उसने 'टेल' नामक करको हलका करने, लवण-करमें सुधार करने, चुङ्गीकी भीतरी सीमा दूर करने तथा व्यापार-संघकी बुराइयोंको अलग करनेका प्रस्ताव किया। विशिष्ट वर्गके लोग करसे मुक्त थे। इन लोगोंसे यह अधिकार ले लेना सुधारका प्रधान किन्तु सबसे कठिन अङ्ग था। उसे यह आशा थी कि यदि इन लोगोंके साथ कुछ रियायत कर दी जाय तो ये लोग समान रूपसे भूमि-कर देनेके लिए राजी हो जायेंगे। इसी विचारसे प्रेरित होकर उसने राजासे अनुरोध किया कि धर्मसंस्था तथा राज्यके गण्यमान्य लोगोंकी एक सभा आमन्त्रित की जाय जिसमें कुछ ऐसे परिवर्तन किये जा सकें कि देशकी समृद्धि बढ़े और राज्यकी भी आय बढ़े जिसमें आवश्यक व्ययका काम चले।

संवत् १८४३ (सन् १७८६) में इन गण्यमान्य लोगोंको निमन्त्रित करना ही वस्तुतः राज्यविप्लव था, क्योंकि यह कार्य राजाका एक प्रकारसे यह स्वीकार करना था कि जिस दशामें वह आ गया है उसमेंसे प्रजाकी सहायताके बिना निकलना एक प्रकारसे असम्भव है। चुने गये गण्यमान्य लोग—बिशप, आर्चबिशप, ड्यूक, न्यायाधीश, उच्च राजकर्मचारी—सबके सब विशिष्ट वर्गके थे, फिर भी ये लोग प्रचलित प्रथाके अनुसार

राजदरबारके लोगोंसे विभिन्न, राष्ट्रके प्रतिनिधि समझे जाते थे। गण्यमान्य लोगोंको आमन्त्रित करना प्रकारान्तरसे 'एस्टे-ट्स जनरल' को बुलाना था जो शीघ्रही आधुनिक प्रतिनिधि संस्थाके रूपमें परिणत हो गयी।

अपने आरम्भिक भाषणमें देशकी शोचनीय आर्थिक स्थिति-का उल्लेख करते हुए कैलोनने कहा—सरकारको प्रतिवर्ष चार करोड़ डालरकी घटी उठानी पड़ रही है। अब अधिक ऋण नहीं लिया जा सकता। कितनी हो मितव्ययितासे क्यों न काम लिया जाय पर इस कमीकी पूर्ति नहीं हो सकती। आपही लोग बतलावें ऐसा कौनसा उपाय है जिससे यह भयंकर कमी पूरी-की जाय और आवश्यकतानुसार करवृद्धि की जा सके ? "बुरा-इयाँ दूर कीजिये" यह उत्तर मिलनेपर उसने कहा—हाँ, महा-शयगण, मैं मानता हूँ कि इन बुराइयोंके दूर होनेसे धनकी प्राप्ति होगी जिसपर राज्यको अधिकार कर लेना चाहिए और आर्थिक स्थिति सुधारनेमें इसीका सहारा लेना चाहिए। ये बुराइयाँ, जिन-का दूरीकरण प्रजाके हितकी दृष्टिसे जरूरी है, बहुत प्रसिद्ध हैं। इनकी जड़ बहुत नीचेतक चली गयी है और इनका प्रभाव भी चारोंओर बहुत अधिक फैल गया है। उदाहरणार्थ कुछ बुराइयाँ ये हैं—मजदूरोंके साथ होनेवाली बुराइयाँ, अधिक भार, आर्थिक विशेषाधिकार, कानूनसे बरी होना जो सबको एकसा लागू होना चाहिए, कई अन्यायपूर्ण अपवाद जो कुछ लोगोंके लाभके लिहाज़से दूसरे करदाताओंको दुःख देनेवाले होते हैं, करप्रथा-की विषमता, एकही राज्यके भिन्न भिन्न प्रान्तोंसे लिये जानेवाले करोंमें और उनकी प्रजामें आकाश—पातालका अन्तर, 'टेल'-संग्रहकी कड़ाई और धींगाधींगी, खाद्य पदार्थके व्यापारियोंकी दिक्कतें और बेइज्जती, आन्तरिक चुंगी घर तथा सीमाएँ जिनके

कारण एकही राज्यके भिन्न भिन्न प्रान्त एक दूसरेको विदेशसे प्रतीत होते हैं। ....। ये सभी बुराइयाँ, जिनकी निन्दा प्रजा-हितैषी नागरिकोंने बहुत पहलेही की थी, शीघ्रही दूर होजानी चाहिएँ।

गण्यमान्य लोगोंको कैलोनकी बातोंका विश्वास नहीं था। उसकी सुधार-योजनाको उन्होंने अस्वीकृत कर दिया। राजाने कैलोनको पदच्युत कर दिया और सभा भी विसर्जित कर दी (मई १७८७ ई०)। तब सोलहवें लूईने कुछ अत्यावश्यक आर्थिक सुधारोंको, मामूली तरीकेसे, पार्लमेण्टोंके पास दर्ज करनेके लिए भेजकर, प्रयोगमें लानेका प्रयत्न किया।

पेरिसकी पार्लमेंटने राजाके मन्त्रिमण्डलको आफतमें फँसाकर स्वयं लोकप्रिय बनना चाहा। इस बार इसने असाधारण ढङ्गसे काम लिया। राजाके लगाये हुए दो नये करोंको इसने दर्ज करनेसे इनकार ही नहीं किया बल्कि यह भी घोषित किया कि एस्टेट्स जेनरलमें उपस्थित केवल राष्ट्रके प्रतिनिधि ही स्थायी कर लगानेकी आवश्यक स्वीकृति दे सकते हैं। केवल राष्ट्र ही आर्थिक दशाका समुचित ज्ञान प्राप्त कर बुराइयोंको दूर कर सकता है और नये साधनोंका द्वार खोल सकता है। इस घोषणाके कुछ दिन बाद पार्लमेंटने एस्टेट्स जनरल आमन्त्रित करनेके लिए नम्रतापूर्वक निवेदन किया।

नये करोंको दर्ज करनेसे इनकार करनेके कारण इसके और राजमन्त्रियोंके बीचका पुराना झगड़ा फिर शुरू हो गया। संवत् १८४४ (सन् १७८७) के शरत् कालमें आपसमें समझौता हो गया। पार्लमेंटने एक बड़ा ऋण दर्ज करना स्वीकार किया और राजाने पाँच वर्षके भीतर एस्टेट्स जनरलका अधिवेशन करनेका वचन दिया। उसी वर्षके अन्तिम महीनोंमें

कई आलोचनात्मक पर्चे निकले जिनमें कर-प्रथा तथा कुछ नागरिकोंके अनुचित विशेषाधिकारों और अपवादोंपर, जिनके कारण सर्वसाधारणके बहुसंख्यक लोगोंको तकलीफ पहुँचती थी, आक्षेप किया गया था।

एकाएक पेरिसकी पार्लमेंटको यह खबर मिली कि राजाके मंत्री कुछ ऐसा उपाय सोच रहे हैं जिसमें पार्लमेंट उनकी योजनाओंका विरोध न कर सके। मन्त्रियोंने यह प्रस्ताव उपस्थित किया कि सारी न्याय-प्रणाली बदल दी जाय और न्यायालयोंसे आदेशोंके दर्ज करनेका अधिकार ले लिया जाय जिसमें उनका विरोध करनेका हक़ भी जाता रहे। पार्लमेंटने जोरोंके साथ घोषित किया कि मन्त्रियोंका यह कार्य राष्ट्रके मूलपर कुठाराघातके समान है। मन्त्री लोग न्यायालयोंपर इसी कारण आक्रमण करते थे कि इन्होंने नये कर दर्ज करनेमें अपनी असमर्थता दिखलायी थी और प्रतिनिधि-सभा बुलानेके लिए राजासे प्रार्थना की थी। पार्लमेंट कहती थी कि मंत्री लोग पूर्ण स्वेच्छातंत्र स्थापित करनेपर तुले हुए हैं जिसमें राजाके एकाधिकारमें किसी प्रकारकी बाधा न पहुँचने पावे।

कुछ प्रान्त तो यह जानकर कि राजा पार्लमेंटोंके हाथसे आदेशोंकी जाँचका अधिकार ले लेना चाहता है, अत्यन्त भयभीत हो गये। क्या स्वेच्छाचारप्रिय मंत्री लोग राजाकी उन प्रतिज्ञाओंको भूलकर, जो उसने ब्रिटनी, डाफिनी, वेआर इत्यादि प्रदेशोंको फ्रांसमें मिलाते समय की थीं, सारे राज्यके लिए नये कानून नहीं बना सकते? इस तरह पार्लमेंटोंके हितको सारी प्रजा क्रमशः अपना ही हित मानने लगी।

इस समय राज्यके आवश्यक व्ययके लिए मंत्रियोंका हाथ बहुत तंग हो रहा था। पार्लमेंटोंने केवल नये करोंको

दर्ज करनेसे ही इनकार नहीं किया बल्कि मंत्रियोंको संकटमें डालने और ऋणदाताओंके हृदयसे उन लोगोंका विश्वास हटानेके लिए कोई बात उठा नहीं रखी। अब प्रतिनिधियोंकी सभा बुलानेके अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं रह गया। इसलिये संवत् १८४६ के १८ वैशाख (१ मई, सन् १७८९) को एस्टेट्स जनरलका अधिवेशन आमंत्रित किया गया।

यद्यपि सभी लोग इस संस्थाके सम्बन्धमें जहाँ तहाँ चर्चा करते थे पर इसका किसीको उतना ज्ञान नहीं था क्योंकि संवत् १६७१ (सन् १६१४) के बाद एस्टेट्स जनरलका कोई अधिवेशन नहीं हुआ था। इसलिए राजाने इस संस्थाके संबंधमें सभी बातोंका पता लगानेके लिए विद्वानोंके नाम एक सूचना निकाली। सर्वसाधारणके साथ इसका घनिष्ट सम्बन्ध होनेके कारण लोग इसके सम्बन्धमें बड़ी दिलचस्पी दिखाने लगे। पहलेकी अपेक्षा पर्चे भी अधिक निकलने लगे और लोग बड़े चावसे उन्हें पढ़ने भी लगे। इस संस्थाकी उत्पत्ति सामन्ततंत्रके समयमें हुई थी, इस कारण इसका निर्माण भी उस समयकी ही परिस्थितिके अनुरूप हुआ था। राज्यके तीनों वर्गों—पुरोहित, कुलीन और सामान्य जन—के प्रतिनिधि समान संख्यामें सम्मिलित होते थे। ये लोग राष्ट्रके हितपर विचार न कर अपने अपने वर्गका ही हित देखते थे। इसलिये तीनों वर्गोंके प्रतिनिधि (डिप्युटी) लोग एक साथ नहीं बैठते थे और न किसी विषयपर सम्मिलित मत ही प्रकट करते थे। प्रत्येक समूहके सदस्य लोग पहिले आपसमें कोई बात तै कर लेते थे, फिर सारे वर्गकी ओरसे केवल एक ही मत प्रकट कर दिया जाता था।

संवत् १८४५ (सन् १७८८) में औसत दर्जेके फ्रांसीसीको इस प्रणालीका असंगत प्रतीत होना स्वाभाविक था। यदि पुराने नियमोंका पालन किया जाता तो दोनों विशिष्ट वर्गोंके प्रतिनिधियोंकी संख्या शेष ढाई करोड़ प्रजाके प्रतिनिधियोंकी संख्यासे दूनी होजाती। तीन मतोंमें दो मतोंपर अधिकार होनेके कारण यह कब सम्भव था कि विशिष्ट वर्गोंके प्रतिनिधि अपने स्वार्थको तिलांजलि देकर कोई महत्वपूर्ण सुधार होने देते ! नेकरने, जिसको राजाने आर्थिक दशा सुधारनेके विचारसे पुनः नियुक्तकर लिया था, यह तो कबूल कर लिया कि तीसरे वर्गके प्रतिनिधियोंकी संख्या विशिष्ट वर्गोंके प्रतिनिधियोंकी सम्मिलित संख्याके समान हो, पर तीनों वर्गोंके प्रतिनिधियोंका आज कलकी तरह एक साथ बैठकर वोट देना उसने स्वीकार नहीं किया।

प्रतिनिधि लोग व्यक्तिगत मत दें या वर्गके लिहाज़से, इस प्रश्नके अतिरिक्त पर्चोंमें इस बातकी भी चर्चा छिड़ने लगी कि एस्टेट्स जनरलको किन किन सुधारोंको अपने हाथमें लेना चाहिए। राजाने प्राचीन प्रथाके अनुसार बुराइयों तथा सुधारोंकी एक सूची तैयार करनेके लिए प्रजाको सूचना दी। इस सूचीसे उस समयके लोकमतका बहुत ही अच्छा परिचय मिलता है। राज्यभरके सभी ग्रामों तथा नगरोंने वर्तमान पद्धतिसे होनेवाले कष्टोंको साफ साफ ज़ाहिर कर दिया और यह भी व्यक्त कर दिया कि किन किन सुधारोंमें एस्टेट्स जनरलको प्रवृत्त होना चाहिए। इन सूचियोंके अवलोकन मात्रसे ही यह स्पष्ट होजाता है कि सारा राष्ट्र उस बड़े परिवर्तनके लिए उत्सुक था जिसने एक वर्षके भीतर ही सदियोंसे आनेवाली सामाजिक और राजनीतिक पद्धतिका अधिकांश नष्ट कर दिया।

प्रायः सभी सूचियाँ इस बातपर सहमत थीं कि वर्तमान व्यवस्था तथा राजा और मंत्रियोंका अनिश्चित बृहदधिकार ही सारी बुराइयोंका मूल है। एक सूचीमें यह व्यक्त किया गया था कि "राजाका एकाधिकार ही सारे राज्यपर तकलीफ ढानेवाली बुराइयोंकी जड़ है इसलिए हम लोगोंकी यह पहली इच्छा है कि वास्तविक राष्ट्रीय शासन-विधि स्थापित हो जो सभी लोगोंके अधिकार निश्चित कर दे और उन अधिकारोंकी रक्षाके लिए आवश्यक विधानोंकी रचना करे।" राजाको हटाने या उसके हाथसे शासनाधिकार लेनेका इस समय किसीको खयाल तक भी न था। जनता सिर्फ यही चाहती थी कि स्वेच्छातंत्रके बदले नियंत्रित या विधिविहित राजतंत्र प्रणाली रखी जाय। आवश्यकता केवल इसी बातकी थी कि जिन कार्योंको राज्य नहीं कर सकता वे निश्चित कर लिख लिये जायँ और करोंको मंजूर करने, राष्ट्रसम्बन्धी अवसरोंपर राजाको उचित सम्मति देने और अधिकार-पत्रके नियमोंका उल्लंघन होनेपर, आवश्यकता प्रतीत हो तो, विचार करनेके लिए नियमित समयपर एस्टेट्स जनरलका अधिवेशन हुआ करे।

इन्हीं विचारोंको सम्मुख रखकर संवत् १८४६ के २२ वैशाख (५ मई १७८९) को एस्टेट्स जनरलका पहला अधिवेशन वर्सेल्जमें हुआ। राजाने पहले ही आज्ञा दे दी थी कि सदस्य लोग उसी प्रकारकी पोशाकमें आवें जो संवत् १६७१ (सन् १६१४) के अधिवेशनमें इस्तेमाल की गयी थी, पर राजाज्ञामें इतनी शक्ति नहीं थी कि वह पहलेका सा जोश पैदा कर सके। राजाज्ञा होनेपर भी सर्वसाधारण वर्गके प्रतिनिधियोंने पुरानी प्रथाके अनुसार और वर्गोंसे पृथक् रहना कबूल नहीं किया। ये लोग विशिष्ट वर्गोंके प्रतिनिधियोंके पास, साथ

साथ बैठकर राष्ट्रके हितपर सामान्य रूपसे विचार करनेके लिए निमंत्रणपर निमंत्रण भेजने लगे। कुलीन वर्गके कुछ अधिक उदार प्रतिनिधियों तथा पुरोहित वर्गके अधिकांश प्रतिनिधियोंकी इच्छा तीसरे वर्गके प्रतिनिधियोंके साथ मिल जानेकी थी पर बहुमत इनके प्रतिकूल था। अन्ततः जन-साधारणके प्रतिनिधि अधीर हो उठे और उन्होंने ३ आषाढ़ (१७ जून) को राष्ट्रीय सभाके नामसे एक स्वतंत्र सभा कायम कर दी। उन लोगोंकी यह दलील थी कि हमलोग ९६ प्रतिशतके प्रतिनिधि हैं, इस कारण विशिष्ट वर्गोंके प्रतिनिधि सबके सब छोड़ दिये जा सकते हैं। तृतीय वर्गके इस प्रकार अधिकार हड़प लेनेसे पुरानी सामन्तीय सभाओं अर्थात् वर्गानुसार राय देने वाली सभाओंका अन्त हो गया और उनके स्थानमें यूरोपमें पहले पहल आधुनिक राष्ट्रीय प्रतिनिधि-सभा कायम हुई।

दरबारियोंके प्रभावमें आकर राजाने अपने ही सभापतित्वमें तीनों वर्गोंका सम्मिलित अधिवेशन कर पुरानी प्रथा जारी रखनेका प्रयत्न किया। उसने अच्छे अच्छे सुधारोंकी एक वृहत् योजना पेश की और सभी वर्गोंके प्रतिनिधियोंको पुरानी चालके मुताबिक पृथक् पृथक् बैठनेका आदेश दिया। पर यह आदेश पत्थरपर तीर मारनेके समान हुआ। तीन दिन पहले, सर्वसाधारण लोग अपने सभास्थानमें जानेसे रोक दिये गये थे क्योंकि उस स्थानपर राजकीय सभा करनेके लिए तैयारियाँ हो रही थीं, अब इन लोगोंने पड़ोसमें ही 'टेनिस कोर्ट' नामक भवनकी शरण ली। ६ आषाढ़ (२० जून) को इन लोगोंने शपथ खायी कि जब तक शासन-विधि स्थापित न होगी तब तक हम लोग जहाँ कहीं आवश्यकता पड़ेगी, अपनी सभा किया

करेंगे । राजकीय अधिवेशनके एक दिन पहले पुरोहितवर्गके आधेसे अधिक प्रतिनिधि इन लोगोंके साथ मिल गये, इससे सुधार-विरोधियोंकी चालोंको रोकनेका इनका साहस और भी बढ़ गया ।

भाषण समाप्त हो जानेपर जब राजाने सभी वर्गोंके प्रतिनिधियोंको पृथक् पृथक् अपनी सभा करनेकी आज्ञा दी तो कई बिशपों, कुछ धर्मचक्र-पुरोहितों और अधिकांश कुलीन लोगोंने इस आज्ञाका पालन किया, पर शेष लोग किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो ज्योंके त्यों बैठे ही रह गये । जब व्यवस्थापकने इन लोगोंको राजाज्ञाका पालन करनेके लिए आदेश दिया तो मिराबो, जो प्रतिनिधियोंमें सर्वश्रेष्ठ राजनीतिज्ञ था, कह उठा "बिना संगीन इस्तेमाल किये हम लोग अपनी जगह न छोड़ेंगे" । निर्बलहृदय राजा दब गया और उसने कुछ दिनोंके बाद विशिष्ट वर्गोंके शेष प्रतिनिधियोंको भी जनसाधारणके प्रतिनिधियोंके साथ मिल जानेकी आज्ञा दी ।

अब राष्ट्रीय सभाने शासन-विधि तथा फ्रांसके पुनर्निर्माणका कार्य बड़े उत्साहके साथ आरम्भ किया । पेरिसकी एक घटनाने बीचमें ही इसे छेड़ दिया । राजाके दरबारियोंने उसे यह सुझाया कि आप राजरक्षिणी सेनाको एकत्र करलें जिसमें इन धृष्ट प्रतिनिधियोंकी सभा यदि बलात् भंग करनी पड़े तो इससे होने वाली अशान्तिका दमन आप कर सकें । नेकरको पदच्युत करनेके लिए भी उसपर दबाव डाला गया । राजाने उसकी लोकप्रियताका जरा भी विचार नहीं किया । जब पेरिसकी जनताने सैनिक-संग्रह तथा नेकरकी पदच्युतिका समाचार पाया तो चारों ओर सनसनी फैल गयी और कुछ कुछ अशान्ति भी शुरू हो गयी ।

३० आषाढ़ (१४ जुलाई) को झुण्डके झुण्ड लोग एकत्र हो गये । आत्मरक्षा तथा कोई साहसपूर्ण देशभक्तिका कार्य्य करनेके उद्देश्यसे ये लोग शस्त्र-संग्रहके लिए कृतसंकल्प थे । पेरिसकी पुरानी रक्षिणी सेनाके नेतृत्वमें एक झुण्ड प्राचीन बेस्टील दुर्गकी ओर चला । दुर्गकी दीवारोंपर तोपें चढ़ा दी गयी थीं जिससे नगरके उस प्रान्तके लोग भयभीत हो गये थे। राजनीतिक अपराधों तथा लेटर-डि-कशा (मुहरयुक्त आज्ञा-पत्र) के कैदियोंके रखे जानेके कारण यह दुर्ग बहुत बदनाम हो रहा था । भीड़ भीतर प्रवेश करना चाहती थी पर वह रोक दी गयी और उसपर गोली भी बरसायी गयी जिससे लगभग सौ आदमी धराशायी हो गये । थोड़ी देरतक साहसके साथ आक्रमण करनेपर किलेपर अधिकार होगया । भीड़ बड़े धड़ल्लेके साथ अंधेरी काल-कोठरीकी ओर लपकी । वहाँ उसे सिर्फ सात ही कैदी मिले जिनमेंसे एक तो मानो पागलसा होगया था और एकको यह भी नहीं ज्ञात था कि मैं क्यों कई वर्षोंसे यहाँ सड़ रहा हूँ । भीड़के लोगोंने बड़े उत्साहके साथ इन कैदियोंको मुक्त किया और दुर्गकी दीवारोंको ढाहना शुरू कर दिया ।

इस प्रसिद्ध घटनाको लोगोंने तोड़मरोड़कर दन्तकथाओंमें संभुक्त कर डाला । बेस्टील-पतनकी जयन्ती अब भी फ्रांसमें प्रतिवर्ष राष्ट्रीय त्योहारकी तरह मनायी जाती है । राजाके दरबारियोंके षड्यन्त्रोंसे, जो सुधारके कामोंमें अड़ंगा लगाना चाहते थे, आत्मरक्षा करनेके विचारसे लोगोंका उठ खड़ा होना तथा प्राचीन स्वेच्छाचारिताके स्मारक-चिन्हपर सफल आक्रमण करना स्वातंत्र्य-युगके आरम्भका सूचक था । इस अशान्तिके कारण समृद्ध नागरिक स्वयंसेवकोंको लेकर एक रक्षिणी सेना तैयार की गयी । इस सेनाने शान्ति-रक्षाका

कुल भार अपने ऊपर लेलिया, इससे इस विशेष कार्यके लिए राजाको सेना रखनेका कोई बहाना नहीं रह गया। लेफेयेट इस सेनाका नायक बनाया गया।

पेरिसके शासनका पुनः संघटन किया गया और राष्ट्रीय सभाका एक सदस्य 'कम्यून' (नूतन नगर-शासन) का अध्यक्ष बना दिया गया। नेकरकी बर्खास्तगी तथा वेस्टीलके पतनके बाद फ्रांसके प्रायः सभी नगरोंने राजतंत्र या कुलीन तंत्रको दूर कर या उसके स्थानमें नागरिक सभा स्थापित कर क्रान्तिकी वृद्धि की। एकाएक स्थापित की गयी इन नागरिक सभाओंने पेरिसका अनुगमन कर राष्ट्रीय सेना तैयार कर ली और शान्ति कायम रखी। इस समाचारसे कि राजाने पेरिसकी क्रान्तिका समर्थन किया है, लोगोंको यह धारणा पक्की हो गयी कि अन्यान्य शहरोंके नागरिकोंने शासनका कार्य अपने हाथमें लेकर उचित ही किया है।

श्रावणके आरम्भमें यह आन्दोलन ग्रामोंमें भी पहुँच गया। सारे देशमें एक विचित्र आतंक सा छाया हुआ था; किसानों-के हृदयमें बहुत दिनों तक इसकी भीषणताका स्मरण बना रहा। एक विचित्र अफवाह यह उड़ी कि डाकू लोग आरहे हैं। भयभीत जनताने खतरेका सामना करनेके लिए जहाँ तक हो सका उपाय किया। परस्पर रक्षाके विचारसे पड़ोसके समाज एक दूसरेसे मिल गये। इस आतंकके दूर हो जाने और यह जान लेनेपर कि डाकू नहीं आरहे थे, लोगोंने अपना ध्यान फिर अपने शत्रु—'प्राचीन प्रथा'—की ओर फेरा जो उक्त डाकुओंकी तरह कल्पित नहीं था। किसान लोग गाँवके सार्व-जनिक स्थान या गिरजेमें एकत्र होगये और उन्होंने सामन्तोंकी मालगुजारी न देनेका निश्चय किया। इसके बाद किसानोंने

उनके किले भी भस्मसात कर दिये जिसमें सामन्तोंको दिये जाने वाले लगान या बेगार इत्यादिके कागज नष्ट हो जायँ।

श्रावणके मध्यमें राष्ट्रीय सभाको प्रान्तोंकी भीषण अशान्तिके सम्बन्धमें सूचना मिली। राष्ट्रीय सभाने अपना पहला महत्वपूर्ण सुधार इसी समय आरम्भ किया। एक रात्रि-कालके अधिवेशनमें (१९ श्रावण को) इसने बड़ी सरगर्मीके साथ कृषकदासताके अवशिष्ट चिन्ह तथा सामन्त-प्रथा उठानेका प्रस्ताव पास कर दिया। विशिष्ट वर्गोंके प्रतिनिधि अपने प्राचीन अधिकारोंको त्याग करनेमें एक दूसरेके साथ चढ़ा-ऊपरी करने लगे। कबूतर रखने तथा शिकार करनेका कुलीन जनोंका एकाधिकार उठा दिया गया और किसानोंको यह अधिकार दिया गया कि वे अपने खेतमें आये हुए कबूतरोंका शिकार कर सकते हैं। सभाने अध्यक्षको राजाके पास यह प्रार्थना करनेके लिए भेजा कि वे लोग, जिनको आखेट सम्बन्धी नियम भंग करनेके कारण देश-निर्वासन या नाविक कार्य करनेका दण्ड दिया गया है, बुला लिये जायँ। धर्म-संस्थाका कर उठा दिया गया। कर देनेसे बरी होनेका नियम सर्वदाके लिए उठा दिया गया। यह निश्चय हुआ कि प्रत्येक नागरिककी हर तरहकी सम्पत्तिपर, एक ही तरहसे, एक ही रूपमें कर लिया जायगा और प्रत्येक नागरिक प्रत्येक प्रकारका पद प्राप्त कर सकता है, इसमें उसके वंशका खयाल नहीं किया जायगा। इसके अतिरिक्त, यह जानकर कि प्रान्तोंके लिए उनके विशेषाधिकारोंकी अपेक्षा राष्ट्रीय शासन-विधिका प्रयोग अधिक लाभदायक होगा, और यह जानकर भी कि "राज्यके सभी प्रान्तोंको ऐक्य-सूत्रमें आबद्ध करनेके लिए इन विशेषाधिकारोंको हटा देना आवश्यक है, यह निश्चय किया जाता है कि प्रान्तों,

नगरों, जिलों इत्यादिके आर्थिक या और प्रकारके विशेषाधिकार सदाके लिए उठा दिये जाते हैं और वे फ्रांसीसी विधानमें अंतर्भुक्त कर दिये जाते हैं जो सबके लिए एक सा लागू है।"

इस आदेशपत्रने वह समानता तथा एकरूपता स्थापित कर दी जिसके लिए फ्रांसीसी लोग जमानेसे तरस रहे थे। पहलेकी अन्यायपूर्ण कर-प्रणाली पुनः नहीं चलायी जा सकती थी। सारे फ्रांसके लिए एक ही विधान प्रचलित किये गये और सभी नागरिकोंके साथ, चाहे वे फ्रांसके किसी भी प्रांतके हों, राज्यकी ओरसे एकसे ही वर्तावका नियम रखा गया। फ्रांसका एकीकरण दृढ़ करनेके लिए सभाने एक और काम किया। इसने पहलेके प्रान्तोंको तोड़कर देशको नये सिरेसे सुविधानुसार जिलों—डिपार्टमेंट्स—में विभक्त किया। पहलेके विभागोंकी अपेक्षा इनकी संख्या बहुत अधिक हुई और नदियों तथा पर्वतोंके नामपर इनका नामकरण हुआ। इस प्रकार अब मानचित्रसे सामन्त-कालीन पार्थक्यका नामोनिशान भी मिट गया।

कई दोष-सूचियोंमें यह परामर्श दिया गया था कि एस्टेट्स जनरलको नागरिकोंका व्यक्तिगत अधिकार-पत्र तैयार करना चाहिए। इसके समर्थनमें यह कहा जाता था कि इस उपायसे बुराइयोंका प्रत्यावर्तन तथा स्वेच्छाचारिताके कष्ट सर्वदाके लिए दूर हो जायँगे। फलतः लोगोंको सन्तुष्ट करने तथा नवीन शासन-विधिकी नींव डालनेके विचारसे राष्ट्रीय सभाने इस प्रकारका एक घोषणा-पत्र तैयार करनेका वचन दिया।

यूरोपके इतिहासमें यह घोषणापत्र बहुत महत्वपूर्ण समझा जाता है। इसके प्रथम वार निकलनेपर लोगोंका हृदय उमङ्गसे

भर गया। संवत् १६०५ (सन् १८४८) तक कई बार जो शासन-विधि प्रस्तुत की गयी उसमें प्रत्येक बार यही घोषणा कुछ परिष्कृत रूपमें रखी जाती थी। इतना ही नहीं, यूरोपके कई अन्य राज्योंने भी इसीके अनुकरणमें अपना अपना घोषणापत्र तैयार किया। गत अध्यायमें वर्णित प्रायः सभी बुराइयोंका प्रतीकार इसमें किया गया था। प्रत्येक नियम किसी न किसी ऐसी बुराईको सामने रखकर बनाया गया था जो बहुत दिनोंसे चली आती थी और जिससे जनता सर्वदाके लिए अपना पिण्ड छुड़ाना चाहती थी।

घोषणापत्रमें लिखा गया था कि "जन्मना सभी मनुष्योंका अधिकार एक समान है। सार्वजनिक हितकी दृष्टिसे ही सामाजिक विभेद माना जा सकता है। विधान (कानून) सर्वसाधारणकी इच्छाका द्योतक है। विधान-रचनामें प्रत्येक नागरिकको, स्वयं उपस्थित होकर या प्रतिनिधि द्वारा, भाग लेनेका अधिकार है। सबके लिए एकही कानून होना चाहिए। कानूनका सहारा लिये बिना कोई व्यक्ति न तो अभियुक्त किया जा सकता और न गिरफ़ार या क़ैद ही हो सकता है। किसी भी व्यक्तिके साथ, उसके विचारोंके कारण, चाहे वे धार्मिक हों या और किसी प्रकारके, यदि सर्वसाधारणकी शान्तिमें बाधा न पड़े तो, छेड़छाड़ नहीं की जा सकती। स्वच्छन्दतापूर्वक विचारोंका आदान-प्रदान मनुष्यके बहुमूल्य अधिकारोंमें है। इसलिए प्रत्येक व्यक्तिको आजादीके साथ बोलने या लिखनेका अधिकार है, हाँ, इस स्वाधीनताके दुरुपयोगकी जवाबदेही उसपर अवश्य होगी जिसका निश्चय विधान द्वारा किया जायगा। प्रत्येक व्यक्तिको, स्वयं या प्रतिनिधि द्वारा, सार्वजनिक सहायता (कर) की आवश्यकता निश्चित करने, इसको स्वीकार

करने, इसका कैसा उपयोग हो रहा है यह जानने, सहायताका अनुपात निश्चय करने, कर बैठाने, कर वसूल करनेके तरीके और इसकी अवधि जाननेका हक है। समाज प्रत्येक सरकारी कर्मचारीसे उसके कार्योंका विवरण पूछ सकता है।" जनताके प्रति विज्ञप्ति प्रकाशित कर सभाने यह दावा पेश किया कि "मनुष्योंके अधिकारोंका लोगोंने उलटा अर्थ लगाकर सदियों-से उन्हें कुचला है" इसलिए उसे इस बातका अभिमान है कि "इन अधिकारोंकी पुनः स्थापना इस घोषणामें हो गयी जो अत्याचारियोंके विरुद्ध सर्वदा युद्ध-संकेतका काम देगी।"

'मनुष्योंके अधिकारका घोषणापत्र' स्वीकार करनेमें राजा-को हिचकिचाहट मालूम हुई। १५ आश्विनके करीब यह खबर उड़ी कि राजा दरबारियोंके कहनेमें आकर क्रान्तिका दमन-करनेके लिए पुनः सैन्य-संग्रह कर रहा है। यह भी कहा गया कि वर्सेल्ज़के एक भोजमें नये राष्ट्रीय तिरंगे (लाल, श्वेत और नीले रंगके) झण्डेका अपमान किया गया है। इन बातोंके साथ साथ खाद्यपदार्थोंके अभावने—क्योंकि उस साल फसल खराब हो-गयी थी—पेरिसकी जनताको अशान्त कर दिया।

१८ आश्विनको कई हज़ार स्त्रियोंने, कुछ सशस्त्र सैनिकोंके साथ, वर्सेल्ज़की ओर राजासे भोजन माँगनेके लिए प्रस्थान किया। व्यक्तितः राजामें इन लोगोंका पूरा विश्वास था, हाँ, उसके मित्रों तथा सलाहकारोंको लोग सन्देहकी दृष्टिसे अवश्य देखते थे। लेफेयेट अपनी रक्षिणी सेनाके साथ भीड़के पीछे पीछे जा रहा था पर दूसरे दिन प्रातःकाल जब कुछ नीच मनु-ष्योंने राजप्रासादपर आक्रमण कर रानीको, जो बहुत ही अप्रिय हो रही थी, अत्यन्त घायल कर दिया तो उसने उनको नहीं रोका। लोगोंका यह विश्वास था कि रानीका हृदय अभी

आस्ट्रियायी ही बना हुआ है और क्रान्तिके विरोधियोंसे उसकी साज़िश है ।

भीड़ने राजाको अपने साथ पेरिस चलनेके लिए बाध्य किया । इसमें राजाके प्रति अभक्तिकी कोई बात नहीं थी, उन-लोगोंकी यह धारणा थी कि राजपरिवारके साथ रहनेसे हम-लोगोंको सफलता और उन्नति प्राप्त होगी । इसलिये वे प्रसन्न-तापूर्वक "नानबाई, उसकी स्त्री और उसके पुत्रको"—क्योंकि मज़ाकमें वे लोग राजा, रानी तथा राजकुमारके लिए यही नाम प्रयुक्त करते थे—टुलरिज राजप्रासादमें ले गये । राजा, जैसा कि बादमें सिद्ध हुआ, वहाँ कैदीकी सी हालतमें रहने लगा । राष्ट्रीय सभाके सदस्य भी शीघ्र ही वहां पहुँच गये और टुलरि-जके समीप ही एक विद्यालयमें सभाका अधिवेशन करने लगे ।

राजा तथा राष्ट्रीय सभाका स्थान-परिवर्तन क्रान्तिका पहला दुर्भाग्य था । ऐसे संकटके समय शासनका काम पेरिसकी क्षुब्ध जनताके कुछ नेताओंके हाथमें पड़ गया ।

पहले कहा जा चुका है कि फ्रांसकी धर्मसंस्थाके पास प्रचुर सम्पत्ति थी और उसके अधिकांश मध्ययुगीय विशेषा-धिकार भी ज्योंके त्यों बने हुए थे । इसके उच्च कर्मचारी अर्थात् विशपों और मठाधीशोंको करसे बहुत अधिक आय थी और एकही पादरी प्रायः कई अच्छे पदोंको प्राप्त कर लेता था पर वह अपने कर्त्तव्य-पालनकी ओर ज़रा भी ध्यान नहीं देता था । इसके प्रतिकूल धर्मचक्र (पैरिश) के पुरोहित, जिन्हेंही वास्त-वमें धर्मसंस्था सम्बन्धी कई महत्वपूर्ण कार्य करने पड़ते थे, मुश्किलसे निर्वाह योग्य द्रव्य पाते थे । धर्मसंस्थाकी आयके इस अनुचित वितरणसे यह खयाल हुआ कि यदि इसकी सम्पत्ति राज्यमें मिला ली जाय तो परिश्रम करने वालोंको

उचित पारिश्रमिक दिया जा सकेगा और साथ ही साथ आर्थिक कठिनाइयोंको दूर करनेके लिए सरकारको भी एक अच्छी रक़म मिल जायगी। जिन लोगोंकी वाल्टेयरके प्रति सहानुभूति थी उन्हें प्राचीन शत्रु—धर्मसंस्था—को स्वातंत्र्यवंचित और राज्याश्रित होते देख बड़ी प्रसन्नता हुई और कई अच्छे कैथलिकोंकी भी यही आशा थी कि इस नयी पद्धतिसे बहुत कुछ उन्नति हो जायगी।

भाद्रपदमें ही सामन्तोंको दिये जाने वाले लगानके साथ साथ धार्मिक कर भी उठा दिया गया था। इससे धर्मसंस्थाको वार्षिक तीन करोड़ डालरकी घटी हुई। १६ कार्तिक (२ नवम्बर) को यह आज्ञा निकाली गयी कि "धर्मसंस्थाकी सारी सम्पत्ति राष्ट्रके अधीन कर दी जाती है बशर्ते कि यह धार्मिक कार्योंके सम्पादनके लिए उचित व्यय करे, कार्यकर्त्ताओंका भरणपोषण करे और दीनोंका त्राण करे।" इस आज्ञासे बिशप तथा पुरोहित लोग अपनी धर्मसंस्था सम्बन्धी आयसे वंचित हो कर राष्ट्रप्रदत्त वेतनके आश्रित हो गये। महंतों, मठाधीशों इत्यादिकी भी सम्पत्ति छीन ली गयी।

अब राष्ट्रीय सभाने गृहीत भूमिकी जमानतपर कागजी सिक्के निकालनेका निश्चय किया। राज्यक्रान्तिके समयमें इन कागजी सिक्कोंके सम्बन्धमें कई प्रकारकी बातें सुननेमें आती थीं। शीघ्र ही इनके मूल्यका पतन होने लगा और अन्ततः बादके सात वर्षोंके अन्दर ४० अरब फ्रांकके कागजी सिक्कोंका अधिकांश रद्द कर दिया गया।

सभाने अब धर्मसंस्थाके पुनः संघटनकी ओर ध्यान दिया। धर्मसंस्था सम्बन्धी जटिलताको हल करने और उसमें एकरूपता लानेके लिए लोग कितने चिन्तित थे यह इसीसे प्रकट

है कि फ्रांसकी सबसे अधिक आदरणीय संस्थाके साथ, जिसकी रस्मोंको लोग बहुत प्राचीन कालसे धार्मिक श्रद्धापूर्ण दृष्टिसे देखते थे, राष्ट्रीय सभा किस धींगाधींगीसे पेश आयी। १३४ बिशपियोंके स्थानमें, जिनमेंसे कुछ रोमसाम्राज्यके समयसे चली आती थीं, केवल ८३ बिशपियाँ अर्थात् जितने भागोंमें फ्रांस विभक्त हुआ था उतनी ही रखी गयीं। प्रत्येकमें एक एक बिशपकी नियुक्ति हुई। बिशपका चुनाव जनता द्वारा होता था और वह राज्यकर्मचारी समझा जाता था। पुरोहितोंका चुनाव भी जनता ही करती थी, पर इन लोगोंका वेतन बहुत अधिक बढ़ा दिया गया, यहाँ तक कि छोटे छोटे ग्रामोंके भी पुरोहित प्राचीन प्रथाके समयसे दूना वेतन पाने लगे।

धर्मसंस्थाको इस प्रकार मुल्की शासन-विधिका रूप देना राष्ट्रीय सभाकी पहली बड़ी भूल थी। इसमें कोई संदेह नहीं कि अर्द्ध-सामन्तीय धर्मसंस्थाके लिए सुधारकी बड़ी आवश्यकता थी पर ये सुधार ऐसे हज़ारों मनुष्योंको जिन्होंने राष्ट्रीय सभाके सुधारोंका अभीतक जोरोंसे समर्थन किया था, भड़काये या शत्रु बनाये विना ही, हो सकते थे। राजाने इसपर अपनी स्वीकृति तो दे दी पर यह स्वीकृति उसके अंतःकरणके सर्वथा प्रतिकूल थी। इस समयसे वह क्रान्तिका कट्टर शत्रु हो गया।

नयी पद्धतिसे पादरियोंके हृदयमें जो असन्तोष उत्पन्न हुआ उसने सभाको दूसरी भारी भूल करनेके लिए बाध्य किया। इस पद्धतिके अनुसार पादरीको यह शपथ लेनी पड़ती थी कि मैं कानूनका पालन करूँगा और सभाकी बनायी हुई शासनविधिको कायम रखनेके लिए यथाशक्ति प्रयत्न करूँगा। केवल छः बिशपों और निम्न श्रेणीके केवल तृतीयांश पादरियोंने ऐसा करना

कबूल किया। ४६ हजार धर्मचक्रके पादरियोंने अपनी धार्मिक भावनाको तिलांजलि देनेसे इनकार कर दिया। पोपने भी शीघ्र ही इस प्रकारकी शपथ लेनेसे उन्हें मना कर दिया। ज्यों ज्यों समय व्यतीत होता गया, इन शपथ न लेने वाले पादरियोंपर सरकारकी ओरसे कड़ाई बढ़ती गयी और इस प्रकार पैशाचिक शासनजनित भीषणताओंके लिए मार्ग तैयार होता गया। जो लोग अपने अधिकारोंसे वञ्चित हुए थे उनके अतिरिक्त बहुसंख्यक लोगोंकी यह धारणा हो गयी कि अब क्रान्तिका उद्देश्य स्वाधीनता, शान्तिकी रक्षा एवं प्राचीन कालागत बुराइयोंको दूर करना तो नहीं बल्कि अधर्म, हिंसा तथा पहलेसे भी बदतर नये नये प्रकारके अत्याचार करना है।

अध्याय ३६

फ्रांसका प्रथम प्रजातंत्र।

प्राचीन शासनका अन्त कर नवीन फ्रांसका निर्माण करने वाली क्रान्तिकी प्रगति और प्रवृत्तिका हाल हम पिछले अध्यायमें लिख चुके हैं। क्रान्तिने अनुचित विशेषाधिकारों, परेशान करनेवाली बेतरतीबियों तथा स्थानीय असमानताओंको दूर कर देशके शासनमें प्रजा-को भी अधिकार दिलाया। इस बृहत् सुधारके कार्यमें कोई भीषण गड़बड़ी उपस्थित नहीं हुई और धार्मिक संस्था सम्बन्धी कुछ परिवर्तनोंको छोड़कर सुधार सम्बन्धी शेष कार्योंका फ्रांसीसी जनताने बड़े उत्साहके साथ स्वागत किया।

इस स्थायी, शान्तिपूर्ण क्रान्ति या सुधारके पश्चात् एक अचिन्तित हिंसात्मक क्रान्ति प्रारम्भ हुई जिसने कुछ कालके लिए फ्रांसीसी राजतंत्रको नष्ट कर दिया। इसने बहुतसे परिवर्तन शुरू किये जिनमें अधिकांश अव्यावहारिक और अनावश्यक थे, ये टिकनेवाले भी नहीं थे क्योंकि इनको केवल कुछ प्रमादी नेताओंने ही स्वीकृत किया था। साथ ही साथ फ्रांसको पश्चिमी यूरोपके अधिकांश राष्ट्रोंके साथ युद्धमें प्रवृत्त होना पड़ा। शासनकी कमजोरीके कारण देशमें गड़बड़ी और प्रमादका राज्य फैला हुआ था। इस कमजोरीके साथ यूरोपीय राष्ट्रोंके सम्मिलित आक्रमणके आतंकने पैशाचिक शासन उत्पन्न कर दिया। राष्ट्रीय जोश तथा अशान्तिमें कुछ काल व्यतीत होनेके बाद फ्रांसने एक ऐसे विदेशीको अपना शासक

कबूल किया जो पूर्ववर्ती राजाओंसे भी कहीं अधिक स्वेच्छाचारी था। फिर भी नेपोलियनने संवत् १८४६ (सन् १७८९) के महत्त्वपूर्ण कार्योंपर पानी नहीं फेर दिया। उसकी प्रधान इच्छा यही थी कि यूरोपके अन्य भागोंमें भी क्रान्तिजनित लाभोंको येनकेन प्रकारेण पहुँचाया जाय। नेपोलियनके पतनके बाद जब १६ वें लूईका भाई सिंहासनासीन हुआ तो उसका पहला काम जनताको शुद्ध हृदयसे यह विश्वास दिलाना था कि मैं पहली क्रान्तिके सभी महत्त्वपूर्ण सुधारोंकी रक्षा करूँगा।

इधर तो प्रायः सारी प्रजा राष्ट्रीय सभाकृत सुधारोंपर आनन्द मना रही थी और बेस्टील-पतनके वार्षिकोत्सवके उपलक्ष्यमें पेरिसमें एक राष्ट्रीय त्योहार मनाकर अपना सन्तोष प्रकट कर रही थी, उधर फ्रांसके कुलीन लोग देश-परित्यागका विचार कर रहे थे। राजाके छोटे भाई आर्टवाके काउण्टने सर्वप्रथम फ्रांसका परित्याग किया। अन्य बहुतसे लोगोंने भी उसीका अनुकरण किया क्योंकि ये लोग राष्ट्रीय सभा द्वारा दुर्गोंके भस्मीकरण, अधिकारोंके अपहरण तथा वंशानुगत कुलीनताके पदके उन्मूलनसे बहुत ही भयभीत हो गये थे। शीघ्र ही ये देशत्यागी कुलीन, जिनमें कई सैनिक अफसर भी थे, राइनके उस पार एक सेना तैयार कर आर्टवाकी अध्यक्षतामें फ्रांसपर आक्रमण करनेका उपाय करने लगे। आर्टवा आस्ट्रिया, प्रशा तथा किसी भी अन्य विदेशी सरकारसे, यदि वह क्रान्तिको नेस्तनाबूद कर फ्रांसीसी नरेशको एकाधिपत्य तथा सरदारोंको उनके पहले अधिकार दिलानेमें सहायता कर सके तो, मित्रता करनेके लिए तैयार था।

प्रवासी कुलीनोंकी धमकी और सरकशी तथा विदेशी शक्तियोंके साथ उनके लज्जापूर्ण पत्र-व्यवहारके कारण उन

कुलीन लोगोंकी, जो अभी फ्रांसमें ही रह गये थे, बड़ी बदनामी हुई। लोगोंको यह सन्देह होने लगा कि राजा और विशेषकर रानी, जिसका भाई आस्ट्रियन साम्राज्यका सम्राट् और शासक है, भागे हुए लोगोंके प्रयत्नोंके समर्थक हैं। इसके तथा शपथ न लेने वाले पादरियोंके विरोधके कारण "पैट्रियट" (देशभक्त) लोगोंमें और उन लोगोंमें, जिनके बारेमें प्राचीन प्रथाको पुनः स्थापित करनेके लिए चुपके चुपके एक क्रान्ति खड़ी करनेका अनुमान किया जाता था, गहरी शत्रुता पैदा हो गयी।

राज-परिवारके पेरिससे चुपकेसे भागनेके समय (जून, १७९१) लोगोंकी शंका सत्य सी प्रतीत होने लगी। पादरियोंके सम्बन्धकी मुल्की-शासन-विधिपर अनिच्छापूर्वक हस्ताक्षर करनेके बादसे राजाके विचारमें भाग जाना ही एक मात्र उपाय देख पड़ता था। क्रान्तिके साथ अब उसकी सहानुभूति भी नहीं थी। उसे यह आशा थी कि यदि मैं पेरिससे भागकर उत्तर-पूर्वी सीमापर रखी गयी सेनासे जा मिलूँ तो आस्ट्रिया-नरेशके दिखाऊ आक्रमणकी सहायतासे क्रान्तिकी प्रगतिको रोक सकूँगा। यह सच है कि राजा भागे हुए लोगोंको नहीं चाहता था और उनकी नीतिको दिलसे नापसन्द करता था, उसे यह भी विश्वास न था कि प्राचीन प्रथा पुनः स्थापित हो सकेगी, किन्तु दुर्भाग्यवश उसने उसी सीमापर पहुँचने-का प्रयत्न किया जहाँ प्रवासी लोग इकट्ठे हुए थे। राजा अपनी स्त्रीके साथ मार्गमें ही गिरफ्तार हो गया और शीघ्रही पेरिस पहुँचाया गया।

राजाके देश-त्यागके प्रयत्नसे लोगोंके हृदयमें क्रोधके बदले भयका सञ्चार हो गया। १६ वें लूई जैसे निर्बल शासकके चले जाने और पुनः मिल जानेसे जो शोक और आनन्द फ्रांसीसी जन-

ताको हुआ उससे यह बात स्पष्ट हो गयी कि लोगोंमें अभी राजभक्तिकी कमी नहीं हुई थी। राष्ट्रीय सभाने यह बहाना किया कि राजा स्वयं भाग कर नहीं गया था प्रत्युत दूसरे ही लोग उसको लेकर भाग गये थे। इस बातसे साधारणतः लोग सन्तुष्ट हो गये, फिर भी फ्रांसमें कुछ ऐसे लोग थे जो राजाको च्युत करनेके पक्षमें थे। इस प्रकार फ्रांसमें पहली ही बार प्रजातन्त्रवादी दलकी उत्पत्ति हुई, यद्यपि इस दलमें अभी बहुत कम लोग थे।

गत दो वर्षोंसे जिस नयी शासन-विधिके अनुसार काम हो रहा था उसे राष्ट्रीय सभाने पूर्ण कर दिया और राजाने भी ईमानदारीके साथ उसे माननेकी शपथ ली। इसके बाद क्षमा-प्रदानकी घोषणा निकाली गयी, और गत मासोंके पारस्परिक सन्देह तथा मतभेद भूल जानेके लिए कहा गया। राष्ट्रीय सभाने अपना निश्चित कार्य पूर्ण कर दिया। व्यक्तियोंके किसी एक समुदायने शायद इतना महत्त्वपूर्ण कार्य कभी नहीं किया होगा। इसने फ्रांसका पुनः निर्माण किया और उसके लिए व्यापक शासनविधि निश्चित कर दी। शासन-विधिकी धाराके अनुसार अब यह राष्ट्रीय सभा नियमानुकूल व्यवस्थापक सभाको स्थान देनेके लिए तैयार थी। निदान संवत् १८४८ के १५ आश्विनको व्यवस्थापक सभाकी पहली बैठक हुई।

महत्त्वपूर्ण कार्योंका सम्पादन करने पर भी राष्ट्रीय सभाने फ्रांसको एक भयंकर संकटमें लाकर छोड़ दिया। बाहर चले गये कुलीनोंके अतिरिक्त शपथ न लेने वाले पादरियोंका दल था जो फ्रांसमें ही मौजूद था, इनके साथ ही साथ राजा भी सहायता पानेकी आशासे बाहरी शक्तियोंके साथ गुप्त रूपसे पत्र-व्यवहार कर रहा था। जब राजा तथा रानीके पकड़े जानेकी

सूचना आस्ट्रिया-नरेश, द्वितीय लियोपोल्डको मिली तो उसने कहा कि फ्रांसमें अबतक जो कुछ हुआ है उसपर राजाकी गिर-फ़ारीने 'गैरकानूनी'की मुहर लगा दी और सभी राजाओंकी प्रतिष्ठा तथा राज्योंकी सुरक्षाका प्रश्न इसके साथ सम्बद्ध हो गया। तदनुसार उसने रूस, इंग्लैंड, प्रशा, स्पेन, नेपल्स तथा सार्डिनियाके शासकोंसे परस्पर सलाह कर यह निश्चय करनेके लिए अनुरोध किया कि किस प्रकार फ्रांसके धर्मात्मा राजा तथा उसके परिवारकी स्वाधीनता और प्रतिष्ठा पुनः लौटायी जाय और क्रान्तिकी भयंकर ज्यादतियाँ रोकी जायँ क्योंकि इस प्रकारके विनाशकारी उदाहरणको दबाना प्रत्येक राज्यका कर्त्तव्य है।

ग्यारह भाद्रपद (२७ अगस्त) को लियोपोल्डने प्रशाके नरेशके साथ पिलनिजकी प्रसिद्ध घोषणा निकाली। इसमें इन लोगोंने यह घोषित किया कि राजाके भाइयों (प्रवासियोंके नेताओं) के इच्छानुसार हमलोग अन्यान्य यूरोपीय राजाओंके साथ मिलकर फ्रांसीसी नरेशको उस परिस्थितिमें लानेका प्रयत्न करनेके लिए तैयार हैं जिसमें वह फिर राजाओंके योग्य अधि-कारोंके अनुकूल शासन-प्रणाली स्थापित कर सके और फ़्रांसीसी जनताका हित-साधन कर सके। इसीके साथ उन्होंने अपनी सेनाको युद्धके लिए प्रस्तुत होनेकी भी आज्ञा दी।

यह घोषणा धमकीके अतिरिक्त और कुछ नहीं थी, पर इससे फ्रांसीसी लोगोंको यह विश्वास हो गया कि नरेश लोग फ्रांसीसी जनताकी इच्छाके विरुद्ध रक्तकी नदी बहाकर पुरानी प्रथा पुनः स्थापित करनेमें राज्यविद्रोही कुलीनोंको सहायता देनेके लिए तैयार हैं। यदि नये सुधारोंपर कोई संकट पहुँ-चनेकी सम्भावना न भी रहती तो भी फ्रांसीसियों जैसे

स्वाभिमानी लोगोंके लिए आभ्यन्तर कार्योंमें विदेशी नरेशोंका हस्तक्षेप सर्वथा असह्य था। यदि मित्र नरेश १६वें लूईको सिंहासनपर कायम रखनेके बजाय उसे सिंहासनच्युत हुआ देखा चाहते तो पिलनिट्ज़की घोषणासे अधिक प्रभावकारी और कोई साधन उन्हें नहीं प्राप्त होता।

एस्टेट्स जनरलकी बैठकके बाद कई समाचार-पत्र निकलने लगे थे। इन पत्रोंने, विशेषकर पेरिसके पत्रोंने, राजनीतिक जोश और क्रान्तिके लिए उत्साह बनाये रखा। संवत् १८४६ के पूर्वकी तरह जनता अब केवल समय समयपर निकलने वाले पर्चोंपर ही अवलम्बित नहीं थी। भिन्न भिन्न विषयोंके पत्र प्रकाशित होने लगे थे जिनमें विभिन्न विचारोंका प्रतिपादन होता था। उनमेंसे कुछमें तो एक ही व्यक्ति द्वारा लिखित सामयिक सम्पादकीय टिप्पणियोंके अतिरिक्त और कुछ नहीं होता था। कुछ पत्र आधुनिक पत्रोंके सदृश भी थे और उनमें समाचार, राष्ट्रीय सभाकी रिपोर्टें तथा विवरण और नाटकोंके विज्ञापन आदि भी रहते थे। कुछ पत्र सचित्र भी होते थे। उनमें सामयिक घटनाओंके चित्र, विशेषकर व्यञ्जक चित्र, बड़े ही मनोरञ्जक होते थे।

राजनीतिक संस्थाएँ भी बहुत सी स्थापित हुई थीं, जिनमें जैकोबिन लोगोंकी संस्था सर्वप्रसिद्ध थी। जब राष्ट्रीय सभा पेरिसमें स्थानान्तरित हो गयी तो सर्वसाधारणके कुछ प्रान्तीय प्रतिनिधियोंने, राष्ट्रीयसभा-भवनके निकट ही, जैकोबिन लोगोंके मठमें एक बड़ा कमरा किरायेपर ले लिया। इसके पहले अधिवेशनमें राष्ट्रीय सभाके १०० सदस्य सम्मिलित हुए थे, दूसरे दिन यह संख्या दूनी हो गयी। इस संस्थाका उद्देश्य उन्हीं प्रश्नोंपर विचार करना था जो राष्ट्रीय सभाके सामने पेश होने

वाले होते थे। सभा यह पहले ही निश्चित कर लेती थी कि इसके सदस्योंकी नीति क्या होगी और उन लोगोंको किस प्रकार वोट देना चाहिये। इस प्रकार ये सदस्य राष्ट्रीय सभाके कुलीन दलकी योजनाओंको विफल करनेके लिए एक हो जाते थे। संस्था शीघ्रतासे उन्नति करने लगी और इसके अधिवेशनोंमें सदस्येतर लोग भी सम्मिलित होने लगे। संवत् १८४८ के कार्तिकमें इसने वादविवादमें सर्वसाधारणको भी सम्मिलित हो सकनेका अधिकार देनेका निश्चय किया।

अन्य अन्य प्रान्तोंमें भी इस प्रकारकी संस्थाएँ धीरे धीरे कायम होने लगीं। इन सबने पेरिसकी प्रधान संस्थासे अपनेको संबद्ध कर लिया और बराबर उसके साथ पत्र-व्यवहार इत्यादि करती रहीं। इस प्रकार पेरिसके जैकोबिन लोग सारे फ्रांसमें अपने विचारोंको फैलाने और जनताके विचारोंपर नियंत्रण रखने लगे और साथ ही साथ प्राचीन प्रथाके विरोधियोंको सतर्क रखने लगे। व्यवस्थापक सभाके बैठने तक जैकोबिन लोग प्रजातंत्रवादी नहीं हुए थे पर उनका विश्वास था कि राजाका अधिकार किसी प्रजातंत्रके प्रधानसे अधिक नहीं होना चाहिए। यदि राजा क्रान्तिका साथ देनेसे इनकार करे तो वे उसे च्युत करनेको भी तैयार थे।

प्रवासी कुलीन जनों तथा शपथ-विरोधी पादरियोंके लिए व्यवस्थापक सभाने जो कठोर आदेश निकाले उनके कारण राष्ट्रमें और भी विद्वेषकी वृद्धि हुई। सीमाप्रान्तमें एकत्र हुए फ्रांसीसी लोगोंपर देशके विरुद्ध षड्यन्त्र रचनेका सन्देह प्रकट किया गया और यह आदेश निकाला गया कि यदि वे लोग १७ पौष १८४८ (१ जनवरी १७९२) तक फ्रांसमें वापस न चले आवेंगे तो देश-द्रोही समझे जायँगे और पकड़े जानेपर

प्राणदण्ड पावेंगे, साथही उनकी सम्पत्ति भी जब्त कर ली जायगी।

प्रवासी कुलीनोंके प्रति सभाका उग्र बर्ताव किसी प्रकार क्षम्य भी कहा जा सकता था क्योंकि उन्होंने देशका परित्याग किया था तथा इसके विरुद्ध षड्यन्त्रकी रचना की थी, पर पादरियोंके प्रति उसका बर्ताव अन्यायपूर्ण तथा राजनीतिक दृष्टिसे अनुचित था। जिन पादरियोंने सभाकी चलायी पद्धतिको माननेकी शपथ लेनेसे इनकार कर दिया—क्योंकि यह उनकी धार्मिक भावना और पोपकी आज्ञाके प्रतिकूल थी—उन्हें यह आज्ञा दी गयी कि यदि तुम लोग एक सप्ताहके अन्दर शपथ न लोगे तो राज्यकी ओरसे जो वृत्ति मिलती है वह बन्द कर दी जायगी और सन्दिग्ध अपराधीकी तरह तुमपर कड़ी नजर रखी जायगी। इस कड़ी आज्ञासे भी ये पादरीलोग विचलित नहीं हुए, फलतः संवत् १८४९ में उन पादरियोंको देश-निर्वासनका दण्ड दे दिया गया जो, पादरियोंके लिए बनायी गयी मुल्की शासनविधि स्वीकार करनेसे दृढ़तापूर्वक इनकार करते रहे। इस प्रकार सभाने उन अधिकांश निम्नपदस्थ समझदार पादरियोंके साथ, जिन्होंने विशिष्ट वर्गोंके विरुद्ध कलहमें सभाका समर्थन किया था, घोर शत्रुता पैदा कर ली। बहुतसे ईमानदार कैथलिकों—व्यापारी, शिल्पी तथा कृषक इत्यादिकों—के हृदयमें, जिन्ह ने पुरानी दूषित प्रथाओंका उठाया जाना तो प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार कर लिया था पर अपने धार्मिक नेताओंको छोड़नेके लिए तैयार नहीं थे, सभाके प्रति अब जरा भी विश्वास नहीं रहा।

एक वर्षके अस्तित्व-कालमें व्यवस्थापक सभाका सबसे प्रसिद्ध काम आस्ट्रिया साथ शीघ्रतापूर्वक युद्ध छेड़ देना

था । उसको इसका अनुमान भी नहीं था कि यह उस युद्धका श्रीगणेश है जो क्रान्तिकारी फ्रांस और शेष पश्चिमी यूरोपके बीच, नाममात्रके अन्तरके साथ, बीस वर्षतक जारी रहा ।

व्यवस्थापक सभाके कई नेताओंको वर्तमान परिस्थिति असह्य प्रतीत होती थी। प्रवासी कुलीन लोग फ्रांसकी सीमापर सैन्यसंग्रह कर रहे थे और इन लोगोंने आस्ट्रिया तथा प्रशाको फ्रांसकी कार्यवाहीमें हस्तक्षेप करनेके लिए राजी भी किया था । सभाको यह भी सन्देह हुआ कि लूई विदेशी शासकोंके साथ साजिश कर रहा है और यदि वे लोग बीचमें पड़कर उसका स्वेच्छाचारी शासनतंत्र पुनः स्थापित कर दें तो उसे बड़ी प्रसन्नता होगी । सभाके सदस्योंने यह सुझाया कि यदि नृशंस आस्ट्रियाके साथ युद्ध छेड़ दिया जाय तो सारा राष्ट्र एक हो जायगा और राजाका भी असली रंग खुल जायगा क्योंकि इस हालतमें उसके लिए दो ही मार्ग रह जायँगे, या तो वह राष्ट्रका नायक बनेगा अथवा जैसा कि हम लोगोंका सन्देह है, अपनेको देशद्रोही प्रमाणित करेगा ।

व्यवस्थापक सभाके चिल्लाहट मचानेपर राजाने बड़े व्यथित हृदयसे आस्ट्रियाके साथ युद्धकी घोषणा की (एप्रिल, १७९२) । फिर भी राजाके प्रति लोगोंकी अप्रियता बढ़ती ही गयी । उसने सभाकी कुछ योजनाओंको मंजूर करनेसे इनकार कर दिया और उन मंत्रियोंको पृथक् कर दिया जो सभा द्वारा जबरदस्ती उसके गले मढ़े गये थे । (जून मासमें) पेरिसकी एक भीड़ने टुलरिज प्रासादपर आक्रमण कर दिया । यदि राजा "पेट्रियट" (देशभक्त) लोगोंका चिन्ह, स्वतंत्रताकी टोपी, धारण करना कबूल न करता तो उसकी जान जानेमें ज़रा भी सन्देह न था ।

फ्रांसकी ओरसे युद्ध-घोषणा होनेपर प्रशाने शीघ्रही आस्ट्रियाके साथ मैत्री कर ली। दोनोंने अपनी अपनी सेना तैयार कर फ्रांसपर आक्रमण करनेके लिए प्रस्थान किया। यह देख प्रवासी कुलीन लोग बड़े प्रसन्न हुए और उन लोगोंके साथ जा मिले। आस्ट्रियाके नेदरलैंड्जमें पैर जमानेका फ्रांसीसियोंका प्रथम प्रयत्न असफल रहा और सैनिकों तथा लोगोंने उन कुलीनोंपर, जो फ्रांसीसी सेनाके नायक थे, देश-द्रोहका अपराध लगाया। मित्रदल ज्यों ज्यों फ्रांसकी सीमाके निकट पहुँचता गया त्यों त्यों यह बात स्पष्ट होती गयी कि राजा फ्रांसकी रक्षा करनेमें नितान्त असमर्थ है। अब सभा उसे सिंहासनच्युत करनेके प्रश्नपर विचार करने लगी। प्रशाकी सेनाके नायक, ब्रंजविकके ड्यूकने राजाको सहायता पहुँचानेकी बड़ी बुरी तरकीब सोची। उसने एक घोषणा निकालकर यह धमकी दी कि यदि राजाको किसी किस्मका नुकसान पहुँचाया गया तो मैं पेरिस नगरको मटियामेट कर दूँगा।

पेरिसकी जनता इस घोषणासे क्रुद्ध हो उठी और आवेशमें आकर २५ श्रावण १८४९ (१० अगस्त १७९२) को उसने टुलरिज प्रासादपर पुनः आक्रमण कर दिया। राजाको विवश होकर उस भवनमें आश्रय लेना पड़ा जहाँ व्यवस्थापक सभा अपना अधिवेशन कर रही थी। जिन लोगोंने आक्रमण करवाया था वे लोग राजाका अन्त कर प्रजातंत्र स्थापित करनेपर तुले हुए थे इन लोगोंके एक समुदायने नगरके सार्वजनिक भवनपर अधिकार कर लिया और नागरिक सभाके पुराने सदस्योंको निकाल बाहर कर शासन-सूत्र अपने हाथमें कर लिया। इस प्रकार पेरिसकी नागरिक सभाके सदस्य उस क्रान्तिके नेता बन गये जिसने प्रथम फ्रांसीसी प्रजातंत्रकी स्थापना की।

प्रजातंत्रकी स्थापनाके विषयमें व्यवस्थापक सभा पेरिस-की नागरिक सभासे सहमत थी। यह भी प्रस्ताव किया गया कि यदि फ्रांसका शासन बिना राजाके ही होगा तो हालमें ही तैयार की गयी राजतंत्र-शासन-विधिके स्थानमें प्रजातंत्र-शासन-विधि तैयार करनी चाहिए। तदनुसार व्यवस्थापक सभाने यह निश्चय किया कि सर्वसाधारण द्वारा चुने गये प्रतिनिधियों-की एक विधिविहित विशेष प्रतिनिधि-सभा आमंत्रित की जाय और उसे नयी शासन-पद्धति तैयार करनेका काम सौंपा जाय। ५ आश्विन (२१ सितम्बर) को विशेष प्रतिनिधि-सभा-की पहली बैठक हुई। इसने पहला काम यह किया कि राज-तंत्रको दूर कर प्रजातंत्रकी घोषणा की। उस समयके उत्साही लोगोंको यह प्रतीत होता था कि ाधीनताका युग आरम्भ होगया और अत्याचारियोंके अत्याचारोंसे सर्वदाके लिए पिंड छूट गया। संवत् १८४६ के १६ आश्विनको (२२ सितम्बर सन् १७६२) फ्रांसीसी स्वाधीनताका प्रथम दिन माना गया।

इसी बीचमें अधिकारोंका अपहरण करनेवाली पेरिसकी नागरिक सभाने कार्यभार अपने हाथमें ले लिया था। इसने एक महा जघन्य काम कर स्वाधीनताका नाम कलंकित कर दिया। इस बहाने कि पेरिस नगर ऐसे देशद्रोहियोंसे भरा है जो आस्ट्रियावालों तथा प्रवासी कुलीनोंके प्रति सहानुभूति दिखलाते हैं, उसने तीन हज़ार निर्दोष व्यक्तियोंको कैदखानेमें डाल दिया। १७, १८ भाद्रपदको इनमेंसे कई सौ व्यक्तियोंको नागरिक सभाने नाममात्रके न्यायका स्वांग रचकर मार डाला। इसके कई सदस्योंको, जिन्होंने यह नीच कार्य किया, यह आशा थी कि इस कार्यसे पुरानी शासन-पद्धतिके पक्षपाती लोग भयभीत हो जायँगे।

१५ भाद्रपदके लगभग प्रशाकी सेनाने फ्रांसकी सीमा पार की। १७ भाद्रपदको उसने वर्डूनका दुर्ग ले लिया। इस समय ऐसा प्रतीत होता था कि इसको पेरिसपर आक्रमण करनेसे रोकनेका कोई उपाय नहीं है। किन्तु फ्रांसीसी सेनापति डुमूरीने उक्त सेनाका मार्ग रोका और जमकर युद्ध किये बिना ही शत्रुको पीछे हटनेके लिए विवश किया। यद्यपि फ्रांसीसी भयभीत होगये थे, तोभी प्रशा-नरेशको इस युद्धमें दिलचस्पी ही न थी। साथ ही आस्ट्रियाकी सेना बहुत दूर पीछे पड़ी हुई थी। इसके अतिरिक्त इन दोनों शक्तियोंका ध्यान पोलैंडके दूसरे बटवारेकी ओर लगा हुआ था, फ्रांसीसी नरेशके भाग्यकी उन्हें उतनी चिंता न थी। अब फ्रांसीसियोंने जर्मनीपर आक्रमण किया और राइन-तटस्थ कई नगरोंको ले लिया। मायन्स नामक नगरने तो आक्रमणकारियोंके लिए प्रसन्नतापूर्वक नगरके द्वार खोल दिये। फ्रांसीसियोंने स्पेनके नेदरलैंड्ज और सेवायपर भी अधिकार कर लिया।

इस समय विशेष प्रतिनिधि सभा हैरान थी कि राजाके सम्बन्धमें क्या निश्चय किया जाय। अधिकांश लोगोंके मतानुसार राजा देश-द्रोहका अपराधी था क्योंकि उसने गुप्तरूपसे अपनः सहायताके लिए विदेशी शक्तियोंको उत्साहित किया था। राजापर अभियोग चलाया गया और केवल अल्प बहुमतसे ही उसे प्राणदण्डको आज्ञा दी गयी। ८ माघ संवत् १८४६ (२१ जनवरी १७६२) को उसका शिरश्छेद किया गया। मरते दमतक उसके मुखपर म्लानता नहीं आयी। उसने अपनी पहलेकी कमजोरियों और अस्थिर बुद्धिके कारण ही फ्रांस तथा यूरोपपर विपत्तिका पहाड़ ढाह दिया। फ्रांसीसी लोगोंको प्रजातंत्र स्थापित करनेका स्वप्नमें भी खयाल न था।

राजाकी अत्यधिक अयोग्यताने ही उन्हें, आत्मरक्षाके लिए, योग्यतर शासन-प्रणालीकी आशामें राजतंत्रका अन्त करनेके लिए विवश किया।

फ्रांसीसी सेना जो विजयपर विजय प्राप्त कर रही थी उसके मदमें आकर प्रतिनिधि-सभाने यह घोषणा की कि यह नवीन प्रजातंत्र किसी भी ऐसे देशको सहायता देनेके लिए तैयार है जो राजतंत्रके बन्धनसे मुक्त होना चाहता हो। इसने अंग्रेजोंको भी प्रजातंत्र स्थापित करनेका परामर्श दिया। एक फ्रांसीसी सचिवने तो यहाँतक कहा था कि "हमलोग इंग्लैंड-में ५० हजार सैनिक भेजकर स्वतंत्रताके पवित्र वृक्षको आरो-पित करेंगे।" २० माघ १८४९ (२ फरवरी १७९३) को फ्रांसने इंग्लैंडके साथ युद्धकी घोषणा कर अपनी कठिनाइयों-की मात्रा अत्यधिक बढ़ा ली क्योंकि वही इसका सबसे भयं-कर शत्रु प्रमाणित हुआ।

अब युद्धोंका परिणाम फ्रांसके विपरीत होने लगा। अबतक मित्रदलके लोग एक दूसरेको सन्देहकी दृष्टिसे देखते आये थे और उन्हें इस बातकी आशंका थी कि फ्रांसके साथ हमलोगोंके पहलेसे उलझे रहनेके कारण रूस कहीं पोलैंडके बटवारेमें अपने उचित भागसे अधिक न दबा बैठे। सबने आपसमें एक समझौता कर लिया। यह निश्चय हुआ कि प्रशा और रूस प्रत्येक पौलैंडका एक एक भाग और ले ले। आस्ट्रिया इस बातपर राजी हुआ कि यदि और शक्तियाँ बवेरियाके इले-क्टरको अपने अधिकृत प्रदेशको स्पेनिश नेदरलैंड्जसे बदलनेके लिए राजी करनेमें सहायता दें तो मैं अपना हिस्सा न लूँगा।

मित्रदलके लोगोंमें परस्पर मतभेद दूर हो जानेसे फ्रांसके साथ युद्धका रुख ही बदल गया। जिस समय स्पेन और

बाल्टिक समुद्र

डैन्जिग

वारसा

कीएव

नीस्टर नदी

संकेत

रूसको प्राप्त अंश—

प्रशाको प्राप्त अंश—

आस्ट्रियाको प्राप्त अंश

बँटवारेका समय (ईसवी सन्में)—१७९५ ई०

पोलैण्डका बँटवारा—

पवित्र रोम साम्राज्य इस गुट्टमें सम्मिलित हुए (मार्च, सन् १७९३) उस समय फ्रांस अपने सभी पड़ोसियोंसे लड़ रहा था। आस्ट्रिया वालोंने नेअरविंडनमें डुमूरीको हराकर नेदरलैंड्जसे फ्रांसीसियोंको मार भगाया। इसपर डुमूरी प्रतिनिधि सभाकी सहायता न मिलने तथा राजाको प्राणदण्ड देनेके कारण चिढ़कर कई सौ सैनिकोंके साथ शत्रुओंसे जा मिला।

प्रतिनिधि सभाके सदस्योंपर नेदरलैंडज्के हाथसे निकल जाने तथा सर्वश्रेष्ठ सेनापतिके देशद्रोही होनेका गहरा असर पड़ा। उन्होंने सोचा कि यदि बाहरी उत्पीड़कोंसे और देशके भीतरी शत्रुओंसे फ्रांसीसी प्रजातंत्र अपनी रक्षा करना चाहता है तो स्थायी और व्यापक शासन-विधि तैयार करनेके लिए इसका प्रतिनिधि-सभाके भरोसे बैठना उचित नहीं है। प्रजातंत्रके प्रति लोगोंकी भक्ति बनाये रखने तथा सेना प्रस्तुत करने और सेनानायकोंको निर्देश देनेके लिए शासनको शीघ्रातिशीघ्र सुव्यवस्थित कर लेना जरूरी है। यह खयाल कर प्रतिनिधि-सभाने शासनका भार सदस्योंकी एक छोटीसी समितिके सुपुर्द कर दिया जिसमें आरंभमें केवल ९ ही सदस्य थे पर पीछे यह संख्या १२ कर दी गयी। इस लोकरक्षिणी समितिको वस्तुतः अपरिमित अधिकार दे दिया गया। इसके एक सदस्यने कहा था कि "राजाओंकी स्वेच्छाचारिताको कुचलनेके लिए हम लोग स्वाधीनताकी स्वेच्छाचारिता स्थापित करेंगे।"

खास प्रतिनिधि सभामें ही ऐसे दो दल थे जिनमें नीतिके सम्बन्धमें परस्पर मतभेद पैदा हो गया। पहला दल जिराण्डी*

---

* इस दलके अधिकांश नेता जिराण्ड प्रान्तके थे इसलिए यह जिराण्डी दलके नामसे प्रसिद्ध था।

लोगोंका था । ये लोग उदार प्रजातंत्रवादी थे और इनमें कुछ बड़े योग्य वक्ता थे । संवत् १८४६ (सन् १७६२) में व्यवस्थापक सभाकी बागडोर इन्हीं लोगोंके हाथमें थी । इन्होंने आस्ट्रिया और प्रशाके साथ युद्ध चलानेमें विशेष उत्साह दिखलाया था । ये लोग इस प्रकारसे राजाका कुभाव और प्रवासी कुलीनोंके प्रति उसका सहानुभूति रखना लोगोंपर स्पष्टतः जाहिर कर क्रान्तिको पूर्ण करना चाहते थे । फिर भी इन लोगोंमें इतनी विवेक-बुद्धि न थी कि राजाको प्राणदण्ड देनेके बाद फ्रांसमें उपस्थित भीषण कठिनाइयोंके समयमें सभी कार्योंको संभाल सकें । फलतः इनका प्रभाव जाता रहा और एक नये दलने, जो प्रतिनिधि सभामें ऊंचे स्थानपर बैठनेके कारण पर्वतीय (माउण्टेन) दल कहलाता था, प्रधानता प्राप्त की ।

इस दलके लोग बड़ेही शक्तिशाली और कट्टर प्रजातंत्रवादी थे । इन लोगोंका विश्वास था कि (राजाओंकी) गुलामीके बन्धनने फ्रांसीसी लोगोंको पतित बना दिया है । इन लोगोंकी यह दलील थी कि ऐसी सभी चीजें, जो पहलेके राजतंत्रकी सूचक हैं, दूर कर देनी चाहिए । नवीन फ्रांसकी रचना की जाय और राजाओंके अत्याचार, कुलीन लोगोंकी सरकशी और पुरोहितोंकी धोखेबाजीके स्थानमें स्वाधीनता, समानता तथा भ्रातृत्वका राज्य स्थापित हो । पर्वतीय दलकी यह धारणा थी कि सर्वसाधारण स्वभावतः नेक और सीधे हैं पर पुरानी प्रथाके कुछ ऐसे पक्षपाती लोग हैं जो, अगर उनका वश चले तो, क्रांतिके महत्त्वपूर्ण कामोंपर पानी फेर दें और जनताको पुनः राजा और पुरोहितोंके दासत्वके गड्ढेमें ढकेल दें । जिन जिन लोगोंपर कुलीन जनों तथा अभियुक्त पादरियोंके प्रति सहानुभूति रखनेका पर्वतीय दलको

सन्देह हुआ वे लोग क्रांतिविरोधी करार दिये गये। जिन लोगोंपर क्रांतिके प्रतिकूल प्रवृत्तिका सन्देह था उनसे राष्ट्रका पिण्ड छुड़ानेके लिए यह दल भीषणसे भीषण मार्गका भी अवलम्बन करनेको तैयार था। अपने अभीष्टकी पूर्तिके लिए इस दलके नेता पेरिसकी जनतापर अवलम्बित थे।

इसके प्रतिकूल जिरांडी लोग पेरिसकी उद्दण्ड जनता तथा राजधानीकी नागरिक सभाके प्रमादी सदस्योंसे घृणा करते थे। इनका कहना था कि पेरिस ही फ्रांस नहीं है और सारे राष्ट्रके ऊपर स्वेच्छाचारी शासनतंत्र चलानेका इसे अधिकार नहीं है। इसलिए इस दलके लोग अनुरोध करते थे कि नागरिक सभा तोड़ दी जाय और प्रतिनिधि-सभा अन्यत्र ले जायी जाय जहां इसपर पेरिसकी जनताका रोब न गालिब हो। इसपर पर्वतीय दलने जिरांडी लोगोंपर यह दोष आरोपित किया कि इन लोगोंने पेरिसकी प्रधानताका और राजधानीके अनुगमन करनेका जो अन्य प्रान्तोंका कर्त्तव्य है उसका प्रतिवाद कर 'एक और अखंड्य' प्रजातंत्रको तोड़नेका प्रयत्न किया है। इस प्रकार उत्तेजित किये जानेपर पेरिसकी जनता इन लोगोंके विरुद्ध बिगड़ उठी। १९ ज्येष्ठ (२ जून) को उसने प्रतिनिधि-सभा-भवनको चारों ओरसे घेर लिया। नागरिक सभाके सदस्योंने जिरांडी लोगोंको प्रतिनिधि-सभासे बाहर निकलवा कर गिरफ्तार कर लिया।

अब पर्वतीय दल तथा नागरिक सभाके कार्योंसे फ्रांसके भिन्न भिन्न प्रान्तोंमें विरोधके चिन्ह देख पड़ने लगे और ऐसे समयमें गृह-युद्धके बादल घिरने लगे जब कि यह आवश्यक था कि सारे फ्रांसीसी लोग एक होकर आक्रमणकारियोंसे, जो पुनः फ्रांसीसी सीमाके निकटतक पहुँच गये थे, देशकी रक्षा

करें। पहला तथा सबसे घोर विरोध ब्रिटनी—विशेषकर ला वाएडे प्रान्त—के कृषकोंकी ओरसे हुआ । यहाँके लोग अब भी राजतंत्रके पक्षपाती थे । वे पादरियों तथा कुलीन लोगोंको भी चाहते थे। उन लोगोंने ऐसे प्रजातंत्रकी ओरसे, जिसने उनके राजाकी हत्या की थी और अन्तःकरणके विरुद्ध शपथ न लेनेवाले पादरियोंको अभियुक्त किया था, अपने पुत्रोंको युद्धमें भेजनेसे इनकार कर दिया । सभाद्वारा भेजी गयी राष्ट्ररक्षिणी सेनाकी कई टुकड़ियोंको उन्होंने हरा दिया। अन्ततः शरद् ऋतुमें प्रसिद्ध सेनापति क्लेबेअरने उनका दमन किया। मार्सेल्ज तथा बोर्डो, ये दो नगर जिरांडी लोगोंके साथ किये गये दुर्व्यवहारके कारण बहुत ही क्षुब्ध हुए । उन्होंने प्रतिनिधि सभाके विरुद्ध बलवा करनेकी ठानी । व्यावसायिक नगर लीयन्सके व्यापारी लोग भी जैकोबिन लोगोंसे और उनके प्रजातंत्रसे घृणा करते थे क्योंकि वहाँकी बननेवाली वस्तुओंकी माँग कुलीन जनों तथा पादरी लोगोंकी ओरसे ही होती थी, जिनकी आर्थिक अवस्था उन वस्तुओंको खरीदने योग्य अब नहीं रह गयी थी। जब प्रतिनिधि सभाके कमिश्नरोंने सेना और द्रव्यकी माँग पेश की तो इस नगरके उन्नतिशील लोग आपेसे बाहर हो गये। नागरिकोंने दसहजार सैनिक एकत्र कर एक राजपक्षपाती नेताको उसका अध्यक्ष बनाया। प्रतिनिधि-सभाने सीमापरसे कुछ सैनिक बुलाकर शहरपर खूब गोलाबारी की और उसपर अधिकार कर पर्वतीय दलके विरुद्ध बलवा करनेवालोंसे भीषण बदला लिया। लीयन्सकी हालत देखकर बोर्डो और मार्सेल्जके भी होश ठिकाने आ गये। इन्होंने सामना करना व्यर्थ समझ प्रतिनिधि सभाकी सेनाको भीतर आने दिया । कुछ जिराएडी

लोगोंने पेरिससे भागकर नार्मण्डीमें सैन्य-संग्रह करनेका प्रयत्न किया पर वे कृतकार्य न हो सके । प्रतिनिधि-सभाकी लोकरक्षिणी समिति उन छिट फुट तथा अलग अलग डेढ़ चावलकी खिचड़ी पकानेवाले विरोधियोंसे, जो इसके फ्रांस-पर शासन करनेके हक्का खण्डन करते थे, कहीं अधिक शक्तिशाली साबित हुई ।

एक ओर तो लोकरक्षिणी समिति देशके भीतर बलवाइयोंका दमन कर रही थी, दूसरी ओर वह विदेशी शत्रुओंका भी सामना बड़ी मुस्तैदीके साथ कर रही थी । प्रसिद्ध सैनिक संघटनकर्त्ता कार्नो भाद्रपद मास (अगस्त) में समितिका सदस्य हुआ । उसने कुछ सैनिक माँगे और बातकी बातमें साढ़े पाँच लाख सैनिक एकत्र हो गये । इस सेनाको उसने तेरह हिस्सोंमें बाँटकर मित्र दलसे लड़नेके लिए भेज दिया । अंग्रेज और हनोवेरियन लोग, जो डंकर्कपर घेरा डाले हुए थे, शीघ्र ही खदेड़ दिये गये और आस्ट्रियावाले भी हरा दिये गये यहाँतक कि पौष आते आते (संवत् १८५०) आक्रमणकी आशंका, कमसे कम उस समयके लिए, बिलकुल जाती रही ।

देशके भीतरी विद्रोहको दबाने तथा बाहरी शत्रुओंको भगानेमें लोकरक्षिणी समितिको आशातीत सफलता प्राप्त होनेपर भी आतंकसे विरोध दबानेकी नीति इसने जारी रखी । जिराण्डी लोगोंके अधःपतनके पहलेसेही इसने पेरिसमें एक "क्रान्ति न्यायालय" स्थापित कर रखा था । जिन लोगोंपर देशद्रोहात्मक कामोंका सन्देह होता था उनका विचार इसी न्यायालयमें होता था । पहले इस न्यायालयमें बहुत सावधानीके साथ विचार होता था और बहुत कम लोग दण्डित होते थे । नगरोंके विद्रोहके बाद दो नये आदमी

लोकरक्षिणी समितिमें और बढ़ाये गये। इन दोनोंका भाद्रपद-वाले हत्याकाण्डसे विशेष सम्बन्ध था। इन लोगोंका चुनाव इस विशेष प्रयोजनसे किया गया था कि जिसमें सभी अरा-जकोंका शिरश्छद कर क्रान्तिविरोधी दल डरा दिया जाय। एक भयंकर कानून बनाया गया जिसके अनुसार उन सभी लोगोंपर अराजक होनेका सन्देह किया जाता था जिनका आचरण या और कोई बात स्वाधीनताके शत्रुओंकी तरह प्रतीत होती थी। पहिलेके कुलीन लोगोंको तथा प्रवासी लोगोंके पुत्र-कलत्र इत्यादिको तबतकके लिए कैद करनेकी आज्ञा दी गयी जबतक ये लोग क्रान्तिकी ओर अपनी प्रवृत्तिका भाव बार बार प्रदर्शित न करें।

कार्तिक (अक्टूबर) में रानीपर कई झूठे और घृणित अपराध लगाकर उसे प्राणदण्ड दिया गया। कई ऊंचे विचार-वाले प्रसिद्ध व्यक्तियोंकी भी यही दुर्गति हुई। फ्रांसके अन्यान्य प्रान्तोंमें तो इस पैशाचिकशासनके और भी भयंकर दृश्य देख-नेको मिले। प्रतिनिधि-सभाके एक सदस्यने नाण्टके हजारों लोगोंको गोलीसे या पानीमें डुबाकर मार डाला। प्रतिनिधि-सभाने लीयन्स नगरको पूर्णतः विध्वस्त करनेका निश्चयसा कर लिया। यद्यपि इस आज्ञाका पालन आंशिक रूपसे ही किया गया फिर भी इसके हजारों निवासी मार डाले गये।

शीघ्रही उग्र प्रजातंत्रवादी दलके सदस्योंमें भी, जो इस समय शासनका कार्य कर रहे थे, परस्पर मतभेद होने लगा। डाण्टन, जो कट्टर प्रजातंत्रवादी था और जैकोबिन लोगोंके समान ही सर्वप्रिय हो रहा था, इस रक्तपातसे ऊबकर कहने लगा कि अब इस पैशाचिक प्रथाकी आवश्यकता नहीं रही। इसके प्रति-कूल, नागरिक सभाके प्रधान एबेअरका खयाल था कि अभी

क्रान्तिका कार्य पूरा नहीं हुआ है। उदाहरणार्थ, उसने यह प्रस्ताव किया कि ईश्वरकी पूजाके स्थानमें बुद्धिदेवीकी पूजा चलायी जाय। उसने नोटरडामके गिरजेमें बुद्धिदेवीकी पूजा-का आयोजन किया और एक सुन्दर नटीके रूपमें वेदीपर बुद्धिदेवीकी स्थापना की। लोकरक्षिणी समितिमें रोबेस्पियर सबसे अधिक शक्तिशाली था। यद्यपि वह लघुकाय था और अच्छा वक्ता भी नहीं था फिर भी अपने प्रजातंत्रात्मक गुणों या भावोंके कारण विशेष प्रसिद्ध था। उसने डाण्टनकी नरमियत और समितिद्वारा समर्थित बुद्धिदेवीकी पूजा दोनोंको अस्वी-कृत कर दिया। उसने अपने प्रभावसे नरम और गरम दोनों दलोंके नेताओंको गिरफ़ार करा प्राणदण्ड दिलवाया (मार्च, एप्रिल, १७९४)।

फिर भी रोबेस्पियरके लिए राष्ट्रके एकमात्र सूत्रधारके पदपर अपनेको बनाये रखना असम्भव था। उसने क्रान्ति-न्यायालयको कई भागोंमें बाँट दिया और अपने सभी शत्रुओं-का अन्त करनेके उद्देश्यसे शिरश्छेदका काम बहुत जोरोंके साथ जारी कर दिया। उसके इस कार्यसे प्रतिनिधि सभाके उसके साथके कर्मचारियोंको यह सन्देह होने लगा कि इन लोगोंके बाद कहीं हम लोगोंको भी अपना सिर न खोना पड़े। फलतः उसके विरुद्ध एक गुट्ट कायम हो गया और सभाने उसकी गिरफ़ारीकी आज्ञा निकाल दी। उसने अपनी रक्षाके लिए नागरिक सभाका सहारा लिया पर प्रतिनिधि-सभाने पेरिसको नागरिक सभाके विरुद्ध उभाड़ दिया था और अब उसमें इतनी शक्ति भी न थी कि सारे नगरपर अपना आतंक फैला सके। रोबेस्पियर और उसके सभी साथी इस संसारसे हटा दिये गये।

रोबेस्पियरका अन्त कर प्रतिनिधि-सभा तथा लोकरक्षिणी समितिने एक ऐसे आदमीसे देशका पिण्ड छुड़ाया जो अपनी लोकप्रियता और न्यायप्रियताकी ओटमें पैशाचिक शासनको बहुत दिनोंतक बनाये रख सकता था। उसकी मृत्युके बाद शीघ्रही प्रतिघातके चिन्ह दृष्टिगोचर होने लगे क्योंकि देश इस शिरश्छेदके दृश्योंसे पूर्णतः ऊब गया था। वस्तुतः क्रान्ति-न्यायालयोंके सम्मुख अब जो लोग उपस्थित किये जाते थे उनमेंसे बहुत कम लोगोंपर दोषारोपण किया जाता था। हाँ, जिन लोगोंने इस भयानक राक्षसी क्रीड़ामें विशेष भाग लिया था—जैसे पेरिसका सार्वजनिक अभियोक्ता जिसने हजारों आदमियोंका वध कराया, और वे जंगली जिनपर नाण्ट तथा लियंसके हत्याकाण्डका दायित्व था—वे इसके अपवाद स्वरूप थे। कुछ ही महीनोंमें प्रतिनिधि सभाने जैकोबिन लोगोंकी संस्था तथा नागरिक सभाको भी तोड़ दिया।

अब प्रतिनिधि-सभाने अपना ध्यान मुख्य कार्य—प्रजातंत्रके लिए शासनविधि तैयार करने—की ओर फेरा। इसने यह निश्चय किया कि विधान-रचनाका काम एक व्यवस्थापक सभाके सुपुर्द किया जाय जो दो भागोंमें बँटी होगी। छोटी सभा 'पंचशतीय सभा' (कौंसिल आव दि फाइव हंड्रेड) और बड़ी सभा 'प्रवीण सभा' (कौंसिल आव दि एल्डर्स) कहलायगी। प्रवीण सभाके सदस्योंकी अवस्था कमसे कम चालीस वर्षकी होगी। शासनाधिकार दोनों सभाओं द्वारा चुने गये पाँच सदस्योंके एक शासक-मंडल (डाइरेक्टरी) के हाथ रहेगा।

संवत् १८५२ के कार्त्तिक (अक्टूबर, १७९५) में इस विशेष प्रतिनिधि सभाका विसर्जन हुआ। इसने भय, अन्य-

वस्था तथा एकाएक उत्पन्न अशान्तिके समयमें देशका शासन किया था। पैशाचिक शासनके भयंकर कृत्योंका दायित्व प्रतिनिधि-सभापर ही था पर इसकी समितियोंने संवत् १८५० के भंयकर संकटमें फ्रांसकी रक्षा की। गृहयुद्ध शीघ्रतापूर्वक समाप्त कर दिया गया और विदेशी राजाओंका गुट्ट हरा दिया गया। इसी कालमें प्रतिनिधि-सभाद्वारा नियुक्त और समितियाँ शिक्षा-प्रणालीको, जो अब पादरियोंके हाथसे ले ली गयी थी, सुधारनेका प्रयत्न कर रही थीं। प्राचीन गड़बड़ीको दूर कर सारे देशके लिए एक ही विधान प्रचलित करनेके कार्यमें भी बहुत कुछ उन्नति हुई। नव्य प्रजातंत्रीय वर्षगणना बहुत दिनों तक नहीं चली किन्तु सभा द्वारा चलायी गयी मेट्रिक प्रणाली अब तक कई यूरोपीय देशोंमें प्रचलित है। इंग्लैंड और अमेरिकाके वैज्ञानिक लोग भी इसी प्रणालीका प्रयोग करते हैं।

पर पैशाचिक शासन, कम मूल्यपर चलनेवाले कागजी नोटों, और शीघ्रतामें पास किये गये कई तर्कशून्य कानूनोंके कारण देशमें बड़ी गड़बड़ी और अनिश्चितता फैल रही थी। शासक-मंडल वर्तमान दशाका सुधार करनेमें सफल नहीं हो सका। वस्तुतः शान्तिकी स्थापना संवत् १८५७ में शासनकी बागडोर नेपोलियनके हाथमें जानेपर ही हुई।

अध्याय ३७

नेपोलियन बोनापार्ट

फ्रांसके कुलीनवंशोद्भव सैनिक नेता या तो फ्रांस छोड़ कर चले गये थे या अपने वर्गके साथ तिरस्कृत किये गये थे। अपनी असाधारण योग्यताके कारण जिन सेनापतियोंने उनके स्थान ग्रहण किये उनमें एक ऐसा प्रतापी हुआ जिसके समान पहले किसीने यूरोपीय इतिहासमें प्रधानता नहीं प्राप्त की। पन्द्रह वर्षोंतक उसका चरित्र तथा यूरोपका राजनीतिक इतिहास इस प्रकार ओतप्रोत रहा कि इस कालको 'नेपोलियन-काल' कहना असंगत न होगा।

नेपोलियन मूलतः फ्रांसीसी नहीं था। इसका जन्म कार्सिका द्वीपके अजाचो नामक स्थानमें ३० श्रावण, संवत् १८२६ (१५ अगस्त सन् १७६९) को हुआ था। इसके बाद सिर्फ एक वर्ष तक और यह द्वीप फ्रांसके अधीन रहा। नेपोलियनकी मातृभाषा इटैलियन थी। उसके पूर्वज भी इटली-निवासी थे जो १६ वीं सदीमें इस द्वीपमें आ बसे थे।

दस वर्षकी अवस्थामें वह अपने पिताके साथ फ्रांस आया। फ्रांसीसी भाषाकी कुछ शिक्षा पानेके उपरान्त उसे एक सैनिक विद्यालयमें छः वर्ष तक सैनिक शिक्षा दी गयी। वह शीघ्र ही उन कुलीन नवयुवकोंको, जिनके साथ वह रहा करता था, घृणाकी दृष्टिसे देखने लगा। उसने एक बार अपने पिताको लिखा था—"मैं अपनी दीनता प्रकट करता हूँ और ये

निर्लज्ज लड़के इसपर हँसा करते हैं। मैं इससे तंग आ गया हूँ। ये मेरी अपेक्षा केवल धनमें ही श्रेष्ठ हैं पर सद्भावके विचारसे ये मुझसे बहुत नीचे हैं।" धीरे धीरे उसके हृदयमें अपने छोटे द्वीपको फ्रांससे मुक्त करनेकी इच्छा प्रबलतर होती गयी।

विद्यालयकी शिक्षा समाप्त करनेपर वह द्वितीय लेफ्टिनएट-के पदपर नियुक्त हुआ। निर्धन और प्रभावहीन होनेके कारण फ्रांसीसी सेनामें उसे अपनी विशेष उन्नतिकी आशा नहीं थी। दो कारणोंसे उसे अपनी जन्मभूमिकी ओर प्रवृत्त होना पड़ा। एक तो वहां उसे राजनीतिक कार्योंमें भाग लेनेकी इच्छा थी, दूसरे पिताकी मृत्युसे उसके परिवारकी आर्थिक दशा बड़ी बुरी हो गयी थी, उसे सुधारना था। इसलिये वह अपने कार्य-परसे जहांतक गुंजाइश होती थी अनुपस्थित रहा करता था। द्वीपकी सेनापर अधिकार प्राप्त करनेके उद्देश्यसे उसने एक षड्यंत्र रचा पर वहाँके अधिकारिवर्गके लोगोंसे झगड़नेके कारण संवत् १८५० (सन् १७९३) में उसे निर्वासित होनेपर सपरिवार भागकर फ्रांस आना पड़ा।

इसके बाद तीन वर्षोंतक उसकी अवस्था डाँवाडोल ही रही। कार्सिकाकी ओर अब उसके हृदयमें प्रवृत्ति नहीं थी और फ्रांसमें भी अभी उसके पैर नहीं जम पाये थे। उसने दो अवसरोंपर अपनी सैनिक योग्यता और तीव्र बुद्धिका परि-चय देकर शासकमंडलकी सहानुभूति प्राप्त कर ली। संवत् १८५३ (सन् १७९६) के वसन्तमें वह इटलीकी सेनाका प्रधान सेनापति बनाया गया। २७ वर्षकी अवस्थामें इस महत्वपूर्ण नियुक्तिसे ही उसके सैनिक जीवनका आरम्भ होता है जो विस्तार और शान-शौकतके लिहाज़से सिकन्दर महान्के अतिरिक्त इतिहासमें अद्वितीय है। उसने संवत्

१८५३-५४ (सन् १७९६-९७) में इटलीमें जो सैनिक यात्रा की वह कदाचित् उसकी सब यात्राओंसे अधिक मनोरञ्जक थी।

संवत् १८५० (सन् १७९३) के शरत् कालमें लोक-रक्षिणी समितिकी सेनाने शत्रुओंको मार भगाया। इसके अनन्तर फ्रांसीसियोंने आस्ट्रियन नेदरलैंड्ज, हालैंड और जर्मनीके वे स्थान ले लिये जो राइनके वामतटपर अवस्थित हैं। आस्ट्रिया और प्रशा पोलैंडके नये और इस बार पूर्ण बटवारेमें फँसे हुए थे। फ्रांसके साथ लड़नेमें प्रशाको वस्तुतः कोई लाभ नहीं था इसलिए उसने नये प्रजातंत्रसे सन्धि कर ली (अप्रैल, १७९५)। प्रशाकी देखादेखी स्पेनने भी सन्धि कर ली। अब आस्ट्रिया, इंग्लैंड और सार्डिनिया ही युद्ध चलानेके लिए शेष रह गये। नेपोलियनको आस्ट्रिया और सार्डिनियाकी संयुक्त सेनाका सामना करना पड़ा। सवोनासे उत्तरकी ओर चलकर उसने बड़ी चालाकीसे अपने दोनों शत्रुओंका सम्बन्ध-विच्छेद कर दिया, सार्डिनियाकी सेनाको ट्युरिनतक दबा ले गया और सार्डिनिया-नरेशको फ्रांसके साथ क्षणिक सन्धि करनेके लिए बाध्य किया।

अब उसे आस्ट्रियाके साथ निपटनेकी आज़ादी मिली। अस्ट्रियावालोंको उसने तितिर बितिर कर भागनेपर विवश किया। संवत् १८५३ के प्रथम ज्येष्ठ (१५ मई, सन् १७९६) को उसने मिलानमें प्रवेश किया। आस्ट्रियन सेनापतिने मांटुआके अभेद्य दुर्गमें अपनेको बन्द कर लिया। बोनापार्टने बड़ी शीघ्रतासे घेरा डाल दिया। आस्ट्रियावालोंने दुर्गके उद्धारके लिए चार बार प्रयत्न किया पर नेपोलियनने बड़ी बहादुरीसे उनको मार भगाया। युद्धोंके इतिहासमें इस घटनाके समान दिलचस्प वृत्तान्त और कहीं नहीं मिलता। माघके अन्त तक

आस्ट्रियावालोंने दुर्गको समर्पित कर दिया। जब पीछेकी ओरसे आक्रमणका कोई खतरा नहीं रहा तब नेपोलियन अपनी सेना लेकर वियेनाकी ओर बढ़ा। संवत् १८५४ के वैशाखके आरम्भमें आस्ट्रियाने आरम्भिक सन्धि की।

३१ आश्विन, संवत् १८५४ (१७ अक्तूबर १७९७) को फ्रांस और आस्ट्रियाके बीच कम्पो-फर्मियोमें पक्की सन्धि हुई। इसकी धाराओंपर ध्यान देनेसे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि आस्ट्रिया और फ्रांसीसी प्रजातंत्रने असहाय छोटे राज्यों-की सत्ता उठा देनेमें कैसी धींगाधींगीसे काम लिया था। यहीं-से यूरोपके उस अन्धाधुन्ध पुनर्विभागका आरम्भ होता है जो नेपोलियन-कालकी एक खास बात थी। आस्ट्रियाने फ्रांसको नेदरलैंड्ज दे दिया और राइनके वामतटका अधिकांश फ्रांसको दिलानेमें सहायता पहुँचानेका गुप्त रूपसे वचन दिया। साथ ही आस्ट्रियाने सिसलपाइन प्रजातंत्रकी सत्ता स्वीकार कर ली जिसे नेपोलियनने उत्तर इटलीके छोटे छोटे राज्योंसे बना-कर फ्रांसके संरक्षणमें रखा था। इस नये राज्यमें मिलन, मोडेना, पोपके कुछ प्रदेश और विख्यात तथा समादृत पर अरक्षित वेनिस प्रजातंत्रका भी कुछ अंश था जिसे नेपोलियनने अन्यायसे तहस नहस कर दिया था। आस्ट्रियाको आंशिक क्षतिपूर्ति स्वरूप वेनिस प्रजातंत्रका शेष भाग मिला जिसमें वेनिस भी शामिल था।

जिस समय कम्पो-फर्मियोमें सन्धिकी बातें तै हो रही थीं उस समय नेपोलियन एक शानदार दरबार स्थापित कर चुका था। उसके कमरे ऐसे सेनापतियों, अफसरों, भंडारियों, ऊँचेसे ऊँचे कुलीनों और इटलीके गण्यमान्य लोगोंसे खचाखच भरे रहते थे जो केवल हाजिरी बजाने या एक क्षण उससे वार्तालाप कर लेनेकी इच्छासे आते थे। ऐसा प्रतीत होता है कि उसने

अपना भावी कार्यक्रम पहलेसे ही निश्चित कर लिया था। इस समयकी उसकी एक असाधारण बातचीत इस प्रकार है—

"अब तक मैंने जो कुछ किया है वह नहींके बराबर है। मैंने अपने जीवन-संग्रामके क्षेत्रमें अभी पैर रखा है। क्या तुम यह समझते हो कि मैंने शासक-मंडलके कानूनदां लोगोंको आगे बढ़ानेके लिए इटलीमें विजय प्राप्त की है?......तुम यह तो नहीं ख़याल करते कि मेरा उद्देश्य प्रजातंत्र स्थापित करनेका है? कैसा ख़याल है! फ्रांसीसी लोग केवल नाम चाहते हैं और चाहते हैं अपनी ख़ामख़यालीको पूरा करना। स्वाधीनताके ख़याल तकतो उनकी पहुँच ही नहीं है। ज़रा सेनाकी ओर नज़र डालो। हालमें प्राप्त विजयोंसे फ्रांसीसी सैनिकोंकी असलियत ज़ाहिर हो गयी है। मैं ही उनके लिए सब कुछ हूँ। शासकमंडल मुझे अधिकारवंचित करनेका प्रयत्न करके देख ले। देखो कौन इसका अधिकारी होता है। राष्ट्रको एक सरपरस्तकी जरूरत है। वह भी ऐसा हो जो अपनी विशेषताओंके कारण प्रसिद्ध हुआ हो, शासन-सिद्धान्तों, वाक्‌चातुरी तथा आदर्शवादके कारण नहीं, क्योंकि फ्रांसीसी लोग इन विषयोंको ज़रा भी नहीं समझते।"

फ्रांसीसी राष्ट्रके लिए एक ऐसे प्रधानकी आवश्यकता प्रतिपादित करते समय जो अपनी विशेषताओंके कारण प्रसिद्ध हो, नेपोलियनका लक्ष्य किस व्यक्तिकी ओर था, यह बिलकुल स्पष्ट है। कार्सिकाके निर्धन वकीलके लड़केने जो अभी कलतक निरा भाग्यहीन उत्साही पुरुष था, अपना कार्यक्रम स्थिर कर लिया था। ढाई वर्ष बाद वह फ्रांसीसी प्रजातंत्रका कर्त्ताधर्त्ता बन गया।

स्वभावतः यह प्रश्न उठता है कि यह कैसा पुरुष था जिसने अठाइस वर्षकी अवस्थामें इस प्रकारकी साहसपूर्ण योजना तैयार कर तीस वर्षकी अवस्थामें उसे पूर्ण कर दिया। वह एक

छोटे क़दका आदमी था। उसकी ऊँचाई ५ फुट २ इंचसे भी कम थी। इस समय वह अत्यन्तही दुबला पतला था पर उसकी आकर्षक सूरत-शकल, तेज नजर डालनेवाली आँखों, तीव्र और जोशीली भावभंगी तथा टूटी फूटी धारावाहिक बातोंका उससे मिलनेवालोंपर गहरा प्रभाव पड़ता था। उसमें ऐसे दो गुण बहुत अधिक मात्रामें मौजूद थे जो साधारणतः परस्पर विरोधी हैं। वह था तो वहमी पर उसकी व्यावहारिक कुशलता और अदनीसे अदनी बातका भी ज्ञान बहुत अधिक था। उसने एक बार अपने एक मित्रसे कहा था "जब मैं लेफ्टिनएटके पदपर था तो मैं अपने खयालोंको स्वच्छन्द रूपसे विचरण करने देता था और ऐसी ऐसी बातोंको सोचा करता था जिनका कार्यान्वित होना मुझे पसन्द था। यदि मैं अपने वहमको पूरा करनेका प्रयत्न करना चाहता तो उसको पूर्ण करनेके मार्गोंपर भली-भाँति गम्भीरतापूर्वक विचार किया करता था।"

नेपोलियनकी कामयाबीको अच्छी तरह समझनेके लिए यह खयाल रखना चाहिए कि वह अन्याय हो जानेकी आशंकासे स्तम्भित नहीं होता था। व्यक्ति विशेष या राष्ट्रसे पेश आते समय वह सिद्धान्त और नीतिको ताकपर रख देता था और ऐसा प्रतीत होता था कि उसके हृदयमें सदाचारके भावोंके लिए स्थान ही नहीं है। यदि आत्मोन्नतिके मार्गमें मित्रों या परिजनोंका प्रेम बाधक होता तो वह उसकी भी परवा नहीं करता था। इन्हीं विशेषताओंके साथ उसकी अद्वितीय सैनिक प्रतिभा और लगातार कठिन परिश्रम करते रहनेकी शक्तिकी गणना भी की जानी चाहिये।

जिन राज्योंका नेपोलियनसे पाला पड़ा उनमेंसे अधिकांश-में राजनीतिक कमज़ोरी पहलेसे मौजूद थी। यदि ऐसा न होता

तो अद्वितीय गुणोंके होते हुए भी नेपोलियन सारे पश्चिमी यूरोपपर अधिकार-विस्तार करनेमें समर्थ नहीं होता। उस समय न तो सुदृढ़ जर्मन साम्राज्य था, न सुसंघटित इटली ही था और न बेल्जियम ही था जिसकी तटस्थता* सभी यूरोपीय शक्तियोंने स्वीकार की थी। फ्रांसीसी प्रजातंत्रके चारों ओर ऐसे छोटे छोटे स्वतंत्र राज्य थे जो निरङ्कुश आक्रमणकारीसे अपनी रक्षाका प्रबन्ध कर सकनेमें असमर्थ थे। प्रशा अबकी अपेक्षा उस समय बहुत छोटा था। उसकी ओरसे फ्रांसके अधिकार-विस्तारके मार्गमें काफी रुकावट नहीं डाली गयी। कुछ ही काल युद्धके बाद आस्ट्रियाको एक ऐसे शत्रुके सामने झुकनेके लिए विवश होना पड़ा जिसको युद्ध-सामग्री बहुत दूरसे मँगानी पड़ती थी और सेनापति भी नयी अवस्थाका तथा अनुभवहीन था।

कम्पो-फर्मियोकी सन्धिका प्रबन्ध कर लेनेपर नेपोलियन पेरिस लौट आया। उसने शीघ्र ही यह बात ताड़ ली कि फ्रांसीसी लोग यद्यपि मुझे अत्यधिक चाहते हैं, पर अभी मुझे अपना शासक स्वीकार करनेके लिए तैयार नहीं होंगे। उसने यह भी देखा कि यदि मैं साधारण व्यक्तिकी तरह पेरिस-में चुपचाप बैठा रहूँ तो मेरी प्रतिष्ठा शीघ्रही धूलमें मिल जायगी। उसकी तीव्र बुद्धिने एक ऐसा मार्ग सोच निकाला जिससे उसको बहुत लाभ था। इस समयके सबसे कट्टर शत्रु इंग्लैंडके साथ फ्रांसका युद्ध जारी था। नेपोलियनने शासकमंडलको यह विश्वास दिलाया कि यदि मिश्रपर अधि-

---

* गत यूरोपीय महासमरमें बेल्जियमकी तटस्थता भंग हो गयी और वह पूर्ण स्वाधीन राज्य हो गया।

कार कर लिया जाय और भूमध्यसागरके मार्गसे होनेवाले उसके (इंग्लैंडके) व्यापारको और पीछे उसके पूर्वीय राज्यको खतरेमें डाल दिया जाय तो अन्तमें वह तबाह ही होकर रहेगा। सिकन्दर महान्के कार्योंसे प्रभावित होकर इस समय बोनापार्ट अपने मानसपटपर हाथीपर सवार होकर भारत पहुँचने और इंग्लैंडको इस अमूल्य रक्षित-राज्यसे बंचित करनेका चित्र अंकित कर रहा था। इस आक्रमणका एक और भी विशेष कारण था। यूरोपीय शक्तियोंके साथ फ्रांसका एक नया युद्ध छिड़ने वाला था। नेपोलियनने यह पहले ही सोच लिया कि यदि मैं फ्रांसके कुछ सर्वोत्तम अफसरोंको अपने साथ ले जा सकूँ तो शासक-मंडल पीछे इतनी परेशानीमें पड़ेगा कि मैं उस समय लौटने पर राष्ट्रत्राता ही समझा जाऊँगा। नेपोलियनकी यह कल्पना पीछे ज्योंकी त्यों पूरी उतरी।

फ्रांसीसी बेड़ा ५ ज्येष्ठ, संवत् १८५५ (१९ मई सन् १७९८) को टूलनसे रवाना हुआ। यह बेड़ा बहुत ही भाग्यशाली था, रात्रिके समयमें पाससे हो जाते हुए नेलसनके युद्ध-पोतोंसे बचकर निकल गया। १७ आषाढ़ (१ जुलाई) को नेपोलियन अलक्षेन्द्रिया पहुँचा और इतिहासप्रसिद्ध पिरामिडके युद्धमें तुर्की सेनाको पराजित किया। नेलसनको यह पता नहीं था कि फ्रांसीसी बेड़ा कहाँ जा रहा है। वह सीरियाके तटपर बहुत काल तक व्यर्थ ही शत्रुकी प्रतीक्षा करता रहा। इसी समय वहाँसे लौटनेपर उसने फ्रांसीसी बेड़ेको अलक्षेन्द्रियाके नौ-स्थानमें देखा। उसने नीलके प्रथम युद्धमें फ्रांसीसी बेड़ेको पूर्णतः विध्वस्त कर दिया (अगस्त १, सन् १७९८)। इस प्रकार फ्रांसीसी सेनाका यूरोपसे पूर्णतः सम्बन्ध-विच्छेद हो गया।

तुर्की सरकारने फ्रांसके विरुद्ध युद्धकी घोषणा कर दी। नेपोलियनने स्थलमार्गसे तुर्कीपर आक्रमण करनेका विचार किया। संवत् १८५६ के वसन्तकालमें वह सीरिया पहुँचा। तुर्क लोगोंने अंग्रेजी बेड़ेकी सहायतासे एकरमें उसे हरा दिया। महामारीके कारण फ्रांसीसी सेनाको बहुत कष्ट और हानि सहनी पड़ी। आषाढ़में किसी प्रकार वह काहिरा पहुँच पायी। इतना होनेपर भी वह तुर्की सेनाको, जो अलक्षेन्द्रियामें उतरी हुई थी, नष्ट कर डालनेके लिए काफी थी। पर इसी समय यूरोपसे कुछ समाचार पहुँचे जिनसे नेपोलियनको यह विश्वास हो गया कि अब जल्द लौट जानेका समय आ गया है। उत्तर इटली, जिसको नेपोलियनने जीता था, हाथसे निकल चुका था, मित्र-दल फ्रांसपर आक्रमण करनेवाला हो था और शासकमंडल आचारभ्रष्ट हो रहा था। नेपोलियनने चुपकेसे अपनी सेनाका परित्याग कर दिया और खुशकिस्मतीके कारण कई दुर्घटनाओंसे बचकर २३ आश्विन, संवत् १८५६ (९ अक्तूबर, सन् १७९९) को फ्रांस पहुँच गया।

शासकमंडल बहुत बदनाम हो चुका था। नेपोलियनने इसे समूल नष्ट करनेके लिए एक षड्यन्त्र खड़ा किया। शीघ्रही उसको इस कार्यमें कई सहायक भी मिल गये। पुराने शासनके स्थानमें, शासन-विधिपर जरा भी ध्यान न देते हुए, एकाएक नवीन शासन जारी करनेका आयोजन किया गया। दोनों सभाओं, विशेषकर प्रवीण सभामें, इन षड्यन्त्रकारियोंके बहुसंख्यक मित्र थे। फिर भी अपना प्रयोजन सिद्ध करनेके लिए नेपोलियनको अपनी सेनाको पंचशतीय सभा-भवनपर आक्रमण कर विरोधियोंको मार भगानेकी आज्ञा देनी पड़ी। इसके बाद नेपोलियनके एक भाई, लुसियन बोनापार्टकी अध्य-

दतामें, जो सभाका सदस्य था, कुछ चुने हुए सदस्योंको पुनः एकत्र कर सभाका अधिवेशन किया गया । इस सभाने यह निश्चय किया कि शासनकी बागडोर नेपोलियन और 'कौंसल' उपाधिधारी दो व्यक्तियोंके हाथमें दे दी जाय । एक कमीशन और प्रवीण सभाकी सहायतासे शासनपद्धति निर्माण करनेका काम इन्हीं लोगोंको सौंपा गया ।

नयी शासन-विधि बहुत ही जटिल तथा व्यापक थी । इसमें चार सभाएँ रखनेका विधान था; पहली विधानका प्रस्ताव करती, दूसरी उसपर विचार करती, तीसरी उसपर अपना मत देती और चौथी यह निर्णय करती कि विधान विधि-संगत है या नहीं । पर नेपोलियनने यह बन्दोबस्त किया कि प्रधान कौंसलकी हैसियतसे वस्तुतः सभी अधिकार उसीके हाथमें रहें । शासनिक संस्थाओंमें राज्यपरिषद्, जिसमें सभी दलोंके विशेषज्ञ सम्मिलित किये गये थे और नेपोलियन जिसका अध्यक्ष था, सर्वप्रधान थी । यह राज्यपरिषद् तथा यह शासनपद्धति, जो उस समय शीघ्रही प्रचलित कर दी गयी थी, कुछ परिवर्तनोंके साथ वर्तमान समय तक चली आयी है । नेपोलियनको शासन-सम्बन्धी कार्य्योंका पूर्व अनुभव नहीं था, फिर भी उसने ऐसी शासनपद्धतिका निर्माण किया जो फ्रांस जैसे बड़े राज्यमें कई उलट-फेरोंके बीच गुज़रती हुई एक शताब्दीतक कायम रही । इससे बढ़कर नेपोलियनकी प्रतिभाका और क्या प्रमाण हो सकता है ?

उसने प्रत्येक विभागके लिए एक एक निरीक्षक (प्रिफेक्ट) और उप-विभागके लिए उपनिरीक्षककी नियुक्ति की । इनकी तथा नगर-शासकों और पुलिस कमिश्नरोंकी नियुक्ति प्रधान कौंसलके ही हाथमें थी । ये निरीक्षक प्राचीन प्रथा-कालके

'इण्टेंडेंट' नामक कर्मचारियोंसे मिलते जुलते थे। वस्तुतः कई बातोंमें नया शासन १४ वें लूईके शासनका स्मरण कराता था।

नया शासक (नेपोलियन) भी १५ वें लूईकी तरह शासनके कार्य्योंमें प्रजाका नियंत्रण देखना नहीं चाहता था क्योंकि उसकी समझमें प्रजा शासन सम्बन्धी कार्य्योंसे पूर्णतः अनभिज्ञ थी। अमुक प्रकारकी शासन-पद्धति हमें चाहिये या नहीं, केवल इतना ही कह सकनेका अधिकार प्रजाको देना वह काफी समझता था, इसलिए उसने जनसम्मति-विधि (प्लेबिसाइट*) प्रचलित की। जब नयी शासन-विधि तैयार हो गयी तो यह सर्वसाधारणके सामने पेश की गयी और इसके प्रयोगकी उपयुक्ततापर केवल 'हाँ' या 'नहीं' कहनेका अधिकार दिया गया। तीस लाखसे अधिक लोगोंने इसके पक्षमें और केवल पन्द्रह सौ बासठ मनुष्योंने इसके विरुद्ध राय दी। फिर भी इसका यह तात्पर्य्य नहीं था कि सारा राष्ट्र नेपोलियनको अपना शासक बनाना चाहता है। संभव है, बहुत लोगोंको यह शासनपद्धति आपत्तिपूर्ण प्रतीत हुई हो, तो भी उन लोगोंने इसे अस्वीकार कर खतरेमें पड़नेकी अपेक्षा इसे कबूल कर लेना ही अच्छा समझा हो। जनसम्मति-विधिमें यह एक भारी दोष है। ऐसे कई प्रश्न हैं जो केवल 'हाँ' या 'नहीं' कह देने मात्रसे हल नहीं हो सकते।

फिर भी नेपोलियनका अधिकारारूढ़ होना ऐसे अधिकांश नागरिकोंको पसन्द था जो सुव्यवस्थित शासनके इच्छुक थे।

---

*Plebiscite — किसी विशेष विषयपर राज्यकी सारी प्रजाकी सम्मति प्राप्त करनेकी विधि।

शासनके इस अचानक कायापलट (कुडेटाट*) के बाद स्वीडेनके राजदूतने लिखा था "किसी भी न्याय्य राजाकी आज्ञाका पालन करनेमें प्रजाने इतनी तत्परता नहीं दिखलायी जितनी वह नेपोलियनके लिए दिखला रही है। यदि वह प्रतिभाशाली प्रधान इस अवसरसे लाभ उठाकर दृढ़तर आधारपर योग्यतर शासनकी स्थापना न करे तो उसका यह कार्य्य अक्षम्य ही समझा जायगा। यह सर्वथा सत्य है कि फ्रांसीसी लोग उसको इस कार्य्यमें सहायता देनेके लिए असम्भव कार्य्योंको भी सम्भव कर दिखलायँगे। कुछ घृणित विद्रोहियोंको छोड़कर सभी प्रजा क्रान्तिके भीषण कार्य्योंसे इतनी ऊब गयी है और वह इतनी मूर्ख है कि किसी प्रकारके भी परिवर्तनमें अपनी भलाई ही समझती है। राजपक्षके लोग भी, चाहे उनके खयाल जैसे हों, नेपोलियनके प्रति बड़ी श्रद्धा दिखला रहे हैं क्योंकि वे लोग समझते हैं कि उसका विचार पुनः प्राचीन पद्धतिको धीरे धीरे प्रचलित करनेका है। भिन्न भिन्न तत्व एक होकर उसमें इस प्रकारसे वर्तमान हैं कि जिससे फ्रांसको शान्ति मिलनेकी आशा हो रही है। विचारवान् प्रजातंत्रवादी लोग भी, अपनी शासन-पद्धतिके लिए सशंक होते हुए भी, षड्यंत्रकारियोंके समाजके अधीन शासनाधिकार रहनेकी अपेक्षा एक ही योग्य व्यक्तिके हाथ रहना अच्छा समझते हैं।

नेपोलियन जब प्रधान कौंसल हुआ तब इंग्लैंड, रूस, आस्ट्रिया, तुर्की तथा नेपिल्सके साथ फ्रांसका युद्ध शुरू था। इन शक्तियोंने संवत् १८५५के मार्गशीर्ष-पौष (दिसम्बर) में एक

---

* Coup d'etat—यह नाम नेपोलियन कृत शासन-परिवर्तनके लिए रूढ़ि सा हो गया है।

युद्ध कायम किया था। इन सबोंने शासकमण्डलकी भेजी हुई सेनाको हरा दिया था और इटलीमें नेपोलियनके कार्यपर पानी फेर दिया था। अब बाहर फ्रांसकी प्रतिष्ठा पुनः स्थापित करने और घरमें शान्ति-समृद्धि कायम रखनेका भार नेपोलियनके ऊपर पड़ा। युद्ध या आक्रमणमें सफलता प्राप्त करनेसे खजाना भी भर सकता था क्योंकि पराजित शत्रु और उसके मित्रोंसे नेपोलियन बहुत भारी रक़म वसूल करता था। इसके अतिरिक्त अपनी प्रधानता अक्षुण्ण रखनेके लिए सर्वसाधारणकी दृष्टिमें अपनेको युद्धवीर बनाये रखना भी उसके लिए परमावश्यक था।

संवत् १८५६ के अन्तमें नेपोलियन डिजनके निकट चुपकेसे सैन्य-संग्रह करने लगा। वह इस सेनाको आस्ट्रियाकी एक सेनाके विरुद्ध भेजना चाहता था जो जिनोआमें फ्रांसीसी सेनापति मासेनाको घेरे हुई थी। उसने सीधे इटलीमें न जाकर, जो स्वाभाविक था, आस्ट्रियाकी सेनापर पीछेकी ओरसे आक्रमण करनेका विचार किया। हनिबालकी तरह वह अपनी सेना ग्रेट सेंट बर्नार्डकी अल्पाइन घाटीके ऊपरसे ले गया। तोपें वृक्षोंके धड़ोंमें भरकर, जो पहलेसे ही इस कार्यके लिए खोखले किये गये थे, ऊपर खींची गयीं। उसने १९ ज्येष्ठ (२ जून) को कुशलपूर्वक मिलान पहुँच कर आस्ट्रियाकी सेनाको आश्चर्यचकित कर दिया।

अब नेपोलियन पश्चिमकी ओर बढ़ा। किन्तु आस्ट्रियाकी सेनाकी अवस्थिति निश्चय न कर सकनेके कारण उसने मारेंगो ग्रामके निकट अपनी सेनाको चार हिस्सोंमें बाँट दिया और दक्षिणकी ओरसे शत्रु-सेनाको रोकनेके विचारसे डेसेकी अध्यक्षतामें एक टुकड़ी उस ओर भेज दी। ठीक इसी समय आस्ट्रि-

याकी सारी सेना अलेसन्द्रियासे आ पहुँची और मुठभेड़ शुरू हो गयी। पहले तो आस्ट्रिया वालोंने फ्रांसीसियोंके पैर उखाड़ दिये। नेपोलियनने अपने सैनिकोंसे एक बार पुनः भिड़नेके लिए व्यर्थ ही प्रार्थना की। उसका सारा कार्यक्रम मिट्टीमें मिलता हुआ प्रतीत होने लगा। पर युद्धका रूप तुरन्त ही बदल गया क्योंकि तोपोंका गर्जन सुनकर डेसे फौरन लौट आया। विजयश्री नेपोलियनपर प्रसन्न हुई। आस्ट्रियाकी सेनाका ज़ईफ सेनापति अपनी जीत समझकर अलेसन्द्रिया ग्राममें लौट गया था। परिणाम यह हुआ कि फ्रांसीसी सैनिक नये सैनिकोंके मिल जानेसे उत्साहमें आकर शत्रुदलपर टूट पड़े। आस्ट्रियावालोंको रणक्षेत्रसे भागना पड़ा। वीर डेसेने, जिसने यह विजय दिलायी थी, वीरगति प्राप्त की। नेपोलियनने अपनी क्षणिक पराजयके सम्बन्धमें कुछ न कहकर इसको भी अपनी बड़ी विजयोंमें परिगणित किया। दूसरे दिन क्षणिक सन्धि हुई। आस्ट्रियावाले मिंसिओ नदीके पीछे हट गये और नेपोलियनको लम्बार्डीमें अपना प्रभाव जमानेके लिए स्वतन्त्र छोड़ दिया। सेनाके निर्वाहका भार 'मुक्त' प्रदेशोंपर डाला गया और सिसलपाइनके पुनः स्थापित प्रजातन्त्रको बीस लाख फ्रांक मासिक कर देनेपर बाध्य किया।

उसी वर्ष फ्रांसीसियोंने आस्ट्रियावालोंपर होहेनलिंडनमें विजय प्राप्त की। अब आस्ट्रियाने फ्रांसीसी प्रजातन्त्रके साथ पृथक् सन्धि करना मञ्जूर किया। यहींसे सुलहका श्रीगणेश होता है। संवत् १८५८ (सन् १८०१) में फ्रांससे लड़ने वाली सभी शक्तियोंके साथ, यहाँ तक कि इंग्लैंडके साथ भी, जिसने संवत् १८५० (सन् १७९३) से अर्थात् युद्ध-घोषणाके बादसे शस्त्र नहीं रखा था, सन्धि हो गयी।

इन सन्धियोंके कई अस्थायी परिणाम हुए पर इनमें दो विशेष प्रसिद्ध थे। पहला, इटलीसे कुछ लाभ उठानेके बदलेमें स्पेनने फ्रांसको लुसियाना प्रदेश दे दिया। जब युद्ध पुनः आरम्भ हुआ तो नेपोलियनने इसे संयुक्त राज्य अमेरिकाके हाथ बेच दिया। दूसरा, जर्मनीका पुनः संघटन था जिससे वर्तमान जर्मन साम्राज्यकी स्थापना हुई।

लुनेविलेकी सन्धिके अनुसार आस्ट्रियाके सम्राट्ने अपनी तथा पवित्र रोमन साम्राज्यकी ओरसे यह स्वीकार किया कि राइनके वामतटस्थ प्रदेशोंपर, जो अभीतक साम्राज्यके अधीन थे, फ्रांसीसी प्रजातन्त्रका एकाधिकार होगा और उस स्थानसे जहाँसे राइन स्विटजरलैंडसे पृथक् होती है, डच राज्यमें इसके प्रवेशस्थान तक फ्रांसीसी सीमा यही राइन नदी होगी। इसका स्वाभाविक परिणाम यह हुआ कि कई नरेशों तथा रियासतोंको पूर्ण वा आंशिक रूपसे अपनी भूमिसे वञ्चित होना पड़ा। जिन वंशानुगत राजाओंको अपने राइनके वामतटस्थ प्रदेशोंसे वञ्चित होना पड़ा उनकी क्षतिपूर्त्तिका भार साम्राज्यने अपने ऊपर ले लिया।

इस सन्धिसे पवित्र रोमन साम्राज्यके रूपमें वस्तुतः बहुत परिवर्तन हुआ। प्रशाकी उन्नतिको छोड़कर, यह साम्राज्य लूथरके समयसे करीब करीब एक ही हालतमें चला आ रहा था। राज्यवंचित नरेशोंको देनेके लिए कहीं खाली भूमि नहीं थी लेकिन साम्राज्यके अन्तर्गत ऐसी दो प्रकारकी रियासतें थीं जिनपर वंशानुगत राजाओंका अधिकार नहीं था—ये रियासतें धर्मसंस्थाकी भूमि तथा स्वतंत्र नगर थीं। धर्माध्यक्षोंको विवाह करनेकी मुमानियत थी, इसलिए उनका कोई न्याय्य उत्तराधिकारी भी नहीं हो सकता था। यदि कोई धर्म-

शासक अपनी रियासतसे वञ्चित कर दिया जाय तो उसे आजीवन वृत्ति देकर इस क्षतिकी पूर्ति की जा सकती थी। इस कार्यमें अन्याय होनेका भी डर नहीं था क्योंकि उसको उत्तराधिकारी तो था ही नहीं। जो नगर कभी बहुत प्रसिद्ध तथा शक्तिशाली थे वे इस समय अपना सब प्रभाव खोकर धार्मिक रियासतोंकी ही तरह जर्मन संघमें बेतरतीबीकी हालतमें पड़े हुए थे।

संवत् १८६० (सन् १८०३) में साम्राज्यकी राष्ट्रीय सभाने एक आदेशपत्र निकाल कर राज्यका पुनर्विभाग किया जिसमें राइन नदीके वामतट वाले उक्त राज्यवञ्चित वंशानुगत राजाओंकी क्षतिपूर्ति हो जाय। मायन्सके इलेक्टरको छोड़ कर धर्मसंस्थाकी सभी रियासतें धर्माध्यक्षेतर शासकोंके अधिकारमें आगयीं। अड़तालीस शाही शहरोंमें केवल छः ही बच रहे। इनमेंसे तीन—हैम्बर्ग, ब्रेमेन और लुबेक—वर्तमान जर्मन संघके प्रजातन्त्रात्मक सदस्य हैं। उन सरदारों (वीरभटों) की क्षतिपूर्ति नहीं की गयी जो राइनके वामतटके अपने स्थान खो चुके थे। दक्षिण तटके सरदार (वीरभट) भी दोही तीन वर्षोंमें सारे राजनीतिक अधिकारोंसे वंचित कर दिये गये।

अन्तिम बटवारेके समय राजाओंने यथासम्भव अधिक भाग पानेके लिए मनमाने रूपसे खूब छीनाछीनी मचायी। सभी लोग नेपोलियनका अनुग्रह प्राप्त करनेके लिए पेरिसकी शरण लेने लगे क्योंकि इस मामलेमें जर्मन राष्ट्रसभाके बजाय वही प्रधान निर्णायक था। इस समय जर्मनीका जैसा राजनीतिक अधःपतन हो रहा था वैसा कभी भी देखनेमें नहीं आया। किन्तु उसका यही सम्मिलन उसके राजनीतिक पुनरुद्धारका आरंभ था क्योंकि यदि सैकड़ों स्वतंत्र रियासतोंका अल्पसं-

व्यक सुव्यवस्थित राजतंत्रोंके रूपमें संघटन न हुआ होता तो युद्धके पूर्व जर्मन साम्राज्यका ऐसा आश्चर्य्यमय एकीकरण देख-नेको न मिलता और देश उसी गयी-गुजरी हालतमें अनन्त कालतक पड़ा रहता ।

संवत् १८५८ (सन् १८०१) की सन्धिसे आस्ट्रियन नेदरलैंड्ज और राइनके वाम तटपर फ्रांसका अधिकार हो गया । पीडमांट भी शीघ्र ही शामिल कर लिया गया । नेपोलियनने कुछ रक्षित राज्य भी कायम किये । हालैंड बटेवियन प्रजातंत्रके नामसे इटैलियन प्रजातंत्रके साथ साथ फ्रांसके अधीन होगया । फ्रांसको इन प्रजातंत्र देशोंसे धनजनकी अच्छी सहायता मिली । अपने हितको सम्मुख रखते हुए नेपोलियनने स्विट्जरलैंडकी शासन-विधिमें सुधार किया जिससे अनायास उस देशको भी विशेष लाभ पहुँचा ।

अध्याय ३८

यूरोप और नेपोलियन।

नेपोलियनका कार्य पथ केवल गत अध्यायमें वर्णित यूरोपके मानचित्रके महत्वपूर्ण परिवर्तन तक ही परिमित नहीं रहा। आभ्यन्तर सुधारोंके लिए भी वह अनवरत परिश्रम करता गया। महत्वकी दृष्टिसे क्रान्तिगत सुधारोंके बाद इन्हींका स्थान है। पैशाचिक शासन तथा शासकमंडलके शासनकी कमजोरीसे फ्रांसकी बुरी हालत हो रही थी। राज्यकी आर्थिक दशा भी बहुत ही शोचनीय होगयी थी। नेपोलियनने बड़ी होशियारीसे आर्थिक दशाका सुधार कर राष्ट्रकी साख पुनः कायम कर दी।

अब उसने मुल्की-शासन-विधि कबूल न करनेवाले पादरियोंकी समस्या हल करनेकी ओर ध्यान दिया। शासनविधिका विरोध न करनेकी प्रतिज्ञापर कुल बन्दी पुरोहित मुक्त कर दिये गये। उनको गिरजाघर वापस कर दिये गये और 'शपथ-विरोधी' तथा 'शासनविधि मानने वाले' पादरियोंमें जो भेदभाव था वह उठा दिया गया। तिथिपत्रसे रविवार निकाल दिया गया था, वह पुनः रखा गया। बैस्टीलके पतनके दिन और प्रजातंत्रके वर्षके प्रथम दिनको छोड़कर क्रांतिके समयके सभी त्योहार बन्द कर दिये गये। संवत् १८५८ (सन् १८०१) में पोपके साथ नियमपूर्वक सन्धि हुई। इसके अनुसार मुल्की शासन-विधिकी कुछ धाराएँ—विशेषकर पुरो-

हितों और बिशपोंके जनता द्वारा निर्वाचनके सम्बन्धकी—रद्द कर दी गयीं और पोप धर्मसंस्थाका प्रधान माना गया। फिर भी यह ध्यान देने योग्य बात है कि नेपोलियनने धर्मसंस्थाको प्राचीन सम्पत्ति नहीं लौटायी और पहलेके राजाओंकी तरह बिशपोंकी नियुक्तिका अधिकार अपने ही हाथमें रखा।

प्रवासी सरदारोंके सम्बन्धमें उसने यह आदेश निकाला कि उनकी नामावलीमें और नाम न बढ़ाये जायँ। सूचीसे नाम निकालने तथा बिकनेसे बची हुई जब्त भूमिको लौटानेका अधिकार उसने अपने ही हाथमें रखा। प्रवासी लोगोंके सम्बन्धी सरकारी नौकरी पानेके अधिकारसे अब वंचित नहीं रहे। क्षमाप्रदानकी घोषणा भी निकाली गयी। इसपर कमसे कम चालीस हजार परिवार फ्रांस लौट आये।

धीरे धीरे पैशाचिक शासनके समयकी बहुत सी बातोंके स्थानमें पुनः पुरानी बातें ही प्रयुक्त होने लगीं। क्रान्तिके समयकी उपाधि 'नागरिक'के स्थानमें फिर 'मानश्यूर' व 'मैडम' (श्रीमान्, श्रीमती) जारी की गयी और राजकीय दरबारके ही सदृश ट्वीलरिजके राजप्रासादमें एक दरबार भी लगने लगा। नेपोलियन केवल नाममात्रके लिए राजा नहीं था वास्तवमें वह राजाके गुणोंसे और उसकी स्त्री रानीके गुणोंसे युक्त थी। कुछ दिनोंसे यह बात स्पष्ट हो रही थी कि राष्ट्र राजनीतिक आन्दोलनसे पूर्णतः ऊब गया है। अराजकताके बाद एक ऐसे व्यक्तिके ऊपर सारी जिम्मेदारी छोड़कर, जो विस्तृत युद्धोंको चला कर फ्रांसकी प्रतिष्ठा बढ़ा रहा था और अभ्युदयके साधन अमनचैन और जानोमालकी रक्षाका प्रबन्ध कर रहा था, राष्ट्र अपना अहोभाग्य समझता था। फ्रांसीसी लोग सदियोंसे स्वेच्छातन्त्रके अभ्यस्त थे। कुछ कालतक नाममा-

अकी प्रजातंत्रीय संस्थाओंके अधीन कष्ट भोगनेपर उनका स्वेच्छातंत्रका स्वागत करना सर्वथा स्वाभाविक था।

नेपोलियनके एक और महत्वपूर्ण तथा स्थायी कार्यका उल्लेख शेष रह गया है। व्यवस्थापक सभाओंने प्राचीनकालके विषम विधानोंमें बहुत कुछ सुधार कर दिया था। एक बार और इसके संशोधनकी आवश्यकता थी। नेपोलियनने एक कमीशन कायम कर यह महत्वपूर्ण कार्य उसके सपुर्द कर दिया। विधान-संग्रहके मसौदेपर राज्यपरिषद्में विचार हुआ। नेपोलियनने उसमें कई बातें सुझायीं। जा दीवानी विधान-संग्रह—'कोड नेपोलियन'—तैयार हुआ वह आज भी केवल फ्रांसमें ही नहीं बल्कि, कुछ परिवर्तनके साथ, रेनिश प्रशा, बवेरिया, बेडेन, हालैंड, बेल्जियम, इटली, और लूईजिआना राज्यमें भी प्रयुक्त होता है फौजदारी और व्यापारके कानूनोंका भी संग्रह तैयार किया गया। इन कानूनोंके साथ विदेशोंमें समानताके सिद्धान्तका भी प्रचार होता गया क्योंकि इनकी रचना इसी सिद्धान्तको सम्मुख रखकर की गयी थी। इस प्रकार फ्रांसकी सीमाके बाहर भी क्रान्तिजनित लाभोंका वितरण होता गया।

अपने अधिकारोंको अधिकाधिक अनियन्त्रित बनानेके उद्देश्यसे नेपोलियन धीरे धीरे शासनविधिमें भी परिवर्तन करता गया। संवत् १८५९ (सन् १८०२) में वह आजीवन कौंसल बना दिया गया और उसे अपना उत्तराधिकारी चुननेका भी अधिकार दिया गया। परन्तु इससे भी उसकी तृष्णा शान्त न हुई। वह अपने अधिकारोंको वंशानुगत राजाओंके योग्य गुणोंसे युक्त करना चाहता था। संवत् १८६१ (मई, सन् १८०४) में उसे सम्राट्की उपाधि दी गयी और कुछ ही महीनोंके बाद (दिसम्बरमें) नोटरडामके गिरजेमें, शार्लमेनके उत्त-

राधिकारीकी हैसियतसे, बड़े ठाटबाटसे उसका अभिषेक हुआ। उसने शीघ्रही पुराने कुलीन पदोंके स्थानमें, जिन्हें राष्ट्रीय सभाने संवत १८४७ (सन् १७६०) में उठा दिया था, नवीन कुलीन पद स्थापित किये। इस समयसे नेपोलियनकी स्वेच्छाचारिता बढ़ती गयी और वह समालोचनाका कट्टर शत्रु होता गया। अपने शासनके आरम्भमें ही उसने अधिकांश राजनीतिक पत्रोंका गला धर दबाया था और नये पत्रोंका जारी होना भी रोक दिया था। सम्राट् होनेपर वह और भी अधिक कड़ाई करने लगा। उसकी पुलिस समाचार-पत्रोंको खबरें देती थी पर ऐसी खबरोंको होशियारीसे गायब कर देती थी जिनसे उसके शकी स्वामीके अप्रसन्न होनेकी सम्भावना होती थीं। उसने पत्रोंको ऐसी खबरें, जो फ्रांसके लिए हानिकारक या अरुचिकर हो सकती थीं, सबसे अलग एक कोनेमें छापनेकी आज्ञा दी। उसका विचार एक पत्रको छोड़कर, जो सरकारी कामोंके प्रयोजनसे चलाया जाता, सबको बन्द कर देनेका था।

अधिकांश फ्रांसीसी प्रजा दरअसल शान्ति चाहती थी पर नेपोलियनकी व्यक्तिगत स्थितिके लिए युद्ध अनिवार्य था। और लोगोंकी अपेक्षा वह इस परिस्थितिको विशेष रूपसे समझता था। संवत् १८५६ के ग्रीष्मकालमें उसने अपनी राज्यपरिषद्से कहा था—"यदि यूरोपीय राज्योंकी इच्छा युद्ध छेड़नेकी हो तो वह जितना शीघ्र छिड़े उतना ही अच्छा। दिनोंदिन उनकी पराजयका स्मरण क्षीण होता जा रहा है और साथ ही साथ हमारी विजयोंका प्रभाव भी घटता जा रहा है। फ्रांसको कीर्तिजनक कामोंकी आवश्यकता है, इसी कारण उसके लिए युद्ध आवश्यक है। फ्रांसको राज्योंका सिरमौर होकर रहना होगा, नहीं तो वह मटियामेट हो जायगा। जब तक मेरे पड़ोसी लोग

शान्ति बनाये हुए हैं तबतक मैं चुपचाप रहूँगा, पर शस्त्रमें जङ्ग लगनेके पूर्व ही यदि वे मुझे युद्धके लिए विवश करें तो मैं इसमें अपना हित ही समझता हूँ। मैं प्रत्येक सन्धिको क्षणिक सन्धिकी ही दृष्टिसे देखता हूँ और मैंने तो लगातार युद्ध करना अपने कार्य्यकालका उद्देश्यही बना रखा है।"

एक दूसरे अवसरपर संवत् १८६१ में नेपोलियनने कहा था—"जब तक सारा यूरोप एक ही शासकके अधीन न होगा तबतक उसमें शान्ति कभी न आवेगी। वह शासक (सम्राट्) ऐसा होगा जिसके कर्मचारी राजा लोग होंगे। वह अपने लेफ्टिनएटोंमें राज्योंका वितरण करेगा, उनमेंसे किसीको इटलीका राजा बनावेगा, किसीको ववेरियाका, किसीको स्विटजरलैंडका शासक बनावेगा, और किसीको हालैंडका गवर्नर। साम्राज्य-परिवारमें प्रत्येकका सम्मानित पद होगा।" उसके सम्मुख यही आदर्श था जिसे ज्योंका त्यों पूरा करनेके लिए उसे अनुकूल परिस्थिति भी मिल गयी थी।

इंग्लैंडके साथ शीघ्र ही संधि भङ्ग होनेके कई कारण थे, इस लिये कि खास कर नेपोलियन पुनः युद्ध छेड़नेके विरुद्ध नहीं था। यथासम्भव यूरोपका अधिकसे अधिक भाग अपने अधीन करनेका नेपोलियनका विचार स्पष्ट था, इससे तथा अपने अधीनस्थ देशोंमें आनेवाले अंग्रेजी मालपर भारी आयात-कर बैठानेके कारण इंग्लैंडके व्यवसायी तथा व्यापारी लोग भयभीत हो गये। अंग्रेज लोग चाहते थे कि शान्ति बनी रहे पर इस शान्तिका यही फल होता कि नेपोलियनको इंग्लैंडके व्यापारपर आघात कर इंग्लैंडको ही तबाह कर देनेका मौका मिल जाता। इंग्लैंडके डटे रहनेका यही गुप्त रहस्य था। यूरोपकी और शक्तियोंने उसके शासनकालमें कभी न कभी सन्धि कर ली पर इंग्लैं-

उसने दूसरी बार तबतक शस्त्र नहीं रखा जबतक फ्रांसीसियोंका सम्राट् बन्दी नहीं हो गया।

संवत् १८६० (सन् १८०३) में इंग्लैंड और फ्रांसके बीच युद्ध पुनः आरम्भ हुआ। नेपोलियनने शीघ्रही हनोवरपर अधिकार कर लिया—इंग्लैंडका राजा यहाँका इलेक्टर था—और हनोवरसे लेकर ओट्राएटो तक तटावरोध कर दिया। नेपोलियनने हालैंड, पोर्तुगल, स्पेन और लिगूरियन प्रजातंत्र (पहलेके जिनोआ प्रजातंत्र) को येनकेन प्रकारेण फ्रांसीसी सेनाको धन-जनसे सहायता देने तथा अंग्रेजी जहाजोंको अपने अपने बन्दरमें न आने देनेपर राज़ी कर लिया।

चैनलके उस पार बूलोनमें एकाएक फ्रांसीसी सेना पहुँच जानेसे इंग्लैंड भयभीत हो गया। बहुत सी चौड़े पेंदे वाली नावें (फ्लैटबोट) एकत्र की गयीं और सैनिकोंको चढ़ने और उतरनेका ढङ्ग सिखलाया गया। जाहिरा तो यही मालूम होता था कि नेपोलियन इंग्लैंडपर आक्रमण करना चाहता है। ताहम फासला कम होते हुए भी इंग्लिश चैनलके उस पार एक भारी सेना ले जाना बहुत ही खतरनाक था। बहुत लोग तो इसे बिलकुल असम्भव ही समझते थे। यह कोई नहीं कह सकता कि वास्तवमें नेपोलियन ऐसा करना चाहता था या नहीं। सम्भव है, बूलोनमें सैन्य-संग्रह करनेका उसका उद्देश्य महादेशीय युद्धकी तैयारीके लिए हो जिसके शीघ्र होनेके लक्षण उसे दिखाई दे रहे थे। कुछ भी हो, इसमें सन्देह नहीं कि इंग्लैंडको भयभीत करनेमें वह सफल हुआ। इंग्लैंडको अपने बचावकी तैयारी करनेके लिए बाध्य होना पड़ा।

ज़ार प्रथम अलेक्ज़ेंडरने इंग्लैंड और फ्रांसमें मेल-मिलाप करानेके लिए एक योजना तैयार की थी (अगस्त सन् १८०३)।

इसको अस्वीकार कर देने तथा एड्रियाटिक तटपर अपना प्रभाव जमानेकी नेपोलियनकी स्पष्ट इच्छाके कारण रूस एक नये गुट्टमें शामिल हुआ। संवत् १८६२ के श्रावणके मध्यतक आस्ट्रिया और स्वीडनके साथ इंग्लैंड भी इस गुट्टमें शरीक हो गया। इटलीमें नेपोलियनकी शक्तिवृद्धिसे आस्ट्रियापर विशेष प्रभाव पड़ा। संवत् १८६२ में नेपोलियन इटलीका राजा बनाया गया था, उसने अपनी बहनके लिए उत्तर इटलीमें एक डची कायम की थी और लिगुरियन प्रजातंत्रको फ्रांसमें शामिल कर लिया था। साथ ही यह अफवाह भी उड़ी हुई थी कि वह आस्ट्रियाके वेनिशियन प्रदेशोंपर भी अधिकार जमानेका विचार कर रहा है।

७ भाद्रपदको आस्ट्रियाके साथ युद्धकी घोषणा की गयी और चार दिन बाद बूलोनकी सेनाको पूर्वकी ओर बढ़नेकी आज्ञा दी गयी। आस्ट्रियाके एक सेनापतिने उल्ममें घिर कर बड़ी अयोग्यता दिखलायी। ३ कार्तिकको सेनाके साथ उसे आत्मसमर्पण करना पड़ा। तब नेपोलियन डैन्यूबके किनारे होते हुए वियेनाकी ओर बढ़ा। उसे मार्गमें विशेष रूपसे किसीका सामना नहीं करना पड़ा। कार्तिकका अन्त होते होते वियेनापर फ्रांसीसी सेनाका अधिकार हो गया। इसके पश्चात् नेपोलियन आस्ट्रिया और रूसकी सेनाका सामना करनेके लिए उत्तरकी ओर बढ़ा। १६ मार्गशीर्षको उसने औसटर्लिट्ज़के युद्धक्षेत्रमें इन दोनोंको गहरी शिकस्त दी। रूस कुछ काल के लिए युद्धसे पृथक् हो गया और उसने क्षणिक सन्धि कर ली। आस्ट्रियाको प्रेसबर्गमें अपमानजनक सन्धि करनी पड़ी।

इस सन्धिसे आस्ट्रियाने इटलीमें किये गये नेपोलियनके परिवर्तनको स्वीकार कर लिया और उसके इटैलियन राज्यको वेनिशियन प्रदेशका वह भाग दे दिया जो उसे कम्पो-फर्मियो-

की सन्धिसे मिला था। इसके अतिरिक्त उसे नेपोलियनके मित्र बवेरियाको टिरोल देना पड़ा; वुर्टेमबर्ग और बेडेनको भी, जो नेपोलियनके मित्र थे, कुछ प्रदेश देने पड़े। उसने वुर्टेमबर्ग और बवेरियाके शासकोंका राजाकी उपाधि ग्रहण करना भी स्वीकार किया। इस समयकी परिस्थिति नेपोलियनके लिए एक बृहत् अन्तर्राष्ट्रीय संघ स्थापित कर स्वयं उसका प्रधान बननेके उद्देश्यसे पश्चिमी यूरोपका पुनः संघटन करनेके निमित्त अधिक अनुकूल थी।

नेपोलियन जर्मनीका एकीकरण नहीं करना चाहता था। वह सिर्फ यही चाहता था कि कुछ ऐसे स्वतंत्र राज्य या राज्य-समूह बने रहें जिन्हें सुविधाके साथ वह अपने नियन्त्रणमें रख सके। उसने प्रेसबर्गकी सन्धिमें इस प्रकारकी धारा रखी थी जिसके अनुसार नवनिर्मित राज्योंके नरेश आस्ट्रिया और प्रशाके नरेशोंकी तरह पूर्ण प्रभुता तथा तज्जन्य अधिकारोंका उपभोग कर सकें।

इस प्रकार कई जर्मन राज्योंको सम्राट्से पूर्ण स्वतन्त्र होनेकी स्पष्ट घोषणा कर उसने पवित्र रोमन साम्राज्यका अस्तित्व ही असम्भव कर दिया। इसके अनुसार सम्राट् द्वितीय फ्रैंसिसने संवत् १८६३ के २१ श्रावण (६ अगस्त सन् १८०६) को पदत्याग कर दिया। इस प्रकार एक इतिहासप्रसिद्ध प्रभावोत्पादक और स्थायी राजनीतिक पदका अन्त हो गया।

फिर भी द्वितीय फ्रैंसिसकी सम्राट्की उपाधि बनी रही। जब नेपोलियनने यह उपाधि स्वयं ग्रहण कर ली तब फौरन ही फ्रैंसिसने आस्ट्रियाके सम्राट्की उपाधि ग्रहण की जो उसके वंशाधीन राज्यके अधिकारकी सूचक थी। अभीतक वह हंगरी, बोहीमिया, डैलमेशिआ इत्यादिका राजा कहा जाता था।

इसी समय नेपोलियनने दक्षिणी जर्मन राज्योंका संघटन किया। इस संघका नाम "राइन संघ" रखकर वह स्वयं इसका संरक्षक (प्रोटेक्टर) बना। उसने यूरोपको यह यकीन दिलाया कि यह कार्य मैंने अपनी प्रजा तथा पड़ोसियोंके लाभके ही विचारसे किया है। उसने यह भी आशा दिलायी कि अब फ्रांसीसी सेना राइनको कभी पार न करेगी और जर्मनी-निवासी युद्धजनित अशान्ति, तबाही और हत्याकाण्डके दृश्य अतीतकी कहानियोंको छोड़ कर और कहीं भी न देखेंगे।

औस्टर्लिट्ज़के युद्धके पश्चात् शीघ्र ही नेपोलियनने यह घोषणा निकाली कि नेपिल्सका राजा अंग्रेजोंके साथ मिल जानेके कारण राज्यच्युत कर दिया गया। उसने फ्रांसीसी अफसरोंको नेपिल्सपर अधिकार करनेके लिए भेज दिया। संवत् १८६२ के फाल्गुन-चैत्र (मार्च १८०६) में उसने अपने एक भाई जोजेफको नेपिल्स और सिसलीका, और एक दूसरे भाई लूईको हालैंडका राजा बनाया और मुरत नामक अपने सालेको क्लीव्ज और बर्गका ड्यूक बनाया। इन राज्यों तथा मित्र जर्मन राज्योंको मिलाकर वह साम्राज्य बना जिसे वह स्वयं वास्तविक फ्रांसीसी साम्राज्य कहता था।

यूरोपीय महादेशके शक्तिशाली राज्योंमेंसे एक प्रशाने नेपोलियनके अधिकार-विस्तारके मार्गमें बाधा नहीं डाली थी। उसने सबसे पहले फ्रांसीसी प्रजातन्त्रसे संवत् १८५२ (सन् १७९५) में सन्धि की थी, और तबसे वह पूर्ण रूपसे तटस्थ बना रहा। यदि ज़ार अलैक्ज़ेण्डरका आग्रह मान कर वह संवत् १८६२ (सन् १८०५) के गुट्टमें शामिल हो गया होता तो औस्टर्लिट्ज़के युद्धका कुछ और ही परिणाम हुआ होता, कमसे कम विजेताके मार्गमें इसकी वजहसे और अधिक रुकावट

तो अवश्य पड़ी होती। तृतीय फ्रेडरिक विलियमको अपनी चञ्चलताके कारण बहुत अधिक क्षति उठानी पड़ी क्योंकि नेपोलियनने उसका ऐसे समयमें लड़नेके लिए बाध्य किया जब कि रूस या और किसी शक्तिसे काफी मदद पानेकी आशा वह नहीं कर सकता था। एकाएक युद्धकी घोषणाका कारण हनोवरके अधिकारका प्रश्न था। इस इलेक्ट्रेटको फ्रेडरिक विलियमने अस्थायी रूपसे केवल तबतक अपने अधिकारमें रखना कबूल किया था जबतक आंग्ल नरेशकी स्वीकृति नहीं मिलती, क्योंकि उसे आशा थी कि यह इलेक्ट्रेट मुझे मिल जायगा। फ्रेडरिक विलियम इसको अपने अधिकारमें लाना भी चाहता था क्योंकि यह उसके पहलेके राज्य तथा संवत् १८६० के (पोलैंडके) पुनर्विभाग द्वारा प्राप्त राज्यके ठीक बीचमें पड़ता था।

नेपोलियन सदाकी तरह इस बार भी अपने लाभकी बात नहीं भूला। उसने प्रशाके साथ बड़ी जबर्दस्ती की। उसे इंग्लैंडका शत्रु बनाकर और हनोवरपर उसीको अधिकार दिलानेका वचन देकर भी उसने बेशर्मीके साथ तृतीय जार्जको यह इलेक्ट्रेट वापस करनेका वचन दे दिया। इस अपमानसे प्रशामें राष्ट्रीय जोश उबल पड़ा जिससे इच्छा न रहते हुए भी फ्रेडरिकको युद्धके पक्षपातियोंके आग्रहसे, जिनमें उसकी स्त्री लूईज और प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ स्टाइन भी था, नेपोलियनके साथ युद्ध करनेपर बाध्य होना पड़ा।

उसकी सेना भी बीस वर्षकी पुरानी फ्रेडरिक महान्‌के समयकी थी। फ्रेडरिकके ही समयका एक सेनापति, ब्रंजविकका वृद्ध ड्यूक, सेनाका अध्यक्ष बनाया गया। जेनाके निकट प्रशाकी सेना परास्त हुई (१४ अक्तूबर १८०६)। इस एकही परा-

जयसे प्रशापर शत्रुका पूर्ण अधिकार होगया। इस आपत्से सारे देशमें आचारभ्रष्टता फैल गयी। बिना सामना किये दुर्ग समर्पित कर दिये गये और राजा अपने राज्यके अन्तिम छोरको ओर, रूसकी सीमाके निकट, भागकर चला गया।

अब नेपोलियन अपनी सेना पोलैंडमें लेगया और वहाँ उसने रूस और उसके निर्बल मित्र प्रशाके विरुद्ध कुछ कारर-वाई करनेमें शीतकाल व्यतीत किया। फ्रीडलैंडमें शत्रु-दलपर पूर्ण विजय प्राप्तकर उसने यह युद्ध-कार्य समाप्त किया। टिलसिटमें रूस और प्रशाके साथ नेपोलियनकी सन्धि हुई। प्रशापर नेपोलियनने जरा भी दया न दिखलायी। तृतीय फ्रेड-रिक विलियमको एल्बके पश्चिमके राज्यसे तथा पोलैंडके दूसरे और तीसरे बटवारेसे जो कुछ मिला था उससे हाथ धोना पड़ा। पोलैंड प्रदेशको नेपोलियनने वार्साकी ग्रांड डचीके नामसे अधीन राज्य बना दिया और अपने एक मित्र सैक्सनीके राजाको इसका शासक बनाया। प्रशाके पश्चिमीय स्थानोंको हनोवरके साथ मिलाकर उसने वेस्टफेलियाका राज्य कायम किया और उसे अपने भाई जेरोमको दिया। इसके प्रतिकूल रूसके साथ बर्तावमें बहुत लिहाज किया गया। ज़ारने नेपोलियन द्वारा किये गये राज्य सम्बन्धी महत् परिवर्तनोंको अन्ततः स्वीकार कर लिया और गुप्त रूपसे यह कबूल किया कि अगर इंग्लैंड सुलह करनेसे इनकार करेगा तो उसका तटावरोध करनेमें मैं भी सहायता दूँगा।

नेपोलियनका पुराना कट्टर शत्रु अभी अपराजित और उसकी पहुँचके बाहर ही रहा। संवत् १८६२ में जबकि नेपो-लियन आस्ट्रियापर विजय प्राप्त कर रहा था ठीक उसी समय नेलसनने स्पेनतटसे बहुत दूर ट्रैफलगारके प्रसिद्ध युद्धमें

फ्रांसीसी बेड़ेको दूसरी बार पराजित कर विनष्ट कर दिया। अब व्यापार-व्यवसाय नष्ट करके ही इंग्लैण्डको तबाह करनेकी आवश्यकता पहलेसे भी अधिक प्रतीत होने लगी क्योंकि शस्त्र-बलके सहारे उसपर विजय पानेकी आशा नहीं थी।

संवत् १८६३ के वैशाख-ज्येष्ठ (मई, सन् १८०६) में इंग्लैंडने एल्बसे लेकर ब्रेस्ट तकके किनारेको अवरुद्ध घोषित किया। इसके जवाबमें नेपोलियनने बर्लिनका आदेश निकाल कर यह घोषित किया कि इतने बड़े विस्तृत तटको अवरुद्ध घोषित कर इंग्लैंडने अपने अधिकारका भयंकर दुरुपयोग किया है क्योंकि उसका सारा बेड़ा भी ऐसा करनेमें समर्थ नहीं हो सकता। उसने ब्रिटिश द्वीपोंका कागजी अवरोध * घोषित कर उसके साथ व्यापारिक सम्बन्धका निषेध कर दिया। जिन पत्रों या गट्ठरोंपर इंग्लैण्डके किसी स्थान या अंग्रेजका नाम या पता अंग्रेजी भाषामें होता था उनका उन देशोंसे होकर जाना रोक दिया जाता था जो उसके नियंत्रणमें होते थे। फ्रांस राज्यमें या नेपोलियनके मित्रोंके राज्यमें जो अंग्रेज थे उनके साथ युद्धके कैदीका सा बर्ताव किया गया और उनकी सम्पत्ति न्याय्य पुरस्कार समझी गयी। अंग्रेजी माल-का व्यापार भी बिलकुल रोक दिया गया।

एक वर्ष बाद इंग्लैण्डने भी फ्रांसीसी साम्राज्य तथा इसके मित्रोंके नौस्थानोंका कागजी अवरोध घोषित किया किन्तु किसी अंग्रेजी नौस्थानपर रुकने, अंग्रेज सरकारसे अधिकार-पत्र प्राप्त करने और भारी निर्यात कर देनेकी

---

*Paper blockade—इतना विस्तृत अवरोध जिसका नियंत्रण घोषणा करने वालेके पोतोंके लिये असम्भव हो।

शर्तपर तटस्थ राज्योंके जहाजोंको आने जानेका अधिकार दे दिया। नेपोलियनने फौरन यह घोषणा निकाली कि जो जहाज इन अपमानजनक नियमोंकी पाबन्दी करेंगे उनको कुमकपोत* लूट लेंगे। इस समय तटस्थ माल ढोने वाले जहाजोंमें अमेरिकाके ही जहाज अधिक थे। इन रुकावटोंका यह परिणाम हुआ कि कई प्रकारके जहाजोंके लिए गमनागमन-निषेध सम्बन्धी कानून बन गये और संयुक्त राज्यका माल ढोनेका चलता रोजगार मारा गया।

यूरोपको ऐसी कई चीजोंकी आवश्यकता पड़ती थी जो उसके उपनिवेशोंमें उत्पन्न होती थीं और अंग्रेजी जहाजों द्वारा लायी जाती थीं। नेपोलियनने यह प्रयत्न किया कि यूरोपको इन चीजोंकी आवश्यकता ही न रहे। इसलिए उसने उन उन चीजोंके स्थानमें दूसरी चीजें व्यवहार करनेके लिए लोगोंको उत्साहित किया। किन्तु व्यापारमें छेड़छाड़ करनेसे जो तकलीफें होने लगीं उनसे सभी स्थानोंमें, विशेष कर रूसमें, बहुत असन्तोष फैल गया। परिणाम यह हुआ कि नेपोलियन की हुकूमतसे लोगोंको दिनानुदिन अरुचि उत्पन्न होती गयी और अन्तमें उसका पतन ही हो गया।

फ्रांस नेपोलियनके प्रति विशेष कृतज्ञ था क्योंकि उसने शान्ति स्थापित की थी और संवत् १८४६ की क्रान्तिके लाभदायक कार्योंको कायम रखनेका वचन दिया था। किन्तु यह सत्य है कि उसकी असीम महत्वाकांक्षाके कारण फ्रांसकी शक्ति दिनोंदिन घट रही थी क्योंकि वह कल्पित विशाल अन्तर्राष्ट्रीय संघकी स्थापनाके निमित्त अल्पवयस्क लोगोंको

---

* Privateer.

भी बलात् सेनामें भरती करता जा रहा था। फिर भी उसकी विजयों और उनसे मिले हुए उच्चपदके कारण फ्रांसीसी राष्ट्रमें अभिमानकी लहर फैल गयी।

सार्वजनिक कामोंमें बहुत कुछ सुधार कर उसने लोकप्रियता भी प्राप्त की। उसने आल्प्स पर्वतपर और राइनके किनारे किनारे उत्तम सड़कें बनवायीं जो आज भी पथिकोंको प्रशंसाके भावसे भर देती हैं। उसने सड़कें, घाट, पुल और मेहराव इत्यादि बनवाकर पेरिसकी विशेष रूपसे सौन्दर्य्य-वृद्धि की। इन कृतियोंसे उसकी विजयोंका स्मरण लोगोंके मनमें हमेशा ताजा बना रहता था। इन परिवर्तनोंके द्वारा उसने मध्ययुगीय शहरको अत्यन्त सुन्दर आधुनिक राजनगरका रूप देदिया।

सारी शिक्षा-प्रणालीका पुनः संघटन किया गया और शासनविभागकी ही तरह यह भी केन्द्रीभूत और नेपोलियनकी उद्देश्यपूर्तिमें सहायता देनेवाली कर दी गयी। नेपोलियन कहा करता था कि शिक्षाका प्रधान उद्देश्य ऐसी राजभक्त प्रजा तैयार करना है जो सम्राट् तथा उसके उत्तराधिकारियोंकी विश्वासभाजन हो। सरकारकी ओरसे एक पुस्तिका तैयार की गयी जिसमें केवल नेपोलियनके ही प्रति भक्तिका प्रतिपादन नहीं किया गया था बल्कि यह भी कहा गया था कि जो लोग उसके प्रति अपने कर्त्तव्योंका, जिनमें सैनिक सेवा भी सम्मिलित थी, सम्यक् रूपसे पालन नहीं करगे वे अन्तमें नरकगामी होंगे।

नेपोलियनने एक नया कुलीन वर्ग भी कायम किया और प्रसिद्ध व्यक्तियोंको 'लीजन आफ ऑनर' का सदस्य बनाकर उनके निर्वाहका यकीन दिलाया। अपने चुने हुए 'प्रिंस' लोगोंको वह दो लाख फ्राँक वार्षिक वृत्ति देता था। सचिवों, सिनेटरों तथा राज्यपरिषद्के सदस्योंको 'काउंट' की उपाधि

मिलती थी और उन्हें भूमिकरसे तीस हजार फ्रांक दिया जाता था। सेनाका भी पूरा पूरा खयाल किया जाता था क्योंकि वह नेपोलियनका प्रधान अवलम्ब थी। उसके सेनापतियोंकी आय बहुत अधिक थी और जो सैनिक वीरताके कार्य करते थे उन्हें भी 'लीजन आफ ऑनर'की उपाधि दी जाती थी।

जैसे जैसे समय बीतता गया नेपोलियनकी स्वेच्छाचारिता भी बढ़ती गयी। उसकी आज्ञासे साढ़े तीन हजार राजविद्रोही लोग गिरफ़्तार किये गये। उनका अपराध यही था कि एकने नेपोलियनके प्रति घृणा प्रकट की थी तो दूसरेने अपने पत्रमें वर्तमान शासनके विरुद्ध भाव अंकित किया था। अदनीसे अदनी बुराइयाँ भी नेपोलियनकी दृष्टिसे नहीं बच पाती थीं। उसने एक इतिहासकी पुस्तकका नाम "बोनापार्ट-का इतिहास' (हिस्ट्री आफ बोनापार्ट) से बदल कर "नेपो-लियन महान्के युद्धोंका इतिहास" (हिस्ट्री आफ दि कम्पेन्स आफ नेपोलियन दि ग्रेट) कर दिया। उसने जर्मनीके कुछ शहरोंमें ऐसे नाटकोंका खेलना बन्द कर दिया जिनसे उसके शासनके प्रति असन्तोष उत्पन्न होनेकी सम्भावना थी।

अब तक नेपोलियनको अपने अधिकार-विस्तारके मार्गमें केवल यूरोपीय शक्तियों द्वारा डाली गयी रुकावटोंका ही सामना करना पड़ा था। उसके विजित राज्योंकी प्रजाने उसके राज-नीतिक परिवर्तनोंकी ओर जरा भी ध्यान नहीं दिया। फिर भी यह बात स्पष्ट थी कि ज्योंही उन लोगोंमें देशभक्तिका जोश एक बार जागृत हो जायगा त्योंही फ्रांसीसी सम्राट्की यह बनावटी पद्धति बातकी बातमें छिन्नभिन्न होजायगी। पहले पहिल उसका विरोध लोगोंकी ओरसे ही और ऐसी जगहसे हुआ जहांसे उसे इस बातकी जरा भी आशंका न थी।

टिलसिटकी सन्धिके बाद नेपोलियनने स्पेनिश प्रायद्वीपको पूर्णरूपसे अपने अधिकारमें लानेका संकल्प कर लिया। पोर्तुगल अंग्रेजोंका घनिष्ट मित्र था और राज्यपरिवारमें कलह उत्पन्न होजानेके कारण स्पेनका लेना बहुत आसान काम था। संवत् १८६५ के वसन्तमें उसने स्पेनके राजा और युवराज दोनोंको बेयानमें मिलनेके लिए राजी किया। यहाँ उसने दोनोंको राज्याधिकार त्यागनेके लिए रजामन्द या लाचार किया। २३ ज्येष्ठ (६ जून) को उसने अपने भाई जोज़ेफको स्पेनका राजा और उसके स्थानपर मुरतको नेपिल्सका राजा बनाया।

सत्कार्यों और नयी शासन-विधिका मनसूबा बाँधकर जोजेफने आषाढ़-श्रावण (जुलाई) में मेड्रिडमें प्रवेश किया। युवराजके पक्षमें शीघ्रही विद्रोह उठ खड़ा हुआ। इसकी जड़में धार्मिक जोश भी मौजूद था क्योंकि मठाधीशोंने लोगोंको नेपोलियनके विरुद्ध यह कह कर भड़का रखा था कि वह पोपपर अत्याचार कर रहा है और उसका राज्य हड़पता जा रहा है। एक फ्रांसीसी सेना बाइलेनमें पकड़ ली गयी और दूसरीको पोर्तुगलमें उतरी हुई अंग्रेजी सेनाके हाथ आत्मसमर्पण करना पड़ा। मध्य श्रावणके पूर्व ही जोजेफ और उसकी फ्रांसीसी सेनाको एब्रो नदीके पीछे हटना पड़ा।

कार्तिक मासमें योग्य सेनापतियोंकी अध्यक्षतामें दो लाख सैनिक साथ लेकर फ्रांसीसी सम्राट् स्वयं स्पेन गया। स्पेनके सैनिक, जो संख्यामें लगभग एक लाखके थे, समुचित रूपसे शस्त्रास्त्रोंसे सुसज्जित नहीं थे। इससे भी बढ़कर खराबी यह थी कि गत विजयके कारण उन्हें अपने ऊपर आवश्यकतासे अधिक भरोसा था। युद्धमें ये लोग पराजित हो गये और १८

मार्गशीर्षको मेड्रिड समपत कर दिया गया। नेपोलियनने फौरन धार्मिक न्यायालय, मनक्षबदारीके कर इत्यादि, चुङ्गीकी आभ्यन्तर सीमा, और दो-तिहाई मठोंको उठा दिया। जिस तरीकेसे राज्यक्रान्तिके दिनोंमें पश्चिमी यूरोप भरमें शस्त्रके जरिये सिद्धान्तोंका प्रचार होता था उसका यह स्पष्ट उदाहरण था।

दूसरे ही मासमें नेपोलियन पेरिस लौट आया क्योंकि उसे आस्ट्रियाके साथ युद्धमें प्रवृत्त होना था। उसने स्पेनवालोंको यह चेतावनी देकर कि, ऐसी ऐसी बाधाओंको दूर करनेकी फ्रांसीसी सम्राट्में काफी ताक़त है, अपने भाई जोजेफको संकटापन्न परिस्थितिमें ही छोड़ दिया। पर उसे शीघ्रही यह विदित हो गया कि स्पेनवाले गरीला-युद्ध* करनेमें कुशल हैं जिसके आगे उसके योग्य सेनापतियों और अच्छे सैनिकोंका वश नहीं चल सकता। स्पेनवालोंकी लगातार शत्रुता उसके अन्तिम पतनके कारणोंमें एक प्रधान कारण थी।

संवत् १८६६ के आरम्भमें ही आस्ट्रियाने 'यूरोपके शत्रु' के साथ एक बार और युद्धकी घोषणा की। इस बार आस्ट्रियाका कोई मददगार नहीं था। वियेनाके निकट वाग्राममें भारी युद्ध हुआ। इसमें औस्टर्लिट्ज़की तरह फ्रांसीसियोंकी पूरी विजय तो नहीं हुई पर इतना जरूर हुआ कि इस बार भी उन्होंने आस्ट्रियाको प्रेसबर्गकी ही तरह अपमान-जनक शर्तोंपर सन्धि करनेके लिए बाध्य किया। आस्ट्रियाका उद्देश्य यह था कि अधीन राज्य रखनेकी नेपोलियनकी प्रथा उठा दी जाय और नेपोलियन-

---

* मराठोंकी तरह टुकड़ियोंमें बँटकर युद्ध करना, और शत्रुओं एवं रसद इत्यादिपर अचानक टूट पड़ना।

के राज्यापहरणके पूर्व जिन जिन लोगोंका जिन स्थानोंपर अधिकार था वे अपने अपने न्याय्य अधिकारोंको पुनः प्राप्त करलें। पर परिणाम उलटा ही हुआ। इस उद्देश्यको पूरा करनेकी जगहमें आस्ट्रियाको अपना और राज्य खोना पड़ा और नेपोलियन अधीन राज्योंकी संख्या-वृद्धि करता ही गया। इटूरिआ तथा पोपका राज्य मिलानेके बाद, आस्ट्रियापर विजय पानेसे प्रोत्साहित होकर नेपोलियनने हालैएड, और कुछ जर्मन प्रदेशोंको जिनमें हांसा नगर भी शामिल थे, अपने राज्यमें मिला लिया। संवत् १८६७ में फ्रांसीसी राज्यका विस्तार नेपिल्ससे लेकर बाल्टिक समुद्रतक पहुँच गया। उस समय नेपोलियनका राज्य छोड़कर लुबेकसे रोमतक सफर नहीं किया जा सकता था।

इतना बड़ा विस्तृत राज्य प्रदान करनेके लिए नेपोलियनको योग्य उत्तराधिकारीके लिए बड़ी चिन्ता थी। जोज़ेफीनसे उसे कोई सन्तति नहीं थी इसलिए उसने उसको तिलाक देनेका निश्चय किया और एक रूसी राजकुमारीके साथ विवाह करनेका विचार किया पर पीछे उसने आस्ट्रियाके सम्राट्की कन्या मेरिया लुइसासे विवाह कर लिया। इस प्रकार इसका प्रवेश एक पुराने और सम्मानित राजवंश—हैप्सबर्गवंश—में हो गया। इस नयी पत्नीसे शीघ्रही एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसे 'रोमनरेश'की उपाधि दी गयी। महाद्वीपीय राज्योंमें केवल रूस ही नेपोलियनके नियंत्रण-क्षेत्रसे पूर्णतः बाहर था। जार प्रथम अलेक्ज़ेएडर और नेपोलियनके बीच मनोमालिन्य उत्पन्न हो जानेके कई कारण मौजूद थे। इस समय तक टिलसिटके समझौतेकी शर्तोंका पालन होता आया था। नेपोलियन चुपकेसे जारके डैन्यूब प्रान्तों व फिनलैंडको मिलानेके प्रयत्नोंमें रुकावट डालता रहा। इसके अतिरिक्त नेपोलियन

द्वारा पोलैंडमें राष्ट्रीय सरकारकी स्थापनाकी संभावनासे अले-क्ज़ेंडरको भारी खटका बना हुआ था क्योंकि इससे उसके हितोंको धक्का पहुँच सकता था। संवत् १८६६ तक नेपोलियनको यह विश्वास हो गया कि मैं अब इस परिस्थितिमें आ गया हूँ कि इस सन्दिग्ध मित्रको दबा सकूँ क्योंकि यह किसी समय-भी भयंकर शत्रुका रूप धारण कर सकता है। अपने दूरदर्शी मंत्रियोंकी सम्मतिके प्रतिकूल उसने रूसकी सीमापर चार लाख सैनिक एकत्र किये जिनमें अधिकतर नये रंगरूट और मित्रोंद्वारा प्रस्तुत किये गये सैनिक थे।

इस भयङ्कर रूसी आक्रमणका पूरा पूरा वृत्तान्त यहाँ नहीं दिया जा सकता। नेपोलियनने तीन वर्षमें रूस-विजय समाप्त करनेका कार्यक्रम तैयार किया था पर उस ऋतुमें कमसे कम एक बार अच्छी विजय प्राप्त करनेकी आवश्यकतासे प्रेरित होकर वह आगे बढ़ता ही गया। रूसी लोग पीछे हटते हटते उसे एक ऊजड़ प्रान्तमें बढ़ा ले गये और उन्होंने बोरोडीनोमें (२२ भाद्र) उसका मुकाबिला किया। युद्धमें नेपोलियनकी विजय हुई पर मास्काऊ पहुँचते पहुँचते उसकी सेना केवल चौथाई रह गयी। उसके वहाँ पहुँचनेके पूर्व ही रूसियोंने नगरमें आग लगा दी थी। नेपोलियनको अपनी स्थिति अरक्षित प्रतीत हुई, इसलिये शीतकाल पहुँच जानेपर उसे वहाँसे भी हटना पड़ा। जाड़े, खाद्यपदार्थोंके अभाव तथा मार्गमें लोगोंके आक्रमणके कारण नेपोलियनको बड़ी भारी क्षति उठानी पड़ी। मार्गशीर्षके अन्ततक नेपोलियन पोलैंड पहुँचा। इस समय उसके साथ चार लाख सैनिकोंके बदले, जिनके साथ प्रस्थान किये अभी छः मास भी नहीं हुए थे, मुश्किलसे बीस हज़ार सैनिक शेष रह गये थे।

नेपोलियन बड़ी शीघ्रताके साथ पेरिस लौट आया। उसने वास्तविक घटनाको छिपाकर मनमाने तौरसे बातें गढ़कर कह दीं। उसने यहाँतक कह डाला कि पौषमें मुरतके पास पहुँचनेके समय तक सेना बिलकुल ठीक थी। यद्यपि रूसी आक्रमणमें उसके अत्यधिक सैनिक नष्ट हुए थे, तो भी जो शेष बचे थे वे स्वभावतः कुछ ऐसे ही अफसर थे जिनकी नयी सेना तैयार करनेमें विशेष आवश्यकता थी। इन लोगोंकी सहायतासे नेपोलियनने शीघ्रही छः लाख सैनिकोंकी एक सेना आक्रमणका कार्य जारी करनेके लिए तैयार कर ली। इसमें उन पुराने सैनिकोंके अतिरिक्त, जो इस समय तक पृथक् कर दिये गये होते, डेढ़ लाख रंगरूट थे जिनसे संवत् १८७१ के पूर्व सैनिक कार्य नहीं लिया जा सकता था।

संवत् १८६९ के फाल्गुनके मध्य तक प्रशाके भीरु नरेश फ्रेडरिक विलियमको लोकमतके दबावसे नेपोलियनका साथ छोड़कर रूसका साथ देनेपर राजी होना पड़ा। ३ चैत्रको उसने अपनी प्रजाके नाम एक घोषणापत्र निकाला। इसके द्वारा उसने प्रशाकी स्वतंत्रता पुनः प्राप्त करनेके उद्देश्यसे प्रजाकी सहायता चाही। जेनाकी पराजय तक प्रशाका सामाजिक संघटन संवत् १८४६ के पूर्वके फ्रांससे भी गया गुजरा था। कृषक लोग दासताके बन्धनमें जकड़े हुए थे। ये अपनी भूमिसे पृथक् नहीं हो सकते थे और इन्हें अपने स्वामीके लिए सप्ताहमें कुछ दिन विना पारिश्रमिकके ही काम करना पड़ता था। इसके अलावा एक वर्गको अपनेसे भिन्न वर्गोंकी जमीन खरीदनेका अधिकार नहीं था।

जेनाकी क्षति और टिलसिटकी हानियोंसे प्रशाके दूरदर्शी राजनीतिज्ञों—विशेष कर स्टाइन—को यह विश्वास हो गया कि

देशके बचावका एकमात्र उपाय फ्रांस जैसी सामाजिक और राजनीतिक क्रान्ति है। इन लोगोंको मनसबदारी प्रथाका उठाना, कृषकोंको मुक्त करना और भिन्न भिन्न जातियोंके जातिगत बन्धनोंको दूर करना बहुत आवश्यक प्रतीत हुआ क्योंकि इन कार्यों के होनेपर ही मान न मान मैं तेरा मेहमान बनने वालोंको निकाल बाहर करनेके निमित्त जनतामें काफी जोश पैदा कर सकना सम्भव था।

इस सुधारके मार्गमें पहला कार्य्य संवत् १८६४ के २३ आश्विनका राजकीय आदेशपत्र था जो लोगोंके अभ्युदयके मार्गमें आनेवाली रुकावटोंको दूर करनेके उद्देश्यसे निकाला गया था। कृषकदासता उठा दी गयी और भूम्यधिकार संबंधी बन्धन भी हटा दिये गये। अब सभी वर्गोंके लोग सभी प्रकारकी ज़मीनें रख और खरीद सकते थे। कई बार नेपोलियन तथा उसके द्वारा नियुक्त किये गये शासकोंने फ्रांसीसी राज्यक्रान्तिके सिद्धान्तोंको प्रवर्तित किया था, इस बार देशको इस आवश्यकतासे तैयार करना था कि वह नेपोलियनकी अधीनतासे छुटकारा पाकर पुनः स्वातंत्र्य प्राप्त करे। वस्तुतः इस कार्यका परिणाम भी वही था।

अब नेपोलियनको केवल यूरोपके मंत्रिमंडलों और उनकी भेजी हुई सेनाओंका ही सामना नहीं करना पड़ा बल्कि एक देशके निवासियोंका भी सामना करना पड़ा जो अपने देशके बचावके लिए अपना संघटन कर रहे थे। कुछ दिनों तक तो उसकी सेना विजय प्राप्त करती गयी। विना विशेष रुकावटके वह संवत् १८७० के ३१ वैशाख (१४ मई सन् १८१३) को अपने विश्वासपात्र मित्र सैक्सनीके नरेशके राज्यान्तर्गत ड्रेस्डेन पहुँच गया। ग्रीष्म भर वह इसपर दखल

जमाये रहा और उसने आस्ट्रिया तथा उसके मित्रोंके दलको कई बार पराजित किया। १०-११ भाद्रपद (२६-२७ अगस्त) को उसने ड्रेस्डेनकी अन्तिम बड़ी विजय प्राप्त की। जब उसने यह देखा कि रूस, प्रशा और आस्ट्रियाकी सेनाएँ, जिन्हें अब परस्परके सहयोगकी आवश्यकता भलीभाँति मालूम हो गयी थी, फ्रांससे मुझे दूर रखनेका प्रयत्न कर रही हैं, तो आश्विनके अन्तमें वह वहाँसे वापस चला पर लाइपसिकके आसपास उसे बड़ी बुरी तरहसे पराजित होना पड़ा।

पराजित सम्राट् ज्योंही अपनी शेष सेनाके साथ राइन पार हुआ कि उसका जर्मनी और हालैण्डके संबंधका राजनीतिक मनसूबा नष्ट होगया। राइन संघके सदस्य मित्रदलसे जा मिले। जेरोम बोनापार्ट वेस्टफेलियाका राज्य छोड़कर भाग आया और डचोंने फ्रांसीसी अफसरोंको हालैंडसे खदेड़ दिया। संवत १८७० (सन् १८१३) में स्पेनवालोंने वेलिंगटनकी अध्यक्षतामें अंग्रेजोंकी सहायता लेकर फ्रांसीसियोंसे अपने देशका पिंड छुड़ा लिया।

इस प्रकार विपद्ग्रस्त होनेपर भी नेपोलियनने केवल फ्रांस राज्यपर ही शासन करनेकी शर्तपर सन्धि करना अस्वीकार कर दिया। मित्रदलकी सेनाएँ फ्रांसमें घुस आयीं। नेपोलियनकी अमानुषिक शक्ति उन्हें पेरिसपर अधिकार करनेसे नहीं रोक सकी। नेपोलियनको राज्य-त्याग करनेपर विवश होना पड़ा। मित्रदलने, तानेके तौरपर, उसको एल्बा द्वीपपर पूर्ण प्रभुत्व तथा सम्राट्की उपाधि रखनेकी स्वीकृति दी। वास्तवमें वह इस द्वीपमें कैदीकी भाँति था। फ्रांसका राज्य अब पुनः बूरबनोंके अधिकारमें आगया।

एक ही वर्षके भीतर मित्रोंमें फूट तथा बूरबनोंके अप्रिय होजानेसे उत्साहित होकर वह वहाँसे भागकर फ्रांस आया। सेनाके एक भागने उसका हार्दिक स्वागत किया। फिर भी फ्रांस उसके पुनः अधिकार जमानेके सम्बन्धमें प्रायः उदासीन ही था। अब उसकी शान्ति और स्वाधीनता सम्बन्धी बातोंका कोई भी विश्वास नहीं करता था। इसके अलावा मित्रदलमें आपसमें चाहे जो कुछ भी मतभेद रहा हो पर इस संसारकी शान्तिके शत्रुके प्रति उनमें पूर्ण ऐकमत्य था। मित्रदलने इसे डाकू और अपराधी करार दिया।

यह समाचार पाकर कि वेलिंगटनकी अध्यक्षतामें अंग्रेजी सेना और ब्लूचरकी अध्यक्षतामें प्रशाकी सेना नेदरलैंडमें पहुँची है, उसने, जो सेना वह प्रस्तुत कर सकता था उसीको लेकर, आक्रमण करनेकी ठानी। पहली मुठभेड़में उसने प्रशावालोंको मार भगाया। अब वेलिंगटन ब्रूसेल्सके दक्षिण वाटर्लूमें आ डटा। नेपोलियन उसकी ओर बढ़ा और यदि ब्लूचर इसी समयमें न पहुँच गया होता तो अंग्रेजोंपर भी उसे विजय मिलती। इस प्रकार नेपोलियन सर्वप्रसिद्ध आधुनिक युद्धमें पराभूत होगया। यदि वाटर्लूमें वह पराजित न भी होता तो भी वह मित्रदलकी इस बड़ी सेनाका, जो एकमात्र इसका उन्मूलन करनेके निमित्तही नियोजित हो रही थी, बहुत दिनोंतक सामना नहीं कर सकता था। इस बार वह दूरवर्ती सेंट हेलीना द्वीपमें निर्वासित कर दिया गया जहाँ वह अपने अतीतपर सोचने और आत्म-वृत्तान्त लिखनेके सिवा, जिसमें उसने अपनी महत्वाकांक्षाको न्याय्य प्रमाणित करनेका प्रयत्न किया है, कुछ नहीं कर सकता था।

अध्याय ३६

वियेनाकी कांग्रेसके बादका यूरोप

नेपोलियनके पतनके बाद राज्योंका पुन निर्माण यूरोपके राजनीतिक इतिहासमें सबसे प्रसिद्ध विषय है। मित्रदलने शीघ्रही फ्रांसकी गद्दीपर बूरबन वंशीय १६ वें लूईके छोटे भाई प्रावेन्सके काउण्टको बैठाया। इसने अपना नाम १८ वाँ लूई रखा। पहले तो मित्रदलने फ्रांस राज्यकी सीमा वही रखी जो संवत् १८४८ के अन्तमें थी पर पीछे नेपोलियनके एल्बासे लौटनेपर, उसका आधिपत्य कबूल करनेके कारण, दण्ड-स्वरूप सेवाय उससे पृथक् कर लिया गया। वियेनामें यूरोपीय शक्तियोंकी एक महती कांग्रेस आमंत्रित की गयी जिसमें मित्रदलने सभी जटिल समस्याओंको, जो उनके सामने उपस्थित थीं, हल करानेका विचार किया। इन लोगोंका विचार नेपोलियनके उथलपुथलके पूर्वकी स्थिति पुनः लानेका नहीं था क्योंकि आस्ट्रिया, रूस और प्रशा इन सबकी स्वार्थमूलक योजना इस साधारण व्यवस्थाकी पूर्णतः बाधक थी।

संवत् १८७१ के १५ कार्तिक (१ नवम्बर सन् १८१४) को वियेनाकी कांग्रेसका अधिवेशन आरम्भ हुआ। मित्रदलने शीघ्र ही हालैण्डपर आरेंजवंशका वंशागत शासन कबूल कर लिया क्योंकि इसने नाममात्रके प्रजातंत्रके दिनोंमें महत्वपूर्ण कार्य किये थे। आस्ट्रियन नेदरलैंड्ज हालैंडको ही दे दिया गया जिसमें वह फ्रांसकी ओरसे होनेवाले नये हस्तक्षेपोंको रोकनेमें

और अधिक समर्थ हो जाय। नेपोलियनके परिवर्तनोंके पूर्व जो छोटी छोटी इटालियन रियासतें थीं वे तथा स्विट्ज़रलैंड स्वतंत्र घोषित कर दिये गये। वेनिस तथा जिनेवाके प्रजातंत्र अपनी पूर्व स्थितिमें नहीं लाये गये। जिनेवा सार्डिनियाके नरेशको और विनीशिया आस्ट्रियाको, नेदरलैंडमें जो उसकी क्षति हुई थी उसकी पूर्तिमें, दे दिया गया। आस्ट्रियाको उसका पुराना प्रदेश मिलन भी मिल गया। उत्तरी इटलीपर आस्ट्रियाका नियंत्रण हो जानेके कारण इटलीके सारे प्रायद्वीपकी नीति निर्धारित करनेमें उसका बहुत कुछ हाथ हो गया। जर्मनीके सम्बन्धमें यह किसीकी भी इच्छा नहीं हुई कि संवत् १८६० (सन् १८०३) के कार्यको रद्दकर पहलेकी अराजकता फिर लायी जाय। राइन-संघके पुराने सदस्य नेपोलियन द्वारा स्थापित आधिपत्य (साव्हरेनटी) को कायम रखनेपर तुले हुए थे। इसलिए मित्र-दलने यह निश्चय किया कि जर्मनीकी भिन्न भिन्न रियासतें स्वतंत्र होती हुई भी एक राष्ट्रसंघमें संघटित रहें।

यहाँ तक तो सभी बातें किसी कदर ठीक थीं पर कांग्रेस-में परस्पर मतभेद इतना अधिक बढ़ गया कि स्वयं मित्रदल-में ही युद्ध छिड़ते छिड़ते बचा और नेपोलियनको एल्बासे लौटनेका साहस हुआ। यह झगड़ा पोलैंड राज्यके सम्बन्धमें था जिसे नेपोलियनने वारसाकी ग्रैंड डचीमें परिणत किया था। प्रशा और आस्ट्रिया इस बातपर राज़ी थे कि ज़ार इसको एक पृथक् राज्यके रूपमें रख कर स्वयं इसका शासक बने। प्रशाको पूर्वमें जो हानि उठानी पड़ी थी उसकी पूर्ति सैक्सनी नरेशका राज्य देकर की जाने वाली थी क्योंकि यह राइन संघके और सदस्योंके नेपोलियनका परित्याग कर देने-पर भी उसका विश्वासपात्र बना रहा था।

आस्ट्रिया और इंग्लैण्ड इस व्यवस्थाके बिलकुल विरुद्ध थे। ये न तो सैक्सनीके नरेशको राज्यवंचित होने देना चाहते थे और न पोलैंड देकर पश्चिममें ज़ारका प्रभाव ही बढ़ने देना चाहते थे। १८ वें लूईके प्रतिनिधि कूटनीतिज्ञ टेलीरैंडको अब अच्छा मौक़ा हाथ लगा। मित्रदलका यह संकल्प था कि फ्रांसको, न पूछ कर शेष चारों शक्तियोंको स्वेच्छापूर्वक व्यवस्था करनेकी इजाज़त दी जाय। परन्तु अब इनमें भयंकर फूट पैदा हो गयी थी। आस्ट्रिया और इंग्लैंडने उत्तरीय शक्तियोंका विरोध करनेके लिए फ्रांसको अपनी ओर मिला लिया। इस प्रकार लगभग पच्चीस वर्षोंतक यूरोपकी शांति भंग करनेवाला (फ्रांस) राष्ट्रपरिवारमें पुनः सम्मिलित हो गया।

अन्तमें परस्पर सुलह हो गयी। ज़ारको वारसाकी ग्रैंड डचीको पोलैंड राज्यमें परिणत करनेका अधिकार दिया गया पर प्रशाको सैक्सनीका केवल आधा राज्य मिला। प्रशाको क्षतिपूर्त्तिमें राइनके वाम तटपर कुछ और प्रदेश मिले जो लुनेवीलकी सन्धिके पूर्व पादरियों तथा छोटे-मोटे साधारण राजाओंके अधिकारमें थे। इस व्यवस्थाका महत्त्व वर्तमान जर्मन साम्राज्यकी प्रगतिके सम्बन्धमें देख पड़ेगा।

यदि गत महायुद्धके पूर्वके यूरोपके नक़्शेके साथ संवत् १८७२ का नक़्शा मिला कर देखा जाय तो निम्न अन्तर स्पष्टतः देख पड़ेंगे—संवत् १८७२ में जर्मन साम्राज्यका नामोनिशान नहीं था और प्रशा इस समयकी अपेक्षा कहीं छोटा था और इतना घना भी नहीं था। पड़ोसके छोटेमोटे जर्मन राज्यों तथा डेनमार्कके कुछ राज्यको हड़पकर ही इसने अपनी वृद्धि की थी। उस समयके संघकी तरह संवत् १९७१ के जर्मन साम्राज्यमें आस्ट्रियाका कोई अंश शामिल नहीं था। इसके

प्रतिकूल सारा प्रशा जर्मन साम्राज्यके अन्तर्गत आ गया था। पोलैंड राज्य रूस राज्यका एक अभिन्न अंग बन गया था। आस्ट्रिया जर्मन संघसे पृथक् होकर हंगरीके साथ मिल गया था।

संवत् १८७२ में इटलीका राज्य नहीं था, संवत् १९७१ तक लम्बार्डी और वेनीशिया परसे आस्ट्रियाका आधिपत्य उठ गया और वियेनाकी कांग्रेस द्वारा पुनः स्थापित सभी छोटी छोटी रियासतें तथा पोपका राज्य लुप्त हो गया। पुराने आस्ट्रियन नेदरलैंडके स्थानमें, जो हालैंड-नरेशको दिया गया था, वेल्जियमका एक छोटा सा राज्य कायम हो गया। फ्रांसने, जो अब पुनः प्रजातंत्र हो गया था, सेवाय फिर प्राप्त कर लिया, पर आलसेस और लारेन् जर्मन साम्राज्यको समर्पित करनेके कारण उसने राइनतटके सभी स्थान खो दिये। यूरोपीय तुर्की भी संवत् १९७१ तक लगभग लुप्त ही हो गया, और दक्षिणी यूरोपमें कई छोटे छोटे नये राज्य—यूनान, सर्विया, रूमानिया और बलगेरिया—कायम हो गये।

नेपोलियनके पतनके बाद फ्रांसके जो राजा हुए उनमें किसीसे भी, स्वेच्छाचारितापूर्ण शासन करनेमें, वह कम नहीं था। पर क्रान्तिजनित परिस्थितिसे ही उसका उदय हुआ था इस कारण उसे उन प्राचीन बुराइयोंके प्रति, जिन्हें क्रान्तिने दूर किया था, जरा भी सहानुभूति नहीं थी। उसकी स्वेच्छाचारिताके होते हुए भी उसके प्रभावमंडलमें आये हुए देशोंने फ्रांसीसी क्रान्तिसे अवश्य शिक्षा ग्रहण की थी। फिर भी छोटे छोटे यूरोपीय राज्योंके कई प्रत्यावर्तित राजा मनसबदारी प्रथाकी बुराइयोंको पुनः प्रचलित करनेके लिए अग्रसर होने लगे और अपनी प्रजाके साथ ऐसा व्यवहार करने लगे मानो

फ्रांसकी राज्यक्रान्ति या नेपोलियन कभी हुआ ही नहीं। उदाहरणार्थ, स्पेनमें धार्मिक न्यायालय तथा मठ पुनः स्थापित कर दिये गये और पादरी लोग पुनः कर--भारसे मुक्त कर दिये गये। वेस्टफेलिया-राज्यके एक भाग हेसीकेसलमें नेपोलियन तथा उसके भाई द्वारा जो सुधार किये गये थे वे उठा दिये गये। कुलीन जातिको पुनः विशेषाधिकार मिल गये और किसानोंके सिरपर मनसबदारी प्रथाका बोझ लाद दिया गया। सैनिकोंको भी १८ वीं सदीकी तरह शिखा और कृत्रिम बाल रखना पड़ा। सार्डिनिया और नेपिल्सके प्रत्यावर्तित राजाओंने भी उसी प्रतिघात-नीतिको जारी किया। फ्रांस, प्रशा, आस्ट्रिया और रूस प्रभृति बड़े यूरोपीय राज्योंमें प्रतिघात-क्रिया इस प्रकार एकाएक और प्रत्यक्ष रूपसे नहीं शुरू हुई।

संवत् १८५० में फ्रांसीसी लोग विदेशी शक्तियों—आस्ट्रिया और प्रशा—को मार भगानेके लिए सचेत हो गये, क्योंकि ये उनके घरेलू कामोंमें हस्तक्षेप करने और पुनः प्राचीन प्रथा स्थापित करनेकी धमकी दे रहीं थीं। बीस वर्ष पश्चात् संवत् १८७१ में जब मित्रदलने पेरिसमें प्रवेश किया तो किसी प्रकारके विद्रोह या पुरानी प्रथाके पुनः प्रचलित होनेकी आशङ्का नहीं थी। यह सत्य है कि सिंहासनपर पुनः बूरबन वंश वालोंका अधिकार हुआ, पर फ्रांस भी राजतंत्रका ही हृदयसे पक्षपाती था। संवत् १८४८ की असाधारण परिस्थितिके समय १६ वें लूईके कुमंत्रजन्य आचरणने ही उसे राज्यच्युत कर प्रजातन्त्र स्थापित कराया जिसे नेपोलियनने बड़ी सुगमताके साथ पुनः राजतन्त्रमें परिवर्तित कर दिया। नये राजा १८ वें लूईने नेपोलियनकी इस विचित्र शासन पद्धतिको ज्योंका त्यों छोड़ दिया

और क्रान्तिजनित कार्यौंको अन्यथा करनेका प्रयत्न नहीं किया । उसने अपनी प्रजाके लिए एक अधिकारपत्र स्वीकार किया जो दो दृष्टियोंसे विशेष महत्वपूर्ण समझा जाता है ।

प्रथमतः संवत् १८७१ के अधिकारपत्रमें क्रान्तिके परिणामोंका पूरा पूरा विवरण दिया गया है । १८ वें लूईने जो जो रियायतें कीं उनसे उसके तथा उसके बड़े भाईके समयका अन्तर स्पष्टतः विदित हो जाता है । द्वितीयतः जितने दिनों तक यह अधिकारपत्र चला उतने दिनों तक फ्रांसमें कोई भी शासनविधि नहीं चली । संवत् १८८७ में किये गये कुछ परिवर्तनोंके साथ संवत् १९०५ तक यह अधिकारपत्र चलता रहा ।

इस अधिकारपत्रमें उल्लिखित है कि कानूनकी दृष्टिमें सभी फ्रांसीसी समान हैं और वे सभी राजकीय तथा सैनिक पदोंपर नियुक्त हो सकते हैं । व्यक्तिगत और धार्मिक स्वाधीनताकी रक्षा की जायगी और किसी श्रेणीगत भेदभावके विना शक्तिके अनुसार सबको कर देना पड़ेगा । सारांश यह कि "मनुष्यके अधिकारपत्रकी घोषणा" के सभी सुधार इसमें समाविष्ट थे । लार्डसभा और प्रतिनिधि-सभाकी सहायतासे राजा कानून बना सकता था । प्रतिनिधि-सभा मंत्रियोंपर दोषारोप भी कर सकती थी ।

इन उदार शर्तोंके होते हुए भी प्रवासी सरदारों—जिनका नेता राजाका भाई, आर्टवाका काउण्ट था—तथा पादरियोंने प्रतिघातक्रियाकी मात्रा और भी बढ़ानेका प्रयत्न किया । इनलोगोंने उच्च न्यायालय (पार्लमेण्ट) को कुछ दमनकारी कानून बनानेपर राजी किया और इटली तथा स्पेनमें क्रान्तिसम्बन्धी आन्दोलनोंका दमन करनेमें प्रतिघाती शासकोंको सहायता देनेके लिए १८ वें लूईसे आग्रह किया ।

अन्तिम बूरबन वंशीय राजा

१३ वां लूई (मृत संवत् १७००)

- **१४ वां लूई (मृत १७७२)**
  - **१५ वां लूई (मृत १८३१)**
    - **लूई दि डाफिन (मृत १८२२)**
      - **१६ वां लूई (मृत १८५०,**
        - **१७ वां लूई (मृत १८५२)**
      - **१८ वां लूई प्रावेन्सका काउंट (मृत १८८१)**
      - **१० वां चार्ल्स आर्ट्वाका काउंट (च्युत १८८७)**
- **फिलिप, आर्लियन्स-का ड्यूक**
  - **प्रथम लूई फिलिप फिलिपके पौत्रका पौत्र (च्युत १९०५)**
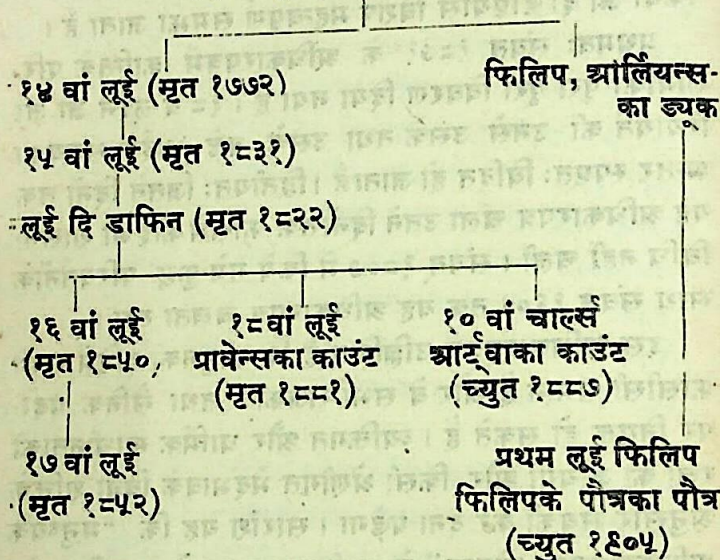
संवत् १८८१ (सन् १८२४) में १८ वें लुईकी मृत्यु हुई। उसके बाद आर्ट्वाका काउण्ट १० वें चार्ल्सकी उपाधिसे फ्रांसकी गद्दीपर बैठा। इसके शासनकालमें शासनकी प्रतिघात नीति स्वभावतः और भी स्पष्ट हो गयी। एक बिल पास कर क्रान्तिके समयकी कुलीन जनोंकी क्षति-पूर्ति की गयी। इसी प्रकारकी इससे कम न्याय्य और भी कई कारवाइयाँ हुईं। फल यह हुआ कि संवत् १८८७ (सन् १८३०) में पुनः क्रान्ति हुई और यह अप्रिय राजा राज्यच्युत कर दिया गया। इसके बाद बूरबन वंशकी छोटी अर्थात् आर्लियन्स शाखासे उत्पन्न लूई फिलिप राज-सिंहासनपर बैठाया गया।

जर्मनीपर नेपोलियनके अधिकार जमानेके तीन परिणाम हुए। पहला, राइनके वामतटीय प्रदेशोंको फ्रांसकी भेंट करनेके पश्चात् राज्योंका जो संघटन हुआ उससे पुरोहितोंकी रियासतों, वीरभटोंकी जमींदारियों तथा स्वतंत्र नगरोंमें जो परस्पर विषमता थी वह दूर होगयी। जब वियेनाकी कांग्रेसने विनष्ट पवित्र रोमन साम्राज्यके स्थानमें राष्ट्रसंघ स्थापित करनेका प्रश्न उपस्थित किया उस समय सिर्फ अड़तीस जर्मन राज्य और चार स्वतन्त्र नगर शेष बचे थे।

दूसरा, प्रशाकी आभ्यन्तर और बाह्य दशामें इतना परिवर्तन हुआ कि वह आस्ट्रियाको दबाकर जर्मनीमें प्राधान्य प्राप्त करने योग्य होगया। पोलैण्डके अन्तिम दो बटवारोंमें जो स्लाविक स्थान उसे मिले थे, उनका अधिकांश उसके हाथसे निकल गया पर क्षतिपूर्ति स्वरूप उसे जर्मनीके मध्यमें ही सैक्सनी राज्यका अर्द्धांश और कुछ ऐसे राइन प्रान्त मिले जिनके निवासियोंमें फ्रांसके क्रान्तिकारी भाव पूर्णतः भरे हुए थे। इस प्रकार प्रशाके राज्यमें जर्मन राष्ट्रकी सभी प्रकारकी जातियाँ सम्मिलित थीं और यह अजर्मन लोगोंसे पूर्णतः रहित था। इस बातमें यह अपने प्रतिद्वन्द्वी आस्ट्रियासे बढ़ा हुआ था क्योंकि उसकी (आस्ट्रियाकी) प्रजामें विभिन्न और संकर जातियाँ थीं।

इसके आभ्यन्तर परिवर्तन भी कुछ कम महत्वपूर्ण नहीं थे। प्रधान सचिव स्टाइन और उसके उत्तराधिकारी हार्डेनबर्गने जेनाके पश्चात् जो सुधार किये वे प्रशाके लिए फ्रांसकी राष्ट्रसभाके कार्योंसे किसी प्रकार कम न थे। क्षत्रियतंत्रका जातिविभाग उठा देने तथा कृषक दासोंकी मुक्ति कर देनेसे देशकी आर्थिक उन्नतिको बहुल सहायता पहुँची। नये सिरेसे सेनाकी व्यवस्था

की गयी। परिणाम यह हुआ कि प्रशाने संवत् १९२३ और १९२७ में ऐसी महत्वपूर्ण विजयें प्राप्त कीं जिनके कारण उसकी अध्यक्षतामें नवीन जर्मन साम्राज्यका संघटन संभव हुआ।

तीसरा, नेपोलियन कालके आन्दोलनोंसे सभी लोगोंमें राष्ट्रीय जोश पैदा हो गया था। विदेशियोंके पंजेसे देशको मुक्त करनेकी पुकार तथा लिखित शासनविधिके आधारपर शासन-कार्यमें भाग लेनेके खयालसे लोगोंमें एकतंत्र राज्यके प्रति बहुत ही असन्तोष पैदा हो गया था।

जब वियेनाकी कांग्रेसमें जर्मन-राज्योंके संघटनपर वाद-विवाद आरम्भ हुआ तो इस सम्बन्धमें दो योजनाएँ पेश की गयीं। प्रशाके प्रतिनिधियोंने यह योजना उपस्थित की कि संघ-टन संयुक्त राज्य अमेरिकाके ढंगपर होना चाहिये जिसमें सामान्य हितके सम्बन्धमें केन्द्रीय सरकार राज्योंपर नियंत्रण रख सके। आस्ट्रियाने इसका विरोध किया। और राज्योंने भी आस्ट्रियाका ही समर्थन किया। फल यह हुआ कि यह योजना स्वीकृत नहीं हो सकी। आस्ट्रियाने देखा कि हमारा राज्य वास्तविक जर्मन राष्ट्रसंघमें कभी सम्मिलित नहीं किया जा सकता क्योंकि हमारे राज्यके पश्चिम भागमें भी बहुतसे स्लाव हैं पर हंगरी और दक्षिण प्रान्तोंमें जर्मनोंका नामोनिशान भी नहीं है। इसके प्रतिकूल उसने यह खयाल किया कि वह ऐसे ढीले-ढाले संघका नेतृत्व ग्रहण कर सकता है जिसके सदस्य अलग अलग स्वतंत्र बने रहें। पूर्णप्रभु राजाओंके अन्तर्राष्ट्रीय संघमें नेतृत्व ग्रहण करनेका उसका यह लक्ष्य स्वीकृत विधिविधानमें प्रायः पूर्ण रूपसे स्पष्ट हो गया।

यह संघ देशोंका नहीं बल्कि जर्मनीके नरेशों और स्वतंत्र नगरोंका था। इसमें आस्ट्रियाके सम्राट् और प्रशाके नरेश

अपने उन प्रान्तोंके लिहाजसे सम्मिलित थे जो पहले जर्मन साम्राज्यके अन्तर्गत थे। डेनमार्कके राजा हालस्टाइनके लिहाजसे तथा नेदरलैंडके राजा लक्ष्मबर्गकी ग्रांडडचीके लिहाजसे इसमें शामिल थे। इस प्रकार संघमें दो पूर्णतः विदेशी राजा शामिल थे और दो मुख्य सदस्योंके सब प्रान्त भी संघके अंतर्गत नहीं थे।

फ्रैंकफर्टमें राष्ट्रसभा (डायट) का जो अधिवेशन हुआ उसमें जनताके प्रतिनिधि न होकर संघके सदस्य राजाओंके विशिष्ट दूत ही थे। इसके सदस्योंने सभी प्रकारकी मैत्री करनेका अधिकार अपने हाथमें रखा और यह प्रतिज्ञा की कि हम न तो ऐसा कोई समझौता करेंगे जो संघ या इसके किसी सदस्यको हानि पहुँचानेवाला हो और न किसी वहानेसे संघके किसी सदस्यपर आक्रमण करेंगे। यह भी तै हुआ कि सभी राज्योंकी स्वीकृतिके बिना विधिविधानमें संशोधन नहीं किया जा सकेगा। संघ इतना निर्बल होने पर भी ५० वर्षों तक बना रहा, जब कि प्रशाने बलात् आस्ट्रियाको संघसे पृथक् कर वर्तमान जर्मन संघकी रचना आरम्भ की।

जर्मनीका उदार और उन्नतिशील दल जर्मनीको वस्तुतः राष्ट्रीय बनानेमें वियेना कांग्रेसकी असफलता देखकर अत्यन्त निराश हुआ। प्रशाके राजाने अपनी प्रजाको जिस शासन-विधिके जारी करनेका वचन दिया था उसकी स्वीकृति देनेमें अधिक विलम्ब होनेके कारण भी इस दलको कष्ट पहुँचा। और भी ऐसे लक्षणोंकी कमी नहीं थी जिनसे यह स्पष्ट प्रतीत होता हो कि जर्मन राजा लोग अपने पूर्व स्वेच्छातंत्रात्मक अधिकारोंको छोड़ देंगे और उदारदल द्वारा समर्थित फ्रांसीसी क्रान्तिके सिद्धान्तोंको ग्रहण करेंगे। जेनाके युद्धके पश्चात,

आक्रमणकारीको निकाल बाहर करनेके उद्देश्यसे लोगोंमें जोश बनाये रखनेके लिए धर्म-संघ (लीग आफ चर्च) कायम किया गया था। संवत् १८७२ के लगभग स्वतंत्रताके युद्धसे लौटे हुए छात्रों द्वारा संस्थापित कई छात्र-सभाएं इसमें आ मिलीं। विद्यार्थियोंने अपने अधिवेशनोंमें प्रतिघाती दलकी खूब लानत-मलामत की और जर्मनीकी स्वतंत्रताकी कामना की। संवत् १८७४ के १ कार्तिक (१८ अक्तूबर १८१७) को इन लोगोंने, लूथर-विद्रोहका स्मृतिदिवस तथा लाइपसिक युद्धका वार्षिको-त्सव मनाया। स्वतंत्रताके युद्धमें वीरगतिप्राप्त लोगों तथा वाइमारके ग्रांड ड्यूकके सम्मानमें, जिसने उत्तरी जर्मनीमें सर्व-प्रथम अपनी प्रजाके लिए शासन-विधि स्वीकृत की थी, व्याख्यान दिये गये। कुछ प्रतिघाती पर्चोंको जला कर संघका अधिवेशन समाप्त किया गया।

इस प्रकार जोश बढ़नेसे यूरोपके अनुदार राजनीतिज्ञोंके मनमें बड़ा भय उत्पन्न हो गया। आस्ट्रियाका सचिव मेटर-निच इनका नेता था। किसी प्रमादी विद्यार्थीने एक सम्पा-दककी हत्या कर डाली, जिसपर उदार नीतिका परित्याग करनेके लिए ज़ारपर प्रभाव डालनेका सन्देह किया गया था। इस हत्यासे उदार दलकी बड़ी बदनामी हुई। इस घटनासे मेटरनिचको छात्र-सभाओं, उदार सरकार और पत्रोंकी स्वाधीनताके कुपरिणामोंपर, जिनकी उसे आशंका थी, ज़ोर देनेका मौक़ा मिल गया।

जब मेटरनिचने, इस हत्याके बहाने, संघके बड़े बड़े राज्योंके प्रतिनिधियोंको कार्ल्सबाडमें संवत् १८७६ के श्रावण-भाद्रपद (अगस्त, सन् १८१९) में निमंत्रित किया तो जर्मनी-में प्रतिघात-क्रियाकी मात्रा चरम सीमा तक पहुँच गयी थी।

प्रचलित संस्थाओंके विरुद्ध स्वतंत्र रूपसे सम्मति प्रकट करना रोकने तथा आन्दोलनकारियोंका, जिनकी संख्या बहुत अधिक समझी जाती थी, पता लगा कर अभियोग लगानेके उद्देश्यसे कई प्रस्ताव तैयार किये गये। आस्ट्रियाने राष्ट्र-सभामें इन प्रस्तावोंको उपस्थित किया। इन प्रस्तावोंका विरोध तो अवश्य हुआ पर सभाने इनको स्वीकृत कर लिया।

इन प्रस्तावोंके अनुसार प्रत्येक विश्वविद्यालयमें अध्यापकोंका एक निरीक्षक रखना आवश्यक हुआ। यदि कोई अध्यापक नवयुवकोंके ऊपर अपने प्रभावका दुरुपयोग करता और सार्वजनिक शान्तिके या सरकारी संस्थाओंके विरुद्ध सिद्धान्तोंका प्रचार करता पाया जाय तो वह अपने पदसे पृथक् कर दिया जाय। यह भी निश्चय हुआ कि छात्र-सम्मेलनको, जिसके सम्बन्धमें यह सन्देह किया जाता था कि वह अत्यन्त ही क्रान्तिकारी है, दबाया जाय, तथा कोई पत्र, पत्रिका या पुस्तिका तब तक छपने न दी जाय जब तक सरकारी कर्मचारी जाँच कर यह न देख लें कि उसमें सरकारके प्रति असन्तोष उत्पन्न करनेवाली कोई बात तो नहीं है। अन्तमें, क्रान्तिकारी षड्यन्त्रोंका पता लगानेके लिए एक विशेष कमीशन बैठाया गया क्योंकि मेटरनिच और उसके समर्थकोंकी धारणा थी कि सारे जर्मनीमें ऐसी अनेक संस्थाएँ विद्यमान हैं।

समाचारपत्रोंकी स्वाधीनतापर कुठाराघात करने और विश्वविद्यालयोंके अध्यापन-स्वातंत्र्यमें छेड़छाड़ करनेसे जर्मनीके उन्नतिशील लोगोंको भारी धक्का पहुँचा। किन्तु तो भी इन कार्योंका कोई प्रबल विरोध नहीं किया गया और जर्मनी एक पीढ़ी तक मेटरनिचकी सभी प्रकारके सुधारोंको रोकनेकी नीतिका चुपचाप अनुसरण करता रहा।

फिर भी दक्षिणी जर्मनीमें महत्वपूर्ण उन्नति होती रही। संवत् १८७५ (सन् १८१८) में ही ववेरियाके नरेशने अपनी प्रजाके लिए एक शासन-विधि तैयार की जिसमें प्रजाके हकों-का उल्लेख किया गया और पार्लमेंटकी स्थापना कर देश-शासनके कार्यमें कुछ अंशोंतक प्रजाको भी अधिकार दिया गया। इसकी देखादेखी वेडेन, वुर्टम्बर्ग तथा हेसके शासकोंने भी अपने यहाँ ऐसा ही किया। सुधारकी दूसरी बात यह हुई कि आयात-निर्यात करोंके सम्बन्धमें राज्योंकी एक समिति बन गयी जिससे प्रत्येक सीमापर कर दिये बिना ही माल जर्मनीके एक राज्यसे दूसरे राज्यमें स्वच्छन्दतापूर्वक भेजा जा सकता था। यह समिति कई बातोंमें राजनीतिक संघके समान ही लाभजनक प्रतीत हुई। यह आर्थिक समिति, जिसका अध्यक्ष प्रशा था और आस्ट्रिया जिससे पृथक् था, विशाल जर्मन साम्राज्यकी सूचक थी।

जर्मनीको पंगु बनाये रखनेके मेटरनिचके प्रयत्न बड़े कार-गर हुए। जब संवत् १८७७ में जनताके सर उठानेके कारण स्पेन और नेपिल्सके राजाओंको वैध शासन व्यवस्था स्वीकार करने और स्वेच्छाचारिता-पूर्ण शासन करनेका अधिकार प्रजा-के हाथ सौंप देनेके लिए विवश होना पड़ा तो स्वभावतः मेट-रनिचने यूरोपीय शक्तियोंपर इस बातका जोर दिया कि वे मिलकर इस प्रकारके कार्य्योंको रोकें। उसने कहा कि इस प्रकारके विद्रोह अन्यान्य एकतंत्र राजाओंके लिए बड़े ही भयं-कर उदाहरण हैं जिनसे उनकी शक्ति और रक्षामें बाधा पड़ सकती है।

मेटरनिचके शब्दोंमें इटली इस समय "एक भौगोलिक नाम" भर था। उसमें किसी प्रकारकी राजनीतिक एकता नहीं

थी। उसके उत्तरी भागस्थ लाम्बार्डी और वेनीशिया आस्ट्रियाके अधिकारमें थे और पारमा, मोडेना तथा तस्कनीपर भी आस्ट्रियन परिवारका ही अधिकार था। दक्षिणमें सिसली द्वयका राज्य स्पेनके बूरबनोंकी एक शाखाके शासनमें था। मध्यभागमें, 'पो'तक विस्तृत पोपका राज्य इटलीको दो भागोंमें विभाजित करता था। आस्ट्रियाकी विद्यमानता और पोपके किसी अन्यका शासन स्वीकार न करनेके कारण इटलीके वास्तविक राष्ट्र होनेकी आशा नहीं दिखती थी। फिर भी पचास वर्ष पीछे इटलीसे आस्ट्रियाका बहिष्कार हो जाने और पोपकी राजनीतिक सत्ताका अन्त होनेसे इटली अपने वर्तमान रूपमें आया।

नेपोलियनने इटलीमें स्वेच्छाचारितापूर्ण शासन करनेके साथ ही साथ कई महत्वपूर्ण सुधार भी किये थे। उसने राजनीतिक समता और व्यवस्थित शासन स्थापित किया और सर्वसाधारणकी उन्नतिको प्रोत्साहन दिया था। मनसबदारी प्रथाकी जो रही सही बुराइयाँ थीं वे उसके आगमनके साथ ही काफूर हो गयीं। इसके अतिरिक्त उसने इटलीको ऐसे संघटित रूपमें देखनेकी आशा भी दे रखी थी, जिसमेंसे विदेशी शक्तियाँ, जिन्होंने सदियों तक उसे तबाह कर रखा था, निकाल बाहर की जातीं। किन्तु वह अपनी व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाकी पूर्तिमें बिना किसी सिद्धान्तके मनमाने तौरसे इटलीका उपयोग करने लगा। इससे जिन लोगोंकी आशापूर्ण आँखें पहले उसकी तरफ लगी हुई थीं, वे निराश हो गये और वे उन कुलीन लोगों तथा सम्पत्तिवंचित पादरियोंकी तरह, जिनकी आशा आस्ट्रियाके साथ बँधी हुई थी, बड़ी उत्सुकताके साथ उसके पतनकी प्रतीक्षा करने लगे। समझदार इटली-वासियोंकी समझमें यह बात आ गयी कि यदि

इटलीको स्वतन्त्र यूरोपीय राष्ट्रोंमें स्थान पाना है तो उसे अपने ही साधनोंका भरोसा करना पड़ेगा।

नेपोलियनके पतनसे इटलीकी दशा देखनेमें पहलेसे भी बुरी जान पड़ने लगी। वेनिसपर अधिकार हो जानेके कारण इटलीके ऊपर आस्ट्रियाका पंजा और भी मजबूत हो गया। पारमा, मोडेना और तस्कनीके स्वेच्छाचारी शासक गण, जो वियेनाकी कांग्रेस द्वारा पुनः सिंहासनासीन किये गये थे, बड़ी शीघ्रतासे नेपोलियनकृत सुधारोंपर पानी फेरने और प्राचीन प्रथाकी बुराइयोंको अधिकाधिक मात्रामें पुनः प्रचलित करने लगे। इधर छोटे छोटे इटैलियन राजाओंका झुकाव आस्ट्रियाकी ओर ही था। इन कारणोंसे सारे प्रायद्वीपमें असन्तोष-की अग्नि प्रज्वलित हो गयी। परिणाम यह हुआ कि भिन्न भिन्न नामोंसे कितनी ही गुप्त समितियाँ कायम हो गयीं।

ये समितियाँ विचित्र काररवाइयाँ किया करतीं और इटलीकी स्वाधीनताके नामपर तरह तरहके भयंकर षड्यन्त्र रचती थीं। इनमें 'कार्बोनरी' (कोयला जलानेवाली) नामक संस्था विशेष प्रसिद्ध थी। इस संस्थाका उद्देश्य व्यक्तिगत स्वातंत्र्य, वैध शासन, राष्ट्रीय स्वाधीनता और एकताका प्रसार करना था। इसने आन्दोलन, षड्यन्त्र, और, यदि आवश्यकता हो तो, क्रान्ति द्वारा इन उद्देश्योंकी सफलता प्राप्त करनेका निश्चय किया।

इटैलियन आन्दोलनकर्त्ता वैध शासनव्यवस्थाके अन्ध-भक्त होरहे थे। वे लोग इसे विशेष देशकालके लिए सावधानीसे काममें लायी जानेवाली शासन-पद्धति न खयाल कर सिद्धबीसा यन्त्र ही समझते थे जो निश्चयपूर्वक स्वाधीनता इत्यादि अभिलषित वस्तुएँ प्रदान कर सकता था।

इसलिए जब नेपिल्सवालोंने यह सुना कि स्पेनके राजाको बलवेके कारण विवश होकर वैध शासनव्यवस्था स्वीकार करनी पड़ी है, तो उन लोगोंने इटली-निवासियोंके लिए राजाको विवश कर स्पेनकी सी शासन-विधि स्वीकार करा ली (संवत् १८७७)। फिर भी जहाँ एक ओर राजा शासन-विधिका पालन करनेके लिए शपथ ले रहा था वहाँ दूसरी ओर वह बाहरी शक्तियोंसे सहायता लेकर विद्रोह दबाने और पुरानी प्रथाओंको जारी करनेका प्रबन्ध भी कर रहा था।

इसके लिए बहुत दिनोंतक उसे प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। मेटरनिचने रूस, प्रशा, फ्रांस और इंग्लैडको मिलकर विद्रोह दबानेके लिए आमंत्रित किया। उसने यह घोषित किया कि यदि ये सुधारके आन्दोलन न रोके जायँ तो इनके जो परिणाम होंगे वे भयंकरता या अत्याचारमें उस आन्दोलनसे कम न होंगे जिसमें नेपोलियनके विरुद्ध मित्रराष्ट्रोंको संघटित होना पड़ा था। उसकी तथा उसके समर्थकोंकी दृष्टिमें क्रान्ति ठीक वैसी ही थी जैसा द्वितीय फिलिपकी दृष्टिमें धर्मविरोध था,—यह एक प्रकारकी महामारी थी, जिसको यह पकड़ लेती थी उसका तो नाश करती ही थी, साथ ही जहाँ प्रकट होती थी वहाँ छूत भी फैला देती थी, अतः इसकी तबाहीसे बचनेके लिए इसको दूर रखनेका उपाय करना बहुत जरूरी था। संवत् १८७७ के चैत्र (मार्च) में आस्ट्रियाकी सेना नेपिल्समें पहुँची और मामूली तौरसे मुकाबिलेके बाद वहाँके राजाको प्रजाओंके बन्धनसे, जो उन्होंने उस समय राजापर डाल रखा था, मुक्त किया। आस्ट्रियाकी सेनाने सार्डीनियाकी प्रजाके उस प्रयत्नको भी निष्फल किया जो वह अपने राजासे शासन-विधि कबूल करानेके लिए कर रही थी।

इटलीके उत्तरी और दक्षिणी दोनों भागोंमें उदार दलकी निर्बलता अन्ततः प्रमाणित हो गयी। दस वर्ष पश्चात् पीडमांट, मोडेना और पोप-राज्यमें वर्तमान स्वेच्छाचारसे पिण्ड छुड़ानेके लिए लोगोंने पुनः प्रयत्न किया पर इसका भी वही हाल हुआ जो संवत् १८७७ की क्रान्तिका हुआ था। फिर भी आशाके दो लक्षण देख पड़ते थे। मेटरनिच स्वयं जिस सुधारको नहीं पसन्द करता था उसे रोकनेके लिए अन्य स्वतंत्र राज्योंके आभ्यन्तर कामोंमें हस्तक्षेप करता था। इंग्लैंडने संवत् १८७७ में ही उसकी इस नीतिका विरोध किया। संवत् १८८७ में, लूई फिलिपके सिंहासनारोहणके अवसरपर फ्रांसने भी हस्तक्षेप नीतिका जोरोंसे खण्डन किया। उन्नतिका दूसरा महत्वपूर्ण लक्षण इटैलियन लोगोंका दिनानुदिन इस बातमें दृढ़तर विश्वास होना था कि सारे देशका विदेशी प्रभावमें कई स्वतंत्र राज्योंमें विभक्त न रह कर केवल एकही राष्ट्रके रूपमें रहना परमावश्यक है।

इसी समय इटलीमें एक विशेष शक्तिसम्पन्न नेता मेज़िनीका आविर्भाव हुआ। वह कार्बोनरी संस्थाकी मूर्खता और भद्दी चालोंसे बहुत जल्द तंग आगया। उसने 'यंग इटली' (तरुण इटली) नामक एक नयी संस्था स्थापित की। इस संस्थाका उद्देश्य नवयुवकोंको प्रजातंत्रीय सिद्धान्तोंकी शिक्षा देकर इटलीमें युगान्तर लाना था। मेजिनीको राजाओं, सन्धियों तथा विदेशी सहायतामें जरा भी विश्वास नहीं था। वह कहा करता था "हम प्रजावर्गके हैं, प्रजाके साथ हमारा वर्ताव होगा, और वह हमारे भावोंको समझ भी लेगी।" उसने किसी सफल क्रान्तिका संघटन नहीं किया बल्कि इटलीके नवयुवकोंके हृदयमें इटलीके उद्धारके लिए धार्मिक जोश

सा भर दिया। उसके लेखोंने, जिनका सारे प्रायद्वीप भरमें खूब प्रचार था, इटलीके भिन्न भिन्न राज्योंमें विखरे हुए देश-भक्तोंके हृदयमें स्वदेशके प्रति भक्ति-भाव उत्पन्न कर दिया।

इटलीको एक राष्ट्रमें परिणत करनेके सर्वोत्तम उपायके सम्बन्धमें सुधारकोंमें बहुत अधिक मतभेद था। मेजिनी-दलको प्रजातंत्रीय संस्थाओंको छोड़ और किसीसे कुछ आशा नहीं थी, पर और लोगोंका यह विश्वास था कि कोई समझदार पोप अपनी अध्यक्षतामें इटैलियन राष्ट्रसंघका निर्माण कर सकेगा। संवत् १९०३ में ९ वाँ पाईअस पदाभिषिक्त होनेपर शीघ्रही अपनी प्रजाका हित और उनकी इच्छा जाननेकी कोशिश करने लगा। इसी उद्देश्यसे उसने पुरोहितोंपर कर लगाया, कौंसिलों और उच्च न्यायालयोंमें पुरोहितेतर लोगोंको भी शामिल किया, संवादपत्रोंको अधिक स्वतंत्रता दी, और आस्ट्रियाकी अनधिकार छेड़छाड़का विरोध किया। उसके इस कार्यसे लोगोंको ऐसा प्रतीत होने लगा कि पोप इटलीके उद्धारकार्यमें नेतृत्व ग्रहण करेगा। पर शीघ्रही वह उदार दलको सन्देहकी दृष्टिसे देखने लगा। इसका जो परिणाम हुआ उससे मेकियावेलीके तीन सौ वर्ष पूर्व कथित वचनकी सत्यता कि इटलीकी एकतामें पोपका राज्याधिकार ही मुख्य बाधक होगा, पूर्णरूपसे प्रमाणित हो गयी।

पर भविष्य न तो प्रजातंत्रवादी दलके हाथ रहा और न पोपदलके, वह उन लोगोंके हाथ रहा जो वर्तमान राजतंत्रों—विशेष कर सार्डीनिया—के क्रमशः सुधारमें ही देशके उद्धारकी आशा रखते थे। इसी उपायसे आस्ट्रियाको बहिष्कृत कर सकनेकी कुछ सम्भावना थी और ऐसा किये विना राष्ट्रसंघटनात्मक या और किसी प्रकारका एका सम्भव नहीं था।

संवत् १८७२ से लेकर संवत् १९०५ तक मेटरनिचके नेतृत्वमें अनुदारदल उन लोगोंका सफल विरोध करता रहा जिन्होंने शासनकार्यमें प्रजाको अधिकतर अधिकार दिलाने और उसकी राष्ट्रीय जीवनकी माँगको पूर्ण करनेके लिए बार बार प्रयत्न किया था। इसका मतलब यह नहीं है कि भिन्न भिन्न यूरोपीय राज्योंमें उदार दलके मन्तव्योंको अपनानेमें कोई उन्नति ही नहीं हुई या केवल एक व्यक्ति एक पीढ़ीतक राष्ट्रोंकी प्रगतिको बिलकुल रोक सका। वियेनाकी कांग्रेसके पश्चात् यूरोपमें आस्ट्रियाने वही प्राधान्य प्राप्त कर लिया था जो क्रान्तिके बाद फ्रांसने प्राप्त किया था—केवल इसी बातसे यह स्पष्ट है कि मेटरनिचका परिवर्तनसे मुख मोड़ना उस समयके इस विश्वाससे कि सम्प्रति सभी बातें ज्योंकी त्यों छोड़ देना ही ठीक है, मिलता जुलता था।

मेटरनिचके प्रभावकालमें दो घटनाओंने यूरोपके उदारदलवालोंको विशेष रूपसे प्रोत्साहित किया। संवत् १८७८ में यूनान निवासियोंने तुर्कीके अत्याचारपूर्ण शासनके विरुद्ध बलवा किया। तुर्की सरकारने भयंकर हत्याकाण्डके सहारे दमन आरम्भ किया। कहते हैं कि एक छोटेसे टापूके बीस हजार निवासी मार डाले गये। यूनानने पश्चिमी यूरोपकी सहानुभूति प्राप्त कर ली और तबतक अड़ा रहा जबतक इंग्लैंड, रूस और फ्रांसने बीचबिचाव कर यूनानकी स्वतंत्रता स्वीकार करनेके लिए सुलतानको विवश न किया (संवत् १८८६)।

वियेनाकी कांग्रेसके निर्णयानुसार आस्ट्रियन नेदरलैंड हालैंडको दिया गया था। इसने हालैंडके विरुद्ध विद्रोह कर दिया जिससे एक छोटेसे यूरोपीय राज्यकी रचना हुई। उत्तरी और दक्षिणी नेदरलैंडमें अब भी विलियमके ही समयकी तरह

पार्थक्य बना हुआ था। हालैंड-निवासी जर्मन और प्रोटेस्टैंट थे पर दक्षिण प्रान्तोंके निवासी, जो संघको हेय दृष्टिसे देखा करते थे, कैथलिक थे और फ्रांसीसियोंसे मिलते जुलते थे। संवत् १८८७ की पेरिसकी क्रान्तिसे प्रोत्साहित होकर ब्रसेल्ज़-की प्रजा अपने डच राजाके विरुद्ध उठ खड़ी हुई और उसने उसकी सेनाको नगर छोड़नेपर विवश किया। इंग्लैंड और फ्रांसके उद्योगसे यूरोपीय शक्तियोंने बेलजियनोंकी, जिन्होंने एक स्वतंत्र राज्य स्थापित कर इंग्लैंडके ढंगपर नियंत्रित राजतंत्र शासनविधि चलायी थी, स्वाधीनता मानना कबूल कर लिया।

अध्याय ४०

इटली और जर्मनीका सङ्गठन।

संवत् १६०५ में असन्तोषकी मात्रा और सुधारकी माँग चरम सीमातक पहुँच गयी। कुछ दिनों-तक ऐसा प्रतीत होता था कि सारे पश्चिमी यूरोपमें वैसी ही क्रान्ति फैल जायगी जैसी संवत् १८४६ में फ्रांसमें हुई थी। संवत् १६०६ के अन्तमें फ्रांस, इटली, जर्मनी, आस्ट्रिया, इन सभी देशोंके उदारदल वालोंने एक ही साथ उठकर—मानो कोई नियत संकेत दिया गया हो—राज्यको या तो उलट पुलट दिया या उसपर स्वयं अधि-कार जमा लिया और ठीक उसी तरहसे अपनी सुधार-योजना धड़ल्लेसे कार्यमें परिणत करना आरम्भ किया जिस तरह फ्रांसकी राष्ट्र सभाने संवत् १८४६ में किया था। यों तो यूरोपके प्रायः प्रत्येक राज्यपर इस आन्दोलनका प्रभाव पड़ा पर फ्रांस और मध्य यूरोपका वह भाग जो आस्ट्रियाके प्रभावक्षेत्रमें था विशेष उल्लेखनीय है।

यद्यपि संवत् १६०५ का यह क्रान्तिकारी आन्दोलन फ्रांससे न आरम्भ होकर इटलीसे आरम्भ हुआ था, फिरभी लूई फिलिपकी सिंहासनच्युति और द्वितीय फ्रांसीसी प्रजा-तंत्रकी स्थापनाने ही असलमें यूरोपमें विद्रोहके लिए संकेतका काम किया। संवत् १८८७ की क्रान्तिके बाद उन प्रजातंत्र-वादियोंकी इच्छा होने पर भी जिन्होंने दसवें चार्ल्सको राज्य-च्युत कराया था, संवत् १८७१ के अधिकारपत्रमें नाममात्र-

का ही संशोधन किया गया था। उन लोगोंका यह कहना था कि राजाके अधिकार बहुत अधिक हैं और वह सर्वसाधारण-की इच्छाके विरुद्ध कानून बनानेके लिए पार्लमेंट (उच्च न्या-यालय) पर दबाव डाल सकता है। उन लोगोंने निर्धन श्रेणि-योंको मताधिकारसे वंचित करनेवाले कानूनोंका भी विरोध किया (तीन करोड़की आबादीमें केवल दो लाख मनुष्योंको वोट देनेका अधिकार प्राप्त था)। यह लोग चाहते थे कि प्रत्येक फ्रांसीसीको बालिग होनेके साथ ही मताधिकार प्राप्त हो जाना चाहिए। ज्यों ज्यों लूई फिलिपकी अवस्था बढ़ती गयी त्यों त्यों उदार दलके प्रति, जिसने उसे सिंहासनपर बैठाया था, उसका संदेह बढ़ता गया। उसने स्वयं तो सुधारोंका विरोध किया ही, साथही उसने पार्लमेंट (उच्च न्यायालय) तथा समाचार-पत्रों को प्रगतिशील दलकी माँगोंका समर्थन करनेसे रोका। फिर भी प्रजातंत्रवादियोंकी शक्ति दिनों दिन बढ़ती ही गयी। कुछ समाजशास्त्री लोग भी इनके मित्र हो गये। यह लोग राज्यका पुनः मौलिक संघटन करना चाहते थे।

संवत् १९०४ के १२ फाल्गुन (२४ फरवरी सन् १८४८ ईसवी) को एक भीड़ने ट्वीलरिजपर आक्रमण किया। राजा-ने अपने पौत्रके लिए सिंहासन खाली कर दिया लेकिन अब बहुत देर हो चुकी थी। उसे अपने सारे परिवारके साथ देशका परित्याग करना पड़ा। भीड़ने व्यवस्थापक सभापर आक्रमण कर दिया। एक अस्थायी सरकार कायम कर ली गयी जिसमें लेखक लामारटीन, समाजशास्त्री लूई ब्लॉन, दो या तीन सम्पा-दक और कई दूसरे राजनीतिज्ञ शामिल थे। इस मण्डलने १५ फाल्गुनको बेस्टीलमें प्रजातंत्रकी समर्थक अपनी पहली घोषणा निकाली।

अस्थायी सरकार अपना अधिवेशन भी नहीं कर पायी थी कि समाजशास्त्रकी प्रधानता माननेवाले प्रजातंत्रवादी लोग (रेड रिपब्लिकन*) इसके विरुद्ध उठ खड़े हुए। इसके प्रतिनिधि चाहते थे कि शासनके ऊपर मजदूरश्रेणीका नियंत्रण रहे। कुछ लोग सम्पत्तिपर सामान्य स्वत्वका समर्थन करते थे और चाहते थे कि पहलेके त्रिवर्ण झण्डेके स्थानमें लाल झंडा रखा जाय। सरकारने 'श्रमाधिकार'† कबूल कर कितने ही राष्ट्रीय कारखाने खोले और बेकार लोगोंको उनमें काम करनेका अवसर दिया।

एक राष्ट्रीय सभा बुलायी गयी जिसके सदस्य सर्वसाधारण द्वारा चुने गये। इक्कीस वर्षसे अधिक वयवाले प्रत्येक फ्रांसीसीको इस सम्बन्धमें मत देनेका अधिकार दिया गया। निर्वाचनका फल यह हुआ कि समाजवादी लोग बुरी तरहसे पराजित हुए। इसपर इस दलके नेताओंने यह बहानेबाजी कर नयी प्रतिनिधि सभाको भंग करना चाहा कि यह सर्वसाधारणकी प्रतिनिधि नहीं है पर इन लोगोंके इस प्रयत्नको राष्ट्ररक्षिणी सेनाने विफल कर दिया। राष्ट्रीय कारखानोंके कर्मचारियोंकी संख्या इस समयतक एक लाख सत्रह हजार हो गयी थी, इन लोगोंको गये-गुजरे कामोंमें या बेकार समय व्यतीत करनेके लिए व्यक्ति पीछे दो फ्रांक प्रति दिन मिलता था। इस बुराईको उठा देनेके कारण भयानक बलवा हो गया। फ्रांसकी सड़कोंपर तीन दिनोंतक मारकाट जारी रही और दस हजारसे अधिक आदमी मारे गये।

---

* इस दलके लोग आरम्भमें लाल टोपी पहना करते थे, इस कारण वे 'रेड रिपब्लिकन' कहलाते थे। † 'Right to labour'

क्रान्तिकारी शक्तियोंके उभड़नेका परिणाम यह हुआ कि सभी लोगोंको शान्ति बनाये रखनेके निमित्त एक शक्तिशाली शासककी आवश्यकता प्रतीत होने लगी । नयी शासन-विधिके अनुसार प्रजातंत्रका प्रधान चुननेका अधिकार सर्वसाधारणको था । लोगोंने इस पदके लिए नेपोलियन बोनापार्टके भतीजे लूई नेपोलियनको चुना । उसने फ्रांसका शासक बननेके लिए दो बार निष्फल प्रयत्न किया था । चार वर्षकी अवधि समाप्त होनेके पूर्वही उसने अपने पितृव्यकी अभिषेकजयन्तीके दिन बलपूर्वक नयी राष्ट्रसभाको भंग कर नयी सरकार स्थापित की । इसके पश्चात् उसने जन-सम्मतिविधिके जरिये दस वर्ष तक प्रधानके पदपर रहनेकी स्वीकृति प्रजासे ले ली । इसके एक वर्ष पश्चात् वह एक दूसरी सरकार कायम कर फ्रांसका सम्राट् बन बैठा ।

जब मेटरनिचने संवत् १९०४ की क्रान्तिके विषयमें सुना तो कहा कि 'यूरोपके सामने अब फिर संवत् १८५० की क्रान्ति उपस्थित है', पर यह बात सत्य नहीं थी । अब संवत् १८५० की तरह फ्रांसको शस्त्रोंकी सहायतासे उदार भावोंको फैलानेकी जरूरत नहीं थी । साठ वर्षोंसे यूरोपमें सुधार-विषयक सिद्धान्तोंका प्रचार हो रहा था और संवत् १९०४ के अन्त तक बर्लिनसे लेकर पलर्मो तकके अधिकांश लोगोंने इन सिद्धान्तोंको मान लिया था । संवत् १९०४ के अन्तका यूरोप १८५० का यूरोप नहीं रह गया था ।

लूई फिलिपके पतनसे मेटरनिचके (जर्मनी, आस्ट्रिया तथा इटली निवासी) विरोधियोंको इस पद्धतिका अन्त करनेके लिए प्रयत्न करनेका प्रोत्साहन मिला । प्रथम नेपोलियनके पतनके बाद आस्ट्रियाने मध्ययूरोपके कार्य्योंमें प्रमुख भाग

लिया था, इस दृष्टिसे इटली और जर्मनीके उदार शासन तथा राष्ट्रीय ऐक्यकी-प्राप्तिके मार्गमें उसका बाधक होना अनिवार्य था। लाम्बार्डी और वेनीशियाके शासककी हैसियतसे इटलीपर उसका व्यावहारिक नियंत्रण जमा हुआ था और जर्मन संघके प्रधान सदस्यकी हैसियतसे वह प्रशाके पैर पीछेकी ओर खींचे हुए था। यदि आस्ट्रिया हैप्सबर्ग वंशके बीस प्रदेशोंमें, जिनमें जर्मन, स्लाव, हंगेरियन और इटैलियन लोग बसे हुए थे, राष्ट्रीय ऐक्यके भावको दबाना चाहता था तो इसमें कोई आश्चर्यकी बात नहीं थी। स्लाव और हंगेरियन लोग भी इटैलियन लोगोंकी ही तरह स्वतंत्रताके अभिलाषी थे।

२९ फाल्गुनको वियेनाकी जनताने प्राचीन पद्धतिके शासनके विरुद्ध बलवा कर दिया। मेटरनिच भाग खड़ा हुआ और सुधार-विरोधी उसकी सारी योजना निष्फल प्रतीत होने लगी। चैत्रके पूर्वार्द्धमें ही निःसहाय आस्ट्रियन सम्राट्ने हंगरी और बोहीमिया राज्योंको अपनी वैध शासन-व्यवस्था तैयार करनेकी स्वीकृति दे दी। शासन-व्यवस्थामें चिर-अभिलषित सुधारोंको स्थान देने और प्रत्येक राज्यके लिए पृथक् पार्लमेंट, जिसका अधिवेशन प्रति वर्ष होता, स्थापित करनेके सम्बन्धमें भी नियम रखनेको कहा गया। आस्ट्रियन नरेशोंको भी इसी प्रकारके अधिकार देनेका वचन दिया गया, पर किसी प्रदेशने आस्ट्रियन शासकसे सम्बन्ध-विच्छेद करनेकी इच्छा नहीं ज़ाहिर की।

इसके प्रतिकूल उत्तरी इटलीका आन्दोलन खास इसी मतलबसे अर्थात् आस्ट्रियन शासकसे सम्बन्ध-विच्छेद करनेकी इच्छासे उठाया गया था। मेटरनिचके पतनकी खबर पाते ही 'मिलन' वालोंने आस्ट्रियन सेनाको अपने नगरसे

निकाल बाहर किया और आस्ट्रियावालोंने शीघ्र ही लाम्बार्डीका अधिकांश खाली कर दिया। वेनिसवालोंने भी मिलनके मार्गका अवलम्बन कर एक बार फिर प्रजातंत्रकी स्थापना की। युद्धकी आशंकासे मिलनवालोंने सार्डीनियाके राजा चार्ल्स एलवर्टसे सहायताके लिए प्रार्थना की। इस समयतक इटलीके अधिकांशमें विद्रोह फैल चुका था। नेपिल्स, रोम, तस्कनी और पीडमांटके शासकोंने अपनी अपनी प्रजाके लिए वैध शासन व्यवस्था स्वीकृत की। लोकमतके दवावके कारण सार्डीनिया-नरेशको बलात् हस्तक्षेप करनेवाले आस्ट्रियावालोंको निकाल बाहर करने और किसी प्रकारका इटैलियन संघ, जो लोगोंकी राष्ट्रीय एकताकी ख्वाहिश पूरी कर सकता, स्थापित करनेके कार्यमें नेतृत्व ग्रहण करनेके लिए विवश होना पड़ा। पोप और नेपिल्सके बूरबन राजा भी इटलीके उद्धार-कार्यमें सेना द्वारा सहायता करनेको राजी हो गये और इटलीका प्रथम स्वातन्त्र्य-युद्ध आरम्भ हुआ।

स्वदेशकी स्थिति तथा इटैलियन युद्धके कारण आस्ट्रियाके लिए जर्मन क्रान्तिकी प्रगतिको रोकना असम्भव हो गया। यह आन्दोलन इतना स्वेच्छामूलक था कि मेटरनिचके पतनके पूर्व ही वेडेन, वुर्टेमवर्ग, बवेरिया और सैक्सनीमें सुधारका प्रयत्न आरम्भ हो गया। आस्ट्रियाके कठिनाइयोंमें वेतरह फँसे रहनेके कारण इस समय जर्मन राष्ट्रसंघको पुनः संघटित करनेका अच्छा अवसर उपस्थित हुआ।

मौका पाते ही प्रशानरेशने आस्ट्रियाके इशारेपर नाचनेकी नीति बदल दी और जर्मनीमें नेतृत्व ग्रहण करनेका संकल्प किया। प्रशाके निमित्त शासनविधि तैयार करनेके लिए उसने एक सभा आमंत्रित करना स्वीकार किया। इसके अतिरिक्त

सारे जर्मनीके निमित्त भी एक शासन-विधि तैयार करनेके लिए फ्रैंकफर्टमें महती राष्ट्रीय सभा बुलायी गयी ।

संवत् १९०५ के अन्तमें चैत्रके मध्यतक सुधारके आशाजनक चिह्न देख पड़ने लगे । हंगरी और बोहीमियाको विधिविहित स्वतन्त्रता देनेका बचन मिल चुका था; आस्ट्रियाके प्रदेश शासन-विधिकी प्रतीक्षा कर ही रहे थे; लाम्बार्डी और वेनीशियाने भी आस्ट्रियासे स्वतन्त्र हो कर अपनी स्वाधीनता घोषित कर दी थी; इसके अतिरिक्त चार इटैलियन राज्योंने भी अपनी चिर-वांछित शासन-विधि प्राप्त कर ली और फिर सबके सब आस्ट्रियासे लड़नेको तैयार हो गये । प्रशाके लिए भी शासन-विधिकी प्रतिज्ञा की जा चुकी थी और अन्तमें फ्रैंकफर्टकी राष्ट्रीय सभा सारे जर्मनीके लिए भी शासनविधि तैयार करने जा रही थी ।

नरम दलके सुधारवादियोंको अबतक बाह्य रूपसे विजय प्राप्त होती रही थी, पर अब उन्हें सबसे बड़ी कठिनाईका सामना करना पड़ा । उनके दो शत्रु थे जो परस्पर तो घृणा करते थे पर उनके कार्योंको विनष्ट करनेके लिए आपसमें मिल जाया करते थे । पहला शत्रु तो अनुदार दल था जिसके प्रतिनिधि आस्ट्रिया और वे इटैलियन शासक थे जिन्हें अनिच्छा-पूर्वक अपनी प्रजाओंके लिए शासनविधि स्वीकृत करनेको बाध्य होना पड़ा था । दूसरा प्रजातन्त्र-वादियोंका दल था । ये लोग उदार राजतन्त्रसे किसी प्रकार संतुष्ट न थे और शासनको प्रजातन्त्र या समाजतन्त्रके रूपमें देखना चाहते थे । एक ओर तो राजा लोग चैत्र मासकी अपमानजनक स्थितिसे निकलनेका प्रयत्न कर रहे थे और दूसरी ओर प्रजातन्त्र-वादी लोग क्रान्तिकारी आन्दोलनको बदनाम कर रहे थे तथा प्रमाद-

पूर्ण कार्यक्रम और विरोधी मंत्रियोंकी हत्याद्वारा लोकमत अपने प्रतिकूल बना रहे थे।

सम्प्रति इटली आस्ट्रियाके लिए विशेष भयावह हो रहा था क्योंकि यही एक अधीन देश था जिसने उसके विरुद्ध वास्तवमें शस्त्र उठाया था। माएटुआके निकट चार बड़े दुर्गोंसे सुरक्षित आस्ट्रियन सेना दुर्जेय राडेट्स्कीकी अध्यक्षतामें आश्रय लिये हुई थी। इटैलियन लोग इस सेनाको निकाल बाहर करनेमें सर्वथा असमर्थ थे। कुछ स्वयंसेवकोंको छोड़ कर इटलीके अन्य राज्यवाले सार्डीनियाके चार्ल्स एल्बर्टको सहायता देनेके लिए तैयार नहीं थे। इटैलियनोंमें एकताका अभाव ही आस्ट्रियाका इस समय सबसे बड़ा सहायक था। इसके अतिरिक्त इटैलियन लोगोंमें, युद्ध आरम्भ होनेके बाद ही, ईर्ष्या और द्वेष भी उत्पन्न हो गया था। पोपने यह निश्चय किया कि मेरा पैगाम तो शान्तिका है इसलिए रोमन चर्चके सबसे बड़े सहायक आस्ट्रियाके विरुद्ध युद्धमें मैं शामिल नहीं हो सकता। नेपिल्सके राजाने अपनी सेना बुला लेनेका यह बहाना ढूँढ़ निकाला कि मैंने तो सिर्फ लोकमतसे बाध्य होकर ही सार्डीनियानरेशकी सहायताके लिए सेना भेजी थी। ६ श्रावण (२५ जुलाई) को चार्ल्स एल्बर्ट कोस्टोड्जामें पराजित हुआ। उसे आस्ट्रियाके साथ क्षणिक सन्धि करने और लाम्बार्डीसे सेना हटानेपर विवश होना पड़ा।

इटलीके प्रजातंत्रवादियोंने, जो चार्ल्स एल्बर्टके इटलीके उद्धारविषयक प्रयत्नको स्वार्थमूलक बतला रहे थे, अब अपना कार्यक्रम चलानेका प्रयत्न किया। फ्लोरेन्स और वेनिसने प्रजातंत्रकी घोषणा कर दी। पोपने रौसी नामक एक उदार विज्ञ पुरुषको अपने सभी कार्योंका भार सौंप रखा था। यह अपनी

सुधारयोजनाको कार्यान्वित करनेही वाला था कि मार्गशीर्ष (नवम्बर) में इटलीमें इसकी हत्या कर दी गयी। पोपने वहाँसे भागकर नेपिल्सके राजाकी शरण ली। क्रान्तिकारियोंने एक विधिविहित सभा आमंत्रित की और मेजिनीके द्वारा प्रभावित होकर संवत् १९०५ के माघ-फाल्गुन (फरवरी सन् १८४९) में पोपके शासनाधिकारको हटाकर रोमन प्रजातंत्रकी घोषणा कर दी।

इस समय आस्ट्रियाकी परिस्थिति सम्राट्की पुनः अधिकार-प्राप्तिके अनुकूल हो रही थी। जिस प्रकार इटलीका प्रजातंत्रवाद उसके लिए अन्ततः लाभदायक हुआ, उसी प्रकार आस्ट्रियन राज्योंके अन्तर्गत जातिगत प्रतिस्पर्धासे भी उसने बहुत कुछ लाभ उठाया। १९०५ में भी (बोहीमियाके निवासी) चेकोंको जर्मन लोगोंसे वैसी ही घृणा बनी हुई थी जैसी हसके समयमें थी। जर्मन जनता बोहीमियावालोंके वियेना सरकारसे स्वतंत्र होनेके प्रयत्नोंमें बाधा डालती थी क्योंकि ये लोग स्वदेशवासी चेकोंसे अपनी रक्षा करनेके लिए जर्मन वियेनाकी ही सहायताका भरोसा किया करते थे। जर्मन लोग फ्रैंकफर्टकी सभामें अपने प्रतिनिधि भेजना और बोहीमिया तथा जर्मन राज्योंमें एका बनाये रखना चाहते थे।

चेक लोगोंने अखिल स्लावजातीय सभा कर, जिससे आस्ट्रियन साम्राज्यके सभी स्लाव लोग परस्पर मिल जाते, जर्मन संघटनके आन्दोलनकी बराबरी करनेका निश्चय किया। इस सभामें, जो प्रेगमें संवत् १९०५ के आषाढ़ (जून १८४८) मासमें हुई, दक्षिणसे चेक, मोरावियन, रुथेनियन और पोल-लोगोंके तथा उत्तरसे सर्वियन व क्रोएशियन लोगोंके प्रतिनिधि सम्मिलित हुए थे। प्रेग-निवासियोंमें ही विद्रोह उठ खड़ा

होनेके कारण सभाकी कार्यवाहीमें बाधा उपस्थित हो गयी, इससे आस्ट्रियन सेनापतिको भी हस्तक्षेप करनेका पूरापूरा बहाना मिल गया। उसने सैनिक शासनकी घोषणा कर दी और बोहीमियाकी स्वाधीनताके लक्षण गायब हो गये। आस्ट्रियाकी यही पहली वास्तविक विजय थी।

हैप्सबर्गराज्यके पूर्वी और दक्षिणी हिस्से पश्चिम और उत्तरकी अपेक्षा अधिक समजातीय नहीं थे। जब हंगरीके लिए वैध शासन व्यवस्था स्वीकृत हुई तो उन जातियोंका, जिनपर बहुत दिनोंतक हंगेरियनोंका शासन था, यह खयाल करना अनिवार्य्य था कि किस प्रकार हम लोगोंको स्वयं अपना शासन करनेका अधिकार प्राप्त होगा। कार्निओला, करिन्थिया, इस्ट्रिया, क्रोएशिया, स्लावोनिया, बोस्निया और सर्वियाके स्लाव लोग दक्षिणमें संयुक्त स्लाविक राज्यकी सम्भावनापर बहुत दिनोंसे विचार करते आ रहे थे। अब सर्वियन व क्रोएशियन लोगोंने हंगरीके विरुद्ध बलवा कर दिया। बोहीमियाके जर्मनोंकी तरह सर्वियन और क्रोएशियन लोगोंका वियेना सरकारके साथ मैत्री-भाव बना हुआ था। उन लोगोंको इस सरकारसे उतना भय नहीं था जितना हंगरीके स्वतंत्र होनेसे था क्योंकि इससे उन लोगोंको हंगेरियन लोगोंकी दयाके ऊपर निर्भर रहना पड़ता। इसलिए आस्ट्रियन मंत्रिमंडलके समर्थनसे सर्वियन और क्रोएशियन लोगोंकी एक सेनाने हंगरीमें प्रवेश किया।

संवत् १६०५ के आश्विनमें वियेनामें प्रजातंत्रवादी दल ठीक उसी प्रकार उठ खड़ा हुआ जिस प्रकार पेरिसमें लूई फिलिपकी राज्यच्युतिके समय हुआ था। युद्धसचिवकी हत्या बड़ी बेरहमीके साथ की गयी और सम्राट्को भाग जाना पड़ा। जिस सेनापतिने प्रेगके बलवेका दमन किया था उसीने नगर-

पर घेरा डाला । लोगोंको विवश होकर आत्मसमर्पण करना पड़ा । अब साम्राज्य सरकारकी परिस्थिति ऐसी हो गयी कि वह अपनी शक्ति और भी दृढ़ बना ले। अयोग्य सम्राट्को अपने तरुण भतीजे, प्रथम फ्रैंसिस जोजेफके लिए सिंहासन छोड़ देना पड़ा जिसने कोई ६८ वर्षतक शासन किया । इसके अतिरिक्त श्वाट्सेनबर्ग नामक एक नये मेटरनिचका प्रादुर्भाव हुआ ।

अब हंगरीके विरुद्ध, जिसने कोशूटके प्रभावसे हैप्सबर्गके राजाको च्युतकर कोशूटकी अध्यक्षतामें प्रजातंत्रकी घोषणा की थी, जोरोंसे युद्धकार्य शुरू हुआ । ज़ारने अपनी सेना फ्रैंसिस जोजेफके अधिकारमें रख दी और एक लाख पचास हजार रूसी सैनिकोंकी सहायतासे हंगेरियन लोग आत्मसमर्पण करनेपर विवश किये गये । आस्ट्रियाने विद्रोहियोंसे अच्छी तरह बदला लिया । हजारों आदमी फांसीपर लटकाये गये, गोलीसे मार दिये गये, या कैद कर लिये गये । बहुतसे लोगोंने संयुक्त राज्य अमेरिकामें या अन्यत्र भागकर शरण ली । कोशूट भी इन्हीं लोगोंके साथ भागा । पर कुछही बर्षोंके बाद हंगरीने शांत उपायोंसे स्वाधीनता प्राप्त कर ली और गत महासमरके पहिले वह आस्ट्रिया-हंगरीके द्वैध संत्रमें फ्रैंसिस जोजेफके पश्चिमीय राज्योंका समकक्ष हो गया ।

अब आस्ट्रियाके लिए इटली तथा जर्मन संघमें अपनी पहली शान प्राप्त करना शेष रह गया था । कोस्टोड्ज़ामें पराजित होनेके बाद जो युद्ध बन्द हो गया था उसे चार्ल्स एल्बर्टने पुनः संवत् १६०५ के चैत्र (मार्च) में आरम्भ किया । यह युद्ध केवल पाँच ही दिन चला । ६ चैत्रको चार्ल्स एल्बर्ट बुरी तरह पराजित हुआ । इस पराजयने इटलीकी स्वतंत्रताकी आशापर, कमसे कम कुछ समयके लिए, पानी फेर दिया ।

चार्ल्स एल्बर्टने अपने पुत्र विक्टर इमैन्युएलके लिए, जिसके भाग्यमें कुछ ही दिनोंमें इटलीका स्वाधीन राजा होना बदा था, गद्दी खाली कर दी।

सार्डीनियाके राजाको वशमें कर आस्ट्रिया दक्षिणकी ओर बढ़ा और जैसे जैसे आगे बढ़ा, वैसे वैसे फिर वही पुराना सिलसिला जारी करता गया। क्षणभंगुर इटैलियन प्रजातंत्र राज्य जोरदार सामना करनेमें असमर्थ थे। रोम, तस्कनी और वेनिसके पहले शासक पुनः अधिकारारूढ़ किये गये और सार्डीनिया राज्यके मुख्य प्रान्त पीडमाएटको छोड़कर सारे प्रायद्वीपसे वैध शासन-व्यवस्था उठा दी गयी। पीडमाएटमें विक्टर इमैन्युएलने अपने पिता द्वारा संस्थापित प्रतिनिधितंत्रको जारी ही नहीं रखा बल्कि ड'आज़ल्यो प्रभृति प्रसिद्ध उदार राजनीतिज्ञोंको अपनी परिषद्‌में शामिल कर विदेशी उत्पीड़कों-का एक बार और सामना करनेकी तैयारी की।

अन्य देशोंकी तरह जर्मनीमें भी फूट विद्यमान थी। आस्ट्रियाने इससे विशेष लाभ उठाया। संवत् १९०५ के ४ ज्येष्ठ (१८ मई सन् १८४८) को फ्रैंकफर्टमें राष्ट्रीय सभाका अधि-वेशन हुआ। इस अधिवेशनमें जर्मन जातिके छः सौ प्रतिनिधि सम्मिलित हुए थे। इसने शीघ्रही एक ऐसी शासन-विधि तैयार करनेका विचार किया जो एक ऐसा स्वतंत्र विशाल जर्मन राज्य स्थापित करनेकी लोगोंकी इच्छा पूरी कर सके जिसका शासन जनता स्वयं ही अपने हितके लिए करे। अब प्रश्न यह था कि इस नवीन जर्मन राज्यकी सीमा क्या हो। संवत् १८७२ के संघमें एक तो प्रशाके सभी जर्मन निवासी सम्मिलित नहीं थे, दूसरे उसमें आस्ट्रियाके पश्चिमी प्रान्तकी विभिन्न जातियां शामिल थीं। अब यह निर्णय करनेमें कोई भी

आपत्ति नहीं देख पड़ी कि सारा प्रशा इस नये संघमें शामिल कर लिया जाय। आस्ट्रियाका पूर्ण बहिष्कार असम्भव था इसलिये राष्ट्रसभाने यह निर्णय किया कि आस्ट्रियाके वे अंश नये संघमें शामिल कर लिये जायँ जो संवत् १८७२ के संघमें सम्मिलित थे। इस निर्णयसे वास्तविक जर्मन राज्यका निर्माण असम्भव हो गया क्योंकि इस नये संघमें ऐसे दो यूरोपीय राज्य शामिल होनेवाले थे जो किसी समय प्रतिस्पर्द्धी हो सकते थे, क्योंकि यह संभव न था कि प्रशा सर्वदा आस्ट्रियाका नेतृत्व माननेके लिए तैयार रहे। इस प्रकारका विभिन्न जातियोंका संघ, पहलेकी तरह, स्वतंत्र राजाओंके ढीले ढाले संघके ही रूपमें रह सकता था।

फ्रैंकफर्टकी राष्ट्रीय सभाकी मूर्खताभरी चालोंने उसकी सफलताको और भी असम्भव बना दिया। तुरन्त ही शासन-पद्धति निर्माण करनेमें लग जानेके बदले उसने जर्मन नागरिकोंके हकोंको ही निश्चित करनेमें कई महीने व्यतीत कर दिये। इससे सिद्धान्तवादियोंको, जिनकी संख्या सभामें अधिक थी, अपने विचारोंको खुले आम जाहिर कर देनेका काफी अवसर मिल गया। जब शासनविधिपर विचार होनेका समय आया उस समय तक आस्ट्रिया अपना पूर्व प्रभाव पुनः जमाने लगा था और अनुदारदलोंका नेतृत्व ग्रहण करनेके लिए प्रस्तुत था। उसे दक्षिणी जर्मनीके शासकोंका भी पूरा भरोसा था क्योंकि वे लोग पुराने संघ और तत्प्रदत्त स्वाधीनतासे परम सन्तुष्ट थे।

पुराने संघका पक्षपाती होनेपर भी आस्ट्रिया राष्ट्रीय सभाको नयी शासनविधि तैयार करनेसे नहीं रोक सका। इसके अनुसार एक वंशागत सम्राट् राज्यका सर्वोपरि अध्यक्ष होता।

यह सम्मानित पद प्रशाके राजाको दिया गया। चतुर्थ फ्रेडरिक विलियम बर्लिनके विद्रोहके कारण उदारदलसे पृथक् हो गया था। इसके अतिरिक्त वह भीरु और हृदयसे अनुदार था। वह क्रान्तिसे घृणा करता था और उसे इस बातका सन्देह था कि राष्ट्रीय सभाको सम्राट्-पद प्रदान करनेका अधिकार है या नहीं। आस्ट्रियाका भी वह बहुत आदर करता था और उसे ऐसा प्रतीत होता था कि यदि मैं सम्राट्-पद स्वीकार करूं तो इससे आस्ट्रियाके साथ युद्ध छिड़ जानेकी सम्भावना है। उसकी समझमें वह युद्ध प्रशाके लिए भयावह, और आस्ट्रियाकी परेशानी देखते हुए अत्यन्त अपमानजनक भी था। इन्हीं बातोंके ख्यालसे उसने सम्राट्-पद लेनेसे इनकार कर दिया और नयी शासन-विधिको अस्वीकार कर दिया।

प्रशा-नरेशके इस निर्णयसे राष्ट्रीय सभाके एक वर्षके कार्यपर पानी फिर गया। इसके सदस्य भी धीरे धीरे इसका परित्याग करने लगे। जो सदस्य कट्टर प्रजातंत्रवादी थे, वही शेष रह गये। इन लोगोंने प्रजातंत्र स्थापित करनेका अन्तिम बार जी-तोड़ प्रयत्न किया। आस्ट्रिया पुरानी राष्ट्रसभा (डायेट) की स्थापनाके लिए हठ कर रहा था। नीतिके सम्बन्धमें प्रशाके साथ युद्धकी परिस्थिति उत्पन्न हो गयी। प्रशाके श्वार्टसेनवर्गकी अपमानजनक शर्तोंके कबूल कर लेनेसे युद्ध रुक गया (सन् १८५१ ईसवी)।

संवत् १९०५ की क्रान्तियाँ देखनेमें परिणामरहित जान पड़ती हैं पर जिन आशाओंके साथ चैत्र मासमें ये आरम्भ की गयी थीं उनके लिहाजसे ये प्रगतिके कुछ महत्वपूर्ण चिह्न अवश्य छोड़ गयीं। प्रशा-नरेशने अपनी प्रजाके लिए शासन-विधि स्वीकृत की, जो कुछ संशोधनके साथ वर्त्तमान कालतक

काम देती रही है । पीडमांटके लिए भी शासन-विधि स्वीकृत की गयी । इनके अतिरिक्त इन देशोंने जो आभ्यन्तर सुधार आरम्भ किये उन्होंने राष्ट्रीय एका प्राप्त करनेके मार्गमें इन्हें एक बार और अग्रसर किया । इस बार इन्हें सफलता भी प्राप्त हुई ।

यदि ध्यानपूर्वक देखा जाय तो यह बात स्पष्ट हुए विना न रहेगी कि संवत् १९०५ की क्रान्तिका लक्ष्य १८४६ की फ्रांसीसी राज्यक्रान्तिसे कहीं बढ़ा हुआ था । इस समय केवल राष्ट्रीय प्रश्न ही महत्वपूर्ण नहीं समझा जाता था बल्कि समाजके आर्थिक संघटनके लिए भी कई उपाय सोचे जा रहे थे । अब मनसबदारीकी प्रथाके अवशिष्ट चिह्नोंको उठाने, सबको समानाधिकारका वचन देने और ऊँची श्रेणियोंको शासन-कार्यमें भाग देने भरका प्रश्न नहीं रह गया था । जो लोग मजदूरी करके अपना निर्वाह करते थे और कारखानोंमें, जिनकी संख्या वाष्पयंत्रके प्रयोगसे बहुत बढ़ गयी थी, काम करते थे, उनके भी मुखिया होने लगे थे । राज्यका श्रमियोंके साथ और पूँजीका श्रमके साथ जो सम्बन्ध है वह आधुनिक समयकी बहुत बड़ी जटिल समस्या है ।

संवत् १९०८ में आस्ट्रियाने कई भारी बाधाओंके होते हुए भी मेटरनिचकी पद्धति पुनः स्थापित की । पर उसकी यह विजय क्षणकालीन और साथ ही साथ अन्तिम विजय भी थी । पाँच वर्ष पश्चात् तुर्कीमें रूसके हस्तक्षेपोंसे क्रीमियन युद्धका सूत्रपात हुआ । इस युद्धमें आस्ट्रियाने निन्दनीय तटस्थता धारण की जिससे रूस तथा पश्चिमीय शक्तियोंको उसके प्रति जो प्रतिष्ठा-भाव था उसमें बहुत कमी आ गयी । इससे इटली तथा जर्मनी दोनोंको उसके पंजेसे निकलनेका प्रयत्न करनेके लिए प्रोत्साहन मिला ।

विक्टर इमैन्युएल और उसके मंत्री कावूरकी अध्यक्षतामें पीडमाएट बड़ी शीघ्रताके साथ उन्नति कर वर्त्तमान राज्यके रूपमें परिणत हो गया। रूसके विरूद्ध इंग्लैंड और फ्रांस द्वारा छेड़े गये क्रीमियन युद्धमें पश्चिमीय शक्तियोंकी सहायताके लिए इस (पीडमांट) ने एक सेना भी भेजी। इसने अपने आर्थिक और सैनिक साधनोंको खूब बढ़ा लिया और आस्ट्रियाको इटलीसे निकालनेमें एक भारी सहायक प्रमाणित हुआ।

अपने विशेष प्रसिद्ध पितृव्यकी तरह तृतीय नेपोलियन भी राज्यापहारी था। उसने यह खयाल किया कि मुझे सिर्फ पुरानी कीर्त्ति-कथाओंके भरोसे न रहना चाहिए बल्कि फ्रांसके लिए कीर्तिजनक कार्योंका सम्पादन कर लोकप्रियता भी प्राप्त करनी चाहिए। इटैलियन लोग फ्रांसीसियोंकी तरह लैटिन जातिके हैं। इसलिए इनके उद्धारके लिए आस्ट्रियाके साथ युद्ध करना लोकप्रिय कार्य होगा, विशेष कर उस हालतमें जब कि फ्रांस कुछ राज्यवृद्धि कर सके और भावी इटैलियन संघटनका संरक्षक बन सके। नेपोलियन और कावूरकी एक मंत्र-सभा बैठी। आपसमें क्या निश्चय हुआ यह तो नहीं मालूम हो सका पर नेपोलियनने सार्डीनियाको, यदि वह आस्ट्रियाके विरुद्ध युद्ध छेड़े तो, सहायता देनेका वचन दिया। यदि दोनोंके सम्मिलित प्रयत्नसे आस्ट्रिया उत्तरी इटलीसे निकाल बाहर किया जा सके तो इस हालतमें सार्डीनियाने फ्रांसको सेवाय और नीस पुरस्कार स्वरूप देनेका वचन दिया क्योंकि जाति और भूगोल दोनों दृष्टियोंसे इनपर उसीका अधिकार होना चाहिये था।

संवत् १९१६ के मध्य वैशाख तक विक्टर इमैन्युएल आस्ट्रियाके साथ भिड़ गया। पीडमांटवालोंकी सहायताके

लिए फ्रांसीसी सेना फौरन पहुँच गयी । २५ ज्येष्ठ (८ जून) को दोनोंने आस्ट्रियाको माजेण्टामें पराजित किया । तृतीय नेपोलियन और विक्टर इमैन्युएलके मिलनमें प्रवेश करनेपर लोगोंने हार्दिक आनन्दके साथ इनका स्वागत किया । आस्ट्रियन लोग युद्धका संचालन बड़ी बुरी तरहसे कर रहे थे, परिणाम यह हुआ कि १० आषाढ़को सालफेरिनोमें पुनः उनकी पराजय हुई ।

एकाएक यह सुनकर सारे यूरोपको आश्चर्य हुआ कि दोनों दलोंमें क्षणिक सन्धि हो गयी है और स्थायी सन्धिकी आरम्भिक काररवाई भी समाप्त हो चुकी है जिसके अनुसार, तृतीय नेपोलियनके यह डींग मारने पर भी कि मैं इटलीको एड्रियाटिक तक स्वतंत्र करके रहूँगा, वेनीशिया आस्ट्रियाके ही हाथमें रहने दिया गया । अब फ्रांसीसी सम्राट्को यह भय होने लगा कि पीडमांटके लिए लोगोंमें जैसा जोश उमड़ रहा है उससे तो यही प्रतीत होता है कि यह एक ऐसा शक्तिशाली राष्ट्रीय राज्य कायम कर लेगा कि इसको फ्रांसके संरक्षणकी आवश्यकता ही नहीं रहेगी । आस्ट्रियाके अधिकारमें वेनीशिया रहने देना और लाम्बार्डी तथा पारमा और मोडेनाकी डचियाँ पीडमांटमें मिलाने देना कबूल करनेपर तृतीय नेपोलियनको यह आशा थी कि मैं इटलीका संघटन कार्य्य और आगे बढ़नेसे रोक दूँगा ।

फिर भी उसने जो परिवर्तन आरम्भ किये थे उनको रोकना उसकी सामर्थ्यके बाहर था । अब इटली एक राज्यमें परिणत होनेके लिए प्रस्तुत था । तस्कनी, मोडेना, और पारमा पीडमांटके साथ मिलना चाहते थे । गेरीबाल्डी नामक प्रजातंत्रवादी नेता सिसिली जाकर इटली-नरेश विक्टर इमैन्युएलके नामपर

वहाँका अध्यक्ष बन गया। नेपिल्स-नरेशके सैनिकोंको सिसि-लीसे खदेड़कर वह नेपिल्स पहुँचा। राजा ठीक उसी समय राजधानी छोड़कर भाग गया।

अब गेरीबाल्डीका विचार रोम जाकर उसपर इटलीका आधिपत्य घोषित करनेका हुआ। उसके इस कार्यसे उसके पहलेके लाभ भी खतरेमें पड़ जा सकते थे क्योंकि फ्रांसीसि-योंमें कैथलिक भाव अधिक होनेके कारण तृतीय नेपोलियन रोमपर अधिकार जमाने और पोपकी राजनीतिक स्वाधीनता नष्ट होने नहीं देता। उसने यह बात कबूल कर ली कि विक्टर इमैन्युएल पोपके उत्तरस्थ प्रदेशोंको अपने राज्यमें मिला सकता है और गेरीबाल्डीकी अध्यक्षता स्वीकार करनेके बदले नेपिल्समें सुदृढ़ शासन स्थापित कर सकता है पर रोमपर तथा चारों ओरके समीपवर्ती प्रदेशोंपर इसके पुराने स्वामी-का ही अधिकार रहे। इसके अनुसार विकृर इमैन्युएलने दक्षिणकी ओर जाकर नेपिल्सपर अधिकार जमा लिया। नेपिल्सके राजाने आत्मसमर्पण कर दिया और सारा दक्षिणी इटली इटली-राज्यमें शामिल होगया।

संवत् १९१७ के माघ-फाल्गुनमें प्रथम इटैलियन पार्लमेंटका ट्यूरिनमें उद्घाटन हुआ और इसी समयसे राज्यकी विभिन्न जातियोंका सम्मिश्रण आरम्भ हुआ। फिर भी इटैलियन लोगों-की राष्ट्रीय स्वाधीनता और एकताकी खुशीमें दो कारणोंसे विशेष कमी थी; एक तो इटलीका एक सर्वप्रसिद्ध प्रदेश आस्ट्रियाके अधिकारमें था, दूसरे, इटलीका प्राचीन गौरवप्रदर्शक रोम नगर नये राज्यमें शामिल नहीं था। पर दस वर्षके अभ्यन्तर ही ये दोनों प्रशाके कार्यों द्वारा इटली राज्यमें आगये। प्रथम विलियम और उसके असाधारण प्रधानमंत्री बिस्मार्कके कार्य

जर्मनीके लिए ठीक वैसेही प्रतीत होते थे जैसे विक्टर इमैन्युएल और कावूरके कार्य इटलीके लिए थे।

प्रथम विलियमके सिंहासनारोहणके साथही प्रशामें युगान्तर उपस्थित होगया। इस समय एक शक्तिसम्पन्न व्यवहार-कुशल व्यक्ति अधिकारारूढ़ हो रहा था जिसका प्रधान उद्देश्य जर्मनसंघसे आस्ट्रियाको पृथक् कर प्रशाके नेतृत्वमें शेष राज्यों-का सुदृढ़ संघटन करना और प्रशाको यूरोपकी महाशक्तियोंमें स्थान दिलाना था। यह देखकर कि कभी न कभी युद्ध करना ही पड़ेगा, उसने अपने राज्यके सैनिक साधनोंको बढ़ाना आरम्भ किया।

जर्मन सेना, जो प्रथम विलियमके आरम्भिक सुधारोंका फल-स्वरूप थी, शीघ्रही यूरोपके लिए एक ऐसी असाधारण वस्तु हो गयी कि जिसके संघटनपर ध्यान देना परमावश्यक है। संवत् १८७० में नेपोलियनके विरुद्ध स्वातंत्र्य-युद्धके समय राष्ट्रको शस्त्र ग्रहण करनेका आदेश दिया गया और एक विधान द्वारा प्रत्येक स्वस्थ पुरुष नागरिकके लिए सैनिक सेवा अनिवार्य कर दी गयी। प्रथम विलियमने पहले तो यह किया कि नव-सैन्य-संग्रहकी संख्या चालीस हजारसे साठ हजार कर दी और प्रत्येक सैनिकका कार्यकाल तीन वर्ष कर दिया। इसके बाद ये सैनिक रक्षित-सेनामें शामिल कर लिये जाते थे। इसमें इन्हें दो वर्ष तक और, आवश्यकता पड़नेपर, शस्त्र उठानेके लिए प्रस्तुत रहना पड़ता था। विलियम रक्षित-सेनाका कार्य-काल बढ़ाकर चार वर्ष करना चाहता था। इस प्रकार राज्य युवावस्थाके प्रथम सात वर्षोंका हक़दार होजाता और चार-लाख सैनिक सदा प्रस्तुत रहते। इससे यह होता कि जो सैनिक मध्य अवस्थाको पहुँचते वे कार्यभारसे पृथक् कर दिये

जाते । प्रशियन पार्लमेंटकी छोटी सभाने इस प्रकार सैनिक-बल बढ़ानेके लिए आवश्यक व्यय स्वीकार नहीं किया ।

फिर भी राजाने अपनी योजनाको कार्यान्वित करना आरम्भ कर दिया । उसने संवत् १९१६ में असाधारण राज-नीतिज्ञ बिस्मार्कको अपने सहायतार्थ बुलाया । इस नये मंत्रीने आस्ट्रियाको नीचा दिखाने और प्रशाकी इज्ज़त बढ़ानेकी एक योजना तैयार की और उसे पूरा करनेमें पूरी सफलता प्राप्त की । वह इस योजनाको छोटी सभापर प्रकट नहीं होने देता था और राजासे भी अपनी नीतिके सम्बन्धमें विशेष कुछ नहीं कहता था । छोटी सभा तथा समाचारपत्रोंके विरोधकी कुछ परवा न करते हुए वह अनियमित रूपसे द्रव्य व्यय कर सैन्य-वृद्धि करता गया । उसने यह कार्य इस सिद्धान्तपर किया कि शासनविधिमें ऐसी कोई धारा नहीं थी जो बड़ी और छोटी सभाओंके बीच मतभेद होनेपर मार्ग दिखा सके । फलतः ऐसी हालतमें राजा अपने पूर्व स्वच्छन्द अधिकारसे काम ले सकता था । कुछ दिनोंतक तो ऐसा प्रतीत होता था कि प्रशा पुनः स्वेच्छातंत्रकी ओर लौट रहा है क्योंकि शासन-विधिमें कर-स्वीकृतिके अतिरिक्त नागरिकोंके हक़की और कोई मौलिक धारा नहीं थी । फिर भी बिस्मार्क अन्तमें लोकमतसे निर्दोष प्रमाणित हुआ क्योंकि सबने यह स्वीकार किया कि उसका उद्देश्य अच्छा था ।

अब प्रशाका सैनिकबल इस सीमातक पहुँच गया कि यदि वह अपने पुराने प्रतिस्पर्धीसे युद्धमें संलग्न हो तो विज-यकी आशा की जा सके । आस्ट्रियाको संघसे पृथक् करनेके लिए बिस्मार्कने एक ऐसी जटिल समस्यासे लाभ उठाया जिसमें जर्मनी बहुत दिनोंसे उलझा हुआ था । यह "श्लेज़-

विग हालस्टाइन समस्या" के नामसे विख्यात थी। यद्यपि श्लेज़विग और हालस्टाइन प्रान्तोंके अधिकांश निवासी जर्मन थे पर इनपर कई सदियोंसे डेनमार्कका ही आधिपत्य चला आ रहा था। इन प्रांतोंको अपनी अपनी प्रान्तीय सभा रखने-की इजाजत दे दी गयी थी और अब ये डेनमार्कके अंश भ ही समझे जाते थे।

संवत् १९०४ (सन् १८४७ ईसवी) में जब कि परिवर्द्धित राष्ट्रीय भाव संवत् १९०५ की क्रान्तिके रूपमें व्यक्त ही होने वाला था, डेनमार्कके नरेशने इन दोनों जर्मन प्रान्तोंको डेनमार्क राज्यमें मिला लेनेकी घोषणा निकाली। इससे सारे जर्मनीमें क्रोध-भाव फैल गया, इसका विशेष कारण यह था कि हाल-स्टाइन संघका सदस्य था। चतुर्थ फ्रेडरिक विलियमने डेनमार्कके साथ युद्ध छेड़ दिया पर कुछ वर्षोंतक इन प्रान्तों-को मिलाये जानेसे रोकनेके सिवाय वह और कुछ नहीं कर सका। ये प्रान्त जिन अधिकारोंका दावा करते थे उन्हें कापेनहेगेनकी सरकार बराबर कुचलती गयी। इस कारण नयी नयी आशङ्काओं और असन्तोषकी मात्रा दिनोंदिन बढ़ती गयी। अन्ततः संवत् १९२० (सन् १८६३) में श्लेज़विग डेन-मार्कमें मिला लिया गया।

इस समयसे जर्मनीका इतिहास बिस्मार्ककी कूटनीति और दृढ़ संकल्पका इतिहास है। युद्धक्षेत्रमें वीरता दिखलानेके अतिरिक्त राष्ट्र अपने भाग्य-निर्माणके कार्यमें और किसी प्रकार प्रभाव न डाल सका। संवत् १९२१ में जर्मनीवाले यही चाहते थे कि श्लेजविग और हालस्टाइन किसी जर्मनके शासनमें रहकर जर्मन संघमें सम्मिलित रहें। बिस्मार्क यह चाहता था कि ये प्रान्त, जो न्यूनाधिक रूपसे प्रशाके साथ मिले हुए हैं,

वर्तमान संघ-प्रथाको नष्ट करने और आस्ट्रियाको जर्मनीसे बाहर करनेमें साधन बनाये जायँ। जर्मन लोग और ही राह जाना चाहते थे और बिस्मार्क और ही। असाधारण दृढ़ता और कुशलताके बल उसने सारी प्रजा और यूरोपीय राष्ट्रोंके विरोधको दबाकर अनिच्छुक राष्ट्रको अपने ठहराये हुए लक्ष्य तक पहुँचा दिया।

बिस्मार्कने पहला काम यह किया कि श्लेज़विग और हालस्टाइन प्रान्तोंकी कठिनाईको हल करनेके लिए आस्ट्रियाका सहयोग प्राप्त किया। डेनमार्क-नरेशके किसी प्रकारकी रियायत करनेसे इनकार करनेपर दोनों शक्तियोंने उसके विरुद्ध युद्धघोषणा कर दी और उसे पराजित कर उक्त प्रान्तोंको (प्रशा और आस्ट्रियाके हाथ) सौंपनेके लिए विवश किया। यह तै हुआ कि अपनी सुविधाके मुताबिक ये लोग आपसमें इन प्रान्तोंका बँटवारा कर लेंगे। अब आस्ट्रियाके साथ झगड़ा खड़ा कर देना कोई बड़ी बात न थी। बिस्मार्कने यह कहा कि ये डचियाँ नाममात्रके लिए स्वतन्त्र कर दी जायँ पर व्यावहारिक रूपसे इन्हें प्रशाका ही अंश होना चाहिए। आस्ट्रियाने इस योजनाको अस्वीकार कर दिया। तब यह निश्चय हुआ कि जबतक इसका अन्तिम निर्णय न हो जाय तबतक आस्ट्रिया हालस्टाइनपर और प्रशा श्लेज़विगपर शासन करे।

बिस्मार्कने तृतीय नेपोलियनसे गुप्त रूपसे यह स्वीकार करा लिया कि यदि प्रशा और इटली आस्ट्रियाके विरुद्ध युद्धघोषणा करें तो मैं इसमें हस्तक्षेप नहीं करूँगा। संवत् १९२३ के आरम्भमें ही इटलीने यह कबूल किया कि यदि प्रशा नरेश जर्मन संघके सुधारके उद्देश्यसे आगामी तीन मासके भीतर आस्ट्रियाके साथ युद्ध छेड़े तो वेनिस प्राप्त करनेके उद्देश्यसे

मैं भी उसके साथ युद्धकी फौरन घोषणा कर दूँगा। आस्ट्रिया और प्रशाका पारस्परिक सम्बन्ध दिनोंदिन संकुचित होता गया। अन्ततः ज्येष्ठमासमें आस्ट्रियाने प्रशाके साथ युद्ध छेड़नेके उद्देश्यसे सङ्घकी सेना बुलानेके लिए सभा (डाएट) को राजी कर लिया। प्रशाके प्रतिनिधिने यह घोषित कर दिया कि इस कार्यसे संघका अस्तित्व समाप्त हो गया। वह जर्मनीके सुधारके लिए प्रशाकी योजना (डाएट) सभामें पेशकर उससे पृथक् हो गया।

२६ ज्येष्ठको प्रशा और आस्ट्रियाके बीच युद्ध-घोषणा हो गयी। मेक्लेनवर्ग और उत्तरी प्रान्तके कुछ छोटे राज्योंको छोड़ कर सारे जर्मनीने आस्ट्रियाका साथ दिया। विस्मार्कने उत्तरी प्रान्तके बड़े राज्यों—हनोवर, सैकसनी, हेस-कैसल—से यौद्धिक आयोजन छोड़कर प्रशाकी सुधार-योजनाको स्वीकार करनेके लिए कहा। उनके इनकार करनेपर प्रशाकी सेनाने उन राज्योंपर अधिकार कर लिया। इस कार्यसे वस्तुतः युद्धका आरम्भ हो गया।

प्रशाकी सेनाका संघटन इतना उत्तम था कि बिस्मार्कके प्रति प्रशाके उदारदलको सन्देह और घृणा होते हुए भी उत्तरी प्रान्तके राज्योंका विरोध तुरन्त शान्त कर दिया गया। १६ आषाढ़को साडोवामें आस्ट्रिया बुरी तरहसे पराजित हुआ और राजनीतिक सम्बन्ध-विच्छेद होनेके तीन सप्ताहके अभ्यन्तर ही युद्धका अन्त होगया। आस्ट्रियाका प्रभाव अब जाता रहा और प्रशाको जर्मनीके साथ स्वेच्छापूर्वक बर्तनेका अधिकार प्राप्त हो गया।

प्रशा इस बातको भलीभाँति समझता था कि मेन नदीसे दक्षिणके बड़े राज्य उसके अभीष्ट संघमें सम्मिलित होने योग्य

नहीं हैं, इसलिए उसने 'उत्तरीय जर्मन संघ' की स्थापना की जिसमें मेन नदीके उत्तरके सभी राज्य सम्मिलित थे। प्रशाने अवसर पाकर अपनी सीमावृद्धि करनेमें कोई बात उठा नहीं रखी। उसने, सैक्सनीको छोड़कर, जो उसके साथ युद्ध कर चुका था, उत्तरके सभी राज्योंको मिलाकर अपने राज्यको बढ़ा लिया।

इस प्रकार अपनी वृद्धि कर लेनेके उपरान्त प्रशाने छोटे राज्योंको आमन्त्रित कर ऐसी शासनविधि तैयार करनेमें उनकी राय माँगी जिससे इन चार उद्देश्योंकी पूर्ति हो—(१) संघमें सम्मिलित राज्यके सभी निवासियोंको चाहे वे किसी भी राज्यके हों, शासनके कार्योंमें अधिकार देना—एक लोकसभाकी स्थापनासे इस उद्देश्यकी पूर्त्ति हो गयी; (२) प्रशाकी प्रधानता बनी रहे पर इसके साथही (३) संघमें सम्मिलित राज्योंके नरेशोंके आत्मसम्मानको किसी प्रकार धक्का भी न लगे। इस द्वैध प्रयोजनको सिद्ध करनेके लिए प्रशा-नरेशको संघके अध्यक्षका—अधिपतिका नहीं—पद दिया गया। प्रधान शासक-संस्था बून्देस्राट थी। इसमें छोटेसे छोटे राज्यके भी शासकको और हैम्बर्ग, ब्रिमेन तथा लुबेक इन तीनों स्वतन्त्र नगरोंमेंसे प्रत्येकको कमसे कम एक एक मत प्राप्त था। इस प्रकार दूसरे राज्योंके नरेश प्रशाकी प्रजाकी कोटिमें नहीं समझे जा सकते थे। उत्तरी जर्मन संघ और बादके जर्मन साम्राज्यका अधिपति प्रशा-नरेश नहीं बल्कि सभी सम्मिलित राज्य थे। पुरानी सभाकी ही विधिपर मताधिकारका वितरण किया गया। संवत् १९२३ में मिलाये गये राज्योंको शामिल कर प्रशाको कुल तेंतालीस मतोंमेंसे सत्तरह मत प्राप्त थे। (४) शासन-विधिकी रचना इस प्रकार की जानी चाहिये कि

जब दक्षिणी राज्यों—बवेरिया, वुर्टेमबर्ग, बेडन तथा दक्षिणा हेस—के संघमें सम्मिलित होनेका समय आवे तब वह परिवर्द्धित साम्राज्यकी आवश्यकताओंमें भी भली भाँति काम दे सके।

यह संघटन संयुक्तराज्य अमेरिकाकी तरह वास्तविक था: हाँ, ऐसे कई नियमोंका उल्लङ्घन अवश्य किया गया था जिनका अमेरिकाके संघटनमें पूर्णतः पालन हुआ था। चिरकालागत स्वेच्छाचारी राजतंत्र राज्योंके समूहसे बने हुए संघका, अमेरिकन संघके राज्योंकी तरह, प्रजातंत्रीय सिद्धान्तों द्वारा शासित सदस्योंके मेलसे बने हुए संघसे विभिन्न होना अनिवार्य था।

संवत् १९२३ का युद्ध एकाएक समाप्त हो जाने और प्रशाकी जीतके कारण सबसे अधिक चोट तृतीय नेपोलियनके हृदयको पहुँची। उसे यह आशा थी कि बहुत दिनोंके संघर्षसे दोनों पक्ष अत्यन्त निर्बल हो जायँगे, तब मुझे पञ्च बनकर फ्रांसके लिए कुछ प्राप्त कर सकनेका अवसर प्राप्त होगा, जैसा कि इटैलियन युद्धके पश्चात् हुआ था। प्रशाने तो इस युद्धसे राज्य और शक्ति दोनों बढ़ा ली किन्तु नेपोलियनकी आशापर पानी फिर गया। नेपोलियनने मेक्सिकोमें पैर जमानेका प्रयत्न किया था पर संयुक्तराज्यके गृहयुद्धसे निवृत्त होने और यह चेतावनी देने पर कि (फ्रांसका) इस प्रकारका लगातार हस्तक्षेप शत्रुका सा कार्य समझा जायगा, उसे इधरसे भी हताश होना पड़ा। प्रशाके लाभोंके बदलेमें लक्समबर्ग मिलनेकी भी उसकी आशा जाती रही।

अब इस फ्रांसीसी राज्यापहारीके लिए केवल एक ही मार्ग रह गया था अर्थात् उस शक्तिके विरुद्ध युद्ध-घोषणा करना

जिसने फ्रांसमें विशेषरूपसे द्वेषाग्नि उत्पन्न कर रखी थी। युद्ध-घोषणाके लिए ऐसी लचर दलील जैसी फ्रांसीसियोंने पेश की कभी सुननेमें नहीं आयी और किसीको कभी इतनी जल्दी बदला भी नहीं मिला होगा। प्रशाके विरुद्ध दक्षिणी जर्मन राज्योंने जो शत्रुता प्रकट की थी उससे नेपोलियनने यह विश्वास कर लिया कि ज्यों ही फ्रांसीसी सेना पहली विजय प्राप्त करेगी त्योंही बवेरिया, वुर्टेमबर्ग और बेडेन फ्रांससे मिल जायँगे। यह पहली विजय फ्रांसको कभी नहीं प्राप्त हुई। युद्ध-घोषणा होनेके साथ ही जर्मन अपना पारस्परिक द्वेष-भाव ताकपर रख कर इस राष्ट्रीय शत्रुके विरुद्ध एक हो गये। फ्रांसीसी सेना न तो भली भाँति अस्त्र-शस्त्रसे सुसज्जित थी और न सुशासित ही थी। जर्मन लोगोंके राइन पार करनेके कुछ ही दिनोंके बाद फ्रांसीसी सेना भाग खड़ी हुई। मेट्समें दोनों सेनाओंकी मुठभेड़ हुई। एक फ्रांसीसी सेना पराजित होकर शहरकी किलाबन्दीके भीतर कैद हो गयी। अभी युद्ध छिड़े सात सप्ताह भी नहीं हुए थे कि जर्मनोंने एक दूसरी फ्रांसीसी सेनाको सेडानके मैदानमें पराजित कर सम्राट्को ही बन्दी कर लिया (१ सितम्बर १८७० ईसवी)।

अब जर्मनोंने पेरिस नगरपर घेरा डाल दिया। मेट्स और सेडानके युद्धोंमें पराजित होनेके कारण तृतीय नेपोलियनकी बड़ी बदनामी हुई, इसलिए फ्रांसीसियोंने राजतंत्र उठाकर तीसरी बार प्रजातंत्रकी स्थापना की। नयी सरकारने फ्रांसीसियोंमें जोश पैदा करनेका बहुत प्रयत्न किया पर बहुत दिनों तक शत्रु-सेनाका सामना कर सकना असम्भव था। संवत् १९२७ के १५ माघ (२८ जनवरी १८७१ को राजधानीका समर्पण कर रणविरामकी व्यवस्था की गयी। बिस्मार्कने,

जिसने युद्धमें भाग लेनेसे किसी प्रकार अनिच्छा नहीं दिख-लायी थी, सन्धिकी शर्तोंमें आलसेस और उत्तरी लारेन प्रान्तोंको, जो पहले जर्मनीके अधीन थे, भेंट करनेके लिए बाध्य कर फ्रांसको खूब नीचा दिखाया। इस प्रकार फ्रांसका राइनसे सम्बन्ध-विच्छेद हो गया और वास्जेस पहाड़की चोटी इसकी सीमा निश्चित हुई। अन्याय्य आक्रमणके कारण जर्मनोंने फ्रांससे क्षतिपूर्ति स्वरूप एक बड़ी भारी रक़म माँगी। यह रक़म पाँच अरब फ्रांक निश्चित हुई और यह तय पाया कि जबतक यह रक़म वसूल न हो जाय तबतक जर्मन सेना फ्रांसमें जमी रहे। फ्रांसीसी जनताने इन घृणित जर्मनोंसे देशका पिण्ड छुड़ानेके लिए क्षतिपूर्तिकी रक़म अदा करनेमें बहुत अधिक त्याग दिखलाया। इसी युद्धके समयसे फ्रांसी-सियोंके हृदयमें जर्मनोंके प्रति *द्वेषाग्नि भभकती रही है। आलसेस लोरेनका प्रश्न गत महायुद्ध (१९७१) की एक महत्वपूर्ण समस्या थी। बदला लेनेकी दृढ़ इच्छा अब तक परिलक्षित होती है। इस युद्धके बहुत वर्षों बाद (संवत् १९७६) तक पेरिसमें खोये हुये नगर स्ट्रासबर्गकी सूचक प्रतिमापर शोक-सूचक वस्त्र लगाये गये थे।

पेरिसके समर्पणके बाद शीघ्रही नये प्रजातंत्रको पेरिस-की जनताका एक भयंकर विद्रोह दमन करना पड़ा। विद्रो-हियोंने पैशाचिक शासनके समयकी तरह नगर-सभा कायम कर ली और पेरिसपर राष्ट्रीय सरकारका अधिकार होने देनेके

---

* गत महासमरमें विजय प्राप्त करनेपर फ्रांसीसियोंने क्षतिपूर्तिकी रक़म वसूल करनेमें जो कड़ाई दिखलायी है, विदित होता है, यह उसी बैरका परिशोध है। अनु०

स्थानमें उन्होंने इसे भस्मसात् कर देनेकी ठानी। दो महीने-की अशान्तिके बाद जब विद्रोही लोगोंकी शक्ति भयानक मारकाटके पीछे उखड़ चली तब उन्होंने सचमुच नगरमें आग लगा दी। पर नगरकी दो ही प्रसिद्ध इमारतें—ट्वीलरिज प्रासाद और नगर-भवन—नष्ट होने पायीं।

जर्मनीके साथ सन्धि करने और नयी शासन-विधि तैयार करनेके लिए संवत् १९२८ के फाल्गुनमें सर्वसाधारण द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियोंकी एक राष्ट्रीय सभा कायम की गयी। इस अस्थायी शासनमें फ्रांसने युद्धजनित कमजोरी और अप-मानको धीरे धीरे दूर कर दिया। कई वर्षोंतक यह नहीं निश्चय हो सका कि शासन-विधिका वास्तविक रूप क्या होगा। इसका कारण यह था कि राष्ट्रीय सभामें ऐसे ही सद-स्योंका बहुमत था जो पुनः राजतंत्र स्थापित करनेके पक्षमें थे। अन्तमें प्रजातंत्रवादियोंको ही सफलता मिली और संवत् १९३२ में सभाने शासन-संघटनके सम्बन्धमें तीन विधान बनाये। उस समयसे यही विधान फ्रांसके लिए शासनविधि-का काम दे रहे हैं।

कहनेको तो फ्रांस प्रजातंत्र है और प्रधान ही इसका सर्वोपरि अध्यक्ष है पर इसका शासन बेलजियमके नियंत्रित राजतंत्र जैसा है। इसमें आश्चर्यकी कोई बात नहीं है। कारण यह है कि जिस समय शासन-विधि-सम्बन्धी विधान पास हुए उस समय सभामें राजतंत्रवादियोंकी संख्या अधिक थी। इसलिए वर्तमान फ्रांसीसी शासन दोनोंका सम्मिश्रण है। इस शासनकी जड़ उखाड़नेके लिए जितने प्रयत्न हुए वे असफल रहे, इससे मानना पड़ता है कि यह शासन सर्वसाधारणकी आवश्यकताके अनुकूल है।

यदि संवत् १८४६ के प्रथम प्रजातंत्रके समयसे फ्रांसके इतिहासपर दृष्टिपात किया जाय तो देख पड़ेगा कि शासनमें कई बार क्रान्तिमूलक परिवर्तन हुए हैं। पर वास्तवमें, जितने अधिक परिवर्तनकी कल्पना की जाती है, शासन-पद्धतिमें उतना परिवर्तन नहीं हुआ। संवत् १८४६ के मानवी अधिकारों के घोषणापत्रकी धाराओंमें परिवर्तनकी कभी आवश्यकता नहीं हुई और न तो नेपोलियन द्वारा संस्थापित शासनपद्धति में ही कोई वास्तविक परिवर्तन किया गया। जबतक नेपोलियनकी शासनपद्धति रही, नागरिकोंके हकूक तथा समानताका सिद्धान्त परिपालित होता रहा, और राष्ट्रके प्रतिनिधियोंको शासकके ऊपर नियंत्रण रखनेका अधिकार बना रहा, तबतक फ्रांसको चाहे कोई साम्राज्य कहता अथवा नियंत्रित राजतंत्र या प्रजातंत्र, कोई विशेष अन्तर नहीं पड़ता।

संवत् १६२७ में प्रशा और फ्रांसमें जो युद्ध छिड़ा उससे जर्मनीकी प्रगति रुकनेके बदले, जैसी कि तृतीय नेपोलियनने आशा की थी, संवत् १६२३ का कार्य और भी पूरा होता गया। दक्षिणी जर्मन राज्यों— बवेरिया, वुर्टेमबर्ग, वेडेन और दक्षिणी हेस—ने प्रशाके साथ शत्रुपर विजय प्राप्त कर लेनेके पश्चात् उत्तरी जर्मन संघके साथ मिल जाना स्वीकार कर लिया। संवत् १६२७ के ५ माघको वर्सेल्जके राजभवनमें प्रशाके नरेश तथा उत्तरी जर्मन संघके अध्यक्ष विलियमको जर्मन राजाओंने जर्मन सम्राट्के पदपर अभिषिक्त किया। इस प्रकार गत महायुद्धके पूर्वके जर्मन साम्राज्यका निर्माण हुआ। अपनी असाधारण संघटित सेना तथा शक्तिशाली प्रधान सचिव बिस्मार्ककी सहायतासे जर्मन साम्राज्यने पश्चिमी यूरोपकी शक्तियोंमें बहुत ऊँचा स्थान प्राप्त कर लिया।

उत्तरी जर्मन संघकी शासनविधि इस आशासे बनायी गयी थी कि कुछ दिनोंके बाद दक्षिणी राज्य भी इस संघमें आ मिलेंगे, फलतः साम्राज्य-स्थापनके समय इस शासन-विधिमें बहुत ही कम परिवर्तन करनेकी आवश्यकता प्रतीत हुई। प्रशाके राजाको जर्मन सम्राट्का पद प्राप्त था और वह संघका प्रधान था, तो भी वह जर्मनीका सम्राट् नहीं था, क्योंकि सिद्धान्ततः साम्राज्यका अधिपति वह न होकर सारे जर्मन राजा लोग थे जो संघके सदस्य थे और बून्देस्राटमें अपने प्रतिनिधि भेजते थे। फिर भी संघमें प्रशाका बहुत अधिक प्रभाव था, क्योंकि उसके राजाको, अगर वह कोई बात रोकना चाहे तो इसके लिए, काफी मताधिकार प्राप्त था।

इटलीके संघटनका काम जर्मनीकी तरह संवत् १९२७ के फ्रांस-प्रशियन युद्धसे पूरा हुआ। संवत् १९२३ के युद्धके अनन्तर आस्ट्रियाने इटलीको वेनीशिया दे दिया। तृतीय नेपोलियनने १९२४ में गेरीबाल्डीको रोम तथा निकटस्थ स्थानोंपर, जो एक हजार वर्षसे भी अधिक कालसे कैथलिक चर्चके प्रधानके आधिपत्यमें चले आते थे, अधिकार करनेसे रोकनेके लिए कुछ फ्रांसीसी सेना भेजी थी। संवत् १९२७ के भाद्रमें युद्धका रूप पलट जानेके कारण नेपोलियनको अपनी सेना रोमसे वापस बुलानी पड़ी। पोपने भी इटैलियन सेनासे अपनी राजधानीकी रक्षाके लिए विशेष प्रयत्न नहीं किया। आश्विनमें इटैलियन सेनाने रोमपर अधिकार कर लिया। रोमकी बहुसंख्यक प्रजाने इटली राज्यमें शामिल होनेके पक्षमें मत दिया। रोम नगरमें राजधानी हटाकर ले जाने पर विक्टर इमैन्युएल और कावूरका कार्य पूरा हो गया।

पोपका राज्य इटलीमें मिला लेनेकी घोषणा कर देनेपर भी एक विधान द्वारा पोपका पद और पूर्ण प्रभुके अधिकार ज्योंके त्यों कायम रखे गये। अन्य यूरोपीय राष्ट्रोंकी तरह वह भी राजदूत और अपनी राजसभा रख सकता था। यह तय हुआ कि इटली सरकारका कोई अफसर किसी भी राजकीय कार्यसे पोपके राजभवनमें प्रवेश नहीं कर सकेगा। धर्म-संस्थाके प्रधानकी हैसियतसे वह इटली-नरेशसे पूर्णतः स्वतंत्र था और बिशपोंको राजभक्तिकी शपथ नहीं लेनी पड़ती थी। पोपके निर्वाह-व्ययके लिए छः लाख फ्रांककी वार्षिक पेंशन निश्चित की गयी। पोपने इस व्यवस्थाको अस्वीकार कर दिया। वह अब भी अपनेको बन्दी और इटलीको अपने राज्योंका अपहर्त्ता समझता है। उसने कभी उस आयका उपभोग नहीं किया जो उसके लिए निश्चित की गयी है और उसका अब भी यह दावा है कि जो स्वाधीनता उसे पहले प्राप्त थी वह एक बड़ी अन्तर्राष्ट्रीय धर्मसंस्थाके हितके लिहाज़-से परमावश्यक है।

उन्नीसवीं सदीके राजनीतिक परिवर्तनोंका दिग्दर्शन पूरा करनेके लिए दक्षिण-पूर्वी यूरोपपर भी कुछ ध्यान देना आवश्यक है। तुर्कोंद्वारा अधिकृत यूरोपीय भूमिकी उचित व्यवस्था एक जटिल अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्न बन गयी। हमलोग देख चुके हैं कि विक्रमकी अठारहवीं सदीके मध्यमें किस प्रकार तुर्क लोग हंगरीसे निकाले गये और पीटर महान् तथा उसके उत्तराधिकारी किस प्रकार कुस्तुन्तुनियापर अधिकार जमानेका विचार करने लगे जिसमें ज़ार भूमध्यसागरपर अपना प्रभाव जमा सकें। द्वितीय कैथरिनने रूसकी सीमा कृष्णसागर तक बढ़ा दी। उन्नीसवीं सदीके मध्य तक तुर्कलोग

अपने राज्यको किसी प्रकार बनाये रख सके पर बीसवीं सदी-में यूरोपीय तुर्की छिन्न भिन्न होगया और उसके स्थानमें कई स्वतंत्र नये ईसाई राज्य कायम होगये।

सबसे पहले सर्वियावालोंने अपने उत्पीड़कके विरुद्ध सफल विद्रोह किया। सुलतानको विवश होकर उन्हें स्वयं अपनी व्यवस्था करनेकी अनुज्ञा देनी पड़ी, पर उसने उन्हें पूरी स्वाधीनता नहीं दी। यूनानियोंके स्वातंत्र्य-युद्धके सम्बन्धमें, जो उन्होंने तुर्कोंके विरुद्ध छेड़ा था, पहलेही कुछ कहा जा चुका है *। रूस, इंग्लैंड और फ्रांसके बीचबिचाव करनेसे विद्रोहियोंका पराभव रुक गया। संवत् १८०८ में सुलतानकी सरकारने यूनानकी स्वाधीनता स्वीकार कर ली और वहाँ नियंत्रित राजतंत्र शासन कायम हुआ। तुर्क सरकारने दरेदानियाल और बास्फोरसके मार्गोंको सभी राष्ट्रोंके जहाजोंके लिए खुला रखनेका भी वचन दिया।

फिर भी तुर्क सरकारके यूरोपीय राज्यमें बहुतसे लोग—रूसियोंकी तरह—स्लाव जातिके तथा यूनानी धर्मसंस्थाके अनुयायी थे। रूसने सुलतानकी ईसाई प्रजाको उसकी सरकारके अत्याचारोंसे बचानेका अपना हक़ जाहिर किया। जब संवत् १९१० में जारको यह सूचना मिली कि तुर्क लोग ईसाई यात्रियोंको सताते हैं तो उसने तुर्कीके सभी ईसाइयोंका संरक्षण ग्रहण करनेकी अनुज्ञा चाही। सुलतानकी सरकारने इसे अस्वीकार कर दिया। इसपर रूसने युद्ध-घोषणा कर दी और कृष्णसागरमें तुर्की बेड़ेको विध्वस्त कर दिया। रूसियोंकी इस प्रगतिको अंग्रेज सरकार भयपूर्ण दृष्टिसे देखने लगी।

---

* पृष्ठ १२४ देखिये।

उसने यह सोचा कि यदि रूस अभेद्य कुस्तुन्तुनियापर अधिकार कर ले और भूमध्यसागरमें स्वच्छन्दतापूर्वक युद्धपोत भेजने लगे तो पश्चिमी यूरोपकी स्थिति भयग्रस्त हो जायगी। इसलिए इंग्लैण्डने सुलतानके राज्यकी रक्षाके लिए तृतीय नेपोलियनको अपनी ओर राजी कर लिया । अंग्रेज और फ्रांसीसी सिपाहियोंने बड़ी आसानीसे रूसियोंको हरा दिया और क्रीमिया पहुँचकर कृष्णसागर तटवर्ती सीवस्टोपोल दुर्गपर घेरा डाल दिया। बहुत दिनोंके भयङ्कर घेरावके पश्चात् दुर्गपर कब्जा हो गया और क्रीमियन युद्धका अन्त हुआ। पश्चिमी शक्तियोंके बीचमें आ पड़नेसे रूसी लोग कुस्तुन्तुनियापर कब्जा नहीं कर सके पर उनको डैन्यूब नदीके निम्न तटस्थ (तुर्कीके) दो प्रान्तोंकी स्वाधीनताकी आवश्यकता स्पष्टतः प्रतीत हो गयी। संवत् १९१६ में ये दोनों प्रान्त रूमानियामें सम्मिलित कर लिये गये।

बोस्निआ और हर्जेगोविनाकी तुर्की प्रजा अपने पड़ोसी सर्वियन लोगोंकी, जो तुर्की सरकारके बन्धनसे मुक्त हो गये थे, खुशकिस्मतीपर ईर्ष्याग्निसे जल रही थी। संवत् १९३२ में जब तुर्कोंने एक बार कर वसूल कर पुनः वही कर माँगा तो इन दोनों प्रान्तोंमें बलवा खड़ा हो गया। पीड़ित ईसाइयोंने सर्विया राज्यका अङ्ग बनकर तुर्कोंके अत्याचारसे पिण्ड छुड़ाना चाहा। इस प्रयत्नकी सफलताके लिए वे स्वभावतः रूसपर निर्भर थे। यह विद्रोह सुलतानकी और ईसाई प्रजाओंमें भी—विशेषकर बल्गेरियाकी प्रजामें—शीघ्रही फैल गया।

इस समय तुर्कोंने भयंकर रूपसे बदला लिया। उन्होंने बलवाइयोंके साथ ऐसे अत्याचार किये कि सारा यूरोप काँप उठा। एक ही नगरके सात हजार निवासियोंमेंसे छः हजार

बड़ी निर्दयताके साथ मार डाले गये और वीसों गाँव जला दिये गये । रूसने रूमानियाके साथ मिलकर सुलतानके विरुद्ध युद्धकी घोषणा की। तुर्क लोग पराजित होगये पर पश्चिमी यूरोप अपनी स्वीकृतिके बिना प्रस्तुत प्रश्नको हल नहीं होने देता इसलिए बिस्मार्ककी अध्यक्षतामें बर्लिनमें एक कांग्रेस हुई जिसमें जर्मनी, आस्ट्रिया, रूस, इंग्लैंड, फ्रांस, इटली और तुर्कीके प्रतिनिधि सम्मिलित हुए ।

बर्लिनकी कांग्रेसने यह निश्चय किया कि आजसे मांटी-निग्रो, सर्बिया और रूमानिया पूर्णतः स्वतंत्र हुए (अन्तिम दोनों प्रान्त कुछ ही वर्षोंके भीतर राज्यके रूपमें परिणत ह गये) । बोस्निआ और हर्जेगोविना आस्ट्रियाके शासनमें रखे गये, यद्यपि कहनेके लिए उनका अधिपति सुलतान ही रहा। बल्गेरिया ईसाई राज्य माना गया पर उसे सुलतानको अपना अधिपति मानना और उसे कर देना पड़ा । सुलतानका राज्य जो कभी बहुत ही विस्तृत था अब संकुचित होकर कुस्तुन्तु-निया और एड्रियाटिकके पश्चिम भागमें एक पहाड़ी देशके एक खंड मात्रमें रह गया ।

———

अध्याय ४१

वर्तमान यूरोप।

आजसे डेढ़ सौ वर्ष पूर्वतक दैनिक जीवनके कामोंमें वैज्ञानिकों और गणितज्ञोंके आविष्कारोंका प्रयोग होना आरम्भ नहीं हुआ था। एक स्थानसे दूसरे स्थानतक सफर करनेके लिए और किसी नये जरियेका पता नहीं लगा था। कातने और बुननेका काम ठीक उसी ढंगसे होता था जैसा रोमसाम्राज्यपर बर्बरों-के आक्रमणके समय हुआ करता था। उस समयतक लोहा, जिससे आज हम लोग भाँति भाँतिके यंत्र बनाते हैं, तैयार करनेमें बहुत अधिक खर्च पड़ता था और वह भी केवल थोड़ी मात्रामें कोयले और धौंकनीके सहारे प्राप्त हो सकता था।

'कारखाना' केवल हाथसे ही होनेवाले कामोंका द्योतक था। शिल्पी लोग आजकलके मोचियोंकी तरह अपने ही घरों या दूकानोंमें अपने ही औजारोंसे अपना व्यवसाय चलाते थे। बड़े कारखानोंमें सैकड़ों आदमियोंके साथ काम करने और केवल मजदूरीपर निर्भर रहनेके बदले उस समय कारीगर लोग (कमसे कम इंग्लैंडके) कृषि सम्बन्धी तथा अन्यान्य कार्योंमें भी कुछ समय लगाकर जीविका प्राप्त कर लिया करते थे। विक्रमकी उन्नीसवीं सदीके पूर्वार्द्धमें यंत्रोंके आवि-र्भावसे इंग्लैंडमें कारखानोंने इस 'घरेलू प्रथा' का स्थान ग्रहण कर लिया। सदियोंसे हाथ-पाँव तथा साधारण औजारोंसे जो काम लेनेकी चाल चली आती थी वह उठ गयी और यंत्रोंसे ही सबका काम लिया जाने लगा।

यंत्रोंकी प्रगति तथा उनकी उपयोगिता बढ़ानेके लिए दो बातोंकी आवश्यकता थी। पहले तो, एक ऐसे पदार्थकी आवश्यकता पड़ी जिससे सुदृढ़ यंत्रोंका निर्माण हो सके। इस कार्यके लिए लोहा और इस्पात ही अबतक सर्वोत्तम प्रमाणित हुए हैं। दूसरे, एक ऐसी योग्य शक्तिकी आवश्यकता प्रतीत हुई जो इन भारी यंत्रोंको चला सके क्योंकि हाथ-पैरके बल इनका चलना सम्भव नहीं था। यह आवश्यक शक्ति भाफमें पायी गयी। एक प्रतिभाशाली अंग्रेज आविष्कर्त्ताने भाफ़से चलनेवाले एंजिनका आविष्कार किया। उसने एक सिलिण्डरका भी आविष्कार किया जो भाफके बल आगे पीछे जा सकता था। पर उस समयके यंत्र उत्तम सिलिंडर तैयार नहीं कर सकते थे, इस कारण उसकी उन्नतिमें बहुत बाधा पहुँची। कुछ दिनोंके बाद उसने अपने एञ्जिनको चक्की चलाने योग्य बना लिया। इस प्रकार पहले पहल यंत्रोंको चलानेके लिए भाफका प्रयोग किया गया।

वाटके उत्तम एंजिन तैयार करनेके कुछ वर्ष पहले ही पुराने तरीकेके चर्खेके स्थानमें नयी विधि प्रचलित हो चुकी थी जिसमें विभिन्न गतिसे घूमनेवाले तकुओंके जरिए सूत निकलता था। अब ये तकुए, जो पहले जल-शक्तिके द्वारा चलाये जाते थे, वाष्पके बल चलाये जाने लगे। करघोंमें भी अब बहुत कुछ उन्नति हो गयी और संवत् १८५७ के बादसे बुनाईका काम साधारणतः वाष्प द्वारा ही होने लगा।

फिर भी जबतक लोहा और इस्पात महँगे रहे तबतक यंत्रोंका प्रचार समुचित रूपसे नहीं हो सका। इन्हीं यंत्रोंकी सहायतासे लोहा और पत्थरका कोयला अल्प व्ययमें प्राप्त करनेका साधन तैयार किया गया। पहलेकी अपेक्षा अधिक

कमखर्चीके साथ इस्पात भी बनाया जाने लगा। अब लोहा पीटनेके लिए हथौड़ोंकी जगह भाफसे चलनेवाली चक्कियाँ प्रयुक्त होने लगीं। वाष्प, कोयला और लोहेके आविष्कारोंने पश्चिमी यूरोपके सर्वसाधारणके जीवनमें ऐसी जल्दी क्रान्ति उत्पन्न कर दी जैसी पूर्वोल्लिखित किसी घटनाने न की होगी। इस स्थानपर इन्हीं आधुनिक आविष्कारोंके प्रभावकी विशेषता और भेदोंका दिग्दर्शन कराया जायगा।

यद्यपि यंत्र उत्तम रूपसे काम कर सकते थे पर ये बड़े ही खर्चीले होते थे और इनका वाष्पोत्पादक यंत्रके निकट होना आवश्यक था। फलतः खास खास चीजोंके यंत्र कारखानोंमें एकत्र होते गये और कारीगर लोग अपने घरेलू उद्योगोंको छोड़ कर यहीं झुंडके झुंड जमा हो गये। यंत्रसे माल तैयार करनेवालोंकी तुलनामें पुराने ढंगके औजारोंके जरिए हाथसे माल पैदाकरनेवाले बहुत घाटेमें रहे। इसका अनिवार्य परिणाम यह हुआ कि गृहशिल्पका स्थान कारखानोंने ले लिया।

कारखानेकी प्रथासे एक विशेष लाभ यह हुआ कि इसके द्वारा श्रमका समुचित रूपसे विभाग हो गया। किसी कार्यके सभी अङ्गोंपर ध्यान न देकर अब कारीगरको किसी विशेष अङ्गपर ही अपना ध्यान केन्द्रीभूत करना पड़ता है और एक ही काम बार बार करते रहनेसे उस विशेष काममें वह पूरी दक्षता भी प्राप्त कर लेता है। इस प्रथामें बहुत दिनोंतक काम सीखनेकी भी जरूरत नहीं पड़ती क्योंकि कार्यके पृथक् पृथक् अङ्गोंका सीखना बहुत सरल हो गया है। इसके अलावा दिनोंदिन नये नये यंत्रोंका आविष्कार होता ही जाता है क्योंकि किसी कामको कई छोटे छोटे अङ्गोंमें बाँट देनेसे मनुष्यकी शक्ति

प्रयुक्त करनेके स्थानमें यंत्रशक्तिका प्रयोग करनेके लिए कोई न कोई राह निकल ही आती है।

यंत्रों और श्रमविभागके प्रयोगसे उत्पादनकी मात्रा किस प्रकार बढ़ी है यह स्काटलैंडके प्रसिद्ध अर्थशास्त्री आदम सिथके एक उदाहरणसे स्पष्ट हो जायगा। अपने समयके एक अल्पीनके कारखानेके सम्बन्धमें उसने लिखा है "अल्पीनका सिरा बनानेके लिए दो या तीन भिन्न भिन्न क्रियाओंकी आवश्यकता पड़ती है। इस सिरेको अल्पीनके ऊपर जड़ना भी एक विचित्र ही कार्य है, इसको चमकाना भी इसी प्रकारका दूसरा कार्य है। इन्हें कागजके टुकड़ोंमें रखना भी एक पृथक् व्यवसाय है। इस प्रकार अल्पीन बनानेका व्यवसाय भिन्न भिन्न अठारह क्रियाओंमें विभक्त है। इस श्रम-विभागकी सहायतासे दस आदमी मिलकर एक दिनमें ४८ हजार अल्पीनें तैयार कर सकते हैं।" हालके एक लेखकका कथन है कि अब एक अंग्रेजी यंत्रमें प्रति मिनट १८० अल्पीनें तैयार हो सकती हैं। इस क्रियामें तार काटना, सिरा चिपटा करना, नोक तेज करना और नियत स्थानमें अल्पीनोंको गिरा देना इत्यादि कार्य शामिल हैं। लेखकने अल्पीनका एक कारखाना देखा जिसमें प्रतिदिन ७० लाख अल्पीनें तैयार होती थीं और केवल तीन ही आदमी सारे यंत्रोंको चला सकते थे।

आधुनिक यंत्रोंके कामका दूसरा उदाहरण मुद्रण कलामें पाया जाता है। इस कलाकी प्रगतिके कई सदियों बादतक टाइप हाथसे ही बैठाये जाते थे। टाइपोंपर हाथसे ही कागज रखकर प्रेसके लिवरसे दबाया जाता था। आजकल समाचार-पत्रोंका कुल काम, कमसे कम बड़े नगरोंमें, यन्त्रों द्वारा ही होता है। टाइप बैठानेसे लेकर, छापकर और गिनकर

मोड़ने तकका काम यंत्र ही करते हैं। एक बड़े बेलनके जरिये कागज भीतर जाता रहता है और आपसे आप दोनों ओर छपकर मुड़ भी जाता है। इस प्रकार प्रति मिनट दो सौ या इससे अधिक प्रतियाँ तैयार हो जाती हैं।

यदि कारखानेदार लोग केवल अपने पड़ोसमें ही अपना माल बेचनेमें सफल हुए होते तो कारखानोंकी इतनी वृद्धि और उन्नति नहीं हुई होती। यह पता लग जानेसे कि वाष्पके द्वारा माल संसारके प्रत्येक भागमें कम खर्चमें और बहुत ही शीघ्र पहुँचाया जा सकता है, कारखानेदारोंके लिए अपरिमित रूपसे बिक्रीका क्षेत्र बढ़ा सकना सम्भव हो गया। फुल्टन नामक एक अमेरिकन आविष्कर्ताने संवत् १८६४ में पहले पहल वाष्पसे चलनेवाला पोत तैयार करनेमें सफलता प्राप्त की। फिर भी पुराने तरीकेकी नावोंके बदले नये प्रकारके पोतोंका प्रचार लगभग पचास वर्षतक नहीं हो सका। अब तो न्यूयार्कसे सदैम्पटन तक, तीन हजार मीलकी यात्रा, ऐक्सप्रेस ट्रेनकी ही तरह नियमित रूपसे, छः दिनसे कममें ही की जा सकती है। वैंकूवरसे जापान जानेमें केवल तेरह दिन लगते हैं और सानफ्रांसिस्कोसे होनोलूलू होकर जानेमें अर्थात् पाँच हजार मीलकी यात्रा तय करनेमें केवल १८ दिन लगते हैं। भूमण्डलके व्यापारिक मानचित्रपर दृष्टिपात करनेसे देख पड़ेगा कि पोतोंके निश्चित मार्ग प्रत्येक भागमें अंकित हैं। व्यापारिक तथा यात्री जहाज इन्हीं मार्गोंका एक नौस्थानसे दूसरे नौस्थानतक अनुसरण करते हैं। इस प्रकार अल्प व्ययमें ही माल एक स्थानसे दूसरे स्थानको पहुँच जाता है।

जिस प्रकार बड़े बड़े वाष्पपोतोंने पुरानी पालदार नावोंका स्थान ग्रहण कर लिया उसी प्रकार स्थलपर व्यापारिक माल

ढोनेके लिए घोड़ों और बैलोंद्वारा धीरे धीरे खींची जानेवाली गाड़ियोंके बदले बड़े आकारकी कई डब्बोंवाली ट्रेनें प्रयोगमें आने लगीं। अब प्रत्येक डब्बेमें इतना माल ढोया जाता है जितना पुराने समयकी कई गाड़ियोंपर ढोया जा सकता। अब प्रति मील २८ मनकी ढुलाई एक सेण्टसे भी कम पड़ेगी। संवत् १८८२ में स्टिफेन्सनका एञ्जिन इंग्लैंडमें पहले पहल चलाया गया। और देशोंने भी शीघ्र ही इंग्लैंडका अनुकरण करना आरम्भ किया। फ्रांसने १८८५ में और जर्मनीने १८९२ में पहले पहल रेलकी सड़क बनायी। संवत् १८९७ में यूरोपमें १८०० मील रेलकी सड़कें हो गयीं। इसके ५० वर्ष पश्चात् ये सड़कें बढ़कर डेढ़ लाख मील हो गयीं।

माल भेजनेमें इस विचित्र कमखर्चीके अलावा सम्बन्ध-स्थापनके और भी कई नये नये साधन इन आधुनिक आविष्कारोंसे निकले हैं। तार, जलमग्न तार और टेलिफोनके सहारे यह कार्य बहुत ही अल्पकालमें साध्य होगया है। वाष्पपोत और रेलके जरिये पृथ्वीके गोलार्द्ध भरमें केवल चार पैसेमें समाचार भेजा जा सकता है जो इतनी दूर समाचार भेजनेके लिहाजसे कुछ भी नहीं है। द्रव्य चुकानेके पुराने भद्दे तरीकेके स्थानमें अब समान मूल्यकी मुद्रा प्रचलित होगयी है। अठारहवीं सदीके पूर्व प्रत्येक छोटी रियासत तथा नगरके लिए अलग अलग मुद्रा होती थी, अब तो सारे राज्य भरके लिए केन्द्रीय सरकारकी ओरसे मुद्रा निकाली जाती है। परन्तु सबसे अधिक सुविधाजनक सिक्कोंको भी अधिक संख्यामें एक स्थानसे दूसरे स्थानतक लेजानेमें कठिनाई होती थी, अब हुंडियों और नोटोंके प्रचलनसे यह कठिनाई भी जाती रही। बैंक अपना हिसाब केन्द्रस्थ कार्यालय (क्लियरिंग हाउस) के

जरिये तय कर लेते हैं और एक हाथसे दूसरे हाथ भारी रकम जानेकी जरूरत नहीं रहती ।

सर्वप्रथम इंग्लैंडने ही इन नये आविष्कारोंको उपयोगमें लाना आरम्भ किया और इनकी सहायतासे वह विक्रमकी उन्नीसवीं सदीके अन्ततक संसारमें व्यवसायका केन्द्र बन गया। धीरे धीरे नये यंत्रोंका प्रचार महाद्वीपके और देशोंमें भी बढ़ता गया और संवत् १९०७ के बादसे जिन देशोंमें पर्याप्त कोयला मिलनेके साधन मौजूद हैं, यथा जर्मनी और वेल्जियम, वे भी अपना व्यवसाय वढ़ाकर ग्रेट ब्रिटेनका मुकाविला करने लगे हैं।

इस पूर्वकथित व्यावसायिक क्रान्तिका यूरोपके जीवन और राज्योंपर प्रगाढ़ प्रभाव पड़ना अनिवार्य था। उदाहरणार्थ ईसाकी उन्नीसवीं सदीके अन्दर यूरोपकी जनसंख्या लगभग दूनी हो गयी। वर्तमान समयकी एक विचित्र प्रवृत्ति नगरोंका उद्भव है। संवत् १८५७ में लन्दनकी जनसंख्या दस लाखसे भी कम थी, अब इसमें पैंतालीस लाखसे भी अधिक मनुष्य निवास करते हैं। फ्रांसीसी क्रान्तिकी उत्पत्तिके समय पेरिसकी जनसंख्या सात लाखसे भी कम थी, इस समय यह संख्या पच्चीस लाखसे अधिक हो गयी है। सौ वर्षके अन्दर बर्लिनकी जनसंख्या सवालाखसे बढ़कर लगभग बीस लाख हो गयी है। इंग्लैंडके चतुर्थांश लोग ऐसे नगरोंमें रहते हैं जिनकी आबादी ढाई लाखसे अधिक है और चतुर्थांशसे कम ही लोग ग्रामोंमें रहते हैं। हम लोगोंके जीवनपर बड़े बड़े नगरोंका ही प्रभाव है। ये नगर केवल वाणिज्य-व्यवसायके ही केन्द्र नहीं हो रहे हैं बल्कि विद्वानों और ललित-कला-विशारदोंके भी निवासस्थान हैं।

व्यावसायिक क्रान्तिके बाद इन नगरोंके उद्भवके दो स्पष्ट कारण देख पड़ते हैं। पहला तो यह कि कारखाने उन्हीं स्थानोंमें खोले जाते हैं जहाँ कोयला पर्याप्त मात्रामें मिल सके या अन्य कारणोंसे परिस्थिति अनुकूल हो, और इस कारणसे बहुसंख्यक लोग उन स्थानोंमें पहुँच जाते हैं। दूसरा यह कि पहलेकी तरह अब शहरोंकी वृद्धिकी सीमा नहीं नियत कर दी जाती क्योंकि उस समयमें दूरसे खाद्य-सामग्री लानेमें बड़ी कठिनाई उठानी पड़ती थी। १६ वें लूईके समयमें पेरिस कोई बड़ा नगर नहीं था, फिर भी सरकारको बाजारोंमें काफी खाद्य-सामग्री जुटानेमें बड़ी दिक्कत होती थी। अब तो अन्नकी बात कौन कहे, मांस और फल भी दूरातिदूर पहुँचाये जा सकते हैं। इंग्लैंडमें जितने मांसकी खपत होती है उसका अधिकांश भूमण्डलके द्वितीयार्द्धमें स्थित आस्ट्रेलिया महादेशसे आता है। मक्खन और अंडे तक उसे यूरोपके अन्य देशोंसे प्राप्त होते हैं।

ईसाकी उन्नीसवीं सदीके पूर्व यूरोपीय राज्योंको कानून द्वारा वाणिज्य-व्यवसायका नियंत्रण करनेकी आदत सी हो गयी थी। उनकी यह धारणा थी कि यह कार्य सर्वसाधारणकी रक्षाके लिए परमावश्यक है। इंग्लैंडके नौ-विधान, वणिक्-संघ जो अपने अपने जिलोंमें सरकारकी संरक्षकतामें व्यवसायपर एकाधिकार जमाये हुए थे, कोलबर्टके आदेश, और फ्रांस तथा इंग्लैंडके वे अन्नविधान जिनके अनुसार स्वच्छन्द रूपसे अन्नका आयात और निर्याततक परिमित कर दिया गया था, इसके उदाहरण हैं।

टरगट और आदम स्मिथ जैसे १८ वीं सदी (ई०) के अंग्रेज और फ्रांसीसी अर्थशास्त्री सभी प्रकारकी रुकावटोंको दूर कर देनेके पक्षमें थे क्योंकि उनकी समझमें इससे भलाईकी अपेक्षा

बुराई ही अधिक थी । अब अधिकांश यूरोपीय राष्ट्रोंने मुक्तवाणिज्य नीतिकी उपयोगिता स्वीकार कर ली है । इंग्लैंडने संवत् १६०३ में अन्न-विधान उठा दिया और उस समयसे मुक्त-वाणिज्य नीति ग्रहण की । हाँ, शराब और तम्बाकू जैसी कुछ व्यापारिक वस्तुओंपर वह ज़कात अवश्य वसूल करता है। यूरोपकी अधिकांश सरकारें राज्यमें प्रवेश करते समय कुछ आयात-कर जरूर लेती हैं पर सभी प्रकारके निर्यात-कर तथा आभ्यन्तर चुंगीकी चौकियाँ उठा दी गयी हैं ।

कारखानोंकी प्रथा आरम्भ होनेके कुछ ही दिन बाद कानून द्वारा मजदूरोंकी रक्षा करनेकी आवश्यकता स्पष्ट हो गयी । नये कारखाने मजदूरोंसे वलात् अस्वास्थ्यकर परिस्थिति-में उचित समयसे अधिक काम लेना चाहते थे । औरतें और बच्चे यंत्र चलानेके लिए भिड़ा दिये जाते थे और निर्दयता-पूर्वक उनकी शक्तिसे अधिक काम लिया जाता था । कोयलेकी खानोंमें भी उन्हें ऐसी ही बुरी हालतमें काम करना पड़ता था । इन मजदूर नर-नारियोंकी रक्षा करने तथा इनकी दशाका सुधार करनेके लिए कानून बनाना आधुनिक सरकारोंका एक मुख्य कर्त्तव्य होगया है । इस प्रकारके नियम बनानेमें जर्मनी सबसे बढ़ा हुआ है। उसने तो मजदूरोंको उनके परिवारके हितकी दृष्टिसे, जीवनका बीमा तक करानेके लिए बाध्य कर रखा है ।

इस प्रथाकी दूसरी उन्नति श्रम-समितियोंकी वृद्धि है । ये ऐच्छिक समितियाँ हैं जो सदस्योंके हितकी दृष्टिसे खोली जाती हैं । इन समितियोंकी वृद्धि भी कारखानोंकी वृद्धिके ही अनुपातसे होती गयी है और कई चीजोंके व्यवसायपर इनका प्रभाव मध्ययुगीय बणिक् संघोंका सा ही है पर सरकार बणिक्

संघोंके आदेशोंकी तरह इनके आदेशोंको प्रयोगमें लानेका भार नहीं उठाती।

व्यवसाय-वृद्धिके साथ शासनकार्यमें जनताके क्रमशः प्रवेशका बहुत कुछ सम्बन्ध है। नगरोंमें रहनेके कारण श्रमजीवियोंकी बुद्धि इतनी प्रखर हो गयी है कि ये शासनका काम एकमात्र राजा या अमीरोंके प्रतिनिधियोंके भरोसे नहीं छोड़ सकते। इसका परिणाम यह हुआ कि उन्नीसवीं सदीमें पश्चिमी यूरोपके प्रायः सभी राज्योंमें वैध शासन-व्यवस्था जारी होगयी। इन शासन व्यवस्थाओंमें परस्पर बहुत कुछ अन्तर है पर इस एक बातमें सभी समान हैं कि एक प्रतिनिधि-सभा होनी चाहिए जिसके सदस्योंका चुनाव सर्वसाधारण द्वारा हो। धीरे धीरे मताधिकार यहाँतक व्यापक बना दिया गया है कि गरीबसे गरीब मजदूरको भी बालिग होनेके साथ ही प्रतिनिधि चुननेका अधिकार प्राप्त होजाता है। सर्वसाधारणके प्रतिनिधियोंकी स्वीकृतिके बिना राजा और अमीर-सभा न तो कोई कानून बना सकती है और न कोई नया कर ही लगा सकती है। करसे आया हुआ रुपया खर्च करनेके पहले व्ययकी सूची खूब सावधानीसे तैयार कर प्रतिनिधि-सभामें पेश करनी पड़ती है और उसकी स्वीकृति लेनी पड़ती है।

फ्रांसीसियोंने अपनी शासन-विधि इस स्मरणीय वाक्यसे आरम्भ की है, "चूँकि सभी नागरिक कानूनकी दृष्टिमें बराबर हैं इसलिए वे, यदि उनमें आचरण और योग्यता सम्बन्धी त्रुटि न हो तो, यथाशक्ति सभी सम्मानित और विश्वासवाले पदोंपर नियुक्त होनेके अधिकारी हैं।" यह सिद्धान्त जो कि पूर्वप्रचलित सिद्धान्तसे बहुत भिन्न है, अधिकांश आधुनिक शासनविधियोंमें स्वीकार किया गया है। फ्रांसीसी क्रान्तिके

पूर्व जो विशेषाधिकार तथा नियमोंके अपवाद प्रचलित थे वे सबके सब उठा दिये गये हैं । अब ऐसा माना जाता है कि यूरोपीय सरकारें सामाजिक स्थिति या धार्मिक विश्वासका कुछ ख्याल न कर सबके साथ एकसा वर्ताव करती हैं ।

विक्रमकी उन्नीसवीं सदीके उत्तरार्द्धके आरम्भमें इंग्लैंडके विधान पुस्तकमें ऐसे कानून वर्तमान थे जिनके कारण रोमन कैथलिकों और मतविरोधियोंको न तो पार्लमेण्टमें स्थान मिल सकता था और न कोई सरकारी नौकरी ही मिल सकती थी । हाँ, मतविरोधियोंके लिए कुछ सहूलियत अवश्य कर दी गयी थी । उग्र विरोध करनेके पश्चात् द्वितीय चार्ल्सके समयका परीक्षात्मक विधान संवत् १८८५ में जाकर रद्द हुआ । दूसरे हां वर्ष रोमन कैथलिकोंको भी राजाकी दूसरी प्रजाओंकी तरह पार्लमेंटमें स्थान पाने तथा सरकारी नौकरी पानेका अधिकार प्राप्त होगया ।

शिक्षाका कार्य, जो पहले धर्मसंस्थाके हाथमें था, ईसाकी १९ वीं सदीमें उसके हाथसे निकल कर राज्यका एक मुख्य कर्तव्य बन गया । सभी श्रेणियोंके ४ वर्षसे लेकर १३, १४ वर्षतकके बालकों और बालिकाओंको उन विद्यालयोंसे लाभ उठानेके लिए विवश होना पड़ता है जो इन्हींके हितके लिए राज्यद्वारा चलाये जाते हैं । फ्रांस, इटली, नार्वे और स्वीडनमें तो शिक्षा निःशुल्क है, जर्मनी तथा पश्चिमी यूरोपके शेष देशोंमें केवल नाममात्रके लिए फीस ली जाती है । संवत् १९५९ में अंग्रेजी पार्लमेंट तथा फ्रांसीसी व्यवस्थापक सभा इनमेंसे प्रत्येकने शिक्षाविषयक कार्योंके लिए लगभग बारह करोड़ रुपये व्यय किये । आधुनिक समयमें शिक्षाकी वृद्धि किस तेजीसे हुई है इसका पता इसी बातसे लग जाता है कि संवत् १९०० में

जितने लोगोंने इंग्लैंड और वेल्समें विवाह किये उनमेंसे लगभग तृतीयांश पुरुष और अर्द्धांश स्त्रियाँ विवाह पुस्तकपर हस्ताक्षर करनेमें असमर्थ थीं। संवत् १९५६ में सैकड़े पीछे तीनको छोड़ सभी मनुष्य और इतनी ही स्त्रियाँ लिख पढ़ सकती थीं।

शिक्षाकी वृद्धिने अभी राष्ट्रोंको युद्धकी शरण लिये बिना आपसके झगड़े तय करना नहीं सिखलाया है। यह सत्य है कि नेपोलियनके पतनसे संवत् १९७१ तक पश्चिमी यूरोपमें केवल तीनही चार भयंकर युद्ध हुए हैं और वे भी पहलेके युद्धोंकी तुलनामें बहुत छोटे हैं, फिर भी यूरोपीय राष्ट्र स्थायी सेना रखने तथा युद्धपोतोंके निर्माणके लिए प्रतिवर्ष भारी भारी रकमें व्यय करते रहे हैं। संवत् १९७१ में फ्रांस तथा जर्मनी प्रत्येकके पास पाँच लाखसे अधिक सुशिक्षित सैनिक प्रस्तुत थे और बीस लाख ऐसे थे जो युद्धघोषणा होनेके साथही सैनिक कार्यके लिए बुलाये जा सकते थे। सैनिकोंकी संख्या और उनके शस्त्रोंकी मात्राके सम्बन्धमें उग्र प्रतिस्पर्धा उत्पन्न होगयी। इन बढ़ते हुए सैनिकों तथा शस्त्र और युद्धकी सामग्रीका, जो दिनोंदिन उन्नति कर अधिकाधिक भयंकर होती गयी, व्यय बढ़ गया जिससे प्रजाके ऊपर करका असह्य भार भी बढ़ता ही गया।

संसारके दूरस्थित देशोंपर प्रभाव बढ़ानेके लिए यूरोपीय राष्ट्रोंकी चिन्ता आज भी ईसाकी १८ वीं सदीसे कम नहीं है। गमनागमनके आधुनिक साधनोंके कारण संसार पहलेकी अपेक्षा अधिक संकुचित और पास पास बसा हुआ सा होगया है। लन्दनकी कोई घटना आक्सफोर्डमें जितनी जल्दी विदित होगी, सिडनीमें भी उसकी खबर उतनेही कालमें पहुँच

जायगी। कोई सरकार गोलार्द्धके दूसरे भागमें स्थित सेनापतियोंको उतनी ही आसानीसे आदेश भेज सकती है जितनी पाँच मील दूर भेजनेमें होती। दूरसे दूर देशोंमें भी शस्त्र और युद्ध-सामग्री बातकी बातमें पहुँचायी जा सकती है।

उन्नीसवीं सदीके उत्तरार्द्धके आरम्भमें मेक्सिको, फ्लोरिडा, मध्य अमेरिका तथा ब्राज़ीलको छोड़कर जो कि पोर्तुगालके अधीन था, दक्षिण अमेरिकाका अधिकांश स्पेनके आधिपत्य-में था। नेपोलियन-कालमें स्पेनके इन उपनिवेशोंने विद्रोह कर अपनी स्वाधीनता उद्घोषित कर दी। संवत् १८८३ में स्पेनको विवश होकर अपनी काररवाई बन्द करनी पड़ी और अमेरिकासे अपनी सेना वापस बुलानी पड़ी। संवत् १८७९ में ब्राज़ीलने पोर्तुगालका आधिपत्य हटाकर अपनी स्वाधीनताकी घोषणा कर दी। संयुक्तराज्य अमेरिकासे युद्धके बाद स्पेनने अपने विशाल औपनिवेशिक राज्यके अवशिष्ट स्थानों—क्यूबा, पोर्टोरिको और फिलिपाइन्स—को भी खो दिया।

इसके प्रतिकूल ईसाकी १९ वी सदीमें इंग्लैंड अपने उपनिवेशों और अधीन राज्योंको धीरतापूर्वक बढ़ाता गया। तेरह अमेरिकन उपनिवेशोंके सफल विरोधके बादसे इसको और कोई भारी क्षति नहीं उठानी पड़ी है। संवत् १८७१ में इसने डचोंसे उत्तमाशा अन्तरीप प्राप्त किया; निकटस्थ जिलोंको मिला लेनेसे उस प्रदेशकी बहुत वृद्धि हो गयी। विक्रमकी बीसवीं सदीके आरम्भमें वह पश्चिमी, मध्य तथा पूर्वी एशियाके विस्तृत भूखंडोंपर अधिकार जमानेमें लगा रहा।

इंग्लैंडने स्वेज़ नहरपर, जो सं० १९२६ में मुख्यतः फ्रांसीसी पूंजीसे बनी, आधिपत्य प्राप्त कर पूर्वी भूमध्य सागरमें अपने हितोंको सुरक्षित बना लिया है। संवत् १८३२ में इंग्लैंड-

ने मिश्रके खेदीवके हिस्से खरीद लिये। खेदीव सरकारकी आर्थिक दशा बड़ी शोचनीय हो रही थी इसलिए इंग्लैंडने उसके उत्तमर्णोंके लाभकी दृष्टि तथा फ्रांसकी रज़ामन्दीसे कुछ अर्थ-मंत्री उसको दिये जिनकी स्वीकृतिके बिना खेदीव कोई आर्थिक निर्णय नहीं कर सकता था। संवत् १९७१ में इंग्लैंडने मिश्रपर स्थायी संरक्षण स्थापित कर दिया।

दक्षिण गोलार्द्धमें इंग्लैंडने आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंडके द्वीपों और तसमानिया प्रभृतिको अपना उपनिवेश बना लिया है। केन्द्रस्थ सरकार इनको स्वयं अपना प्रबन्ध करनेकी करीब करीब पूरी स्वतंत्रता दे देती है। कनाडाके प्रदेशोंने संवत् १९२४ में एक संघ कायम किया और संवत् १९५८ में आस्ट्रेलियाके पाँचों उपनिवेशों और तसमानियाके संघकी घोषणा की गयी।

फ्रांसका अफ्रिकामें बहुत कुछ प्रभाव है, जर्मनीने भी वहाँ पैर जमानेका प्रयत्न किया था। पर यूरोपीय शक्तियोंमें सबसे अधिक राज्य-वृद्धि रूसकी हुई है। क्रीमियन युद्धके बादसे रूस मध्य एशियामें बढ़ता गया यहाँ तक कि उसकी सीमा तथा भारतके अंग्रेजी प्रदेशोंकी सीमा करीब करीब आपसमें मिल गयी। सुदूर पूर्वमें भी उसने विशेष प्रवृत्ति दिखलायी है। संवत् १९५५ में उसने पोर्ट आर्थर चीनसे ठेकेपर ले लिया। अब ट्रान्स–साइबीरियन रेलवे द्वारा मास्काऊसे पोर्ट आर्थरका तथा प्रशान्त-सागर-तटवर्त्ती व्लाडीवास्टकका सम्बन्ध स्थापित हो गया है।

चीनके साथ बर्तनेमें भिन्न भिन्न यूरोपीय राष्ट्रोंकी व्यापारिक और सैनिक माँग-पूर्तिकी जो समस्या उत्पन्न हुई है वह 'सुदूर पूर्वके प्रश्न' के नामसे प्रख्यात है। प्रत्येक राष्ट्र इस महा-

देशमें विशेषाधिकार प्राप्त करने तथा देशके नैसर्गिक साधनोंको बढ़ानेके लिए लालायित है।

अन्तर्राष्ट्रीय विधानोंकी सहायतासे राष्ट्रोंकी आपसकी उलझनें अब बहुत कुछ कम की जा सकती हैं। संवत् १९५६ में ज़ारके अनुरोधसे हेगमें अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति-सम्मेलन-का अधिवेशन हुआ। इसका उद्देश्य यह विचार करना था कि किस प्रकार बड़ी सेना कायम रखने तथा नवाविष्कृत घातक यंत्रोंको खरीदनेके भारसे यूरोपीय राष्ट्र मुक्त हो सकते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय झगड़ोंको तय करने, घातक गोलोंका प्रयोग रोकने तथा रणबन्दियोंके साथ बर्ताव करने आदिके सम्बन्धमें सम्मेलनमें बहुतसे नियम बनाये गये।

उन्नीसवीं सदीके कुछ विशेष महत्वपूर्ण कार्य तथा परिवर्तनोंका ही यहाँ दिग्दर्शन किया गया है, फिर भी यह इतना दिखलानेके लिए काफी है कि उन्नीसवीं सदीके यूरोप और नेपोलियन-कालके यूरोपमें जो अन्तर है वह शार्लमेन और नेपोलियनके समयके अन्तरसे अधिक व्यापक है। यद्यपि दैशिक और धार्मिक अधिकारोंकी स्थापना हो गयी है, वैज्ञानिक विचारोंमें आशातीत उन्नति हुई है और लोगोंकी समझदारी तथा आराम इत्यादिमें भी बहुत वृद्धि हुई है, फिर भी प्रजातन्त्रके प्रसार, आधुनिक नगरोंके विस्तार तथा कारखानों और व्यापारकी वृद्धिने कुछ ऐसी नयी समस्याएँ उत्पन्न कर दी हैं जिनका सामना भविष्यत्‌में करना ही पड़ेगा।

अध्याय ४२

यूरोपीय राजनीतिके पिछले दस वर्ष।

राजनीतिक सुधार।

विक्रमकी बीसवीं सदीके उत्तरारम्भतक शासन-चक्र-पर जनताका बहुत कुछ अधिकार हो गया। इंग्लैंडकी लार्ड सभाको कामंस सभाका अन्तिम निर्णय माननेके लिए बाध्य होना पड़ा। पोर्तुगालसे राजतंत्र उठ गया, तुर्कीने शासन-विधि और पार्लमेण्ट कायम करनेकी चेष्टा की, चीनमें प्रजातंत्रकी स्थापना हुई, रूसने ज़ारको सिंहासनच्युत कर दिया और अन्ततः जर्मन और आस्ट्रियन सम्राटोंने तथा और और जर्मन राजाओंने भी सिंहासनका त्याग कर दिया।

विक्रमकी बीसवीं सदीके मध्यमें पश्चिमी यूरोपमें इंग्लैंड पूरा अनुदार देख पड़ता था। मताधिकारको और बढ़ाने तथा पुरानी बुराइयोंको दूर करनेका जोश, जिसने सौ वर्ष तक देशमें हलचल मचा रखी थी, ठंढा पड़ गया सा मालूम होता था। वर्तमान व्यवस्थासे संतोष कर लेने और अफ्रिका तथा भूमण्डलके और भागोंमें बड़े बड़े कार्य करनेमें ही अंग्रेजी राजनीतिकी इतिकर्त्तव्यता थी। संवत १९४२ से १९६२ तक (बीचके दो तीन वर्ष छोड़कर) कामंस सभा तथा सरकार पर अनुदार दलका ही अधिकार था। 'उदारवाद' मृतप्रायसा प्रतीत होता था और समाजवादियोंके आन्दोलनका मजदूरों-पर कोई स्पष्ट प्रभाव नहीं देख पड़ता था।

अन्ततः संवत् १९५८ में कई व्यापारसमितियों और कुछ ही दिन पूर्व स्थापित श्रम-समितिके कार्यों की रक्षाके लिहाजसे मजदूर प्रतिनिधि-सभा कायम हुई। संवत् १९६२ में सभाने समाजवादके उद्देश्योंको पूरा करनेकी प्रतिज्ञा की। जब संवत् १९६३ में पार्लमेंटका नया चुनाव हुआ तो पचास सदस्य मजदूरोंकी ओरसे कामंस-सभाके लिए निर्वाचित हुए। इनमेंसे कितने ही कट्टर समाजवादी थे।

इस निर्वाचनसे, जिसमें उदारदल पुनः अधिकारारूढ़ हुआ, सुधारकी स्फूर्ति पुनः आरम्भ हो गयी। इस दलने फौरन ही श्रमसहायक विधान * तथा अन्यान्य श्रमविधान पार्लमेंटमें पास कराये और अनुदार दलवालोंको यह सुझा दिया कि यह काररवाई नये विधानक्रमका पहला अंश है।

लार्ड सभामें अनुदार दलवालोंकी स्थिति बहुत सुरक्षित थी क्योंकि इस सभामें बहुमत इन्हीं लोगोंका था। ये लोग कामंससभाकी काररवाइयोंको, जो इनकी समझमें क्रान्तिसे कम नहीं थी, विनष्ट करनेकी तैयारी करने लगे। कामंस सभाके कई स्वीकृत बिलोंको लार्डसभाने रद्दीके टोकरेमें डाल दिया।

अमीरों और सर्वसाधारणके बीच वास्तविक संघर्ष संवत् १९६५ में बजटके सम्बन्धमें आरम्भ हुआ। चैत्रमें प्रधान अर्थ-सचिव, मिस्टर लायडजार्जने कामंससभामें कर-सम्बन्धी एक योजना पेश की जिसने बारूदमें आग लगानेका सा काम किया। प्रधानसचिवने इस योजनामें मोटरगाड़ियोंपर भारी कर, तथा भारी आयकरके अलावा पाँच हजार पौंडसे अधिक आयपर अतिरिक्त कर—उपार्जित सम्पत्तिकी अपेक्षा अनुपा-

*Workingmen's compensation act.

र्जितपर गुरुतर कर—नयी विधिसे उत्तराधिकार-कर, जो सम्पत्तिकी हैसियतके अनुसार १० लाख पौंडसे अधिककी जायदादपर १५ प्रतिशत तक पहुँचता था, लगानेका प्रस्ताव किया। उन्होंने एक प्रकारका नया भूमि-कर भी लगानेका प्रस्ताव किया जिसमें स्वयं परिश्रम करने वाले जमींदारोंमें तथा खानों और नगरभूमिखण्डोंके उन मालिकोंमें, जो बिना हाथ-पैर डुलाये प्रचुर लाभ उठाया करते थे, भेद किया गया था। इस बजटमें अनुपार्जित भूमिकी मूल्य-वृद्धिपर बीस प्रतिशत कर लगानेको कहा गया था जिसमें अपनी जायदादकी मूल्य-वृद्धिसे लाभ उठानेवाला इस लाभका काफी अंश सरकारको भी दे सके।

और करोंके साथ ही इन विशेष करोंके कारण बजटकी रकम बहुत भारी हो गयी। प्रधान अर्थसचिवने इस बुनियादपर इसका समर्थन किया कि यह बजट युद्धका बजट है क्योंकि "दरिद्रताके विरुद्ध युद्ध उद्घोषित करना अनिवार्य है"। इसके समर्थनमें अपना आरम्भिक भाषण समाप्त करते हुए अर्थ-सचिवने यह आशा दिखलायी कि "इस पीढ़ीके उस कालमें बड़ी उन्नति होगी जब कि दरिद्रता अपनी तबाही और गन्दगीके साथ इस देशके लोगोंसे उन भेड़ियोंकी तरह दूर हो जायगी जो किसी समय जंगलोंमें भरे हुए थे।"

युनियनिस्टों (सम्मिलित दलवालों) ने * इस बजटको (साम्य) समाजवादात्मक तथा क्रान्तिकारक कहकर इसका

* जब संवत् १९४३ में ग्लैडस्टनने आयरलैंडके लिए स्वराज्य बिल उपस्थित किया तो अनुदारदलके साथ कुछ ऐसे उदारदलवाले भी मिल गये जो इस बिलके विरोधी थे। उसी समयसे इस दलका नाम 'कञ्जरवेटिव' (अनुदार) से बदल कर 'युनियनिस्ट' हो गया।

घोर विरोध किया। उन लोगोंने यह दलील पेश की कि 'उपार्जित' और 'अनुपार्जित' का भेद सम्पत्त्यधिकारपर अनुचित और द्वेषपूर्ण आघात है। बजटके कुछ समर्थक स्पष्टरूपसे कह रहे थे कि किसी सम्पत्तिपर मनुष्यका अधिकार उसके प्राप्त करनेके ढंगपर निर्भर है। इस सम्बन्धमें भाषण करते हुए मिस्टर विंस्टन चर्चिलने कहा था, "पहले कर-संग्राहकका प्रश्न यह होता था कि तुम्हारी सम्पत्ति कितनी है ?......अब एक नया प्रश्न उत्पन्न हो गया है। अब हम लोग सिर्फ इतना ही नहीं पूछते कि तुम्हारी सम्पत्ति कितनी है बल्कि यह भी पूछते हैं कि तुमने इसे किस प्रकार प्राप्त किया ? क्या तुमने इसे स्वयं उपार्जित किया था यह दूसरोंसे मिली ? तुमने जिस ढंगसे इसे प्राप्त किया वह समाजके लिए हितकर है या अहितकर ? क्या यह उत्पादक साधनोंके ज़रिए प्राप्त की गयी है या कोई मौकेकी जमीन हाथ लगा कर व्यवसाय, राष्ट्र या म्युनिसिपलिटीके लिए इसकी आवश्यकता पड़नेपर इसका पचास गुना मूल्य ऐंठकर हासिल की गयी है ? क्या मनुष्यके हितकी दृष्टिसे नयी खानें खनकर यह प्राप्त हुई है या दूसरोंके परिश्रमसे खनिज-कर-स्वरूप मिली है ? तुमने कैसे इसे प्राप्त किया ?" इस समय देशमें यही नया प्रश्न उपस्थित है और इसीपर बार बार जोर दिया जाता है। बजटके पक्षमें दी गयी दलीलोंने कामंस सभाको कायल कर दिया और बजट खासे बहुमतसे पास हो गया।

संवत् १९६६ के ७ मार्गशीर्षके दिन लार्ड सभामें इस बजटपर बहस शुरू हुई। लार्ड सभाकी ओरसे यह दावा पेश हुआ कि कुछ प्रतिकूल रूढ़ियोंके होते हुए भी लार्ड सभाको कामंस सभा द्वारा स्वीकृत द्रव्य सम्बन्धी बिलोंको नामंजूर

करनेका विधिविहित अधिकार है। कुछ दिनोंतक बहस चलनेके उपरान्त लार्ड सभाने ७५ मतोंके विरुद्ध ३५० मतोंसे उक्त बजटको नामंजूर कर दिया।

उदार दलवालोंने लार्ड सभाकी इस चुनौतीको कबूल कर लिया। १६ मार्गशीर्षको श्री आस्किथने (जो संवत् १९६५ में प्रधानमंत्री हुए थे) कामंस सभामें इस आशयका एक प्रस्ताव उपस्थित किया कि "इस वर्षके कार्योंके लिए कामंस सभा द्वारा पेश किये गये आर्थिक प्रस्तावको अस्वीकार कर लार्ड सभाने शासनविधिका उल्लंघन और कामंस सभाके अधिकारोंका अपहरण किया है।"

इसके अनन्तर देशसे अपील कर कामंस सभाके सदस्योंका नया चुनाव हुआ। इस बार उदारदलवालोंकी संख्या बहुत घट गयी पर समाजवादी, उग्रदलवाले (रेडिकल) तथा आयरिश दलवाले लार्ड सभाके प्राचीन अधिकारोंको घटानेमें उदारदलके समर्थक थे। आस्किथके यह चेतावनी देनेपर कि, प्रस्तावित बजट लार्ड सभा द्वारा पास न होनेकी हालतमें दोबारे चुनावके लिए देशसे अपील की जायगी, लार्ड सभा दब गयी। पर इस विजयसे लार्डसभाके अधिकारोंका जो आम प्रश्न थी वह हल नहीं हो सका। कामंस सभा द्वारा स्वीकृत प्रस्तावोंको नामंजूर करनेका लार्डसभाका जो प्राचीन अधिकार था उसके सम्बन्धमें पार्लमेंटके भीतर और बाहर युद्ध जारी ही रहा। सप्तम एडवर्डकी मृत्युके कारण कुछ दिनोंतक यह युद्ध बन्द रहा। पार्लमेंट भंग होनेपर यह पुनः आरम्भ हो गया। नये निर्वाचनमें उदारदलवाले कुछ अधिक संख्यामें चुने गये।

संवत् १९६८ में नयी पार्लमेंट खुलनेके बाद शीघ्र ही लार्डोंके 'वीटो' (विशेष) अधिकारका प्रयोग रोकनेके उद्देश्यसे

कामंस सभामें एक बिल पेश हुआ और वह काफी बहुमतसे पास भी हो गया। यह बिल लार्ड सभामें भेज दिया गया और श्री आस्क्विथने यह घोषणा भी कर दी कि मैंने नये राजा पंचम जार्जसे यह स्वीकृति ले ली है कि यदि अनुदार दलवाले विरोधी लोग इसे अस्वीकृत कर दें तो मैं काफी संख्यामें नये लार्ड बना कर इसे स्वीकृत करा सकता हूँ। इस प्रकार भयभीत होकर लार्ड सभाने संवत् १९६८ के २ भाद्रपदको 'पार्लमेंट एक्ट' या 'लार्ड्स वीटो बिल' पास किया। बिलकी मुख्य धाराएँ निम्नलिखित हैं—

यदि कोई द्रव्य सम्बन्धी बिल—अर्थात् ऐसा बिल जो कर लगाने तथा उसे व्यय करनेके सम्बन्धका हो—कामंस सभाद्वारा स्वीकृत होकर अधिवेशन कालका अन्त होनेके कमसे कम एक मास पूर्व लार्डसभामें भेज दिया जाय और लार्डसभा बिना संशोधन किये उसे एक मासके अभ्यन्तर पास न करे तो वह बिल हस्ताक्षरके लिए नरेशके सम्मुख उपस्थित किया जा सकता है और मंजूरी मिल जानेपर लार्डसभाकी अस्वीकृति होनेपर भी वह बिल विधान बन जायेगा। इसी प्रकार यदि कोई सार्वजनिक बिल कामंस सभाके लगातार तीन अधिवेशनोंमें पास हो जाय और लार्डसभा अपने तीनों अधिवेशनोंमें उसे रद्द कर दे तो वह भी हस्ताक्षरके निमित्त नरेशके सम्मुख प्रस्तुत किया जायेगा और स्वीकृति मिल जानेपर लार्डसभाकी स्वीकृति न होनेपर भी विधानका रूप धारण कर लेगा। वीटो बिलने पार्लमेंटका समय सात वर्षसे घटाकर पाँच वर्ष कर दिया अर्थात् संवत् १९६८ के २ श्रावणके एक्टके अनुसार नयी पार्लमेंटका चुनाव कमसे कम पाँचवें वर्ष तो होना ही चाहिए, हाँ, मंत्रिमंडल बीचमें किसी समय भी अपनी आज्ञासे इसे

भंग कर सकता है। यह लार्डसभाके अधिकारोंके घटानेका ही प्रताप है कि उदारदलवाले कई महत्त्वपूर्ण सुधार करनेमें समर्थ हो सके हैं।

संवत् १९७१ में महासमरका आरंभ होनेपर प्रधानमंत्रीकी हैसियतसे श्री आस्क्विथ जनताको इस बातका सन्तोष नहीं दिला सके कि उनमें इस भयङ्कर परिस्थितिका सामना करनेके लिए काफी योग्यता है। कारवाइयोंके सम्बन्धमें लायड जार्जकी प्रधानता दिनानुदिन बढ़ती गयी। अन्ततः संवत् १९७२ के मार्गशीर्ष-पौष (दिसम्बर) में शासनकी पुनर्व्यवस्था की गयी और प्रधान मंत्रीका पद लायड जार्जको दिया गया। उन्हें सहायता देनेके लिए लिबरल तथा युनियनिस्ट दोनों दलोंके प्रसिद्ध प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ संयुक्त मंत्रिमंडलमें रखे गये।

संवत् १९७४ के वसन्तमें मंत्रिमंडलने मताधिकारको और अधिक विस्तृत करनेका पुराना प्रश्न पुनः हाथमें लिया और 'जन-प्रतिनिधित्व' बिल * उपस्थित किया जिसमें किसी जिले (डिस्ट्रिक्ट) में छः मास निवास किये हुए २१ वर्षसे अधिक वयवाले प्रत्येक मनुष्यको, सभी सैनिकों और नाविकोंको (चाहे वे जहाँ कहीं हों), और लगभग साठ लाख स्त्रियोंको, जिनका मकानोंपर कब्जा था या जो कब्जेदारोंकी धर्मपत्नियाँ थीं, मताधिकार देनेका प्रस्ताव किया गया था। पुराने नियमका, जिसमें एक ही व्यक्तिको भूमिपतिकी हैसियतसे कई निर्वाचन-क्षेत्रोंसे मत देनेका अधिकार था, संशोधन किया गया और किसी व्यक्तिको किसी बहानेसे दोसे अधिक मत देनेका अधिकार नहीं दिया गया। निदान इसी बिलसे, जो संवत् १९७५ में स्वीकृत हुआ, ग्रेटब्रिटेनमें वास्तविक प्रति-

* Representation of the People bill.

निधि शासनकी स्थापना हुई और इसीने स्त्रियोंके मताधिकार विषयक जटिल प्रश्नको भी हल किया।

आयरलैंडका स्वराज्य सम्बन्धी प्रश्न, ग्लैडस्टनके असफल प्रयत्न (संवत् १९५०) के बादसे कई वर्षोंतक सुषुप्ति-अवस्था में पड़ा रहा। इस प्रयत्नके विरोधियोंको यह आशा थी कि आयरलैंडको सहायता देनेके पार्लमेंटके भिन्न भिन्न उपायोंसे वहाँके राष्ट्रवादी शान्त होकर वर्तमान पद्धतिको ही मान लेंगे। किन्तु, अब चूँकि अनुदार-मतवादी लार्ड सभा मार्ग अवरुद्ध करनेके अपने पुराने अधिकारसे वंचित हो चुकी थी, इस कारण कामंस सभामें आयरिश दलके नेता रेडमंडने इस प्रश्नको जीवित बनाये रखा। संवत् १९६९ में आस्क्विथ तथा ग्लैड-स्टनने डबलिनमें आयरिश पार्लमेंट कायम करानेके उद्देश्यसे एक बिल उपस्थित किया। इसके अनुसार डबलिनकी पार्लमेंट आयरिश मामलोंका विचार करती और देशका शासन आयरिश पार्लमेंटके प्रति उत्तरदायी सचिवोंकी सहायतासे ब्रिटेन-नरेश द्वारा नियुक्त एक लार्ड लेफ्टिनेंट करता। इसके साथ ही कामंस सभामें आयरिश सदस्योंकी संख्या १४३ से घटा कर ४२ कर दी जाती।

इस बिलसे न तो पूर्ण स्वाधीनता चाहनेवाले कट्टर राष्ट्रवादी ही सन्तुष्ट हुए और न वहाँके प्रोटेस्टैंट मतावलम्बी ही। प्रोटेस्टैएटोंने तो ऐसे 'स्वराज्य' को 'रोमराज्य' बतलाया। आयरलैंडके दो-तिहाई अधिवासी कैथलिक मतानुयायी हैं और वहाँके चार प्रान्तोंमेंसे तीनमें इनकी संख्या बहुत अधिक बढ़ी हुई है, पर प्रसिद्ध नगर बेलफास्टके साथ अल्स्टर प्रान्तमें आधीसे कुछ अधिक जनसंख्या प्रोटेस्टैंट मत माननेवाली है। इसलिए इस 'स्वराज्य' के विरुद्ध आन्दोलनका केन्द्र यही

स्थान हो गया। अल्स्टरके लोगोंने इस विचारसे शस्त्रसंग्रह करना तथा कवायद सिखाना आरम्भ कर दिया कि अगर अपने पूर्व प्रभावको बनाये रखनेके लिए जरूरत पड़ी तो (गृह) युद्ध आरम्भ कर दिया जायगा हालां कि इस भावी पार्लमेंटको धार्मिक मामलोंमें हस्तक्षेप करनेका कोई अधिकार प्राप्त न था।

यह सब होते हुए भी संवत् १९७१ के आश्विन (सितम्बर) में यह 'होमरूल बिल' (स्वराज्य बिल) लार्डसभाकी अनुमतिके बिना ही विधान बन गया, पर बीचमें ही युद्ध आरम्भ हो जानेके कारण यह मुल्तवी कर दिया गया। रेड-मंडने यह घोषित किया कि दक्षिणके राष्ट्रवादी कैथलिक अल्स्टर-के प्रोटेस्टैंटोंके साथ मिलकर जर्मनी और उसके मित्रोंके विरुद्ध लड़ेंगे। पर होमरूल विधानके मुल्तवी कर देनेसे बहुत असन्तोष फैल गया। संवत् १९७३ के आरम्भमें शिनफेन दलके नेतृत्वमें डबलिनमें एक बलवा खड़ा हो गया। यह दल हरित, श्वेत और पीत—त्रिवर्ण झंडेके नीचे आयरलैंडमें प्रजातंत्र स्थापित करना चाहता था। ब्रिटिश सेनाने वहाँ जाकर मशीन-गनोंकी सहायतासे बलवेको शान्त कर दिया। डबलिनकी सड़कोंपर कोई तीन सौ आदमी हताहत हुए और ब्रिटिश सेनाके भी पाँच सौ सैनिकोंको अपने प्राणोंसे हाथ धोना पड़ा। इस प्रस्तावित प्रजातंत्रके अध्यक्ष तथा अन्यान्य कई व्यक्तियोंको फाँसी दी गयी। सर राजर केसमेंट नामक व्यक्ति एक जर्मन सब-मेरीनसे उतरते हुए पकड़ा गया और उसे देश-द्रोहके अपराधमें प्राणदण्ड दिया गया।

तीव्र वादविवादके अनन्तर समझौता करनेका भार लायड जार्जके ऊपर डाला गया। उन्होंने प्रधानमंत्री होनेपर आयरलैंडकी शासनविधिका कुल प्रश्न आयरलैण्डकी एक

राष्ट्रीय समितिके सिपुर्द कर दिया। कुछ महीने वादविवाद करनेके उपरान्त समिति इस प्रश्नको अधूरा ही छोड़कर भंग हो गयी। आयरलैंडके प्रजातंत्रवादियोंने डी. वेलराको अध्यक्ष बना लिया। ऐसा प्रतीत होने लगा कि ये लोग आयरलैंडकी पूर्ण स्वाधीनताके लिए पूरी शक्तिसे लड़नेके लिए तैयार हैं। संवत् १९७७ में भयङ्कर गड़बड़ी मच गयी और कोई निपटारा नहीं हो सका।

युद्धमें जिस तत्परतासे ब्रिटिश उपनिवेशोंने भाग लिया है उसके लिहाजसे यह स्पष्ट हो गया है कि ब्रिटिश साम्राज्यके भिन्न भिन्न अंगोंकी बढ़ती हुई शक्ति तथा स्वाधीनताकी परि· तृप्तिके लिए साम्राज्य-शासनकी पद्धतिमें बहुत कुछ सुधार करनेकी जरूरत है। संवत् १९७३ में श्री आस्किथने यह प्रतिज्ञा की कि साम्राज्यका संघटन नये सिरेसे होना चाहिए और इसकी नीतिका निर्धारण—विशेषकर जर्मनी और संसार-व्यापी व्यापारके सम्बन्धमें—केवल पार्लमेंट द्वारा न होकर साम्राज्यके सभी सदस्योंकी कांफरेंस द्वारा होना चाहिए।

इधर तो इंग्लैंडमें उदार दलकी सरकार लार्डसभाके विरुद्ध कामंस सभाके अधिकारोंको स्वीकार कर रही थी, उधर जर्मन राइस्टागमें * सम्राट्के प्रधान मंत्रीपर, अपने नियोजक कैसर-के बदले जनताके प्रतिनिधियोंके प्रति उत्तरदायित्व स्वीकार करानेके लिए दबाव डालनेका प्रयत्न किया जा रहा था। बिस्मार्क तथा जर्मन शासनविधिके और विधायकोंने राइस्टागमें प्रधानमंत्रीके विरुद्ध बहुमत होनेकी हालतमें उसके लिए पद· त्यागका सिद्धान्त नहीं स्वीकार किया था।

---

* Reichstag,

राइस्टागमें जो प्रयत्न जारी था उसमें समाजवादी लोग विशेष रूपसे भाग ले रहे थे। ये लोग विधिविहित संशोधन द्वारा कार्यकारिणी सभाको व्यवस्थापक सभाके अधीन करना चाहते थे। संवत् १९६८ के निर्वाचनमें समाजवादियोंकी संख्या बहुत बढ़ गयी, राइस्टागमें उनके सदस्योंकी संख्या बढ़कर ४३ से ११० हो गयी। इन बातोंसे यह बात स्पष्ट हो गयी कि जर्मन शासनमें स्वेच्छातंत्रवादकी शक्तिका घटना अवश्यम्भावी है। साधारणतः संवत् १९६८ का चुनाव जैसा कि प्रसिद्ध दलोंको दिये गये मतोंसे देख पड़ता है उग्र सुधारवादियों तथा सुधारवादियोंके अनुकूल रहा।

प्रधान दलोंका विवरण

दलोंके नाम	मतोंकी संख्या (संवत् १९६८)	सदस्योंकी संख्या
समाजवादी दल †	४२,५०,०००	११०
राष्ट्रीय उदार दल	१६,६३,०००	४५
उग्र सुधारवादी	१५,००,०००	४१
अनुदार दल	११,२६,०००	५७
कैथलिक दल	२०,००,०००	९३

संवत् १९७१ में जर्मनीके महासमरमें प्रवृत्त होनेपर परस्परकी दलबन्दी ताकपर धर दी गयी। राइस्टागने प्रायः

† युद्ध शुरू होनेके दो वर्ष बाद भी इस अवस्थामें अधिक परिवर्त्तन न हुआ। (१ मई १९१६ को) भिन्न भिन्न दलोंकी संख्या यह थी-

सर्वसम्मतिसे सरकारका समर्थन किया। किन्तु ज्यों ज्यों युद्ध आगे बढ़ता गया त्यों त्यों यह देशभक्तिपूर्ण ऐकमत्य निर्बल होता गया और राइस्टागकी ओरसे दूने उत्साहके साथ और अधिक प्रजातंत्रीकरणके लिए आवाज उठायी जाने लगी। कैसरने अपने आलोचकोंको शान्त करनेके उद्देश्यसे युद्धके बाद और अधिक सुधार देनेकी प्रतिज्ञा की पर इससे कुछ लाभ न हुआ। उन लोगोंको सन्तुष्ट करनेका कोई उपाय न देखकर कैसरने राइस्टागके एक सदस्य काउण्ट वान हर्टलिंगको चांसलर नियुक्त किया। यद्यपि अब भी मंत्रीकी जिम्मेदारीका सिद्धान्त नहीं बर्त्ता गया फिर भी नये चांसलरने व्यवस्थापक सभाका बहुमत प्राप्त करनेके लिए विशेष प्रयत्न किया।

इंग्लैंड तथा जर्मनीके लोगोंमें जो आन्दोलन उठे उनमें नियंत्रित राजतंत्रके भावोंकी अधिक आलोचना शामिल नहीं थी। वस्तुतः विक्रमकी बीसवीं सदीके उत्तरारंभमें तो ऐसा प्रतीत होने लगा कि राजतंत्रके स्थानमें प्रजातंत्र स्थापित करनेका आन्दोलन यूरोपसे पूर्णतः गायब हो गया। हाँ, पुर्तगाल नरेशने राष्ट्रका एकमात्र स्वेच्छाचारी सञ्चालक बनकर और राजकोषको बिना किसी जिम्मेदारीके पानीकी तरह बहानेका प्रयत्न कर वहाँ एक ऐसा दल कायम कर दिया जिसने राजाको सिंहासन-च्युत करनेका ही बीड़ा उठाया। संवत् १९६४ के १९ माघ (१ फरवरी १९०८ ईसवी) को नरेश

समाजवादी १०७ राष्ट्रीय उदारदल ४५ उग्रसुधारवादी ४५ अनुदार ४५ कैथलिक ९१ जर्मनपार्टी २७ पोल १८ स्वतंत्र २०—मतलब यह कि कैसरके सिंहासनत्यागके पहिले समाजवादी, उग्रसुधारवादी तथा उदार-दल वालोंका काफी बहुमत था।

कारलस और युवराज लिस्बनकी एक सड़कपर सवारीपर जाते समय मार डाले गये। स्वर्गीय नरेशका अष्टादसवर्षीय पुत्र द्वितीय मेन्युएलके नामसे राजा घोषित किया गया, पर पीछे उसे यह बात मालूम हुई कि उसने बड़ा ही कष्टप्रद उत्तराधिकार प्राप्त किया है। उसके छोटेसे राज्यमें दलबन्दीके कारण सर्वत्र अशान्ति बनी हुई थी, राज्यकी आर्थिक दशा भी बहुत बिगड़ गयी थी, काम करनेवाले सभी असन्तुष्ट हो रहे थे, उग्र सुधारवादी लोग पादरियों और मठाधीशोंके विरुद्ध युद्ध छेड़ रहे थे और युवक राजाके सुधार देनेकी प्रतिज्ञा करने पर भी प्रजातंत्र-वादियोंकी संख्या दिनों दिन बढ़ती जा रही थी।

संवत् १९६७ के आश्विनमें लिस्बनमें एक विद्रोह उठ खड़ा हुआ। कुछ भयंकर मारकाट तथा राजप्रासादपर गोलाबारीके अनन्तर राजा इंग्लैंड भाग गया और स्पष्टतः घोषित करता गया कि इस प्रकार हट जानेका अभिप्राय सिंहासनत्याग नहीं है। प्रजातंत्रवादियोंने शीघ्र ही एक अस्थायी सरकार कायम कर महन्तों तथा महन्तिनोंको निकालना और उनकी सम्पत्ति जब्त करना आरंभ किया। संवत् १९६८ के चैत्र वैशाख (मई) में विधिविहित प्रतिनिधि सभाके लिए निर्वाचन हुआ। दूसरे ही मासमें इसका अधिवेशन भी हुआ। इस सभाने प्रजातंत्रात्मक शासनविधिका एक खर्रा तैयार किया। इस खर्रेमें दो व्यवस्थापक सभाओंकी—जिनमेंसे एकके सदस्योंका निर्वाचन सीधे लोकमत द्वारा और दूसरीके सदस्योंका म्युनिसिपलिटियों द्वारा होता,—चार चार वर्षके लिए व्यवस्थापक द्वारा निर्वाचित होनेवाले प्रधानकी और पार्लमेंटके प्रति उत्तरदायी मंत्रिमण्डलकी व्यवस्था की गयी

थी । राजतंत्रवादियों द्वारा इसके उलटनेके प्रयत्न होते रहनेपर भी यह नवजात प्रजातंत्र दिनों दिन स्थिरता लाभ करता जा रहा है ।

जिस अशान्तिने पश्चिमी यूरोपमें सौ वर्षसे भी अधिक काल तक हलचल मचा रखी थी और मेटरनिच तथा वेलिंगटनको, राजसिंहासन तथा धार्मिक वेदीकी रक्षाके सम्बन्धमें, प्रकम्पित कर दिया था, उसकी लहर बीसवीं सदीके उत्तरारम्भ कालमें तुर्कीमें भी पहुँच गयी । कुछ कालतक 'तरुणतुर्क' दल † पार्लमेंटरी शासन तथा विदेशी नियंत्रण रहित राष्ट्रीय स्वाधीनताका भाव जोरोंसे फैलानेमें लगा था । संवत् १९६४ के अन्तमें सैलोनिकामें ऐक्य तथा उन्नति समिति* नामक एक संस्था स्थापित हुई जिसके अधिकांश सदस्य सैनिक अफ़सर थे । इस संस्थाने शीघ्र ही सैनिकों तथा जनसाधारणकी सहानुभूति प्राप्त कर ली । संवत् १९६५ के आषाढ़-श्रावण (जुलाई) में सैलोनिकामें बलवा हो गया, सैलोनिकाकी उक्त समितिने शासन विधिकी घोषणा कर दी और यह भी व्यक्त कर दिया कि यदि सुलतान सीधे न मानेंगे तो कुस्तुन्तुनियापर हमला किया जायगा । सुलतान दब गये और उन्होंने संवत् १९३३ में जो शासनविधि मंजूर की थी और दो ही वर्ष बाद स्थगित भी कर दी थी उसे पुनः जारी कर दिया । उनको बहकानेवाले एक दो मंत्रियोंकी हत्या भी हुई, फिर भी आन्दोलन उग्र रूप धारण न कर बहुत कुछ शान्तिमय ही बना रहा । कार्तिक मासमें नयी पार्लमेंटके सदस्योंका निर्वाचन हुआ और मार्गशीर्षमें सुलतानने ठाटबाटके साथ इसका उद्घाटन किया ।

† Young Turkey Party.

* Committee of Union and Progress.

नयी सरकारके सामने शीघ्र ही कई समस्याएँ उपस्थित हो गयीं। साम्राज्यके कई भागों—विशेषकर मकदूनियामें—अशान्ति फैली हुई थी। संवत् १९६५ के १९ आश्विनको बल्गेरियन नरेश फर्डिनएडने अपने देशको तुर्कीसे स्वतंत्र घोषित कर दिया और सम्राट् फ्रैंसिस जोजफने बोस्निआ तथा हर्ज़ेगोविना प्रान्तोंको, जो संवत् १९३५ के समझौतेके अनुसार आस्ट्रियाके नियंत्रणमें थे, अपने राज्यमें मिला लिया। सबसे बढ़कर बात तो यह हुई कि सुधारविरोधियों (अनुदार) तथा शासनविधिके विरोधियोंने कुस्तुन्तुनियामें बलवा खड़ा कर दिया जिसमें कई सैनिक और शासकीय अफसर मार डाले गये। लोगोंने यह ख्याल किया कि इस कार्यमें वृद्ध सुलतान अब्दुल हमीदकी सहायता नहीं तो, कमसे कम, सहानुभूति तो अवश्य होगी। चैत्र मासमें तुर्की पार्लमेंटकी दोनों सभाओंने (राष्ट्र सभाके रूपमें) अधिवेशन कर सुलतानको च्युत कर उनके भाईको पंचम मुहम्मदके नामसे सुलतान घोषित करनेका निश्चय किया।

नये सुलतानके शासनका प्रारंभ तो शुभ मुहूर्तमें हुआ था पर बादमें उन्हें अनेक कठिनाइयोंका सामना करना पड़ा। असंघटित साम्राज्यके सभी भागोंमें विद्रोह तथा झगड़े बराबर बने रहते थे। उनके मंत्रिमंडलके सदस्योंमें भी मतभेदके कारण झगड़ा होता रहता था और सरकारके सामने सर्वदा ऐसी आर्थिक तथा राजनीतिक कठिनाइयाँ उपस्थित रहती थीं जो प्राचीन तथा भ्रष्ट शासन प्रणालीमें क्रान्तिकारी परिवर्तनोंके साथ उपस्थित हुआ ही करती हैं। ये आभ्यन्तर कठिनाइयाँ तो पहलेसे बनी ही हुई थीं, ऊपरसे इटलीके साथ युद्ध छिड़ गया। इस युद्धने क्रान्तिकारी दलको साम्राज्यका अङ्गभङ्ग करनेके

अपराधमें सुलतान तथा उनके मंत्रियोंकी निन्दा करनेका अव-सर दिया। महासमरके परिणाम स्वरूप तुर्की साम्राज्य छिन्न-भिन्न हो गया और सुलतानका राज्य घटकर केवल लघुएशिया और कुस्तुन्तुनियामें रह गया।

तुर्कीकी क्रान्तिसे बढ़कर आश्चर्यजनक बात चीनमें प्रजा-तंत्रकी स्थापना है। विधवा सम्राज्ञीने संवत् १९६४ में यह आदेश निकाला कि लोगोंकी शिक्षा सम्बन्धी प्रगतिके अनुसार शीघ्र ही शासनविधि स्वीकृत की जायगी। यह प्रगति बड़ी शीघ्रतासे होने लगी क्योंकि प्रजातंत्रात्मक राज्यके समर्थक लोग इस विषयकी ओर शीघ्र ध्यान देनेके लिए सरकारसे आग्रह करने लगे। संवत् १९६८ के आश्विन (अक्तूबर) में विशेषाधिकार-प्राप्त जातियों तथा प्रान्तोंके प्रतिनिधियोंकी एक राष्ट्रसभा बैठी। कई भागों—विशेषकर दक्षिण तथा मध्य चीन—में क्रान्तिकारी बलवे हो गये। सरकारी सेना एकके बाद दूसरे नगरमें परा-जित होती गयी, अन्ततः राष्ट्रीय सभाने उदार शासनविधि स्वीकार करने तथा पूरे अधिकारोंके साथ पार्लमेंट खोलनेके लिए सरकारको विवश किया।

अब उग्र सुधारवादी लोगोंका साहस और भी बढ़ा। संवत् १९६८ के मध्य पौषमें एक अस्थायी प्रतिनिधि सभाने नानकिंगमें प्रजातंत्रकी घोषणा की और डाक्टर सुनयात सेनको अध्यक्ष बनाया। मुकाबला करनेमें कोई लाभ न देखकर बालक सम्राट्के मंत्रियोंने उसके सिंहासन-त्यागकी घोषणा की (फरवरी, १९१२ ईसवी)। इसी समय क्रान्तिकारियोंने एकत्र होकर यूआनशी काईको जो सम्राट्के अधीन राज्य-सूत्रधार और अधिकांश सैनिकोंके विश्वासभाजन थे, प्रजातन्त्रका अस्थायी अध्यक्ष बनाया।

पीछे यानशीकाईने प्रजातंत्रवादी दलके साथ विश्वासघात कर दिया। उन्होंने पार्लमेंट तोड़कर क्रान्ति द्वारा प्रवर्तित कई सुधारोंको भी उठा दिया, यहाँ तक कि स्वयं सम्राट् बनना भी कबूल कर लिया। इसका परिणाम यह हुआ कि चीनको पुनः गृह-युद्धमें फँसना पड़ा। यानशीकाईकी मृत्यु (संवत् १९७३) के बाद राजतंत्र-वादियोंने सम्राट्को पुनः सिंहासनासीन करना चाहा पर प्रजातंत्र-वादियोंके सामने इनके किये कुछ भी न हो सका। भयंकर गड़बड़ी और अनिश्चयताके होते हुए भी प्रजातंत्र अभी बना हुआ है। बहुत दिनोंके सोच-विचारके पश्चात् चीनकी प्रजातंत्र सरकारने संवत् १९७४ के श्रावण (अगस्त) में जर्मनोंके साथ रण-घोषणा की और मित्रदलके साथ अपना भाग्य जोड़ दिया।

संवत् १९६४ से ७१ तक रूसमें प्रजातंत्र शासन स्थापित करनेका आन्दोलन अत्यन्त ढीला पड़ा रहा। जारकी स्वेच्छा-चारिताके तथा उसकी भ्रष्ट एवं निर्दय नौकरशाहीके विरुद्ध, जिसने संवत् १९६१ और ६४ के बीच अपनी उच्छृङ्खलताके कारण मनुष्योंकी जान तथा स्वाधीनताको भारी क्षति पहुँचायी थी, जो आन्दोलन चला था वह मृतप्राय हो गया। तीसरी ड्यूमा जिसको ज़ारने अनुदार सम्पत्तिधारियोंके अतिरिक्त प्रायः सभी लोगोंको हटा कर अपने मनोनुकूल बना लिया था, इतनी आज्ञानुवर्तिनी बन गयी थी कि वह अपने पूरे काल ५ वर्षसे भी अधिक जीवित रहने दी गयी।

चौथी ड्यूमाका निर्वाचन संवत् १९६९ में हुआ। जारके कई मंत्रियोंके साथ इस ड्यूमाकी अनबन हो गयी पर यह कोई मौलिक सुधार कर सकनेमें असमर्थ थी। जनसाधारणकी अशान्ति तथा उग्र सुधारवादी नेताओंकी चेष्टाने अब हड़-

तालोंका रूप ग्रहण किया। ये हड़तालें बहुत अधिक और प्रायः बड़ी भयंकर होती थीं। पर प्रधानमंत्री स्टोलीपिनकी हत्या (सितम्बर १९११ ईसवी) के बादसे अप्रिय शासकोंकी राजनीतिक हत्याएँ बन्द हो गयीं। मालूम होता था कि स्वेच्छातंत्रने राष्ट्रको पुनः अपने पंजेमें फाँस लिया है।

संवत् १९७१ में, जब कि ज़ार तथा उसके युद्ध-सचिवोंने रूसको समराङ्गणमें ला घसीटा, तब अशान्तिकी अग्नि जो भीतर ही भीतर सुलग रही थी, एकाएक भभक उठी और इस-बार बुझायी भी न जा सकी। इस युद्धने ज़ारके दरबारियों तथा अफसरोंकी भ्रष्टता, निर्बलता, अयोग्यता तथा धोखेबाजोका पर्दा खोल दिया। लाखों रूसियोंको, जिन्होंने जर्मनी तथा आस्ट्रिया हंगरीमें घुसनेके या जर्मनोंका आक्रमण रोकनेके व्यर्थ प्रयत्नमें अपने प्राणोंसे हाथ धोया, सरकारकी ओरसे काफी सहायता नहीं दी गयी थी। ड्यूमा इस समय बिलकुल उच्छृङ्खल हो उठी। संवत् १९७३ के पौष (दिसम्बर) में इसने इस आशयका एक प्रस्ताव पास किया कि "कुत्सित शक्तियाँ"* सरकारको पंगु बना रही हैं और राष्ट्रीय हितको धूलिमें मिला रही हैं। इस प्रस्तावका संकेत जारकी जर्मन धर्मपत्नी तथा रास्पुटिन नामक एक सुधार-विरोधी पादरी द्वारा उसपर तथा दरबारपर डाले गये प्रतिघातक प्रभावोंकी ओर था। इस पादरीकी हत्या कर दी गयी, इसपर क्रुद्ध होकर जारने सभी उदार विचारवाले अफसरोंको प्रथक् कर उनकी जगह अप्रिय तथा क्रूर कर्मचारियों को नियुक्त करना आरम्भ किया। ऐसा प्रतीत होता था कि जार प्रत्येक उदार

---

* Dark forces.

आन्दोलनके विरुद्ध युद्ध घोषित कर प्रथम निकोलसकी नीति ग्रहण कर रहा है। इधर सारा देश दिनोंदिन अधिकाधिक असंघटित होता जा रहा था। नगरोंमें खाद्य पदार्थोंका अभाव था, साथ ही साथ लोगोंमें युद्धके प्रति अनिच्छा भी दिनों दिन बढ़ रही थी।

संवत् १९७३ के फाल्गुनमें पेट्रोग्रेडमें खाद्यपदार्थोंके लिए बलवा होगया। सैनिकोंने जनतापर गोली चलानेसे इनकार कर दिया। अधिवेशन स्थगित करनेकी ज़ारकी आज्ञा न मानकर ड्यूमाने एक अस्थायी सरकार कायम करनेकी आज्ञा दी। जब ज़ार युद्धक्षेत्रसे पेट्रोग्रेडकी ओर बढ़े तो पसकॉफमें नयी सरकारके प्रतिनिधियों द्वारा वे रोक दिये गये और अपने भाई ग्रांड ड्यूक माइकेलके लिए अपनी तथा अपने पुत्रकी ओरसे त्यागपत्र लिखनेपर राज़ी किये गये। पर माइकेलने यह कह कर इस पदको अस्वीकार कर दिया कि जबतक विधिविहित सभा द्वारा इसका समर्थन न होगा, मैं इसे ग्रहण न करूँगा। इसका मतलब यह हुआ कि जिस रोमानफ वंशने रूसपर तीन शताब्दियोंसे अधिक शासन किया था उसने उसे स्वेच्छासे छोड़ दिया। अब संसारमें सम्पूर्ण रूसके स्वेच्छाचारी शासकके नामसे कोई व्यक्ति न रहा। ज़ारके सम्बन्धियोंने अपने अधिकार छोड़ दिये और उच्चपदस्थ कर्मचारी पीटर और पॉलके उसी दुर्गमें क़ैद कर दिये गये जिसमें उन्होंने बहुसंख्यक क्रान्तिकारियोंको बन्दी किया था। रूस तथा साइबीरियाके राजनीतिक क़ैदियोंने अपनी मुक्तिकी सुखद सूचनाका हृदयसे स्वागत किया। अत्याचारकी इस पुरानी पद्धतिका एकाएक बिलकुल विनष्ट होना देखकर संसार चकित रह गया।

अब एक क्रान्तिकारी मंत्रिदलकी स्थापना हुई जिसके सदस्य साधारणतः नरम विचारके थे, पर एक समाजवादी अलेक्जेंडर करेन्सकीको, जो मजदूरों तथा सैनिकोंकी कौंसिल-का प्रतिनिधि था, न्याय-सचिवका पद दिया गया। नये मंत्रि-मंडलने कई सुधारोंके पक्षमें होनेकी घोषणा की—यथा, भाषण तथा पत्रोंका स्वातंत्र्य, हड़ताल करनेका हक़, पुरानी पुलिसके स्थानमें देशरक्षिणी सेना रखना, सार्वजनिक मताधिकार जिसमें स्त्रियाँ भी शामिल हों, इत्यादि—पर समाजवादी लोग इतनेसे सन्तुष्ट नहीं हुए। उन लोगोंने मजदूरों तथा सैनिकोंके प्रति-निधियोंकी कौंसिल द्वारा प्रभाव डालना शुरू किया। बड़ी आमदनीपर साठ प्रतिशत कर लगाया गया। सरकारने कोयलेपर एकाधिकार स्थापित कर लिया। यह निश्चय हुआ कि सरकार व्यवसाय अपने हाथमें ले ले और जहाँ कपड़े तथा खाद्यद्रव्योंकी कमी हो वहाँ इन्हें पहुँचावे। पेट्रोग्रेडके १४० कारखानोंमें दिनमें ८ घंटे काम करनेका नियम चलाया गया। संवत् १९७४ के मध्य श्रावणतक अस्थायी सरकारके सभी नरम विचार वाले सदस्य पृथक् कर दिये गये और उनके स्थान समाजवादियोंको मिले। ७ श्रावणको मजदूरों तथा सैनि-कोंके प्रतिनिधियोंकी महासभा तथा राष्ट्रीय कृषक महासभाने करेन्सकीको राष्ट्र-सूत्रधार बनाया। एक ओरसे प्रतिघा-तकों और दूसरी ओरसे कट्टर समाजवादियों—बोलशे-विकों—द्वारा विरोध किये जानेपर करेन्सकीने यह घोषित किया कि यदि ज़रूरत हुई तो तलवार और हथकड़ीके बलसे रूसमें एकता लानी पड़ेगी। करेन्सकीने पहले पस्त-हिम्मत सेनाका नेतृत्व ग्रहण कर उसे विजयी बनानेके लिए ज़ोरशोरसे कोशिश की पर ज्यों ज्यों समय बीतता गया

शीघ्र सुलह करनेकी आवाज चारों ओर अधिकाधिक प्रबल होती गयी।

कार्तिकके मध्यतक बोलशेविकोंने प्रधानता प्राप्त कर ली। करेन्सकीको राजधानीसे भागना पड़ा। बोलशेविकोंने बड़ी आसानीसे इसपर दखल जमा लिया। उनके सैनिकोंने मास्कोपर गोलाबारी की और एक सप्ताहकी मारकाटके अनन्तर कार्तिकके अन्तमें नगरपर अधिकार कर लिया। केवल मध्य-श्रेणीके लोगोंने ही नहीं बल्कि कजाकोंने भी उनका विरोध किया। कजाकोंके साथ तो उनका कई बार सशस्त्र सामना भी हुआ। पर संवत् १९७४ के मध्य पौषमें पेट्रोग्रेड और मास्कोपर उन्हीं लोगोंका अधिकार था। उन्होंने जर्मनीके साथ सुलहकी भी बातचीत आरम्भ कर दी। उन लोगोंके नेता लेनिन और ट्राट्स्की थे जिन्हें आशा थी कि हम दूसरे देशोंके समाजवादियोंको शासनपर पूँजीपतियोंका नियंत्रण होनेके विरुद्ध खड़ा होनेको और मजदूरोंके हितके लिहाजसे काफी सुधार प्रचलित करनेको राजी कर लेंगे। वे भविष्यमें अपने अधिकार सुरक्षित रख सकेंगे या नहीं, यह निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता। जर्मनीने तो उन्हें रूसके प्रतिनिधि मानकर सन्धि कर ही ली।

विक्रमकी बीसवीं सदीके द्वितीय चरणके महत्वपूर्ण परिवर्तनोंमें पुरुषोंकी तरह स्त्रियोंका मताधिकार बढ़ानेकी बढ़ती हुई प्रवृति भी है। संवत् १९५० में न्यूजीलैंडमें स्त्रियोंको मताधिकार दिया दिया। एक वर्ष बाद दक्षिण आस्ट्रेलियामें भी यह अधिकार दिया गया। संवत् १९५८ में, अर्थात् आस्ट्रेलियामें कामनवेल्थकी स्थापनाके बाद, स्त्रियोंको पार्लमेंटरी निर्वाचनका पूरा पूरा अधिकार दिया गया। संवत् १९६३ में फिनलैंडकी, १९६४ तथा १९६९ में नारवे तथा स्वीडेनकी,

और १९७२ में डेनमार्ककी स्त्रियोंको पुरुषोंके समान ही अधिकार मिले। महासमरका एक महत्त्वपूर्ण परिणाम यह हुआ कि जर्मनी, रूस तथा आस्ट्रियाके पुराने राज्योंसे बनी हुई नयी रियासतोंमें भी स्त्रियोंको मत देनेका अधिकार मिल गया।

इंग्लैंडमें जब संवत् १९६२ में कुछ अंग्रेज महिला-नेत्रियों—विशेषकर इम्मेलिन पैंकहर्स्ट और उसकी लड़कियों—ने शान्तिमय उपायोंको छोड़ कर हिंसा-प्रदर्शनका मार्ग लिया तो स्त्रियोंके मताधिकार-विषयकी ओर लोगोंका ध्यान विशेष रूपसे आकृष्ट हुआ। इन स्त्रियोंको यह बात स्मरण थी कि यह हिंसा-प्रदर्शन पुरुषोंके मताधिकार-आन्दोलनमें विशेष कारगर हुआ था। संवत् १९६४ के शीतकालमें मताधिकार चाहने वाली स्त्रियोंने मंत्रिमंडलके अफसरोंके मकानोंके सामने जलूस तैयार कर कामंस सभापर धावा कर दिया। गिरफ्तार होने-पर उनमेंसे कई स्त्रियोंने जुरमाना देनेसे इनकार कर जेल जाना कबूल किया।

ये हलचलें लोगोंका ध्यान स्त्रियोंकी माँगकी ओर आकर्षित करनेमें समर्थ हुईं और अन्ततः कामंस सभाने संवत् १९६९ के ग्रीष्म कालमें स्त्रियोंका मताधिकार बिल* द्वितीय पाठपर १९० के विरुद्ध २९९ मतोंसे पास किया, किन्तु बाद में सभाकी एक कमेटीके हवाले कर इसे नष्ट भी कर दिया।

संवत् १९६८ के पौष (दिसम्बर) में जब प्रधान मंत्रीने यह घोषित किया कि मंत्रिमंडल पुरुष मात्रको मताधिकार देनेका बिल उपस्थित करने और स्त्रियोंको मताधिकार

* Woman Suffrage Bill.

दिलानेके पक्षपातियोंको उक्त बिलमें सुधार करनेका अवसर देना चाहता है, तब मताधिकार चाहने वाली स्त्रियोंने पुनः दंगा-फसाद करना शुरू किया। कुछ नेताओंने हिंसाका विरोध किया और यह दलील पेश की कि बुद्धिमानीका कार्य यह होगा कि सार्वजनिक मताधिकारके प्रश्नके सम्बन्धमें पार्लमेंट-की काररवाईकी प्रतीक्षा की जाय। पार्लमेंटने किसी प्रकारकी काररवाई करनेसे इनकार कर दिया और व्यर्थके आन्दोलन-में कई वर्ष व्यतीत हो गये। महासमर आरम्भ होनेपर मिस पैंकहर्स्टकी अध्यक्षतामें युद्धकारी दलने युद्ध-कालतक मता-धिकार विषयक आन्दोलन स्थगित कर सारी शक्ति देशकी सेवामें लगानेकी घोषणा की। युद्धकालमें इंग्लैंडकी स्त्रियोंने सेवा-शुश्रूषा करने, युद्ध-सामग्री तैयार करने तथा और और कामोंमें अपनी देशभक्ति-पूर्ण सेवाका अच्छा परिचय दिया। विशेषतः इसी देशभक्तिपूर्ण सेवाके कारण इंग्लैंडमें स्त्रियोंके मताधिकारका विरोध बहुत मन्द पड़ गया। पहलेके कई मताधिकार-विरोधी संवत् १९७५ के सुधार बिलकी उस धाराके पक्षमें मत देनेको इच्छुक थे जिसमें तीस वर्षसे अधिक वयवाली ऐसी प्रत्येक स्त्रीको मताधिकार देनेकी बात थी जो किसी जमीन या मकानकी स्वयं अधिकारिणी या किसी अधिकारीकी स्त्री हो। ऐसा अनुमान किया जाता है कि इस बिलसे लगभग ६० लाख स्त्रियोंको मताधिकार प्राप्त हुआ है।

हालके सामाजिक विधान।

पिछले दस वर्षोंमें फ्रांस और इंग्लैंड—विशेष कर इंग्लैण्ड—के लोगोंके मस्तिष्कमें श्रमसम्बन्धी प्रश्नों तथा निर्धनताके

सम्बन्धमें खलबली मची हुई थी। अंग्रेजोंके इस भाव-परिवर्त्तनको उदार दलके श्री चर्चिलने संवत् १९६६ के पौष (जनवरी) मासमें अपने एक राजनीतिक व्याख्यानमें इस प्रकार स्पष्टतः व्यक्त किया था—"अंग्रेज लोगोंकी हार्दिक प्रवृत्ति इस समय राजनीतिकी ओर न होकर समाजकी ओर है। उन्हें प्रति दिन चारों ओर अशान्ति और विपत्तिके ऐसे दृश्य नज़र आते हैं जो किसी भी प्रकार मनुष्यत्व या न्यायके अनुकूल नहीं कहे जा सकते। उन्हें वर्तमान अवस्थामें ऐसी बीसों मुसीबतें नज़र आती हैं जो मनुष्यका दोष न होते हुए भी उसे अपना शिकार बना लेती हैं। इसके प्रतिकूल वे विज्ञानकी प्रकाण्ड शक्तिका भी देखते हैं जिसका प्रयोग धन तथा बलकी सहायतासे, शान्ति स्थापित करने, सुरक्षाका प्रबन्ध करने, दुर्घटनाओंका निवारण करने या कमसे कम उनके कुपरिणामोंकी कटुता कम करनेमें किया जाता है। वे जानते हैं कि उनका यह देश संसारमें सबसे धनी है; और मेरी समझमें ब्रिटेनके वे लोग जो प्रजातन्त्र विचारोंके अनुयायी हैं उस दलका समर्थन कभी न करेंगे जो उस बृहत्तर, पूर्णतर और अधिक व्यापक सामाजिक संघटनकी स्थापना करनेके लिए तैयार और योग्य न होगा, जिसके बिना हमारा देश विपत्तिके पंकमें फँस जायगा और हमारा नाम तथा यश इतिहासके पृष्ठोंसे मिट जायगा।"

संवत् १९६३ में अधिकारारूढ़ होनेपर श्री आस्किथकी लिबरल सरकारने इसी जोशमें ऐसे कानूनोंका बनाना आरम्भ किया जिनसे दारिद्र्यजनित बुराइयाँ, कम मजदूरीपर अधिक परिश्रम * करनेके लिए बाध्य होना, बेकारी और व्यावसा-

---

* Sweating.

यिक दुर्घटनाएँ अगर बिलकुल दूर न हो सकें तो कमसे कम उनकी कठोरता तो अवश्य ही कम हो जाय। संवत् १९५४ के श्रमसहायक विधान† की धाराएँ कृषिकार्यके मजदूरों तथा घरेलू नौकरोंके लिए भी लागू कर दी गयीं। इस विधानके अनुसार यदि मजदूरोंको कारखानोंमें काम करते समय क्षति पहुँचे तो मालिकोंको उसकी पूर्ति करनी होगी, पर यदि यह क्षति मजदूरकी अपनी ही हरकत और शरारतसे हो तो मालिकपर इसकी जवाबदेही नहीं है। इसके दो वर्ष पश्चात् (संवत् १९६५ में) पार्लमेंटने एक विधान इस आशयका पास किया कि कुछ दुर्घटना सम्बन्धी अपवादोंको छोड़कर मजदूर खानके भीतर २४ घंटेके अन्दर आठ घंटेसे अधिक काम नहीं कर सकता।

किन्तु क्षतिपूर्त्तिके विधानोंसे, चाहे वे कितने ही महत्वपूर्ण क्यों न हों, दरिद्रताका वह प्रश्न हल नहीं होता जो अल्प पारिश्रमिक, अनिश्चित नौकरी, बीमारी तथा व्यक्तिगत दोषोंके व्यतिरिक्त अन्यान्य कारणोंसे उत्पन्न होता है। निःसन्देह बहुत कुछ अंशमें यह व्यापक दरिद्रता व्यावसायिक क्रान्तिके ही अनिवार्य परिणामोंमे है। इंग्लैंडमें तो इस भीषण दरिद्रताकी मात्रा विचारवानोंकी दृष्टिमें बहुत ही अधिक है।

पिछले कई वर्षोंसे ब्रिटिश सरकारने "दरिद्रताके विरुद्ध युद्ध करना" अपने कार्यक्रमका एक अंग ही बना लिया है। संवत् १९७१ के पूर्व इस सम्बन्धमें कुछ ऐसे महत्वपूर्ण प्रयोग भी आरम्भ कर दिये गये थे जिनसे विशेष कर व्यवसाय प्रधान केन्द्रोंमें काम करनेवाले मजदूरोंके जीवन-संग्रामको

---

† Workmen's Compensation Act.

भीषणता कुछ कम की जा सके। संवत् १९६५ के १६ श्रावणको इसने "वृद्ध वृत्ति-विधान" * स्वीकृत किया जो अत्यन्त जरूरी हालतोंमें ही प्रयुक्त किया जाता है। इस सरकारी वृत्ति-का अधिकारी वही होगा जो ७० वर्षसे अधिककी अवस्थाका हो, बिट्रिश प्रजा हो तथा जिसकी वार्षिक आमदनी ३१½ पौंड (लगभग ४७२ रुपये) से कम हो।

बेकारी घटानेमें सहायता पहुँचानेके लिए पार्लमेंटने संवत् १९६६ में एक ऐक्ट पास कर (सरकारी) व्यापार-मंडलको देश-भरमें श्रम-विनिमय करानेवाली समितियाँ स्थापित करने तथा मजदूरोंको चाहनेवाले पूंजीपतियों और काम चाहनेवाले मजदूरोंके सम्बन्धमें अनुसन्धान करनेका अधिकार प्रदान किया। श्रम-विनिमय करानेवाली समिति द्वारा प्राप्त कामपर पहुँचनेके निमित्त जितने मार्गव्ययकी आवश्यकता होती थी उतना व्यय सरकारकी ओरसे ऋणके रूपमें दिलानेका प्रबन्ध भी किया गया।

कुछ व्यवसायोंमें पार्लमेंटने मजदूरीकी दर भी बढ़वा दी है क्योंकि पहले उनमें अच्छी तरहसे जीवन-निर्वाहके लिए काफी पारिश्रमिक नहीं दिया जाता था। संवत् १९६६ के एक ऐक्ट द्वारा कुछ ऐसे व्यापारोंके लिए व्यापार-शासक-मंडल बनानेकी व्यवस्था भी की गयी है जिनमें अधिक श्रम लेकर पारिश्रमिक कम दिया जाता है (यथा सिलाई, फीता बनाने और सन्दूक बनाने इत्यादिके कार्य)। इन मंडलोंमें मजदूर, पूंजीपति, तथा सरकार, इन तीनोंके ही प्रतिनिधि रहते हैं। इन मंडलोंको यह अधिकार दिया गया है कि वे भिन्न भिन्न व्यव-

* Old-age Pension Law.

सायोंके लिए रोजाना और ठीकेकी मजदूरीकी कमसे कम दर निश्चित कर दें। मंडल द्वारा निश्चित की गयी दरसे कम मजदूरी देना मना है और जो ऐसा करेंगे उनपर भारी जुर-माना होगा।

कम मजदूरी देकर अधिक काम लेनेकी प्रथाके विरुद्ध किये गये इस प्रयत्नके समर्थनमें भाषण करते हुए श्री विंस्टन चर्चिलने उस सिद्धान्तकी रक्षा की जिसे पुराने ढंगके अर्थशास्त्री "मजदूरीके नैसर्गिक नियमों" के साथ हस्तक्षेप ही समझेंगे। उन्होंने कहा "पहले ऐसा अनुमान किया जाता था कि माँग और पूर्त्तिके नियमोंके कारण समय पाकर धीरे धीरे उन्नति होती जायगी और यह बुराई दूर होकर मजदूरीकी ऐसी दर निर्धारित हो जायगी जो जीवन-निर्वाहके लिए काफी हो। आधुनिक विद्वानोंकी राय है कि तत्त्वकी इन मोटी मोटी बातोंमें संशोधनकी आवश्यकता है। आजकल मजदूरीके सम्बन्धमें पहले यही प्रश्न उठता है कि पूँजीपति और मजदूरकी आपसकी शर्तें दोनोंके लिए समान रूपसे लाभदायक हैं या नहीं।...कम मजदूरीमें अधिक काम लेनेवाले व्यवसायोंकी तरह जहाँ दोनों ओर संघटनका अभाव है, वहाँ पूंजीपति तथा मजदूरोंके पारस्परिक लाभमें कोई समानता नहीं है। ऐसी जगह मजदूरोंके साथ अधिक रियायत करनेवाले पूँजीपतिको कम रियायत करनेवाले पूँजीपतियोंके कारण अधिक क्षति उठानी पड़ती है।"

हालके अंग्रेजी सामाजिक विधानोंमें संवत् १९६८ का राष्ट्रीय-बीमा-विधान, जो संवत् १९६९ के आषाढ़में कार्यान्वित हुआ, सबसे अधिक व्यापक है। इस विधानके एक अंशके अनुसार लगभग सभी मजदूरोंके लिए—केवल ऐसे मजदूरों-

को छोड़कर जो हाथके काम नहीं करते तथा जिनकी वार्षिक आमदनी १६० पौंडसे अधिक है—बीमारी इत्यादिसे रक्षा पाने-के उद्देश्यसे तन्दुरुस्तीका बीमा कराना अनिवार्य कर दिया गया है। स्वयं बीमा करानेवालों, पूँजीपतियों तथा सरकार-को इस निधिमें रुपया जमा करना पड़ता है। बीमा कराने-वालोंको जो लाभ होते हैं उनमेंसे कुछ ये हैं—दवादारूका प्रबन्ध और डाक्टरोंकी देखरेख, राजयक्ष्माके मरीजोंके लिए ठंढे स्थानोंकी व्यवस्था, बीमारीके समय आर्थिक सहायता, काम करने लायक न रहनेपर भत्ता, बच्चा जननेपर प्रत्येक स्त्रीको ३० शिलिंगकी सहायता, इत्यादि।

संवत् १९६७ में जर्मनी और इंग्लैंडके उदाहरणका अनुकरण कर फ्रांसने अपने यहाँ पुराने नियमोंके आधारपर बूढ़ों तथा अयोग्य लोगोंको आम तौरसे वृत्ति देनेकी प्रथा चलायी। मजदूरी तथा वेतनपर काम करनेवाले लोगोंके लिए विधान द्वारा जीवन बीमा कराना अनिवार्य कर दिया गया है। कुछ दूसरे प्रकारके कर्मचारी भी, यदि वे चाहें तो, इस विधानसे लाभ उठा सकते हैं। पूँजीपति तथा मजदूर इस निधिमें बराबर बराबर द्रव्य देते हैं और सरकार भी सहायता किया करती है। पैंसठ वर्षकी अवस्थामें—अर्थात् जर्मनीकी अपेक्षा पाँच वर्ष पूर्व—वृत्ति आरम्भ की जाती है जो पुरुषोंके लिए साधारणतः ७५ डालर और स्त्रियोंके लिए ६० डालर वार्षिक होती है। बीमारी या किसी दुर्घटनाके कारण जो काम करने-के अयोग्य हो गये हैं उनके लिए भी कुछ प्रबन्ध किया गया है। विधवाओं और यतीमोंको भी कुछ रकम दी जाती है।

विक्रमकी बीसवीं सदीके पूर्वार्द्धमें जो सामाजिक विधान विद्यमान थे उनमें जर्मन सरकारने कोई महत्त्वपूर्ण वृद्धि नहीं

की है। बर्लिन, म्युनिच, लीपज़िग तथा हनोवर जैसे कई बड़े शहरोंने लम्बे-चौड़े भूमिखण्ड इस उद्देश्यसे क्रय कर रखे हैं कि मूल्य बढ़नेपर इनसे लाभ भी उठाया जाय और मनुष्योंकी बाढ़ भी सुविधापूर्वक रोकी जा सके। कई नगर खंडोंमें बाँट कर बसाये जाते हैं और प्रत्येक खंडके मकानोंके लिए ऐसा कानून रहता है कि उनमें मनुष्योंका जमघट न होने पावे। कुछ नगरोंमें गाड़ीकी सड़कों, गैसके कारखानों और बिजलीकी रोशनीका अपना प्रबन्ध है। वे नाटकगृह भी चलाते हैं, रुपये कर्ज देनेके लिए कोठियाँ खोलते हैं, मजदूरोंके लिए मकान बनवाते हैं और अपनी उन्नतिका इस प्रकार प्रबन्ध करते हैं जिसमें उनको जलवायु अस्वास्थ्य-जनक न हो जैसा कि व्यवसाय-प्रधान नगरोंमें अनिवार्यतः हुआ करता है।

जर्मनी, इंग्लैंड तथा फ्रांसमें समाज-सुधार सम्बन्धी इन विधानोंके कारण समाजवादकी प्रगतिमें रुकावट पड़नेके बदले प्रोत्साहन ही मिला है। मामूली तौरसे समाजवादी तीन दलोंमें विभक्त हैं, यद्यपि निर्वाचनके समयमें वे सब एक होकर अन्य दलोंका सामना करते हैं।

पहले तो समाजवादियोंका वह संशोधन दल है जिसने, प्रधानतया जर्मनीमें, मार्क्सियन सिद्धान्तोंका विरोध किया और जिसका यह कथन है कि सामाजिक क्रान्तिकी कुछ भी आवश्यकता नहीं है, केवल सुधारका क्रम जारी रहनेसे ही धीरे धीरे वे सब बातें आजायँगी जो समाजवादी लोग चाहते हैं। यद्यपि जर्मनीके ये संशोधनवादी लोग सब समाजवादियोंको अपने पक्षमें नहीं कर सके हैं, फिर भी ये लोग उक्त दलके बहुत प्रभावशाली अंग हैं।

इसके प्रतिकूल आमूल परिवर्तन चाहनेवाले वे समाज-वादी हैं जो शान्तिप्रिय राजनीतिक आन्दोलनके नाममात्रके परिणामोंसे असन्तुष्ट हो उठे हैं और उग्र नीतिका * आश्रय लेनेका समर्थन करते हैं अर्थात् हड़तालों और हिंसात्मक कार्यौंका आश्रय लेकर पूँजीपतियोंको विवश करना चाहते हैं जिसमें, सरकारी हस्तक्षेप होते या न होते हुए भी, सभी प्रकारके व्यवसायोंपर मजदूरोंका नियंत्रण हो जाय। उदा-हरण स्वरूप संवत् १९६८ में इंग्लैण्डके रेल कर्मचारियोंने हड़-ताल कर दी और रेलके प्रधान केन्द्रोंमें बलवा करना शुरू किया। इस प्रकार उन लोगोंने सरकारको हस्तक्षेप करनेके लिए बाध्य कर अपनी मजदूरी बढ़वा ली। महासमरने इंग्लैण्डमें मजदूर-दलका महत्त्व बढ़ा दिया है। रेल तथा खान-के कर्मचारियोंकी हड़तालोंके कारण राष्ट्रका ध्यान पूँजी और श्रम सम्बन्धी उन समस्याओंकी ओर गया है जो अभीतक हल नहीं हो सकी हैं।

फ्रांसमें भी उग्र उपायोंकी ओर अधिक झुकाव हुआ है। इसीसे श्रम सम्बन्धी कठिनाइयोंके साथ वहाँ बहुत कुछ खून-खराबा हुआ है। ये उग्र समाजवादी लोग† चाहते हैं कि सभी श्रेणियोंके मजदूरोंको एक दलमें बाँध कर, अपनी संख्या तथा दृढ़ताके बल, व्यवसायके सारे क्षेत्रपर नियंत्रण प्राप्त कर लें।

रूसमें, जैसा कि हम पहले देख चुके हैं, उग्र समाजवादि-योंने संवत् १९७४ के पूर्वार्द्धमें खुल्लमखुल्ला शासनपर अधिकार जमा लिया। ये लोग अपने सुधार-कार्य्यमें कहाँतक सफल

---

* Direct actions. † Direct actionists.

होंगे, इस सम्बन्धमें इस समय कुछ नहीं कहा जा सकता। किन्तु सामान्य समाजवादी लोग न तो नरम सुधारकोंकी ही नीति मानते हैं और न उन्हें उग्र मार्गके अनुयायियोंकी ही नीति पसन्द है। पहले दलको ये लोग पूँजीपतियोंके हाथकी कठपुतली समझते हैं और दूसरेको अराजकताके तरीकोंका प्रचारक। प्रायः सभी यूरोपीय देशोंके समाजवादी दल शान्तिमय उपायोंके ही पक्षपाती हैं और वे निर्वाचनाधिक्य द्वारा ही सरकारपर नियंत्रण प्राप्त कर अपना कार्यक्रम पूरा करना चाहते हैं।

गत महासमरने प्रायः सभी देशोंमें मुख्य मुख्य व्यवसायों तथा गमनागमनके साधनोंपर राष्ट्रका स्वत्व, या कमसे कम, राष्ट्रका नियंत्रण स्थापित करनेकी प्रवृत्ति जागृत कर दी है। सैनिक आवश्यकतासे प्रेरित होकर सरकारको रेलवे और खानोंका प्रबन्ध अपने हाथमें लेना पड़ा। व्यवसाय-क्षेत्रमें भी—विशेषकर रणसामग्री तथा जहाज तैयार करनेके निमित्त—उसे प्रविष्ट होना पड़ा, और कुछ महत्वपूर्ण वस्तुओंका मूल्य विधान द्वारा निश्चित करनेका सिद्धान्त भी निर्विवाद रूपसे मान लिया गया। सारांश यह कि व्यवसायोंपर राज्यका नियंत्रण स्थापित करनेके सम्बन्धमें बहुत शीघ्रतापूर्वक उन्नति हुई।

अध्याय ४३

महासमरके कारण।

यूरोपका सैन्य तथा नौबल।

संवत् १९७१ के श्रावणमें यूरोपीय इतिहासके सबसे अधिक भयंकर तथा विनाशकारी युद्धका प्रारम्भ हुआ। इसके पहले कभी भी इस प्रकार लाखों आदमी क्षणिक सूचना पानेके साथ ही शत्रुके विरुद्ध चल पड़नेके लिए सुशिक्षित कर तैयार नहीं रखे गये थे। पहले कभी भी इस प्रकारके घातक शस्त्र सैनिकोंको नहीं दिये गये थे, और न इसके पूर्व कभी किसी युद्धने, चाहे वह कितना ही भयंकर रहा हो, सारे भूमण्डलके कार्योंको इस प्रकार अस्तव्यस्त किया था। कितने ही लोगोंको तो यह युद्ध एक भयानक आश्चर्य ही प्रतीत हुआ। उनको यह विश्वास ही नहीं होता था कि यूरोपीय राज्य ऐसे युद्धमें पड़नेकी भयंकर जिम्मेदारी उठानेका साहस करेंगे जिसका परिणाम असीम कष्ट और तबाहीके अतिरिक्त और कुछ नहीं है। अस्तु, यह युद्ध यूरोपके इतिहासमें—सम्भवतः सारे संसारके इतिहासमें—सर्वप्रसिद्ध घटना थी, इसलिए इसके कारणोंपर तथा इससे सम्बन्ध रखनेवाली जटिल समस्याओंपर विचार करना आवश्यक है।

संवत् १९२७ में जर्मनी द्वारा फ्रांसकी पराजयके पश्चात् लगभग ५० वर्षतक पश्चिमी राष्ट्रोंमें परस्पर युद्धका अवसर नहीं उत्पन्न हुआ। यह दीर्घ शान्तिकाल आशाजनक था,

किन्तु इस समय भी इंग्लैंडको छोड़ कर अन्य सभी राष्ट्र युद्धकी तैयारी कर रहे थे और प्रति वर्ष सैनिकोंको सुशिक्षित करने तथा उनके लिए अस्त्र-शस्त्र प्राप्त करनेमें बड़ी बड़ी रकमें लगा रहे थे। सैनिकवादके पक्षपातियोंमें प्रशा सबसे आगे था। जैसा पहले कहा जा चुका है, यह २०० वर्ष पूर्वसे ही सैनिक बलके सहारे बड़ी शक्ति बननेकी अभिलाषा कर रहा था। फ्रेडरिक महान् ईसाकी १८ वीं सदीका सर्वश्रेष्ठ प्रतिभा-शाली वीर था पर आधुनिक प्रशियन सेनाकी उत्पत्ति उस समयसे मानी जाती है जब जेनामें नेपोलियनने प्रशाको परा-जित किया था। इस युद्धके बाद प्रशाके राजनीतिज्ञोंको पुराने ढंगकी स्थायी सेनाके बदले सारे राष्ट्रकी ही सैनिक शक्तिका भरोसा करना पड़ा। प्रशाको अपनी शक्ति इस ढंगसे बढ़ानी पड़ी जिसमें नेपोलियनके मनमें किसी प्रकारका सन्देह न उत्पन्न हो। इसलिये उसने लोगोंको सैनिक शिक्षा दे दे कर रक्षित सेनामें भेजना आरम्भ किया। इस प्रकार किसी समय भी सैनिकोंकी संख्या-वृद्धि किये बिना ही उसके पास वृहत् सेना प्रस्तुत होगयी जिसे वह युद्धमें प्रयुक्त कर सकता था।

प्रशाकी इस सेनाने उस युद्धमें महत्त्वपूर्ण भाग लिया जिसमें अन्तिम बार नेपोलियन पराजित हुआ। उसका 'शस्त्र-मय राष्ट्र'* का विचार विस्मृत नहीं हुआ। नेपोलियनके समय-में प्रशाके प्रत्येक स्वस्थ पुरुषके लिए सैनिक सेवा अनिवार्य बनानेका जो विधान बना था वह रद्द नहीं किया गया। पचास वर्ष बाद जब प्रथम विलियम तथा बिस्मार्क सारे जर्मनीको प्रशाके साँचेमें ढालनेकी तैयारी करने लगे तब उन्होंने आस्ट्रि-

---

* The nation in arms.

याके साथ युद्ध करना अनिवार्य समझ कर रँगरूटोंकी वार्षिक संख्या बढ़ा दी। साथ ही उन्होंने युद्धमें प्रत्यक्ष भाग लेनेवाली सेनामें रहनेका समय दोसे तीन वर्ष और रक्षित सेनामें रहनेका समय चार वर्ष कर दिया। इस प्रकार प्रशाके पास चार लाख सैनिकोंकी सेना प्रस्तुत हो गयी जिसके सहारे उसने संवत् १९२३ में आस्ट्रियाको पराजित किया, फ्रांसके विरुद्ध सफलताके साथ युद्ध चलाया, और जर्मनीको जर्मन साम्राज्यके रूपमें संघटित किया जिसका प्रधान उसीका नरेश हुआ।

संवत् १९२७ के युद्धके बाद शीघ्र ही इंग्लैंडके अतिरिक्त प्रायः सभी देशोंने प्रशाकी तरह सेना प्रस्तुत करनेकी नीति ग्रहण की अर्थात् उन्होंने देशके सभी स्वस्थ पुरुषोंको दो-तीन वर्षके लिए सेनामें रखकर फिर रक्षित सेनामें युद्धके लिए प्रस्तुत रखनेकी प्रथा जारी कर दी। कई स्थायी उच्च कर्मचारी यह देखनेके लिए रखे जाते थे कि सैनिकोंकी युद्ध-शिक्षा उचित रूपसे होती है या नहीं। बन्दूकों, तोपों तथा अन्यान्य शस्त्रोंपर, जो दिनों दिन तरक्की कर अधिकाधिक घातक बनते जा रहे थे, बड़ी बड़ी रकमें खर्च की जाती थीं।

युद्धके साधन बढ़ानेकी इस प्रतिस्पर्धाका परिणाम यह हुआ कि यूरोपीय सैन्यदल बहुत बढ़ गया और प्रजापर करों-का असह्य भार जा पड़ा। युद्धारम्भके समय जर्मनी तथा फ्रांसमेंसे प्रत्येकके पास ४० लाखसे अधिक सैनिक मौजूद थे, साथ ही रूसके पास ६० या ७० लाख, और आस्ट्रिया-हँगरीके पास २५ लाखसे ऊपर थे। इसके प्रतिकूल इंग्लैंडके पास दो लाखसे भी कम सैनिक थे जिनमेंसे कुछ ही यूरोपमें मौजूद थे क्योंकि उसकी सेना संयुक्त राज्य अमेरिकाकी तरह, स्वेच्छासे

भरती होनेवालोंसे बनती थी, राष्ट्रकी ओरसे सैनिक कार्य आवश्यक नहीं रखा गया था।

किन्तु इंग्लैंडने अपने बचावके लिए अपने अद्वितीय नौबलका ही भरोसा किया है। यह नौबल किसी दो शक्तियोंके संयुक्त नौबलके बराबर है। इतने बड़े नौबलका कारण यह है कि इंग्लैंडमें जितना अन्न पैदा होता है वह उसकी आबादीके लिए पर्याप्त नहीं है, इस कारण उसे बाहरसे बहुतसा अन्न मँगाना पड़ता है। उसके कारखानोंका चलना न चलना भी व्यापारपर ही अवलंबित है। अतः यदि इंग्लैंड समुद्रमें बिलकुल पराजित हो जाय तो वह पूरी तरहसे वशमें किया जा सकता है।

दूसरे राष्ट्र इंग्लैंडके नौबलकी यह प्रधानता नहीं रहने देना चाहते थे। दूर दूरके स्थानोंमें अपना प्रभुत्व स्थापित करने तथा उसे कायम रखनेकी उसकी शक्ति भी वे नहीं देख सकते थे। वे अपने मालकी खपतके लिए अंग्रेजोंकी तरह दूर दूर बाजार प्राप्त करना और युद्धपोतोंके द्वारा अपना व्यापार सुरक्षित रखना चाहते थे। विशेषकर जर्मनी इंग्लैंडका प्रधान और कट्टर प्रतिद्वन्द्वी होगया। द्वितीय कैसर विलियमको आरम्भसे ही नौसेनामें दिलचस्पी थी और युद्धके बीस वर्ष पूर्वही उन्होंने यह व्यक्त कर दिया था कि जर्मनीका भविष्य नौबलपर ही निर्भर है। इसलिए संवत् १९५४ में जर्मनीका नौबल बढ़ानेके लिए एक बिल पास हुआ। यह वृद्धि इतनी शीघ्रतासे हुई कि इंग्लैंडने भी अपनी नौशक्ति विषयक प्रधानताके सम्बन्धमें सशंक होकर अपने जहाजोंकी संख्या तथा आकार बढ़ाना आरम्भ किया। और और राष्ट्रोंने इंग्लैंडका अनुकरण किया। इस प्रकार सैनिक व्ययके असह्य बोझके होते हुए भी रणपोतोंके

व्ययका भी भार जनतापर लाद दिया गया। इतना ही नहीं, जो जंगी जहाज इस प्रकार प्रचुर धन लगाकर बनाये जाते थे वे भी, नये नये आविष्कारोंके होते रहनेके कारण, थोड़े ही पुराने होनेपर प्रायः निरुपयोगी हो जाते थे।

शान्तिके लिए उद्योग—हेगसम्मेलन।

युद्ध-सामग्रीके बेहिसाब खर्चके साथ ही ऐसे युद्धकी भयंकरताके ख्यालसे, जिसमें आधुनिक विज्ञानकी सहायतासे तैयार किये गये घातक शस्त्रास्त्रोंसे सज्जित होकर लाखों मनुष्योंके लड़नेकी संभावना थी, प्रेरित होकर कई उत्साही व्यक्तियोंने इस बातका प्रयत्न किया कि युद्धका होना ही बिलकुल रोक दिया जाय। संवत् १९७१ में उनके प्रयत्न व्यर्थ प्रतीत हुए पर यह कोई नहीं कह सकता कि वे बिलकुल ही निरर्थक हुए हैं।

सैन्यबल घटानेका पहला उल्लेखनीय प्रयत्न जार द्वितीय निकोलसकी ओरसे संवत् १९५५ में हुआ जब कि उन्होंने इस समस्यापर विचार करनेके निमित्त सभी शक्तियोंको हेगमें एकत्र होनेके लिए निमंत्रित किया। वियेना या बर्लिनकी काँग्रेसकी तरह संवत् १९५६ की यह कांफरेंस किसी युद्धका अन्त करनेके लिए नहीं, प्रत्युत इस लिए हुई कि किस प्रकार यूरोपकी शान्ति बनी रहे और सैनिक व्ययमें कमी की जा सके।

हेग कांफरेंस सैनिक शक्ति परिमित करनेके सम्बन्धमें कुछ नहीं कर सकी पर इसने एक स्थायी पंचायती न्यायालय स्थापित कर दिया जिसके द्वारा राष्ट्रोंकी आपसकी ऐसी कठिनाइयाँ सुलझायी जा सकें जिनका सम्बन्ध उनके राष्ट्रीय गौरव तथा प्रमुख हितोंसे न हो। पर ऐसा कोई उपाय नहीं

था जिससे राष्ट्र अपनी शिकायतोंको पेश करनेके लिए प्रेरित किये जा सकें। फिर युद्धके वही कारण, जो विशेष रूपसे दुःख-प्रद होते हैं, विचार-सीमासे बाहर रखे गये। संवत् १९६४ की द्वितीय कांफरेंसने विस्फोटक फैलाने, जिन नगरोंमें किलाबन्दी न हो उनपर गोलेबारी करने और युद्धकालमें तटस्थोंके अधिकारोंके सम्बन्धमें नियम बनाये। गत महासमरमें जर्मनीने इन नियमोंके पालनकी ओर बहुत कम ध्यान दिया।

हेग कांफरेंसके प्रथम अधिवेशनके बाद राष्ट्रोंमें परस्पर १३० से अधिक ऐसी सन्धियाँ हुईं जिनमें उन्होंने अपने उन मतभेदोंको पंचायत द्वारा ही निर्णीत करानेकी प्रतिज्ञा की जिनका सम्बन्ध राष्ट्रके प्रमुख हितों, स्वाधीनता, राष्ट्रीय गौरव तथा तटस्थोंके हितोंसे नहीं है। हालमें कुछ राष्ट्र इससे भी आगे बढ़ गये हैं और उन्होंने ऐसी सन्धि करनेका प्रस्ताव किया है जिसमें पंचायतके सामने लाने योग्य सभी मतभेदों-का निर्णय उसीके द्वारा करानेकी प्रतिज्ञा की गयी है।

हेग कांफरेंस तथा पंचायत-सम्बन्धी कई सन्धियोंके अतिरिक्त ऐसे कितने ही चिन्ह देख पड़ते थे जिनसे यह आशा होने लगी थी कि अब यूरोप समराग्निकी ज्वालासे बचा रहेगा। युद्धके पूर्व अन्तर्राष्ट्रीय समितियों तथा सभाओं-की संख्या दिनोंदिन बढ़ रही थी और यह बात सभी लोग मानने लगे थे कि भिन्न भिन्न राष्ट्रोंके लोगोंके हित आपसमें इस प्रकार मिले हुए हैं कि उनकी अभिवृद्धिके लिए परस्परकी सहायता आवश्यक है।

अन्तर्राष्ट्रीय शान्तिको प्रेरक शक्तियोंमें समाजवाद सर्व-प्रधान है। यह एक प्रकारका मजदूर श्रेणी द्वारा प्रवर्तित अन्त-र्राष्ट्रीय आन्दोलन है जिसका उद्देश्य उत्पादनके साधनोंको

व्यक्तिगत स्वत्वोंकी परिधिसे बाहर करना है। समाजवादियोंकी बड़ी बड़ी अन्तर्राष्ट्रीय सभाएँ हैं और वे आपसमें एक दूसरेको 'भाई' कह कर सम्बोधन करते हैं। इन लोगोंने उन सरकारों की बार बार आलोचना की है जिन्होंने साम्राज्यवादकी नीति ग्रहण की है। इनका कथन है कि दूरस्थ देशोंमें पूँजी लगाकर केवल धनी लोग ही लाभ उठाते हैं और जो युद्ध होते हैं वे श्रमियोंके कार्योंके परिणाम नहीं होते। इसके अतिरिक्त समाजवाद इस बातपर बराबर जोर देता रहा है कि युद्धसे निर्धन व्यक्तियोंको ही सबसे अधिक कष्ट पहुँचता है। अतः जो कट्टर समाजवादी हैं वे तो सदा ही युद्धके घोर शत्रु रहे हैं। तात्पर्य यह कि उन्होंने सैनिक कार्य करनेमें आपत्ति की और कई बार उनकी यह आपति देशद्रोह मान ली गयी जिसके कारण उन्हें जेल जाना पड़ा। फिर भी संवत् १९७१ में महासमर छिड़नेपर सभी देशोंके अधिकांश समाजवादी युद्धके आवेशमें आगये। ये लोग यद्यपि आज भी साम्राज्यवादको तथा देशविजयके निमित्त युद्धको बुरा मानते हैं तो भी महासमरमें ये भी परस्पर लड़े थे।

विवादके विषय तथा राष्ट्रीय प्रतिद्वन्द्विता।

गत अध्यायोंमें उन मुख्य प्रश्नोंका मोटे तौरसे दिग्दर्शन करा दिया गया है जिनके कारण महासमरका छिड़ना सम्भव हुआ—अर्थात् एक ओर साम्राज्यवाद और दूसरी ओर निकट पूर्वकी समस्या। पहले बता चुके हैं कि किस प्रकार यूरोपीय राष्ट्र बीसवीं सदीके पूर्वार्द्धमें अफ्रिका तथा एशियाके उपनिवेशों और व्यापारिक केंद्रोंको हथियानेके लिए एक दूसरेकी प्रतिद्वन्द्विता कर रहे थे। हम यह भी देख चुके हैं कि तुर्कीके पतन-

से कौन सबसे अधिक लाभ उठाता है, इस सम्बन्धमें किस तरह वे एक दूसरेको सन्देहकी दृष्टिसे देख रहे थे। अब हमें यह देखना है कि वे प्रतिस्पर्द्धाएँ, जो लगभग पचास वर्ष तक किसी प्रकार शान्त रखी जा सकी थीं, संवत् १९७१ के ग्रीष्म कालमें किस प्रकार युद्धके रूपमें एकाएक उभड़ पड़ीं।

सबसे प्रथम अफ्रिकाकी खोज और उसके बटवारेपर ध्यान देना चाहिए। फ्रांसने भूमध्य सागरके तटस्थ अधिकांश स्थानोंको अधिकारमें कर लिया है। उसका यह कार्य समय समयपर, इटली, इंग्लैंड और जर्मनीकी ईर्ष्याका कारण भी बन चुका है। इसके अलजीरिया प्रान्तके पड़ोसमें, जो संवत् १८८७ में जीता गया और १९२७ में पूर्णतः अधिकृत हुआ था, दो देशी राज्य थे—ट्यूनिस और मरक्को। फ्रांसने यह बहाना कर कि ट्यूनिसवाले हमारे सीमावर्ती स्थानोंपर लूट-मार करते हैं, संवत् १९३८ में उसपर अधिकार कर लिया। इस प्रकार फ्रांसने इटलीका शिकार बीचमें ही उड़ा लिया जिसे इटलीने कार्थेजका प्राचीन स्थान समझ कर लेनेका विचार किया था। इस कार्यने इटलीको बिस्मार्कका आश्रय लेनेके लिए बाध्य किया और वह जर्मनी तथा आस्ट्रियाके साथ मिल कर त्रिगुटका एक सदस्य बन गया।

संवत् १९५५ की 'सूदान-समस्या'*से अंग्रेजों और फ्रांसीसियोंकी शत्रुता और भी अधिक हो गयी। बोअर युद्धके समय बोअरोंके प्रति फ्रांसीसियोंकी खुल्लमखुल्ला सहानुभूतिसे यह बात अधिक स्पष्ट हो गयी। फ्रांसमें अंग्रेज लोगोंका

* जिस समय अंग्रेज लोग सूदानकी विजयमें लगे हुए थे उस समय फ्रांसीसी लोग भी इस देशमें पैर जमानेका प्रयत्न कर रहे थे। उनका यह प्रयत्न Fashoda affair (फैशोदा अफेयर) के नामसे प्रसिद्ध है।

अपमान हुआ और दोनों देश एक दूसरेको वंशानुगत शत्रु कहने लगे। फिर भी चार ही वर्षके अन्दर सारी परिस्थिति बदल गयी। संवत् १९५७ में विक्टोरियाके मरनेपर सप्तम एडवर्ड गद्दीपर बैठे। ये फ्रांसको बहुत चाहते थे और फ्रांसीसी भी इन्हें चाहते थे। चतुर राजनीतिज्ञोंने इस नयी परिस्थितिसे यथासम्भव लाभ उठाया और संवत् १९६१ में फ्रांस और इंग्लैंड दोनोंने सारे मतभेदोंको दूर कर आपसमें सद्भाव-पूर्वक समझौता कर लिया। इतिहासमें यह समझौता एक विशेष महत्वपूर्ण विषय समझा जाता है। फ्रांसने मिश्रमें अंग्रेजोंका स्वार्थ स्वीकार किया और अंग्रेजोंने भी फ्रांसका स्वार्थ मरक्कोमें स्वीकार किया—जहाँ फ्रांसने अपने अलजीयर सीमाप्रान्तकी ओरसे प्रवेश करना शुरू कर दिया था। इस समझौतेपर दोनों ओरसे खूब खुशियाँ मनायी गयीं। मैत्री-भावसे गयी हुई फ्रांसीसी सेनाके लिए लंदनकी सड़कोंपर खूब हर्षध्वनि की गयी और फ्रांसीसी लोग ऐंग्लो-सैक्सनोंके उन गुणोंकी प्रशंसा करने लगे जिनका अनुमोदन उन्होंने पहले कभी नहीं किया था।

फ्रांससे समझौता होनेके पूर्व ही, संवत् १९५९ में जापानसे मैत्री होजानेके कारण इंग्लैंडकी एकांतता दूर हो चुकी थी। रूस-जापान युद्धके बाद जब रूसियों तथा जापानियोंने मंचूरियाके लिए लड़ना बन्द कर आपसमें तै कर लिया कि हम लोग एक दूसरेको मंचूरियामें प्रवेश पानेमें सहायता दें, उस समय इंग्लैंडने भी रूसके साथ मेल कर लिया। यह बात अविश्वसनीय सी प्रतीत होती थी, क्योंकि इंग्लैंड बहुत दिनोंसे रूसको भारतके सम्बन्धमें सन्देहकी दृष्टिसे देख रहा था और इसने कई रूसियोंको सीमान्त प्रदेशोंमें विद्रोह

करनेके लिए उभाड़ते हुए पकड़ा भी था। इसके अलावा अंग्रेज लोग रूसके स्वेच्छातंत्रको बड़ी घृणाकी दृष्टिसे देखते थे, यहाँतक कि लंदन वहाँके क्रान्तिकारियोंका आश्रय-स्थान ही हो रहा था। फिर भी यह अविश्वसनीय बात होकर ही रही। संवत् १९६४ में इंग्लैंड और रूसने फारसतक ही अपनी आकांक्षाओंको परिमित करना कबूल कर अपने एशियायी सीमा सम्बन्धी झगड़ोंका निपटारा कर लिया।

जापानसे मैत्री तथा फ्रांस और रूससे समझौता होनेके अतिरिक्त डेनमार्क तथा पोर्तगालसे भी इंग्लैंडका मैत्रीभाव था। डेनमार्क युद्ध होनेके बादसे जर्मनीसे चिढ़ा हुआ था। इसके अतिरिक्त अंग्रेज राजकुमारियोंका विवाह नार्वे तथा स्पेनके नरेशोंसे हुआ था।

उल्लेख योग्य शक्तियोंमें एक बड़ी शक्ति—जर्मनी—इस मित्र-मण्डलसे पृथक् थी। यद्यपि कैसर—द्वितीय विलियम—सप्तम एडवर्डके भागिनेय थे पर इन दोनों सम्राटोंमें कभी सौहार्द नहीं रहा, दोनों राष्ट्र भी धन और बलमें एक दूसरेके प्रतिद्वन्द्वी थे और एकको दूसरेका विश्वास भी नहीं था। जर्मनोंका ख्याल था कि एडवर्डने जिन मित्रताओं और सन्धियोंके समूहको प्रोत्साहन दिया है वे जर्मनी, आस्ट्रिया और इटलीके त्रिगुटके विरुद्ध शत्रुभावसे की गयी हैं। उन्होंने इन्हें, जहाँतक संभव हो, तोड़नेका भी संकल्प कर लिया।

संवत् १९६२ (सन् १९०५) में जर्मनीने इंग्लैंड और फ्रांसके उस समझौतेके सम्बन्धमें आपत्ति की जिसके अनुसार फ्रांस मरक्कोमें मनमाना कार्य कर सकता था। इस विषयमें आस्ट्रियाने भी उसका समर्थन किया। जर्मनीने यह दावा किया कि उस स्थानसे भी हमारा बहुत कुछ मतलब है

और कैसरने ऐसे ढंगसे बात की जिससे सामान्यतः युद्धकी धमकी सूचित होती थी। फ्रांसने अल्जीसीरासमें सम्मेलन करनेकी बात मान ली। इसके निर्णयके अनुसार फ्रांसको मरक्कोकी निगरानी करनेका अधिकार तो दिया गया पर साथ ही उसको स्वाधीनतामें हस्तक्षेप न करनेकी शर्त भी उससे करा ली गयी। किन्तु फ्रांसने निगरानीके इस अधिकार-का ऐसा प्रयोग किया कि पाँच वर्ष बीतते बीतते मरक्कोकी स्वाधीनता नाम मात्रके लिए ही शेष रह गयी। अतः फ्रांसको चेतावनी देनेके विचारसे जर्मनीने संवत् १९६८ में मरक्को तटवर्ती अगडिरमें एक क्रूजर भेजा। युद्ध होते होते बच गया। मरक्कोमें स्वच्छन्दतापूर्वक कार्य कर सकनेकी इच्छासे फ्रांसने कांगो नदीके किनारेका अपना प्रदेश जर्मनीको दे दिया।

अगडिरकी घटनाने इंग्लैंडके राजनीतिज्ञोंको भी भयभीत कर दिया। सभी लोगोंको यह बात स्पष्टतः प्रतीत होने लगी कि अब यूरोपके आकाशमें युद्धके बादल मँडरा रहे हैं। जर्मनीके साम्राज्यवादियोंका कहना था कि अगडिर-कार्यसे जर्मनी घाटेमें रहा क्योंकि मरक्कोपर फ्रांसका आधिपत्य बना ही रहा। उन्होंने भविष्यत्में उग्रतर उपाय प्रयोगमें लानेपर जोर दिया। इंग्लैंड और फ्रांसके साम्राज्यवादी जर्मनीसे इस कारण रंज थे कि उसने संसारकी दृष्टिमें इन्हें इस तरह नीचा दिखानेकी धृष्टता की थी। इसका परिणाम यह हुआ कि सभी राष्ट्रोंने अपनी यौद्धिक सामग्री बढ़ा दी।

पूर्वी यूरोपकी समस्या।

यद्यपि संवत् १९६८ (सन् १९११) में मरक्कोपर अधिकार जमानेके सम्बन्धमें जर्मनी, इंग्लैंड और फ्रांसके बीच युद्ध होते

होते रुक गया, फिर भी दक्षिण-पूर्वी यूरोपकी उलझनका एक नया ही खतरा उत्पन्न हो गया। बर्लिनकी कांग्रेसने संवत् १९३५ (सन् १८७८ में) आस्ट्रियाको बोस्निआ और हर्जेगोविना नामक तुर्की प्रान्तोंपर अधिकार करनेकी अनुज्ञा दी थी। आस्ट्रियाने इन प्रान्तोंपर ३० वर्षोंतक सुचारुरूपसे शासन किया पर तुर्कीके शेष भागोंमें कुशासनजनित अव्यवस्था ही बनी रही। जब संवत् १९६५ में तुर्की-क्रान्ति हुई और नये बलशाली तुर्की राज्यके उदयके चिह्न देख पड़ने लगे तो आस्ट्रियाने बोस्निआ और हर्जेगोविनाको पुनः तुर्कीमें सम्मिलित होनेसे रोकनेका संकल्प कर लिया और बलपूर्वक इन प्रान्तोंको आस्ट्रिया-हंगरी साम्राज्यमें मिला लिया।

निकटवर्ती राज्य सर्बियाको इस कार्यसे विशेष भय और क्रोध उत्पन्न हुआ क्योंकि ये प्रान्त दक्षिणी स्लावोंसे निवसित थे और सर्बियन लोग यह आशा बाँधे हुए थे कि उन लोगों तथा मांटीनिग्रोवालोंसे मिलकर हम एक नया स्लाविक राज्य कायम कर सकेंगे जिसका विस्तार डान्यूबसे लेकर एड्रियाटिकतक होगा। रूसको भी इससे बहुत क्रोध हुआ पर जब आस्ट्रियाके मित्र जर्मनीने यह घोषित किया कि यदि जरूरत हुई तो मैं आस्ट्रियाकी सैनिक सहायता भी करूँगा तो रूसने, जो अभी तक जापानके साथ युद्ध करनेके कारण तथा अपनी ही क्रान्तियोंके कारण अच्छी तरह संभल नहीं सका था, बालकन प्रायद्वीपस्थ स्थानोंके सम्बन्धमें हस्तक्षेप करनेमें अपनेको असमर्थ पाया। इस प्रकार इस बार भी युद्ध कुछ कालके लिए टल गया किन्तु मौजूदा हालतसे यह साफ जाहिर होता थो कि बालकन-परिस्थिति संबन्धी भयंकर उलझन सारे संसारको अभूतपूर्व युद्धमें बिना फँसाये न छोड़ेगी।

संवत् १९६८ के आश्विन (सितम्बर) में इटलीने, जो फ्रांस और इंग्लैंडकी तरह उत्तरी अफ्रिकामें अपना पैर जमाना चाहता था, तुर्कीके साथ इस बिनापर रणघोषणा की कि ट्रिपोली निवासी इटलीके प्रजाजनोंके प्रति उसका व्यवहार अन्यायपूर्ण है। इटली अपनी इस मनमानी काररवाईके विरोधियोंको यह कह कर उत्तर दे सकता था कि यदि मैं तुर्कीके उस भागको, जिसमें वह अशान्ति और रक्तपात रोकनेमें सक्षम और सतर्क नहीं है, अपने अधिकारमें लाकर अपने नागरिकोंके जानोमालकी रक्षा करना चाहता हूँ तो ऐसा कर मैं अन्य राष्ट्रों द्वारा बनाये हुए मार्गका ही अनुसरण कर रहा हूँ। उसने ट्रिपोली नगर बड़ी आसानीसे ले लिया पर इसके बाद भी भीतरी प्रदेशोंमें और कई महीनोंतक युद्ध जारी रहा। क्रान्तिके अनन्तर तुर्कीमें इटलीका सामना करनेकी शक्ति नहीं रह गयी थी और नवतुर्क दलको अन्ततः बड़ी अनिच्छाके साथ शत्रुके हाथ ट्रिपोली और सिरानिका समर्पित करना पड़ा। इनका स्वामित्व नाममात्रके लिए तुर्कीके हाथ रहा। रोड्सपर तथा एशियामें अन्यान्य कई छोटे छोटे द्वीपोंपर भी इटलीका ही कब्जा बना रहा।

ज्यों ही इटलीके साथ तुर्कीकी सन्धि हुई त्यों ही पड़ोसी राज्योंने उसपर (तुर्कीपर) आक्रमण कर दिया। यूनानी राजनीतिज्ञ वेनिजिलोजने, जो कावूरकी सी कुशलताके साथ यूनानका संघटन कर रहा था, अपने पुराने शत्रु तुर्कीके हाथसे मकदूनिया ले लेनेके उद्देश्यसे बलगेरिया, सर्बिया और माण्टीनिग्रोसे मैत्री कर ली थी। इन लोगोंके सम्मिलित आक्रमणका सामना तुर्कीकी सेना नहीं कर सकती थी। बलगेरिया और सर्बियाकी सेनाओंने अड्रियानोपुलपर घेरा डाल दिया

और तुर्की सेनाको करीव करीब कुस्तुन्तुनियाँतक पीछे हटा दिया। यूनानी लोग मकदूनिया और थ्रेसमें घुस गये। सर्बियन लोग भी अलबानियामें बढ़ते गये और ऐसा प्रतीत होने लगा कि ये लोग अड्रियाटिक तटके उस बन्दरको ले लेंगे जिसे लेनेकी इच्छा वे बहुत दिनोंसे कर रहे थे। आस्ट्रिया इसपर बहुत क्रुद्ध हो गया। उसने सर्बियनोंको डुराजो नामक बन्दरपर कब्जा करनेसे मना किया। सर्बियामें इस आज्ञाका उल्लंघन करनेकी ताव नहीं थी। यदि सर्बिया इसपर अड़ गया होता, और रूसने इसका पक्ष लिया होता तो यह महासमर दो वर्ष बाद छिड़नेके वदले संवत् १९६९ के मध्यमें ही आरम्भ हो जाता।

कुछ हो महीने बाद तुर्कोंने अन्तमें हार मान ली और संवत् १९७० के आरम्भमें सन्धिकी प्रारंभिक शर्तोंपर लन्दनमें हस्ताक्षर हो गये। तुर्कोंने केवल मकदूनिया और अलबानिया ही नहीं बल्कि क्रीट द्वीप भी शत्रुको समर्पित कर दिया जिसने कुछ वर्ष पहले (संवत् १९६५) यूनानी झंडेको बुलन्द कर तुर्कीके विरुद्ध बलवा खड़ा किया था। बालकन प्रायद्वीपस्थ राज्योंने लूटका माल आपसमें बाँट लिया; बड़े बड़े राष्ट्र ईर्ष्या-पूर्ण नेत्रोंसे उनकी ओर देखते ही रह गये।

युद्धके पूर्व सर्बिया और बलगेरियाने आपसमें यह तै किया था कि मकदूनियाका अधिकांश बलगेरियाको मिलेगा। इसका कारण यह था कि सर्बिया अलबानियाका कुछ भाग लेकर अड्रियाटिक समुद्रमें प्रवेश-मार्ग पानेकी आशा किये बैठा था। किन्तु जब आस्ट्रिया-हंगरी तथा इटलीकी ओरसे अलबानियाको स्वतंत्र राज्यके रूपमें रखनेके लिए ज़ोर दिया गया तब इस आशापर पानी फिर गया। इसलिए उस ओर

अपना राज्य बढ़ानेकी अभिलाषा त्याग देनेके लिए विवश होनेपर सर्बियाने स्वभावतः अपना मकदूनियाका हिस्सा बढ़ानेके लिए कहा। बलगेरियाने ऐसा करनेसे इनकार कर दिया। इतना ही नहीं, उसने द्वितीय बालकन युद्ध भी आरम्भ कर दिया। इस बार उसके सभी पूर्व मित्र—सर्बिया, यूनान और मांटीनिग्रो—विपक्षमें हो गये। कुछ राज्य-वृद्धि कर सकनेकी आशासे रूमानिया भी युद्धमें शामिल होगया। तुर्कीने मौका अच्छा देखकर चतुराईसे अड्रियानोपुलपर फिर कब्जा कर लिया। युद्धने उग्र रूप तो धारण किया पर वह केवल पाँचही सप्ताहमें समाप्त हो गया क्योंकि पूर्णरूपसे युद्धोन्मुख होते हुए भी बलगेरिया इतने शत्रुओंका सामना करनेमें असमर्थ था। उसे सुलह करनेके लिए विवश होना पड़ा। संवत् १९७० के २५ श्रावणको बुखारेस्टमें सन्धिमें हुई।

बुखारेस्टकी यह सन्धि बलगेरियाके लिए बड़ी ही अपमानजनक थी। सर्बियाको मकदूनियाका अधिकांश और नोवीबाजारका प्रदेश मिला जिससे उसका पहलेका राज्य दूना हो गया। यूनानको एपिरस, दक्षिणी मकदूनिया तथा सैलोनिकाका प्रसिद्ध बन्दर मिला और क्रीटपर भी अधिकार करनेकी अनुज्ञा मिली। माण्टीनिग्रोकी भी राज्यवृद्धि हुई; अलबानिया स्वतंत्र देश माना जाकर एक जर्मन राजाके शासनमें रखा गया। बलगेरियाको मकदूनियामें कुछ हिस्सा मिला पर इसके बदलेमें उसे डान्यूब तथा कालासागरके बीच स्थित कुछ भूमि रूमानियाको देनी पड़ी और अड्रियानोपुल तथा इसके पूर्वका प्रदेश तुर्कोंको लौटाना पड़ा।

द्वितीय बालकन युद्ध समाप्त होनेके बादकी परिस्थिति यूरोपीय शान्तिके लिए अनर्थ-सूचक थी। यद्यपि आस्ट्रियाने

अड्रियाटिक समुद्रके किसी बन्दरपर अधिकार करनेकी सर्बियाकी आशापर पानी फेर दिया था और अलबानियाको एक जर्मन नरेशके शासनमें स्वतंत्र राज्यका रूप दे दिया था, फिर भी सर्बियाका राज्य दूना बढ़ गया था और यह भय बना हुआ था कि कहीं वह अपनी विजयिनी सेनाकी सहायतासे आस्ट्रिया-हंगरीके निकटवर्ती बोस्निया, क्रोशिआ तथा स्लावोनिआ प्रान्तोंके असन्तुष्ट दक्षिणी स्लावोंको मिलानेका अपना पहिला कार्यक्रम पुनः पूरा करनेकी ओर अग्रसर न हो बैठे। आस्ट्रियाके साथ जर्मनीकी हार्दिक सहानुभूति थी और रूसके सम्बन्धमें यह अनुमान किया जाता था कि वह सर्बियाका तथा अपने दूरवर्ती सजातीय दक्षिणी स्लावोंका समर्थक है।

जर्मनीने अपने पूर्वस्थ बड़े पड़ोसी रूससे भयभीत होनेका बहाना पेश किया। इसके अलावा वह यह नहीं सहन कर सकता था कि रूस बालकन प्रदेशोंपर प्रभावक्षेत्र स्थापित करने और सम्भवतः कुस्तुन्तुनियापर कब्जा करनेके उद्देश्यसे सर्वस्लाविक बन्धुत्वमें सर्बियाके साथ सम्मिलित हो। कारण यह था कि ऐसा होनेसे बर्लिनसे बगदाद और फारसकी खाड़ी तक रेलवे निकालकर पूर्वीय देशोंका व्यापार हथिया लेनेकी जर्मनीकी चिरागत अभिलाषापर पानी फिर जाता। वह लघु एशिया (एशिया माइनर) और ईराक होकर सड़क बनानेके विषयमें तुर्कीसे समझौता कर ही चुका था, किन्तु अभी इंग्लैंड और फ्रांसके स्वाभाविक विरोधका सामना करना शेष था। फिर भी सड़क बनानेका कार्य बहुत कुछ जारी हो चुका था कि इसी समय सर्बिया, जिसके राज्यसे होकर सड़क गुजरनेवाली थी, खतरेका केन्द्रस्थल बन गया और तुर्कीके विध्वंसकी संभावना उपस्थित हो गयी। अतः अब सर्वस्लाविक

वादका मुकाबला करनेके लिए सर्वजर्मनवादका आविर्भाव हुआ। इसका परिणाम यह हुआ कि संवत् १९७० में सैनिक तैयारीमें खूब चढ़ा-ऊपरी हुई। पहले पहल जर्मनीने ही अपनी स्थायी सेना बढ़ा कर इस मार्गमें पैर बढ़ाया। राइस्टागने आकस्मिक सैनिक व्ययके लिए लगभग एक अरब मार्ककी स्वीकृति दी।* फ्रांसने इसका उत्तर सेनामें रहकर कार्य करनेका समय दो वर्षसे तीन वर्ष करके दिया। रूसने भी इस कार्यके लिए भारी भारी रकमें स्वीकृत कीं और रूसी सेनाके नव संघटन-कार्यमें राय देनेके लिए फ्रांसके प्रधान सेनापति जेनरल जाफरको बुलाया। आस्ट्रिया-हंगरीने लड़ाईके नूतन उपकरणोंकी वृद्धि कर अपनी शक्ति बढ़ायी। इंग्लैंडने अपने नौबलमें बहुत रुपया लगाया। बेल्जियमने भी यह कह कर अपने यहाँ अनिवार्य सैनिक सेवाका नियम चलाया कि जर्मनीने हमारी सीमातक रेल तैयार की है जिसका स्पष्ट अभिप्राय यही प्रतीत होता है कि युद्ध आरम्भ होनेपर बेल्जियम होकर वह गुजर सके।

युद्धका आरम्भ।

जिस समय ये सब बातें हो रही थीं उस समय शान्तिके प्रेमी भी हाथपर हाथ रखकर चुप नहीं बैठे थे। अंग्रेज राज-

* कील नहर इतनी अधिक चौड़ी कर दी गयी जिसमें बड़ेसे बड़ा जहाज भी बाल्टिक और उत्तर सागरके बीच आसानीसे आ जा सके। १० आषाढ़ संवत् १९७१ को नियमपूर्वक इस नहरका उद्घाटन हुआ। इस प्रकार जर्मनीके नौबलकी, जिसका आरम्भ संवत् १९५४ से हुआ, उपयोगिता दूनी हो गयी। इसी समय इंग्लैंड भी अपने प्रतिस्पर्द्धीसे आगे बढ़े रहनेके निमित्त पहलेकी अपेक्षा और बड़े जहाज अधिक संख्यामें तैयार कराता रहा।

नीतिज्ञोंने बड़े राष्ट्रोंके पारस्परिक मतभेदोंको दूर करनेका यथाशक्य प्रयत्न किया। इंग्लैंड जर्मनीको बगदादतक सड़क बनाने देनेके लिए राज़ी था जिसमें सामान्य रूपसे जर्मनीमें फैली हुई यह धारणा, कि इंग्लैंड समझौतोंका जाल बिछाकर चारों ओरसे उसे घेरना और कमजोर करना चाहता है, दूर हो जाय। जर्मनीके कुछ राजनीतिज्ञ, जिनमें लंदनस्थ दूत भी था, यह चाहते थे कि शान्तिपूर्वक समझौता हो जाय पर जर्मन युद्ध-दलने, जो युद्धपर तुला हुआ था, इनकी एक न चलने दी। यदि इस दलके लोगोंने इस प्रकार अनुचित जोश न दिखलाया होता तो संभवतः बहुत कालतक शान्ति बनी रहती।

संवत् १९७१ के १४ आषाढ़ (२८ जून १९२४) को एक ऐसी घटना हो गयी जिसने इन सारी आशाओंको उलट-पुलट दिया। आस्ट्रिया-हंगरीके युवराज फ्रैंसिस फर्डिनण्ड सपत्नीक बोस्निआ देखने गये थे, वहाँ उनकी हत्या कर दी गयी। सर्बियन सरकारने फर्डिनण्डको वहाँ जानेसे पहले ही मना कर दिया था क्योंकि उसे भय था कि कहीं सर्बिया पक्षके जोशीले षड्यन्त्रकारी उनकी हत्या करनेका प्रयत्न न कर बैठें। फिर भी आस्ट्रियाने यह घोषित किया कि सर्बिया ऐसे षड्यंत्रोंका समर्थक है, इस कारण हत्याकी जिम्मेदारी उसीपर है। एक महीनेतक तो आस्ट्रिया चुपचाप बैठा रहा, उसने इसका कोई नियमानुकूल विरोध नहीं किया। ७ श्रावणको उसने विरोधसूचक पत्र * न भेजकर एकाएक अन्तिम सूचना † भेज दी। इसमें आस्ट्रियाने सर्बियाको ४८ घण्टेका समय यह माननेके लिए दिया था कि वह पत्रों, स्कूलों तथा सभा-समाजों द्वारा जो आस्ट्रियाके विरोधी भावोंका प्रचार हो रहा है उसे

* Protest. † Ultimatum.

रोके, सेना या देश-शासन कार्यमें अगर कोई अफसर आस्ट्रियाका विरोधी हो तो वह पृथक् कर दिया जाय और आस्ट्रियन अफसरोंको अपने न्यायालयमें बैठकर अपराधियोंका विचार करनेकी अनुमति दी जाय । सर्बियाने अन्तिमको छोड़कर प्रायः सभी अपमानजनक शर्तें स्वीकार कर लीं, और उसको भी हेग न्यायालयके सिपुर्द करना कबूल किया पर आस्ट्रिया इस बातपर राजी न हुआ। विएनामें इस निर्णयपर बड़ी खुशी मनायी गयी ।

संवत् १९७१के श्रावणका दूसरा सप्ताह संसारके इतिहासमें सबसे अधिक महत्वपूर्ण था। यह बात स्पष्ट थी कि रूस पृथक् खड़ा होकर आस्ट्रिया द्वारा सर्बियाके पराभूत होनेका तमाशा नहीं देखता रहेगा। जर्मनोने यह घोषित किया कि रूसकी ओरसे आक्रमण होनेपर मैं सब प्रकारसे आस्ट्रियाकी सहायता करूँगा। उसने उन रूसी, फ्रांसीसी तथा अंग्रेज कूटनीतिज्ञोंके प्रयत्नोंका भी विरोध किया जो आस्ट्रिया तथा सर्बियाकी आपसकी उलझनें हेग न्यायालय द्वारा सुलझवानेका अनुरोध कर रहे थे और इस बातपर ज़ोर दिया कि यह मामला आस्ट्रियाका निजी मामला है, इसलिए उसे इस बातकी अनुज्ञा दे देनी चाहिये कि वह स्वयं इसका निपटारा कर ले। सारांश यह कि जर्मनी सर्बियाको दण्ड दिलाना चाहता था और इस अभीष्ट-साधनके निमित्त वह विश्वव्यापी युद्धका सामना करनेके लिए भी तत्पर था। यदि वह चाहता तो इस युद्धको रोक सकता था, किन्तु उसने ऐसा नहीं किया । उसके नेता अपनेको बड़ीसे बड़ी लड़ाईके लिए तैयार समझते थे। वे यह भी भलीभाँति जानते थे कि रूस तथा फ्रांसने अभी अपनी तैयारी सम्यक्

रूपसे नहीं की है । इंग्लैंडकी बात ही जुदी थी, इसकी छोटी सी सेनाको तो जर्मनीके सैनिक अफसर तुच्छ दृष्टिसे देखते ही थे।

ज्योंही १२ श्रावण (२८ जुलाई) को आस्ट्रियाने सर्बिया-के विरुद्ध युद्ध-घोषणा की त्योंहीं रूसने युद्धकी तैयारी शुरू कर दी। रूसकी इस तैयारीको अपने ऊपर आक्रमणका प्रयत्न समझ कर जर्मनीने १६ श्रावण (१ अगस्त) को रूसके साथ युद्धकी घोषणा कर दी और उसके मित्र फ्रांसको १८ घंटेका समय देकर यह उत्तर माँगा कि वह क्या करना चाहता है। फ्रांसीसी सरकारने टालमटोल कर युद्धकी तैयारी शुरू कर दी। इसलिये जर्मनीने १८ श्रावणको फ्रांसके साथ भी युद्ध घोषित कर दिया। प्रथम आक्रमण करनेके लिए जर्मनी इतना उतावला हो रहा था कि युद्ध-घोषणाके एक दिन पूर्व ही उसकी सेना फ्रांसपर धावा करनेके लिए चल चुकी थी। १७ श्रावण को उसकी सेनाने शासकके आपत्ति करनेपर भी तटस्थ देश लक्सम्बर्गपर अधिकार कर लिया। जर्मनीने बेल्जियमवालोंको इस आशयकी अन्तिम सूचना दी कि ७ बजे शामसे ७ बजे सबेरेतक १२ घंटेके अन्दर यह निर्णय कर लो कि तुम जर्मन सेनाको अपने देशसे होकर फ्रांस जानेका मार्ग देनेको तैयार हो या नहीं। यदि तुमने इसे स्वीकार कर लिया तो जर्मनी तुम्हारे देश और प्रजाको आदरकी दृष्टिसे देखेगा, अन्यथा तुम्हारे साथ शत्रुवत् आचरण किया जायगा। बेल्जि-यमके पासतक रेलवे बनानेमें जर्मनीका क्या अभिप्राय था, यह बात अब बेल्जियमके साथ ही अन्य लोगोंको भी स्पष्ट मालूम हो गयी। बेल्जियम-निवासियोंने इसका उत्तर बड़ी दृढ़ता और शानके साथ दिया। उन्होंने इस बातपर ज़ोर

दिया कि सभी राष्ट्रोंके साथ साथ जर्मनीने भी बेल्जियम-की तटस्थता स्वीकार की थी तथा इसकी रक्षा करनेका वचन दिया था, अतः यदि कोई हमारी तटस्थता भंग करनेका प्रयत्न करेगा तो हम इसका विरोध करेंगे।

ग्रेट ब्रिटेनके लिए युद्धमें प्रवृत्त होना प्रायः अनिवार्य था। वह रूस तथा फ्रांसको सहायता देनेके लिए प्रतिज्ञाबद्ध तो नहीं था, पर १७ श्रावणको वहाँकी सरकारकी ओरसे जर्मनीको सूचना दी गयी कि जर्मन बेड़ेको फ्रांसीसी तटपर आक्रमण करनेकी इजाज़त न दी जायगी क्योंकि इससे युद्ध इंग्लैंडके अत्यन्त निकट पहुँच जायगा। दो दिन बाद जब यह पता लगा कि जर्मन सैनिक बेल्जियममें प्रवेश कर रहे हैं तो परराष्ट्र-विभागके अध्यक्ष, सर एडवर्ड ग्रेने जर्मनीको अन्तिम सूचना देकर १२ घण्टेके अन्दर उसकी ओरसे बेल्जियमकी तटस्थताकी रक्षाके लिए वचन माँगा। जर्मनीके चांसलर बथमन हालवेगने उत्तर दिया कि सैनिक आवश्यकतासे प्रेरित होकर जर्मन सैनिकोंको बेल्जियम होकर गुजरना पड़ता है। उन्होंने बर्लिन-स्थित अंग्रेज राजदूतसे कहा कि एक कागजके टुकड़ेके पीछे इंग्लैंडको युद्धमें न शामिल होना चाहिए। जिस पवित्र सन्धिके द्वारा यूरोपीय राष्ट्रोंने बेल्जियमकी ताटस्थ्य-रक्षाका वचन दिया था उसके प्रति इस प्रकार तुच्छ दृष्टिसे देखनेका संसारपर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा। बेल्जियमके ऊपर आक्रमण होनेके ही कारण अँग्रेज जाति अपनी सरकारके साथ युद्धमें प्रवृत्त होनेके लिए तैयार हो गयी, यद्यपि इंग्लैंडने अभी कोई आर्थिक तैयारी भी न की थी, उसकी सेना भी छोटी ही थी, और उसे शुरू शुरूमें एकमात्र अपने नौबलका ही भरोसा करना पड़ा।

जापानने भी शीघ्र ही जर्मनीके साथ युद्ध घोषित कर दिया और पौषके अन्तमें तुर्कीने भी जर्मनी इत्यादिका साथ देनका निश्चय कर लिया। इस प्रकार तीन मासके अन्दर ही एक ओर तो जर्मनी, अस्ट्रिया हंगरी और तुर्की—ये तीन देश हुए और दूसरी ओर सर्बिया, रूस, फ्रांस, बेल्जियम, इंग्लैंड, माएटोनीग्रो और जापान हुए। इटली तटस्थ रहा। उसकी ओरसे कहा गया कि वह आस्ट्रिया और जर्मनीकी सहायता करनेके लिए बाध्य नहीं है क्योंकि संवत् १६३६ के समझौतेके अनुसार इटलीने मित्रोंके ऊपर आक्रमण होनेपर ही सहायता करनेकी प्रतिज्ञा की है। इटलीवालोंने ख्याल किया कि वर्तमान युद्धमें यही राष्ट्र आक्रामक हैं इसलिए इटली जबतक चाहे तबतक युद्धसे पृथक् रह सकता है। ज्योंही श्री आस्किथने यह घोषित किया कि जर्मनी और ग्रेटब्रिटेनके बीच युद्धकी अवस्था उपस्थित हो गयी त्योंही जर्मनीवाले बुलन्द आवाजमें इंग्लैंड़के ऊपर इस विश्वव्यापी युद्धके लिए जिम्मेदार होनेका दोष मढ़ने लगे, और बादमें भी वे ऐसा करते रहे। बथमन हालवेगने राइस्टागको यह बतलाया कि अगर इंग्लैंड चाहता तो यह युद्ध असम्भव होगया होता क्योंकि वह रूसवालोंसे यह स्पष्टतः कह सकता था कि मैं आस्ट्रिया और सर्बिया सम्बन्धी उलझनको शेष यूरोपके फँसनेका कारण नहीं बनने दूँगा। जर्मनीका यह दावा था कि आस्ट्रियाद्वारा सर्बियाका दण्डित होना पूर्णतः न्यायानुमोदित है और ऐसा कोई कारण नहीं देख पड़ता जिससे प्रेरित होकर अन्य राष्ट्र इस न्यायोचित प्रयत्नमें हस्तक्षेप करनेका विचार करें। उसका यह कथन था कि इंग्लैंड भी यह बात समझ सकता था, किन्तु उसने ऐसा करनेसे इनकार कर दिया

इसलिए वही प्रधान दोषी और अगणित जन धन-हानिका कारण है।

अध्याय ४४

संसारव्यापी युद्ध

संवत् १९७१ में युद्धकी गति।

जर्मनीकी विशाल सेना तीन दलोंमें विभक्त होकर फ्रांसपर चढ़ दौड़ी—एक दल बेल्जियम होकर, दूसरा लक्सेम्बर्ग होकर शम्पेनकी ओर और तीसरा मेज़ होकर नैन्सीकी ओर बढ़ा। बेल्जियमवालोंने उत्तरी दलकी गतिका अवरोध किया और दस दिनोंतक उसे रोक रखा—इतना समय मिल जाना फ्रांसीसियोंके लिए विशेष महत्त्वपूर्ण था। पर जर्मन तोपोंके आगे लीजके दुर्ग ठहर न सके और अन्ततः भूमिसात् होगये। शत्रुने ४ भाद्रपद (२० अगस्त) को ब्रुसेल्सपर अधिकार जमा लिया। मध्य दलको, जो म्यूज नदीसे होकर बढ़ रहा था, कहीं विशेष रूपसे सामना नहीं करना पड़ा। चैनेल पार कर शीघ्रतासे आये हुए अंग्रेजी सैनिकोंकी सहायता पाकर फ्रांसीसी सेनाने पहले पहल नामूरपर मोर्चा लिया। शीघ्र ही इस दुर्गका पतन हो गया, अंग्रेज तथा फ्रांसीसी सैनिकोंको दक्षिणकी ओर हटना पड़ा। १६ भाद्रपद (१ सितम्बर) तक जर्मन सेनाका पश्चिमी दल पेरिसके २५ मीलके समीप

पहुँच गया। फ्रांसीसी सरकार हटकर बोर्डोमें चली गयी और राजधानीमें शत्रुका सामना करनेकी तैयारियाँ होने लगीं।

मार्नसे दक्षिण पहुँचनेपर फ्रांसीसी सेनापति जॉफरने अपनी पीछे हटती हुई सेनाको रोका और उसके साथ एक नयी सेना भी मिला दी जो पेरिसके आसपास एकत्र की गयी थी। इस सम्मिलित सेनाको लेकर उन्होंने पश्चिमकी ओर जर्मनोंपर हमला किया। मार्नके प्रसिद्ध युद्धने पेरिसपर आनेवाली विपत्ति टाल दी। जॉफर अपने देशके पूजनीय हो गये और उस (देश) ने उनकी सेवाओंके लिए उनको रणाध्यक्ष दण्ड* भेंट किया। वान क्लुककी अध्यक्षतामें जर्मनोंको उन पहाड़ियोंकी ओर हटना पड़ा जो स्वासन्ससे रीम्स तक फैली हुई हैं। वहाँ अँग्रेज तथा फ्रांसीसी सैनिकों द्वारा अधिक पीछे हटाये जानेके पूर्व उन्होंने खाइयोंमें आश्रय लिया। पेरिसको घेरनेकी आशा छोड़कर अब जर्मन लोग बेल्जियमको तबाह करनेके लिए बढ़े। २४ आश्विन (१० अक्टूबर) को उन लोगोंने एण्टवर्पके दुर्गपर कब्जा कर लिया और आस्टेंडके दक्षिण-पश्चिममें एक छोटे भागको छोड़कर सारा देश जीत लिया। उन्हें यह आशा थी कि हम आगे बढ़कर कैले बन्दरपर अधिकार कर लेंगे जो इंग्लैंडके निकटतम होनेके कारण ब्रिटिश द्वीपोंपर आक्रमण करनेके लिए उत्तम स्थान होगा, पर वे लोग ईसर नदीपर ही रोक दिये गये। उन्होंने बेल्जियमवालोंके साथ विजित लोगोंकी तरह बर्ताव किया, उनसे भारी कर वसूल किया, लूवेन नगरको अंशतः जला डाला, कई शासकोंको बेरहमीके साथ फाँसीपर

---

* Baton—एक प्रकारका दण्ड जिसे सेनापति या उच्च शासक लोग धारण करते हैं।

लटका दिया और ऐसे कई यंत्र तथा अन्य साधन हस्तगत कर लिये जिनकी उन्हें आवश्यकता प्रतीत हुई। आक्रमण होनेपर जिसकी रक्षा करनेके लिए उन्होंने स्वयं प्रतिज्ञा की थी, उसी पड़ोसीके साथ, इस प्रकारका बर्ताव शेष संसारको क्रुद्ध करनेमें जर्मन सरकारके और कार्योंकी अपेक्षा प्रबलतर कारण हुआ।

जर्मन सेनाका दक्षिणी दल—सिर्फ वह दल जिसने तटस्थ राजकी सीमासे अनुचित लाभ उठाये बिना सीधे फ्रांस-पर धावा करनेका साहस किया था—पहले विशेष रूपसे आगे नहीं बढ़ सका, पर शीघ्र ही वह फ्रांस राज्यके भीतर, म्युजके पास ही पूर्वकी ओर, एक पहाड़ीकी श्रृंखलापर जो वर्डूनके पूरबसे सेंट डाई तक गयी है, जम जानेमें कृतकार्य हुआ। फिर भी फ्रांसीसियोंने दक्षिणी अलसेसपर आक्रमण कर जर्मन राज्यका एक छोटासा टुकड़ा अपने अधीन कर लिया। इस प्रकार युद्धके प्रथम तीन मासमें जर्मनोंने बेल्जि-यम, लक्सेम्बर्ग तथा फ्रांसके उत्तर पूर्वके एक चौड़े भूभागपर, जिसमें कई समृद्धिशाली व्यावसायिक नगर, कृषिक्षेत्र, अंगूर-क्षेत्र तथा कोयले और लोहेकी अमूल्य खानें थीं, अपने कब्जे-में कर लिया।

मार्नके युद्ध तथा ईसर नदीके समीपकी मुठभेड़के पश्चात् सैन्यदलकी जो सीमा थी उसमें, लगातार युद्ध तथा दोनों ओरके लाखों मनुष्योंकी आहुति होनेपर भी, चार वर्ष-तक विशेष परिवर्तन नहीं हुआ। फ्रांसमें बहुत दूर आगेतक बढ़ते जानेकी शक्ति जर्मनोंमें न थी, उसी प्रकार फ्रांसीसी तथा अंग्रेज भयंकर जन-बलि तथा लगातार प्रयत्न करनेपर भी जर्मनोंको कुछ मीलसे अधिक पीछे नहीं हटा सके। दोनों
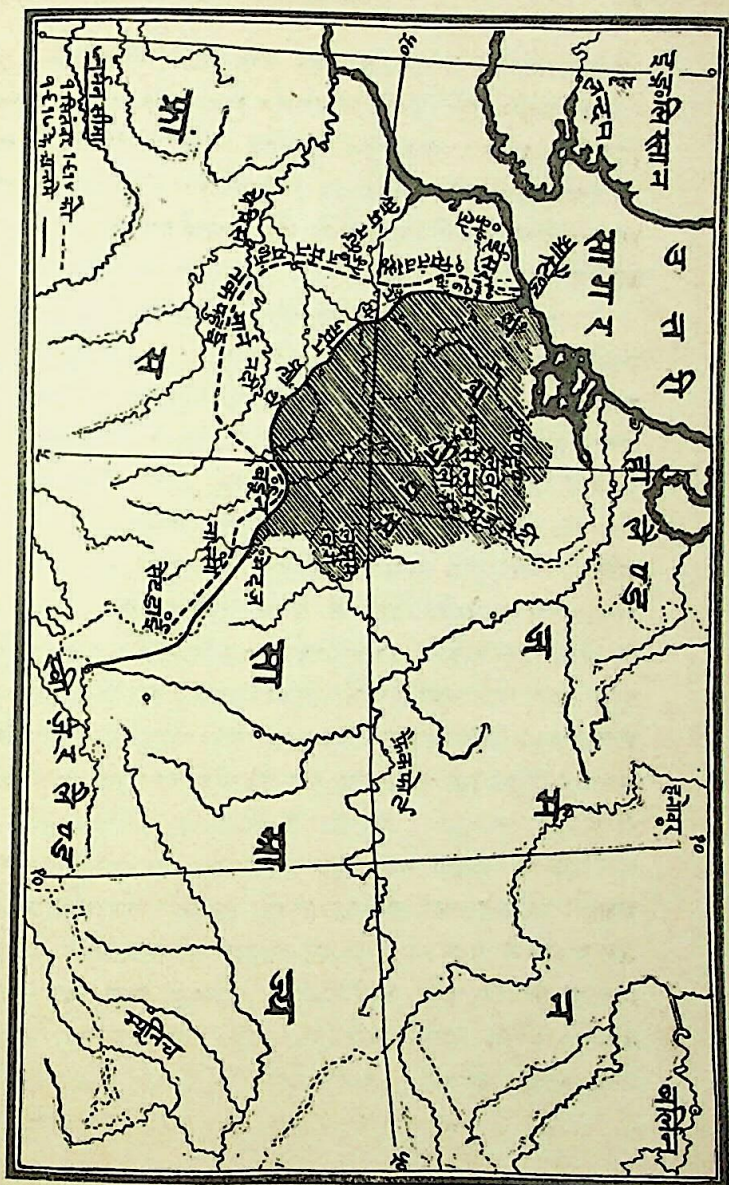
पक्षोंके सैनिकोंने खाइयोंका आश्रय लिया । इस प्रकार मशीनगनों, बम गोलों और बड़ी बड़ी तोपोंकी सहायतासे लगातार खाईयुद्ध होता रहा। वायुयान इधर उधर उड़ उड़कर शत्रुसैन्यकी स्थिति और कार्योंका पता लगाते और उनपर बम वर्षा करते थे। इसके अतिरिक्त जर्मनों द्वारा प्रवर्तित विषैले गैसों तथा द्रव अग्निके कारण भी परिस्थितिकी भीषणता बहुत अधिक बढ़ गयी थी।

पूर्वी युद्धस्थलपर पहले तो रूसी लोग इतनी तेजीसे आगे बढ़े जितनी उनसे आशा नहीं की जाती थी। वे पूर्वी प्रशापर आक्रमण करनेमें भी सफल हुए पर शीघ्र ही हिंडेनबर्ग तथा उनके सैनिकोंने उन्हें मार भगाया। उन्होंने गेलीशियामें आस्ट्रियन सैन्यपर अपना प्रमुख आक्रमण किया पर पोलैण्डमें जर्मन तथा आस्ट्रियन सैनिकोंके यौद्धिक कार्योंके कारण उन्हें पीछे हटना पड़ा। वे दोनों मिलकर वारसापर आक्रमण कर रहे थे इससे उत्तरकी ओर रूसियोंको आशंका थी। संवत् १९७२ (सन् १९१५) के शीतकालमें रूसियोंने कारपेथियन पहाड़को पार कर आस्ट्रिया-हंगरीपर आक्रमण करनेका सरतोड़ प्रयत्न किया पर उपयुक्त सामग्रीके अभाव-से वे इस कार्यमें कृतकार्य न होसके। लाखों मनुष्योंको मुफ़्तमें अपनी जानसे हाथ धोना पड़ा। रूसियोंको जर्मनोंके हाथ वारसा तथा पोलैंडके अन्य बड़े नगर समर्पित करने-को विवश होना पड़ा। जर्मन लोग आगे बढ़ते ही गये। उन्हों-ने पौलैंड पार कर कूरलैंड, लिवोनिया और एस्थोनियापर अधिकार कर लिया। इस प्रकार सन्धिके पूर्व पोलैंडके अतिरिक्त रूसका एक महत्वपूर्ण प्रदेश जर्मनोंके अधिकारमें हो चुका था।

शीघ्र ही युद्धके संसार भरमें व्याप्त होनेके लक्षण दिखाई देने लगे। जापानने फौरन ही प्रशान्त महासागरके उत्तर भागवाले जर्मनोंके किआऊ चाऊ बन्दरपर कब्जा कर लिया और आस्ट्रेलियनों तथा न्यूजीलैंडरोंने दक्षिणी प्रशान्त सागरके कई नौकाश्रयोंपर अधिकार जमा लिया। दक्षिण अफ्रिकाकी यूनिअन सरकारकी सेनाने, बोअरोंके हार्दिक सहयोगसे, जो पहले अंग्रेजोंके दुश्मन थे, जर्मन दक्षिण-पश्चिम अफ्रिकापर अधिकार कर लिया। शेष जर्मन उपनिवेश भी—तोगोलैंड, केमेरून, जर्मन पूर्वी अफ्रिका—क्रमशः अंग्रेजों या फ्रांसीसियोंके हाथ आते गये। इस प्रकार युद्धकी प्रबलता होनेपर यद्यपि मध्य यूरोपमें जर्मनीका अधिकार बढ़ता गया पर साथ ही उसके सारे उपनिवेश उसके हाथसे जाते रहे। ये स्थान जर्मनीको लौटाये जायँ या कमसे कम उनके लिए क्षतिपूर्त्ति भी की जाय या नहीं, युद्धके अन्तमें इस समस्याका हल करना बड़ा ही जटिल कार्य होगया था।

संवत् १९७१ के कार्तिकमें तुर्कीने भी जर्मनी तथा आस्ट्रियाका साथ दिया। सुलताननें सभी दीनदार मुसलमानोंको "इस्लामके शत्रुओं" के विरुद्ध जहादमें सम्मिलित होनेके लिए आमंत्रित किया। पर जर्मनीकी आशाके प्रतिकूल भारत तथा मिश्रके मुसलमान अंग्रेज सरकारके विरुद्ध नहीं उठे। स्वेज नहरपर कब्जा करनेकी पूर्वघोषित योजना भी अमलमें नहीं लायी गयी। इंग्लैण्डने अवसर देखकर मिश्रको तुर्कीसे स्वतंत्र घोषित कर दिया (दिसम्बर, १९१४ ई०) और 'मिश्रके सुलतान" की उपाधिसे एक नया शासक नियुक्त कर दिया। नये शासकने मिश्रपर अंग्रेजोंका संरक्षण कबूल कर लिया। अंग्रेजोंने पहले ईराकपर, फिर शामपर, हमला किया और अन्तमें

(मार्च १९१७ में) प्रसिद्ध प्राचीन नगर बगदाद और फिर (दिसम्बर १९१७ में) पवित्र नगर जेरूसलेमपर कब्जा कर लिया।

संवत् १९७२ में अंग्रेजों और फ्रांसीसियोंने कुस्तुन्तुनिया लेनेका प्रयत्न किया पर इस कार्यमें वे नितान्त असफल हुए। संवत् १९७३ के आरम्भमें ही लालसागरके मार्गसे आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंडकी कुछ सेना सहायताके लिए भूमध्य सागरमें पहुँची। इस प्रकार सैन्य-वृद्धि होनेपर उन लोगोंने दरे दानियालके मार्ग होकर जानेका प्रयत्न किया। तुर्क लोगोंने जर्मन सामग्री तथा सेनाध्यक्षोंकी सहायतासे ऐसी सफलताके साथ अपनी रक्षा की कि मित्रोंको अपने एक लाख सैनिकोंके हताहत होने पर भी गेलीपोली प्रायद्वीपमें, जहाँ उनके पैर जम गये थे, अपनी स्थिति बनाये रखनेमें सफलता नहीं हुई। कुछ महीने बाद ब्रिटिश सरकारको यह मानना पड़ा कि उसने बड़ी भूल की थी। इसके बाद उसने यह प्रयत्न त्याग दिया।

इसी समय इटलीने अन्तमें यह निर्णय किया कि त्रिगुटके अपने पहलेके मित्रोंके विरुद्ध अंग्रेजों इत्यादिकी ही ओरसे युद्धमें सम्मिलित होनेमें मेरा हित है। इटलीको आशा थी कि इस प्रकार वह सुप्रसिद्ध बन्दर ट्रीस्टको तथा ट्रेण्ट और इस्ट्रिया आदि उन स्थानोंको आस्ट्रियाके पंजेसे छुड़ा सकेगा जिनमें इटैलियन लोग बसे हुए हैं। अब जर्मनी इत्यादिको एक और नये शत्रुका सामना करना पड़ा।

इस प्रकार युद्धके द्वितीय वर्षके आरम्भमें युद्धकारी दलोंमें एक ओर तो जर्मनी, आस्ट्रिया-हंगरी और तुर्की थे और दूसरी ओर रूस, फ्रांस, ग्रेट ब्रिटेन (जिसमें कनाडा, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, दक्षिण अफ्रिका और भारत सम्मिलित

थे जो ब्रिटिश साम्राज्यकी रक्षाके लिए अपना रुधिर बहानेको तैयार थे), बेल्जियम, सर्बिया, जापान तथा माएटीनिग्रो और सैन मेरिनोके छोटे देश अर्थात् कुल मिलाकर बारह युद्धकारी देश थे जो सारे संसारमें जहाँ तहाँ स्थित हैं। पर, जैसा कि हम लोग जानते हैं, युद्धका संक्रमण यहींतक रुकनेवाला नहीं था, इसने ऐसे करोड़ों आदमियोंको ग्रस्त कर लिया जो इस समय तक तटस्थ बने हुए थे।

सामुद्रिक युद्धके ही कारण संसारव्यापी प्रमुख समस्याओंका आविर्भाव हुआ। युद्धके आरम्भमें बहुत लोगोंका यह अनुमान था कि जल्द ही अंग्रेजी तथा जर्मन बेड़ोंके बीच घमासान और सम्भवतः पूरा पूरा फैसला कर देनेवाला सामुद्रिक युद्ध होगा पर ऐसा कोई युद्ध नहीं हुआ। जर्मनोंने अपने युद्धपोतोंको अपने नौकाश्रयोंमें क्रूजरों तथा विस्फोटकोंकी सुरक्षामें ही रखा। जर्मनोंके व्यापारिक पोत या तो अपने ही नौकाश्रयोंमें आश्रय लेते थे या तटस्थ बन्दरोंमें ठहरते थे। जो इने गिने क्रूजर स्वच्छन्द रूपसे विचरण करते थे और कुछ समयतक समुद्रमें दौड़ लगाकर अंग्रेजी पोतोंको रसातल पहुँचाया करते थे वे या तो पकड़ लिये गये या डुबा दिये गये। इस तरह शीघ्रही जर्मनोंका व्यापार बन्द हो गया और समुद्रपर अंग्रेजोंका आधिपत्य हो गया। यदि हालमें आविष्कृत और परिवर्द्धित जलान्तरवाही पोत (पनडुब्बे) न होते तो अंग्रेजोंके सामुद्रिक शासनके आगे जर्मनोंका कोई चारा नहीं चलता। युद्धकी इस नयी प्रणालीने ही प्रायः राष्ट्रोंकी युद्धगतिका फैसला करनेमें बहुत कुछ भाग लिया है।

अन्तर्राष्ट्रीय विधानोंके प्रचलित सिद्धान्तोंको भंग किये बिना ही जर्मनोंके हेम्बर्ग तथा ब्रेमेन नौकाश्रयों—कील तथा

बाल्टिकके बहिर्गमन मार्गका—अवरोध करना इंग्लैंडके बाएँ हाथका खेल था। फिर भी जर्मन जलान्तरवाही पोत चुपकेसे निकल कर अंग्रेजी वणिक् पोतों और कभी कभी बड़े रणपोतों-को भी डुबा देते थे। सामुद्रिक युद्धकी इन नयी परिस्थिति-योंसे प्रेरित होकर इंग्लैंडने हालैंड, नारवे और स्वीडनके तटस्थ नौकाश्रयोंको जानेवाले सभी तटस्थ पोतोंको आर्कनी द्वीपपुंज-के किर्कवालमें ठहराकर यह जाँच करनेका हक जाहिर किया कि इन जहाजोंमें वर्जित माल—अर्थात् ऐसी वस्तुएँ जो प्रत्यक्ष या परोक्ष रूपसे युद्धमें काम आवें—तो नहीं लदा हुआ है और यह माल वास्तवमें जर्मनीके लिए ही तो नहीं है। जब संवत १९७१ के १९ माघको जर्मन सरकारने सैनिकोंको काफी खाद्य पदार्थ देनेके विचारसे लोगोंका निजी तौरसे खरीदा हुआ सारा अन्न जब्त करनेका आदेश निकाला तो इंग्लैंडने यह घोषित कर दिया कि अबसे जर्मनी जानेवाला सारा खाद्य-पदार्थ वर्जित समझा जायगा क्योंकि युद्ध-सामग्री प्रस्तुत करनेकी अपेक्षा सैनिकोंको खाद्य पदार्थ पहुँचाना उसके लिए अधिक आवश्यक हो गया है।

इंग्लैंडके इस कार्यको जर्मनोंने "भूखों मारकर सारे राष्ट्रको नष्ट करने"का स्पष्ट प्रयत्न समझा। अब जर्मन सरकारने इंग्लैंडके चारों ओरके समुद्रको सैनिकक्षेत्र * घोषित कर दिया जिसके अनुसार शत्रुके व्यापारिक पोत, चाहे उनपरके यात्री और नाविक बचाये जा सकें या नहीं, जलमग्न कर दिये जा सकते थे। तटस्थोंको यह चेतावनी दे दी गयी कि अगर तुम लोग इस क्षेत्रमें प्रवेश करोगे तो भारी खतरेमें पड़ोगे। पहिले युद्ध-पोतोंके लिए सम्भव था कि वे किसी

* Zone of war.

जहाजको रोक लें और यदि माल वर्जित ठहरे तो उसे गिरफ़ार कर लें या यात्रियोंको बचाकर उसे डुबा दें। पर जलान्तरवाही पोतोंके सम्बन्धमें अतिरिक्त व्यक्तियोंके बचावका कोई विचार नहीं था, और इतनी चेतावनी दिये बिना ही, जिसमें यात्री प्राणरक्षिका नावोंकी शरण ले सकें, जहाज डुबानेमें इन्हें अधिक सुविधा थी।

संवत् १९७१ के फाल्गुन (फरवरी १९१५) में जर्मन जलान्तरवाही पोतोंने केवल शत्रु पोतोंको ही नहीं बल्कि तटस्थ पोतोंको भी डुबाना शुरू किया। कभी कभी जहाजके यात्रियोंको चेतावनी दे दी जाती थी किन्तु बहुधा चेतावनी दिये बिना ही जहाज डुबा दिये जाते थे। जलान्तरवाही पोतोंकी निर्दयताका सबसे बड़ा उदाहरण उस समय देखनेमें आया जब संवत् १९७२ के २४ वैशाखको बारह सौ मनुष्योंके साथ, जिनमें सौ से अधिक अमेरिकन नागरिक थे, लूसीटेनिया जहाज डुबा दिया गया। जर्मनोंने इसे बड़ी वीरताका कार्य माना। उन्होंने यह दलील पेश की कि इस पोतपर शस्त्र और बमगोले लदे हुए थे और अमेरिकनोंको इस जहाजपर आना ही न चाहिए था क्योंकि न्यूयार्कके समाचारपत्रोंने एक सूचना निकाल कर उन्हें ऐसा करनेसे मना कर दिया था। किन्तु सावधानतापूर्वक अनुसन्धान करनेके बाद एक अमेरिकन न्यायालयने यह निर्णय किया कि वह जहाज सशस्त्र नहीं था और उसपर कोई विस्फोटक वस्तु भी नहीं लदी हुई थी अतः उसे नष्ट करना एक तरहकी डकैती ही थी। जर्मनीके दुष्कृत्यसे केवल इंग्लैंड और अमेरिकामें ही नहीं बल्कि सारे संसारमें आतंक, क्षोभ और क्रोध उत्पन्न होगया।

पश्चिमी युद्धस्थलपर अंग्रेजोंके सैनिकोंकी संख्या धीरे धीरे बढ़ती ही गयी, यहाँ तक कि संवत् १९७२ में आश्विनके मध्यतक सर जॉन फ्रेंचकी अधीनतामें दस लाख सैनिक हो गये। इधर अंग्रेज लोग शस्त्र और युद्धकी सामग्री तैयार करनेमें भी खूब दत्तचित्त रहे, यद्यपि युद्धारम्भ कालमें उनके पास इसकी बड़ी कमी थी। संयुक्त राज्य अमेरिकासे खरीद करके भी उन्होंने अपनी सामग्री खूब बढ़ा ली। अब उन्होंने आरासके उत्तर-पूर्वकी ओर आगे बढ़नेका संकल्प किया। बड़ी भयानक मारकाटके पश्चात् वे लोग पन्द्रह या बीस मील आगे बढ़े हुए जर्मनोंको दो-तीन मील पीछे हटा सके। इस कार्यसे संसारको इस बातका कुछ अनुमान हो गया कि फ्रांस और बेल्जियमसे जर्मन सैनिकोंको निकालनेमें मित्रोंको किस कदर कठिनाईका सामना करना पड़ेगा।

अंग्रेजोंकी ओरसे आक्रमण होने पर भी जर्मनोंने, जो रूसियोंको गेलीशियामें बहुत पीछे हटा चुके थे, सर्वियापर आक्रमण करनेका निश्चय किया। इससे सर्बियाके कट्टर शत्रु बल्गेरियाने प्रोत्साहित होकर सर्बियाके विरुद्ध युद्ध घोषित कर दिया और अपने पड़ोसीको दण्ड देनेके लिए जर्मनी इत्यादिके साथ जा मिला। सर्बियनोंके वीरतापूर्वक सामना करने पर भी उनका देश, जिसपर दो तरफोंसे आक्रमण हुआ था, शीघ्र ही शत्रुओंके हाथ चला गया। इस समयसे लेकर युद्धके अन्ततक सर्बियन लोग अपने खोये हुए राज्यका बहुत ही अल्प अंश लौटानेमें समर्थ हुए। अंग्रेजों और फ्रांसीसियोंकी सेना यूनानके नौकाश्रय सैलोनिकामें उतरी थी पर वह मुसीबतको रोक न सकी। यूनान किसका पक्ष ग्रहण करे, इस विषयमें वहाँ भयंकर मतभेद था। राज-परिवार विशेष रूपसे

जर्मनीके पक्षमें था पर कई राजपुरुष—विशेषकर यूनानका प्रमुख राजनीतिज्ञ वेनेजिलोज—मित्रदलके समर्थक थे। राजा कांस्टेण्टाइन किसी प्रकार संवत् १९७४ के करीब तक नाम मात्रके लिए अपने देशकी तटस्थता बनाये रख सके, किन्तु इसी समय जर्मनोंके प्रति प्रत्यक्ष सहानुभूति प्रकट करने तथा दुरभिसन्धियोंके कारण उन्हें यूनानसे निर्वासित होना पड़ा।

संवत् १९७२ के आक्रमण।

संवत १९७१ के अन्तमें पश्चिमी युद्धस्थलपर अंग्रेजोंकी आंशिक सफलताके पश्चात् जर्मनीने अपनी शक्तिका परिचय देनेका संकल्प किया। उन लोगोंने वर्डूनके प्राचीन दुर्गपर आक्रमण करनेकी ठानी। इस दुर्गके हाथसे निकल जानेपर फ्रांसीसियोंके उत्साहमें बहुत कुछ कमी आ जाती क्योंकि यह देशके प्रमुख दुर्गोंमें समझा जाता था। मेज, जो कि जर्मनोंकी सामग्री-प्राप्तिका प्रधान केन्द्र था, वर्डूनसे थोड़ी ही दूर पूरब है, इससे इस स्थानपर फ्रांसीसी सैन्यदलकी पंक्तिको भेद कर सकनेकी बहुत कुछ आशा की जा सकती थी। स्वयं जर्मनीके राजकुमारकी अध्यक्षतामें बड़ी बड़ी सेनाएँ यहाँ एकत्र हो गयीं। संवत् १९७२ के १९ माघ (२१ फरवरी १९२६) को आक्रमण शुरू हो गया।

कुछ कालके लिए फ्रांसीसी सैन्य-पंक्तियाँ पीछे हट गयीं और सारे संसारमें मित्रोंके समर्थक शंकित हो उठे क्योंकि इस समय ऐसा प्रतीत होता था मानो जर्मन लोग फ्रांसकी अवरोधकसेनाको विनष्ट कर पुनः पेरिसपर आक्रमण करेंगे, किन्तु शीघ्र ही फ्रांसीसियोंने अपनेको संभाल लिया और फिर एक बार स्थानपर डट गये। अब उत्तरकी सीमा

बनाये रखनेके लिए अंग्रेजी सैनिकोंकी भी संख्या काफी थी। भयंकर मुठभेड़ आरम्भ हो गयी और जाफरके सेनापतित्वमें फ्रांसीसी लोग जर्मनोंको उस स्थानसे पीछे हटानेमें समर्थ हुए जहाँतक वे पहले आक्रमणके समय बढ़ आये थे। जिनके मनमें पहले जर्मन-विजयकी आशंका थी उनका जी अब कुछ हलका हुआ। श्रावणके मध्यतक उस स्थानपर पूर्ण पराभव होनेकी आशंका न रही। मित्रों तथा उनके समर्थकोंको यह जान कर पूर्ण सन्तोष हुआ कि जर्मन राजकुमारको, जिन्होंने सबसे अधिक भयानक युद्धमें ख्याति प्राप्त करनेकी शक्तिभर चेष्टा की थी, पीछे हटना पड़ा।

युद्ध छिड़नेके समय अंग्रेजी सेना एक लाखसे भी कम थी। कैसरने इसे तिरस्कार पूर्वक, 'तुच्छ सेना' कहा था। जर्मनी, रूस और फ्रांसके पास, अनिवार्य सैनिक सेवाकी चिर प्रचलित प्रणालीके कारण, लाखों सुशिक्षित सैनिक प्रस्तुत थे। कुछ कालतक इंग्लैंडने, स्वेच्छापूर्वक भरती होनेकी प्रथासे, अपनी सेना बढ़ानेका प्रयत्न किया और साधारणतः उसे इस कार्यमें सफलता भी हुई पर बहुत तर्क-वितर्कके पश्चात् (वैशाख, संवत् १९७३ में) उसने अनिवार्य सैनिक सेवाका नियम जारी किया जिससे १८ वर्षसे लेकर ४१ वर्ष तकके सभी स्वस्थ पुरुष सेनामें शामिल होनेके लिए बाध्य हुए। (बादमें उम्रकी सीमा १८ से ५० तक कर दी गयी)।

इसके कुछ ही दिन बाद अंग्रेज़ों और फ्रांसीसियोंका प्रसिद्ध आक्रमण—सोमका युद्ध—आरम्भ हुआ जो आमीन्सके उत्तर-पूर्व भागमें, श्रावणसे कार्तिक (जुलाई-नवम्बर) तक लगभग चार महीने रहा। यहाँपर अंग्रेजोंने एक नये यौद्धिक आविष्कारका प्रथम परिचय दिया। इन लोगोंने

एक नये ढंगकी मोटर तैयार की जिसपर भारी शस्त्र रखे जाते थे और जिसकी बनावट ऐसी होती थी कि वह तारोंका जाल काट कर निकल सके और गड्ढों तथा खाइयोंपर भी आसानीसे चल सके। अंग्रेजोंके पास बड़े बड़े गोले बरसानेके लिए भी विशेष प्रकारकी बनी हुई १५ इंचके मुखवाली तोपें थीं। इस आक्रमणसे जर्मन लोग कुछ मील पीछे हटे पर इसमें दोनों दलोंकी विशेष क्षति हुई क्योंकि प्रत्येक पक्षके लगभग छः सात लाख सैनिक हताहत हुए।

संवत् १९७३ के ज्येष्ठ (मई १९१६) में जब कि वर्डूनका युद्ध जोरोंसे हो रहा था, इटैलियन लोग, जो आस्ट्रियनोंकी किलाबन्दीके कारण विशेष रूपसे आगे नहीं बढ़ सके थे, आस्ट्रियनोंके विकट आक्रमणके कारण सहसा पीछे हट गये। ज्येष्ठके अन्ततक यह हालत हो गयी कि उन्होंने अभीतक जो कुछ प्राप्त किया था वह तो उन्हें छोड़ना ही पड़ा, ऊपरसे कुछ अपना प्रदेश भी खाली करना पड़ा। इसी समय रूसवालोंने, पोलैण्ड हाथसे निकल जाने पर भी, एक बार और आस्ट्रियावालोंपर आक्रमण किया और ऐसा प्रतीत होने लगा कि ये हंगरीमें दूरतक प्रवेश करनेपर उतारू हैं। यह देख आस्ट्रियावालोंको, अपनी गेलोशियन सीमाकी रक्षाके निमित्त, इटलीकी ओरसे हट आना पड़ा। अब इटलीवालोंने अपने खोये हुए स्थानोंको पुनः प्राप्त कर लिया तथा ट्रीस्टके मार्गमें पड़नेवाले प्रसिद्ध नगर गोरीज़ियापर भी कब्जा कर लिया।

रूसवाले अपने दस लाखसे अधिक सैनिकोंकी आहुति कर चुके थे, फिर भी रूस सरकारकी अयोग्यताके कारण वे विजित स्थानोंको अपने अधिकारमें रख सकनेमें असमर्थ थे। उनकी इस अस्थायी सफलतासे प्रोत्साहित होकर रूमानिया

मित्रदलकी ओरसे युद्धमें शामिल हुआ। उसने ट्रानसिल-वेनियापर, जिसपर चिरकालसे वह अपना न्याय्य अधिकार प्रगट करता आ रहा था, आक्रमण किया। जर्मनीके पास साधनकी कमी नहीं थी, सोमके क्षेत्रमें व्यस्त रहने पर भी उसने अपने दो सर्वश्रेष्ठ सेनापतियोंको भेजा और बलगेरि-यनोंकी सहायतासे पश्चिम तथा दक्षिणकी ओरसे रूमानियापर आक्रमण कर उसकी राजधानी बुखारेष्टपर कब्जा कर लिया (दिसम्बर १९१६)। शीघ्र ही रूमानियाके दो-तृतीयांशपर शत्रुओंका अधिकार हो गया। जर्मनोंने उसके उपजाऊ खेतों और तैल-कूपोंसे अपनी सामग्रीकी पूर्त्ति की।

ऐसा अनुमान किया जाता है कि ईसवी सन् १९२७ के प्रथम दिन (अर्थात् संवत् १९७३ के १७ पौष) तक ५० से ७० लाखके बीच सैनिक मारे गये और इससे कहीं अधिक आहत या रणबन्दी हुए। सबसे अधिक सैनिक रूसके हत हुए पर जनसंख्याके अनुपातसे फ्रांसके हत सैनिकोंकी संख्या सबसे बढ़ी हुई थी। मृत सैनिकोंकी संख्या बहुत अधिक थी, पर सेवा-शुश्रूषाकी आधुनिक सुव्यवस्थित प्रणालीके कारण पहलेके युद्धोंकी अपेक्षा इस युद्धमें अधिकतर आहत सैनिकोंके प्राण बचाये जा सके।

युद्धके इतिहासमें यह पहली बार था कि लोगोंने परस्पर युद्ध करनेवाले सैनिकोंके ऊपर आकाशमें जाकर युद्ध-गतिका निरीक्षण किया और हवाई-युद्धमें भाग लिया। अब युद्धके लिए हवाई जहाज अनिवार्य हो गये हैं और इनके कारण नयी भीषणताएँ उत्पन्न हो गयी हैं। जर्मनोंने इंग्लैंडपर कई बार हवाई आक्रमण किये। उनकी यह मूर्खतापूर्ण धारणा थी कि इस कार्यसे लोग भयभीत हो जायँगे। पहले तो उन्होंने

बड़े बड़े बैलून (ज़ेपलिन) इस्तेमाल किये पर पीछेसे इनकी जगह भिन्न भिन्न प्रकारके वायुयानोंसे काम लेने लगे। उन्होंने ग्रामों तथा नगरोंमें दो-तीन हज़ार मनुष्योंका तथा कुछ सम्पत्तिका भी नाश किया। कोई विशेष सैनिक अभीष्ट-सिद्धि न प्राप्त करते हुए भी उन्होंने व्यर्थ ही बड़ी बेर-हमी दिखलायी और अपने इस प्रकारके कार्योंसे अंग्रेजोंको प्रतिघातके लिए उत्तेजित किया। अंग्रेज तथा फ्रांसीसी वायु-सैनिकोंने भी फ्रीबर्ग, कार्ल्सरूहे, मेनहीम इत्यादि प्रसिद्ध जर्मन नगरोंपर, जहाँ वे आसानीसे पहुँच सकते थे, बम बरसा कर कुछ मनुष्योंको हताहत किया।

जर्मनीकी सारे संसारसे शत्रुता।

संवत् १९७२ के अन्तमें जर्मनीकी जलान्तरवाही पोतोंके सम्बन्धकी नीति तथा तटस्थ जहाजोंको अन्धाधुन्ध डुबानेके कारण एक और नया शत्रु खड़ा हो गया। यह अतलांतिकके उस पारका महान् और बलशाली प्रजातंत्र अमेरिकाका संयुक्त राज्य था। वहाँकी सरकार बहुत दिनोंसे सब कुछ सहन करती आ रही थी। युद्ध आरम्भ होनेके समय प्रेसिडेण्ट विलसनने यह घोषित कर दिया था कि संयुक्त राज्यकी सरकार पूर्ण तटस्थताका पालन करेगी और उन्होंने अमेरिकन नागरिकोंसे यह अनुरोध किया था कि वे ऐसे युद्धमें किसी पक्षकी ओरसे भाग न लें जिससे उनका कोई प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं है। पर ऐसी हालतमें, जिसमें प्रति दिन भयानक घटनाओंके समाचार पहुँचा करते थे, उदासीन बना रहना असंभव था। संयुक्त राज्यके जर्मन समाचारपत्र जर्मनी प्रभृतिको निर्दोष बतला कर युद्धका सारा दायित्व इंग्लैंडके मत्थे मढ़ते थे। इसके प्रतिकूल,

अधिकांश अमेरिकन जनता जर्मनों द्वारा बेल्जियमपर आक्रमण, लूवेनके भस्मीकरण तथा रीम्सके गिरजेके व्यर्थ विनष्टीकरणसे विशेष मर्माहत होगयी थी। वे लोग कैसरकी बेतुकी बातोंको भी नापसन्द करते थे। इसके अतिरिक्त फ्रांसके साथ उनकी बड़ी सहानुभूति भी थी क्योंकि उसने अमेरिकन क्रान्तिके समय बड़ी मदद पहुँचायी थी। जिन लोगोंके शरीरमें अंग्रेजी रक्तका अंश था उनकी सहानुभूति स्वभावतः इंग्लैंडके पक्षमें होती जाती थी।

इस प्रकार युद्धजनित तीव्र भावनाएँ संयुक्त राज्यमें भी शीघ्र ही परिलक्षित होने लगीं। जर्मन दूत तथा गुप्तचर बड़े सतर्क थे. वे इंग्लैंड इत्यादिके उद्देश्योंको और ही रूपमें प्रकट करते थे और मित्रदलके विरुद्ध अमेरिकन जनताको भड़कानेका यथाशक्ति प्रयत्न करते थे। इस कार्यमें जर्मन सरकारने बड़े ही निन्दनीय और लज्जाजनक उपायोंका आश्रय लिया। इसने कांग्रेसको उत्कोच देकर अपने पक्षमें करनेके लिए अपने दूत, काउण्ट वान बर्नस्टार्फके पास रुपये भी भेजे। आस्ट्रिया-हंगरीके सचिवको इसलिए अमेरिका छोड़नेपर विवश होना पड़ा कि उसने अपनी सरकारको एक ऐसी योजनाकी सूचना दी थी जिससे संयुक्त राज्यके लोहेके कारखाने इतने अव्यवस्थित कर दिये जाते कि वे इंग्लैंड तथा फ्रांसको शस्त्र और युद्धसामग्री कई महीनोंतक नहीं पहुँचा सकते।

जैसे जैसे समय बीतता गया वैसे वैसे प्रेसिडेण्ट विलसन बराबर जर्मनीके पास उसके जलान्तरवाही पोतों द्वारा जहाज जलमग्न करनेके क्रूर और अन्धाधुन्ध तरीकेकी शिकायत भेजते गये क्योंकि अमेरिकन यात्री ढोनेवाले लूसीटेनिया जैसे अंग्रेजी जहाज ही नहीं बल्कि अमेरिकन

और तटस्थ देशोंके जहाज भी रसातल भेज दिये जाते थे। टक्कर मारनेके पूर्व प्रायः किसी प्रकारकी सूचना नहीं दी जाती थी और इतना समय भी नहीं दिया जाता था कि लोग प्राणरक्षिका नावोंका आश्रय लें या क्षुब्ध समुद्रकी भीषणताओं-का सामना कर सकें। जिन लोगोंको जर्मनीके प्रति प्रेमका कोई विशेष कारण नहीं था उनकी क्रोधाग्नि दिन प्रति दिन अधिकाधिक तीव्र होती गयी और लोग प्रेसिडेण्ट विलसनको, जर्मन सरकारके साथ किसी प्रकारका राजनीतिक सम्बन्ध बनाये रखनेके कारण, भला-बुरा कहने लगे।

संवत् १९७३ के माघ (जनवरी) में इंग्लैण्डने खाद्य पदार्थोंका जर्मनी जाना बिलकुल रोक देनेके लिए पूर्व घोषित तटावरोधका क्षेत्र और बढ़ा दिया। इसपर जर्मनी द्वारा संसारके सामने यह घोषित किया गया कि अँग्रेजोंके अत्याचार और जर्मनोंको भूखों मार डालनेकी उसकी योजनाका विरोध करनेके उद्देश्यसे जर्मनी ग्रेट ब्रिटेनके बहुत दूर पश्चिमतक सैनिक क्षेत्र करार देना चाहता है और इसके भीतर इंग्लैंडके साथ सामुद्रिक व्यापारको सभी प्राप्त साधनोंसे रोकनेका प्रयत्न किया जायगा। जर्मनी समझता था कि इस प्रकार इंग्लैंड जिसको दूरस्थ देशोंसे ही अधिकांश खाद्य पदार्थ मंगाना पड़ता है, भूखों मरने लगेगा और तब शीघ्र ही युद्धका अन्त हो जायगा। जर्मनीकी योजनामें एक अत्यन्त अपमानजनक बात यह भी थी कि अमेरिकाके जहाजोंके लिए एक संकीर्ण मार्ग छोड़ दिया जायगा जिससे वह सप्ताहमें केवल एक ही जहाज भेज सकेगा, किन्तु शर्त यह थी कि उस जहाज पर सफेद रंगकी पट्टियाँ हों और उसपर वर्जित वस्तुएँ न लदी हों। इस प्रकार जर्मनीने खुले समुद्रके बहुत विस्तृत

भागको अपने घातक प्रयत्नोंका क्रीड़ास्थल बनाया और तटस्थ राष्ट्रोंके सर्वजन-सम्मत अधिकारोंकी जरा भी परवाह न की।

१६ माघ (१ फरवरी) को जर्मनीने इस विस्तृत सैनिक-क्षेत्रमें जलान्तरवाही पोतों द्वारा मनमानी काररवाई शुरू कर दी और कई पोतोंको रसातल पहुँचा दिया। २१ माघको प्रेसिडेण्ट विलसनने जर्मन सरकारके साथ सम्बन्धविच्छेद कर दिया और राजदूत बर्नस्टार्फको वहाँसे घर बिदा कर दिया। इस कार्यसे प्रेसिडेण्टकी कड़ी आलोचना करनेवालोंको विशेष सन्तोष हुआ। जहाजोंका डुबाना जारी ही रहा। लोकमत दिनोंदिन जर्मनीके विरुद्ध होता गया। मेक्सिकन सरकारको प्रेषित जर्मन परराष्ट्र-सचिवके एक पत्रके प्रकाशनसे शत्रुताकी मात्रा और भी बढ़ गयी। इस पत्रमें यह लिखा गया था कि यदि अमेरिका और जर्मनीके बीच युद्ध छिड़े तो मेक्सिको संयुक्त राज्यपर आक्रमण करे और वह टक्सास, न्यूमेक्सिको और अरिजोना इसके पुरस्कारमें ले ले।

अब यह बात स्पष्ट हो गयी कि युद्ध अनिवार्य है। १६ चैत्रको प्रेसिडेण्ट विलसनने कांग्रेसका एक विशेष अधिवेशन किया और सदस्योंको लक्ष्य करके एक महत्वपूर्ण भाषण किया। उसमें यह बतलाया कि जर्मनीने संयुक्त राज्यके साथ सब प्रकारसे युद्धकी घोषणा कर दी है। उन्होंने इस बातपर जोर दिया कि "हम लोगोंका उद्देश्य स्वार्थी और स्वेच्छाचारी शक्तिके विरुद्ध संसारमें शान्ति और न्यायके सिद्धान्तोंकी रक्षा करना है। संसारकी सभी स्वाधीन और स्वशासित जातियोंको प्रजातंत्रके लिए संसारको निरापद बनानेके उद्देश्यसे परस्पर मिल जाना चाहिए क्योंकि ऐसा न होनेपर

स्थायी शान्ति कभी नहीं बनी रह सकती।" उन्होने यह प्रस्ताव किया कि संयुक्त राज्यको जर्मनीके शत्रुओंकी ओरसे लड़ना और भरपूर ऋणसे उनकी सहायता करनी चाहिए। कांग्रेसकी दोनों सभाओंने इस प्रस्तावको, कि संयुक्त राज्य युद्धमें प्रवृत होनेके लिए विवश किया गया है, बहुमतसे स्वीकृत कर लिया। भारी भारी रकमें ऋण लेनेका प्रबन्ध किया गया। पुराने कर बहुत कुछ बढ़ा दिये गये और कई नये भी लगाये गये। संवत् १९७४ के ज्येष्ठ (मई) में अनिवार्य सैनिक सेवाका नियम प्रचलित किया गया जिसके कारण २१ से ३१ वर्ष तकके सभी स्वस्थ पुरुष सैनिक सेवाके लिए बाध्य हो गये। अतलांतिक पार, मित्र-दलकी सहायतामें भेजनेके लिए, बहुसंख्यक सैनिकोंकी शिक्षाका प्रबन्ध किया गया और जर्मनों द्वारा नष्ट किये गये जहाजोंकी पूर्ति करनेके लिए नये जहाज बनानेकी काररवाई शुरू की गयी। स्वेच्छाचार तथा सैनिकवादके विरुद्ध युद्धमें यथाशक्ति भाग लेनेके लिए संयुक्त राज्यकी प्रजाने बड़ी उत्सुकता दिखलायी।

संयुक्त राज्यके युद्धमें प्रवृत्त होनेका एक परिणाम यह हुआ कि संवत् १९७४ में जर्मनीके शत्रुओंकी संख्या बहुत अधिक हो गयी। क्यूबा और पनामाने शीघ्र ही संयुक्त राज्यका अनुकरण किया। यूनानने भी बहुत दिनोंके भीतरी मतभेदके बाद वेनेजिलोजके प्रभावमें आकर मित्रदलका पक्ष लिया। कुछ समयके भीतर ही लाइबीरिया, चीन और ब्राज़िलने भी जर्मनीके विरुद्ध युद्ध-घोषणा कर दी। अब यह युद्ध अक्षरशः संसारव्यापी युद्ध हो गया। संसारके डेढ़ अरब मनुष्योंकी सरकारें इस युद्धमें शामिल थीं। इनमेंसे एक अरब चौंतीस करोड़ मनुष्य मित्रदलकी ओर थे, किन्तु मध्य यूरोपीय गुटकी

ओर सम्मिलित देशोंकी आबादी सोलह करोड़से भी कम थी। इस प्रकार भूमण्डलकी सप्त-अष्टमांश जनसंख्या युद्धमें सम्मिलित थी और इसमें नौ-दशमांश एक-दशमांशके विरुद्ध जिसका नायक प्रशा था, लड़ रहा था। अवश्य ही इसमें भारत और चीनकी बड़ी भारी जनसंख्या भी शामिल है जिसका युद्धके संचालनमें प्रत्यक्ष रूपसे कोई विशेष सम्बन्ध न था। राज्य-क्रान्ति द्वारा रूसकी पुरानी सरकार नष्ट होनेके बाद संवत् १९७४ के उत्तरार्द्धसे उसकी गणना, बड़ी भारी आबादी होते हुए भी, प्रभावकारी युद्धकारियोंमें नहीं की जा सकती। इन बातोंको स्मरण रखते हुए यदि निम्न कोष्ठकोंपर ध्यान दिया जाय तो परिस्थिति स्पष्ट हो जायगी।

संवत् १९७५ के पूर्वार्द्धमें संसारव्यापी युद्ध।

मित्रदल, उनके उपनिवेश तथा अधीन राज्य।

देश	प्रवेश-काल	जन-संख्या	शस्त्रधारी सैनिक
	सं० १९७१	लाख	हजार
सर्बिया	१२ श्रावण	४५·५	३००
रूस	१६ श्रावण	१७५०	९०००
फ्रांस	१८ श्रावण	८७५	६०००
बेल्जियम	१९ श्रावण	२२५	३००
ब्रिटिश साम्राज्य	१९ श्रावण	४४००	५०००
माण्टीनिग्रो	२२ श्रावण	५·१६	४०
जापान	७ भाद्रपद	७४०	१४००

देश	प्रवेश-काल	जन-संख्या	शस्त्रधारी सैनिक
	संवत् १९७२	लाख	हजार
इटली	९ ज्येष्ठ	३७०	३०००
सानमेरीनो	१९ ज्येष्ठ	·१२	१
पुर्तगाल	२६ फाल्गुन	१५०	२००
	संवत् १९७३		
रूमानिया	११ भाद्रपद	७५	३२०
संयुक्त राज्य	२३ चैत्र	११३०	१०००
क्यूबा	२५ चैत्र	२५	११
पनामा	२६ चैत्र	४·२७	
	संवत् १९७४		
यूनान	३२ आषाढ़	५०	३००
स्याम	६ श्रावण	८१·५	३६
लाइबीरिया	२२ श्रावण	१८	·४
चीन	९ श्रावण	३२००	५४०
ब्राजिल	२९ कार्त्तिक	२५०	२५
		१३,३९४·५५	२७,४७३·४

मध्ययूरोपीय शक्तियाँ, उनके उपनिवेश और अधीन राज्य ।

युद्धके आरम्भमें

देश	प्रवेश-काल	जन-संख्या	शस्त्रधारी सैनिक
	सं० १९७१	लाख	हजार
आस्ट्रिया-हंगरी	१२ श्रावण	५००	३,०००
जर्मनी	१६ श्रावण	८०६	७,०००
तुर्की	१७ कार्तिक	२१०	३००
	संवत् १९७२		
बलगेरिया	१८ आश्विन	५०	३००
		१,५६६	१०,६००

जो देश तटस्थ रहे उनकी जनसंख्या सम्भवतः १९ करोड़ थी। हालैंड, स्विटज़लैंड, डेनमार्क, नारवे, और स्वीडेन जर्मनीके इतने निकट थे कि उससे शत्रुता नहीं ठान सकते थे, यद्यपि ऐसा प्रतीत होता था कि उनकी प्रजाके बहुतसे लोग उसके आचरणसे घृणा करते थे। स्पेन और कुछ लैटिन-अमेरिकन राज्य, जिनमें मेक्सिको और चिली भी थे, इस युद्धसे बिलकुल पृथक् रहे। पर ऐसा कोई देश न होगा जो इतने बड़े युद्धके भार और कष्टोंसे अपनेको बचा सका हो। वास्तविक तटस्थता प्रायः असम्भव थी। सर्वत्र ही वस्तुओंका मूल्य तथा कर बहुत बढ़ गये थे, आवश्यक माल पहुँचाना बन्द हो गया और वाणिज्य-व्यवसाय अस्तव्यस्त हो गया।

जर्मनोंके शत्रुओंकी वृद्धिके अतिरिक्त संवत् १६७३ के फाल्गुनसे ७४ के माघतक निम्नलिखित महत्वपूर्ण सैनिक घटनाएँ हुईं। जर्मनोंने पश्चिमी युद्धस्थलकी सैनिक पंक्ति दक्षिणमें नायोनसे उत्तरमें आरासतक छोटी करनी चाही। वे लोग देशको तबाह करते हुए पीछे हटे और फ्रांसीसियों तथा अंग्रेजोंने शत्रुके हाथमें गये हुए फ्रांसीसी राज्यके अष्टमांशपर कब्जा कर लिया। नयी रक्षा-पंक्ति बनाते समय, भयंकर आक्रमणोंके कारण, जर्मनोंको विशेष बाधा पहुँची। "हिंडेनबर्ग पंक्ति" की व्यूहरचना इतनी होशियारीसे की गयी थी कि अँग्रेजों और फ्रांसीसियों—विशेषकर वीर कनैडियनों—की विशेष हानि होनेपर भी यह ज्योंकी त्यों बनी रही और उस वर्ष उसमें कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ। वेल्जियम-तटपर अंग्रेज लोग शत्रुको इस आशासे कुछ और पीछे हटानेमें समर्थ हुए कि जीब्रजपर अधिकार हो जायगा जहाँसे जर्मन जलान्तरवाही पोत ब्रिटिश वाणिज्य नष्ट करनेके उद्देश्यसे चला करते थे। लेन्सका खनिप्रधान नगर सेंट क्वेंटिन और कम्ब्रे लेनेका प्रयत्न दूसरे वर्ष भी असफल रहा किन्तु भयानक मारकाट जारी ही रही और प्रति सप्ताह हज़ारों सैनिक धराशायी होते रहे।

स्मरण रहे कि संवत् १६७३ के आरम्भमें पूर्वीक्षेत्रमें रूस वालोंका आक्रमण निष्फल हो चुका था और मध्य यूरोपीय राष्ट्र रूमानिया राज्यके दो-तृतीयांशपर कब्जा कर चुके थे। संवत् १६७३ के अन्त (मार्च १९१७) की क्रान्तिके पश्चात्, जिसमें ज़ारकी पद-च्युति हुई, लोकप्रिय नये नेता, करेन्स्कीने रूसी सैनिकोंको एक बार फिर उत्तेजित करनेका प्रयत्न किया पर इसका कुछ परिणाम न निकला। संवत् १६७४ के उत्तरार्द्धमें

करेन्स्कीका स्थान कट्टर साम्यवादियों—बोलशेवियों—के उन नेताओंने ग्रहण कर लिया जो पूंजीवालोंके विरुद्ध युद्ध करनेके सिवाय और सब युद्धोंके विरोधी थे। ये लोग जर्मनी तथा उसके मित्रोंके साथ, सुलह करनेके लिए, बातचीत करने लगे। रूसमें बालशेवियों और प्राचीन पद्धतिके समर्थकोंमें युद्ध छिड़ गया और तबसे रूसने इस यूरोपीय युद्धमें कोई भाग नहीं लिया।

युद्धके विचारणीय विषय।

युद्धने ऐसे प्रत्येक पुराने रोगको, जिसे यूरोप सुदीर्घ शान्तिकालमें दूर नहीं कर सका था, उग्र रूप दे दिया। फ्रांसने अलसेस-लोरेनको, जो संवत् १६२७ के युद्धके पश्चात् उससे ले लिया गया था, पुनः प्राप्त करनेकी आशा कभी नहीं छोड़ी। पोलैंडवाले स्वतंत्र होकर रहना चाहते थे, बोहीमियाके उत्तरी स्लावों तथा क्रोएशिया, बोस्निआ और स्लैवोनिआके दक्षिणी स्लावोंका आस्ट्रिया-हंगरीके साथ, जिसके वे अंग हो गये थे, जैसा कुछ सम्बन्ध था उससे वे असन्तुष्ट थे। इटलीके इरेडेंटिस्ट लोग आस्ट्रियाके कुछ प्रसिद्ध तटोंपर अपना हक्र चिरकालसे दिखलाते आ रहे थे। सर्बिया और बलगेरिया द्वितीय बालकन युद्धके पश्चात् की गयी व्यवस्थाके घोर विरोधी थे। रूमानिया ट्रांसिलवेनिया और बुकोविनापर दाँत लगाये हुए था। इनके अतिरिक्त, कुस्तुन्तुनियापर रूसका अधिकार होना चाहिये या नहीं, तुर्की साम्राज्यके शेष अधिकारोंके साथ कैसा वर्ताव हो और शाम तथा ईराकपर किसका नियंत्रण रहे—इत्यादि प्रश्न बने ही हुए थे। सुदूर पूर्वमें चीन विषयक जापानकी समस्याका भी अभीतक कोई समाधान नहीं हुआ था।

युद्धकी प्रगतिसे राज्य विषयक नयी नयी कठिनाइयाँ उत्पन्न होती गयीं। संवत् १६७४ के उत्तरार्द्ध (सन् १६१७ के अन्त) में बेल्जियम, लक्जम्बर्ग, उत्तर-पूर्वी फ्रांस, पोलैंड, लिथुआनिया, कूरलैंड, सर्बिया, माराटीनिग्रो तथा रूमानियापर मध्ययूरोपीय राष्ट्रोंकी सेनाका अधिकार था। ग्रेट ब्रिटेनने बग़दाद और जेरूसलेमपर कब्जा कर लिया था। अफ्रिकाके सभी जर्मन उपनिवेश उसके शत्रुओंके हाथ चले गये थे और उसके आस्ट्रेलेशियावाले स्थानोंपर जापान और आस्ट्रेलियाने अधिकार कर लिया था। अब प्रश्न यह था कि युद्धकारियों द्वारा ये विजित स्थान पुनः लौटाये जायेंगे या नहीं। बेल्जियमका क्या होगा जिसके निवासी बुरी तरह दण्डित और तबाह किये गये हैं और उत्तर-पूर्वी फ्रांसके विषयमें क्या होगा जो नीचतापूर्वक ध्वस्त-विध्वस्त किया गया है ? इन सभी विवादस्थलोंके सम्बन्धमें युद्धकारी राष्ट्र किस प्रकार आपसमें आरम्भिक समझौता कर युद्ध रोक सकेंगे ?

उपर्युक्त सभी प्रश्न, इस संसारव्यापी समस्याके सामने कि युद्धोंका सर्वदाके लिए कैसे अन्त होगा, तुच्छ जँचते थे। आधुनिक संसार नेपोलियन कालके संसारकी तुलनामें इतना छोटा है—राष्ट्रोंका सम्बन्ध इतना घनिष्ट हो गया है और एक-को दूसरेके ऊपर इतना निर्भर रहना पड़ता है—कि युद्धको सदाके लिए बन्द कर देनेके लिए अन्तिम बार सफल प्रयत्न करनेका समय आ गया सा प्रतीत होता है। संवत् १८७२ में अतलांतिक पार करनेमें पूरे तीस दिन लग जाते थे, अब तो छः दिनसे भी कम समय लगता है और आगे वाष्प-पोतोंसे भी अधिक तीव्रगामी वायुयान इसे पार करते हुए देख पड़ेंगे।

१९१७ ई० के अन्तमें जर्मनी इ० के अधीन मध्य यूरोप

प्राचीन कालमें सरहदकी तरह समुद्र अमेरिकाको यूरोपसे और पूर्वको अमेरिकासे पृथक् करते थे पर अब तो ये मध्य-युगीय नगर-कोटोंकी तरह शाहराह हो गये हैं जिनपर सभी राष्ट्र इतस्ततः भ्रमण करते हैं। युद्धके पहले एक्सप्रेस ट्रेनें नियमित रूपसे यूरोपके एक छोरसे दूसरे छोरतक ४०।४५ मील प्रति घंटेकी चालसे दौड़ती थीं—और अब तो हवा-गाड़ियाँ भी इनका मुक़ाबिला करने लग गयी हैं—पर वियेना-की कांग्रेसके ज़मानेमें घोड़ेकी चालसे तेज सफर करना मुम-किन नहीं था। १८ वाँ लूई जितनी शीघ्रतासे पेरिसके एक भागसे दूसरे भागमें समाचार भेज सकता था उससे कहीं अधिक शीघ्रतापूर्वक तार और टेलिफोनसे पृथ्वीके एक कोनेसे दूसरे कोनेतक खबरें भेजी जा सकती हैं। बे-तारके तार द्वारा समुद्रमें बहुत दूर चले गये हुए जहाजोंके साथ भी स्थलका लगातार सम्बन्ध बना रहता है।

भोजन, वस्त्र, और अन्य आवश्यकता तथा संस्कृतिके निमित्त राष्ट्रोंका एक दूसरेके ऊपर अवलम्बित रहना ही पड़ता है। ब्रिटेनने अन्य देशोंके साथ जर्मनीका सम्बन्ध-विच्छेद कर युद्धका अन्त करना चाहा और जर्मनी यह डींग मारता था कि मैं ब्रिटेनके हजारों जहाजोंको, जो उसके लिए खाद्य पदार्थ प्रस्तुत करते हैं, रसातल भेजकर उसे भूखों मार सकता हूँ। सिर्फ युद्धकी अफवाहसे ही संसारभरके हुंडीके बाजार उलट पुलट जाते हैं। एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्रकी पुस्तकोंको पढ़ता है, दूसरोंके वैज्ञानिक आविष्कारों और अन्वेषणोंसे लाभ उठाता है और नाटकों, खेलों आदिमें शामिल होता है जर्मन, इटैलियन, फ्रांसीसी तथा रूसी लोग न्यूयार्क, वालपेरैसो या सिडनीमें होनेवाले संगीत-सम्बन्धी

कार्योंमें भाग लेते हैं। हम लोग "स्वाधीन राष्ट्रों" के विषयमें चर्चा किया करते हैं पर वास्तवमें ऐसी कुछ ही एकान्तवासी तथा जंगली जातियाँ निकलेंगी जो अन्य जातियोंसे स्वतंत्र कही जा सकती हों। अधिक मात्रामें अमेरिका यूरोपका और यूरोप अमेरिकाका अंश हो गया है और इन दोनों महाद्वीपोंका इतिहास भी संसारके इतिहासमें विलीन होता जा रहा है।

विगत युद्धसे ये सभी बातें विशेष रूपसे स्पष्ट हो गयी हैं। हेगके सम्मेलन, हेगके अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालयकी स्थापना, भिन्न भिन्न पञ्चायती सन्धियाँ—इन सबका उद्देश्य युद्धके असाधारण कष्टका निवारण करना था। मुद्रा, डाक, व्यापार और गमनागमनके द्वारा आपसमें मित्रताका भाव और सहयोग बढ़ता जा रहा था। कई अन्तर्राष्ट्रीय समितियों, महासभाओं तथा प्रदर्शनियोंके कारण भिन्न भिन्न देशोंके लोग परस्पर मिलने और अपने सामान्य हितोंको स्पष्ट देखने लगे थे।

शस्त्रास्त्र सम्बन्धी पुरानी समस्याने, विशाल स्थायी सेनाके असह्य व्यय और खतरेसे रक्षा पानेकी संभावनाने तथा पोतनाशक जहाजोंकी प्रतिस्पर्धाने एक नया ही रूप धारण किया। यह स्पष्ट था कि युद्ध समाप्त होनेपर यूरोपके राष्ट्रोंका या तो दिवाला निकल जायगा या वे ऋणके भारी बोझसे दब जायँगे।

इसके साथ ही, वैज्ञानिक आविष्कारोंकी सहायतासे तथा युद्धकी प्रबलताके कारण अपने ही भाइयोंके प्राण अपहरण करनेकी भयंकर प्रथामें इतनी शीघ्रतासे उन्नति होने लगी कि युद्धके पहले जो तैयारी पर्याप्त समझी जाती थी वह युद्धकी प्रगतिके साथ साथ नितान्त अधूरी ठहरने

लगी । बृहदाकार तोपें, वायुयान, लौहावरणयुक्त मोटर गाड़ियाँ और विषैले गैस इत्यादि प्राण लेनेके कई नये साधन प्रस्तुत हो गये हैं और जलान्तरवाही पोतों (पनडुब्बियों) ने तो सामुद्रिक युद्ध-संचालनमें पूरी क्रान्ति ही उत्पन्न कर दी है। इन सब बातोंसे ऐसी आशा हो रही थी कि कोई भी राष्ट्र ऐसी सैनिक तैयारीका बोझ अब अधिक दिनोंतक वहन नहीं कर सकेगा।

युद्धका मुख्य प्रश्न 'सैनिकवाद' प्रतीत होता है जिसमें परस्पर सम्बद्ध दो सिद्धान्त सम्मिलित हैं। पहला यह कि, क्या कूट नीतिज्ञोंको भविष्यमें ऐसी गुप्त सन्धियोंके सम्बन्धमें बातचीत करनेकी और अपने राष्ट्रोंको ऐसे गुप्त निश्चयों द्वारा प्रतिज्ञाबद्ध करानेकी इजाज़त दी जा सकती है जिनसे युद्ध छिड़नेकी आशंका हो ? दूसरा यह कि, क्या सरकारको प्रजाका बहुमत प्राप्त किये विना युद्ध घोषित करनेका अधिकार होगा ? जो राष्ट्र जर्मनीके विरोधी थे उन्होंने यह कह कर उसे दोष देना शुरू किया कि उसने ऐसा भयंकर सैनिकवाद ग्रहण किया था जिसने सारे संसारको युद्धमें संलग्न कर दिया और जो, यदि विनष्ट न किया गया तो, भविष्यकी शान्तिमें बराबर बाधक होगा। यदि हम पहले यह देख लें कि जर्मन लोग अपनी संस्थाओं और आदर्शोंको किस दृष्टिसे देखते थे, तो हम लोग उनके विरोधियोंके भावोंको समझनेमें अधिक समर्थ हो सकेंगे।

विगत सौ वर्षोंसे जर्मनोंको वहाँके दार्शनिकों, शिक्षकों, पादरियों तथा सरकारी कर्मचारियोंने जर्मनीको ही संसारका सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र समझनेकी शिक्षा दी थी। उनसे कहा जाता था कि तुम्हारी नैसर्गिक योग्यता, गुण, अन्तर्ज्ञान और शक्ति

अन्य जातियोंसे कहीं बढ़कर है। उन्हें यह भी बतलाया जाता था कि रूसी लोग बर्बर हैं और इटालियन लोग—उनसे भी बढ़कर फ्रांसीसी लोग—विलुप्त लैटिन जातियोंके वंशज हैं जिनके दोषोंके प्रति सभी शुद्ध विचारवाले जर्मनोंको घृणा प्रकट करनी चाहिए। अंग्रेज लोगोंका परिचय, यद्यपि वे जातीयताके लिहाजसे जर्मनोंके समान ही हैं, मक्कार कह कर दिया जाता था और कहा जाता था कि ये लोग अपने स्वार्थ-मय व्यापारिक उद्योगोंको धर्म और मनुष्यत्वके परदेमें छिपाये रहते हैं और जिस समय जर्मनी अपनी राष्ट्रीय एकता स्थापित करनेमें लगा हुआ था उस समय इन्होंने संसारके सभी उत्तमोत्तम स्थानोंपर अपना अधिकार जमा लिया।

जर्मनोंका यह दावा था कि हमारी विचित्र सभ्यता ऐसी है कि हम ही मानव-समाजके न्याय्य शासक और पथप्रदर्शक हो सकते हैं, किन्तु पड़ोसी राष्ट्रोंकी ईर्ष्यापूर्ण दुरभिसन्धिके कारण हम संकुचित भौगोलिक सीमाके अन्दर घिरे हुए हैं। पूर्वी सीमापर रूसवाले आक्रमणकी शंका उत्पन्न कर रहे हैं और फ्रांसीसी लोग अलसेस लोरेन जर्मन साम्राज्यमें मिलाये जानेका बदला लेनेके लिए चिल्लाहट मचा रहे हैं। इसके अतिरिक्त ब्रिटेन जर्मनीके औपनिवेशिक विस्तारको धूलमें मिलाना चाहता है। इस प्रकार चारों ओरसे शत्रुओंसे परिवेष्टित होनेके कारण जर्मनीको अजेय सेना रखनी पड़ी है जिसका असली उद्देश्य अपनी मातृभूमिको उन निरंकुश पड़ोसियोंसे बचाना है जिन्होंने गत सदियोंमें विभक्त और असहाय जर्मनीको अपना युद्धक्षेत्र बनाया था। इसके अतिरिक्त अजेय सेनाकी तथा द्वितीय विलियम द्वारा परिवर्धित नौबलकी शक्तिसे, उचित अवसर उपस्थित होते ही, जर्मनीकी संकु-

चित सीमा विस्तृत करने, इंग्लैंडका नौबलजनित दर्प चूर करने, जर्मनीको संसारके देशोंमें उन्नत स्थान दिलाने तथा उन जातियोंमें उसकी श्रेयस्कर सभ्यता फैलानेमें काम लिया जा सकेगा, जिनपर उनके ही लाभकी दृष्टिसे, शासन करनेकी उपयुक्त नैसर्गिक योग्यता उसे प्राप्त है।

फिर भी जर्मनोंसे यह कबूल कराना कि हम यौद्धिक प्रकृतिके हैं आसान काम न था। वे लोग शान्तिप्रिय जाति होनेका और अपने सम्राट्की शान्तिप्रियताका दावा करते थे और कहते थे हमने युद्ध निवारणके लिए कोई बात उठा नहीं रखी थी। उनकी दलील थी कि हमारी सेना राष्ट्रीय शासन-व्यवस्थाका एक आवश्यक अंग है। विना विरोधके आज्ञाका पालन करना और सैनिक अधिकारियोंके प्रति भक्तिभाव दिखलाना राज्यके प्रति कर्त्तव्यका मुख्य अंग था। एक जर्मन विद्वान्ने लिखा है कि "हम लोगोंके पार्थिव अस्तित्वके लिए राज्य सबसे अनिवार्य और आवश्यक वस्तु है।" राज्यके हकोंके साथ किसी प्रकारके व्यक्तिगत हितोंका संघर्ष नहीं होने देना चाहिए 'क्योंकि राज्यके भीतर सभी व्यक्तियोंके सम्मिलित हितोंसे भी इसका मूल्य बहुत अधिक है।'

राज्यके प्रधान, प्रशा-नरेश या जर्मन सम्राट्, प्रत्येक जर्मनी निवासीसे पूर्ण राजभक्तिकी आशा करते थे। उनकी उत्पत्ति होहेंजोलर्न वंशमें हुई थी। पहिले प्रशाका और फिर जर्मन साम्राज्यका संगठन इसी वंशके ग्रेट इलेक्टर, फ्रेडरिक महान्, प्रथम कैसर विलियम और द्वितीय विलियमके शासन-में हुआ था। ऐसा कहा जाता है कि युद्धके आरम्भमें द्वितीय विलियमने अपनी पूर्वी सेनासे इस प्रकार कहा था "याद रखो, तुम सर्वश्रेष्ठ जातिके हो, ईसाकी शक्ति मेरी आत्मामें

अवतीर्ण हुई है क्योंकि मैं जर्मनोंका सम्राट् हूँ। मैं सर्वशक्तिमानका साधन स्वरूप हूँ, मैं उसकी तलवार और उसका प्रतिनिधि हूँ। जो मेरी इच्छाका विरोध करेंगे उन्हें दुःखका तथा मृत्युका शिकार बनना पड़ेगा, जो मुझमें विश्वास न करेंगे उन्हें भी कष्टों और मृत्युका सामना करना पड़ेगा।"

जर्मन राष्ट्र, जर्मन सरकार, जर्मन सेना, और जर्मन कैसरके सम्बन्धमें प्रायः यही विचार लोगोंमें प्रचलित थे। युद्धके पूर्व जो लोग कैसरके दावेका नासमझीके साथ खण्डन करते थे वे राजविद्रोह करने अर्थात् सर्वश्रेष्ठ व्यक्तिके प्रति अपमान-प्रदर्शनके अपराधमें प्रायः कैद कर लिये जाते थे। युद्धारम्भके पश्चात् कैसरकी लोकप्रियता बढ़ती हुई सी प्रतीत हुई पर यह कहना असम्भव है कि समाजवादी लोगोंने और सरकारके अन्यान्य आलोचकोंने वास्तवमें होहेंजोलर्न शासनके प्रति अपने भाव परिवर्त्तित कर दिये थे या केवल देशभक्ति और कौशलपूर्ण उद्देश्योंसे प्रेरित होकर ही उन्होंने मौन धारण किया था। इसमें कोई सन्देह नहीं कि प्रशाके बड़े बड़े जमीन्दार और सैनिक वर्ग सदाकी नाईं प्राचीन राजतंत्रके ही दृढ़ समर्थक थे।

जब युद्ध छिड़ गया तब जर्मनों तथा उनके 'शान्तिप्रिय' सम्राट्ने इसके लिए अपनेको जिम्मेदार नहीं माना। कैसरने कहा कि मुझे शत्रुओं द्वारा विवश किये जाने पर अनिच्छापूर्वक शस्त्र ग्रहण करना पड़ा है। कलाकौशल, साहित्य, विज्ञान इत्यादिके सर्वप्रसिद्ध ७३ विद्वानोंके हस्ताक्षरयुक्त 'सभ्य संसारके नाम' शीर्षक एक अपील निकाली गयी थी जिसमें मानव समाजको यह चेतावनी दी गयी थी कि जर्मनीके शत्रु लोग झूठी बातों तथा मिथ्यादोषारोप द्वारा ऐसे समय जब

वह कठिन जीवन संग्राममें फँसा हुआ है उसकी इज्जत धूलमें मिलाया चाहते हैं। जबतक पहिलेसे घातमें लगी हुई बहु-संख्यक सेनाओंने जर्मनीपर आक्रमण नहीं किया तबतक सारा राष्ट्र एक मनुष्यकी तरह नहीं उठ खड़ा हुआ। यह प्रमाणित होनेपर ही कि बेल्जियमने इंग्लैंड और फ्रांसको मार्ग देना स्वीकार किया है, उसपर आक्रमण किया गया था। जर्मनीके शत्रु उसके सैनिकवादके साथ नहीं, जैसा कि वे झूठ-मूठ बहाना करते हैं, बल्कि उसकी सभ्यताके साथ लड़ रहे हैं। सम्भव है, हस्ताक्षर करनेवालोंको ये सभी बातें सत्य प्रतीत हुई हों क्योंकि उनकी सरकारने स्थितिको इसी रूपमें उनके सामने व्यक्त किया था और वे अपनी राज-भक्तिके कारण अफसरोंकी बातोंपर विश्वास करनेके लिए बाध्य थे।

जर्मन पादरी लोग अपने अनुयायियोंको यह यकीन दिलाते थे कि हमारे शत्रु "हमारी आजादीको और शान्तिके समयमें कार्य करने, गुणोंमें बढ़ जाने, संसार तथा मनुष्य मात्रके हितके लिए अपना कर्तव्य पालन करने तथा जर्मन भावोंसे संसारके दुःखोंको दूर करनेकी शक्तिको ईर्ष्याकी दृष्टि से देखते हैं।" एक पादरीने यह कहा था कि "जर्मनी किसी अपवित्र या अन्यायपूर्ण भावसे युद्धमें नहीं प्रवृत्त हुआ है। मैं इस सत्य, न्याय तथा सदाचरणके प्रगाढ़ प्रेमको जर्मन आचार-विचारका प्रधान अंश मानता हूँ। यह ऐसी वस्तु है जो अन्य राष्ट्रोंमें नहीं पायी जाती।" कुछ लोग निर्भीकताके साथ यह कह रहे थे कि "जर्मनी भविष्यत् कालके लिए ईश्वर-प्रदत्त बीज स्वरूप है और वह दुनियाके लोगोंसे ईश्वरको बचानेमें लगा हुआ है।"

कहना नहीं होगा संसारके और भागोंके लोग जर्मनों तथा युद्धके कारणोंके सम्बन्धमें कुछ और ही खयाल करते थे। सभी यह बात कबूल करते थे कि जर्मनी वृद्धिशील देश है—इसके वैज्ञानिकों तथा विद्वानोंने आधुनिक अन्वेषणों और आविष्कारोंमें बहुत कुछ भाग लिया है। पर दूसरे राष्ट्रोंने भी विज्ञान सम्बन्धी बहुत बातोंका पता लगाया है और प्रतिभापूर्ण आविष्कारों, साहित्य तथा कलाकौशलमें तो दूसरी जातियाँ जर्मनोंसे आगे बढ़ी हुई हैं।

युद्धके पूर्व कैसरके कथन तथा उसकी जर्मन देव सम्बन्धी बातचीतसे या तो विदेशी लोगोंका मनोरंजन होता या उससे उनके मनमें नफरत पैदा होती थी। सारे संसारमें जर्मनीकी सत्ताकी स्थापना चाहनेवालोंकी योजना बहुत कम लोगोंको मालूम थी, पर जर्मन सेनापति बर्नहार्डी लिखित 'जर्मनी एंड दि नेक्स्ट वार' * नामक पुस्तकसे, जो संवत् १९६८ में प्रकाशित हुई थी, जर्मनोंका कार्यक्रम बिलकुल स्पष्ट हो गया। बर्नहार्डीने लिखा था कि "संसारपर आधिपत्य जमानेके कठिन संग्राममें हम लोगोंको पीछे नहीं रहना चाहिए।" फ्रांस और इंग्लैंड जर्मनोंकी शक्तिसे अधिकाधिक भयभीत होते जा रहे थे, किन्तु तो भी जिन्हें इन सब बातोंकी अधिक जानकारी थी उन्हें भी यह युद्ध एक रहस्यमय आश्चर्य सा प्रतीत हुआ। यद्यपि यह बात सबको मालूम थी कि जर्मनीकी सेना यूरोपमें सबसे अधिक बली, सुसंघटित, और सुसज्जित है, तो भी संवत् १९७१ के श्रावणमें जब यह सेना एकाएक बेल्जियमपर चढ़ दौड़ी तो सारी दुनिया सन्न रह गयी। बेल्जियमकी बरबादी, नगर शासकोंको गोली मारना, जर्मन

---

* 'जर्मनी और भावी युद्ध'।

सैनिकोंकी क्रूरता, जनताको भयभीत करनेके लिए कठोर दण्ड देनेका निर्दय आदेश, जर्मन जासूसोंके घृणित कार्य, जलान्तरवाही पोतोंकी निष्ठुर काररवाई, इंग्लैंडपर वायुयानों द्वारा आक्रमण तथा असैनिकोंकी हत्या, रीम्सके गिरजेका विनाश और एक जर्मन कवि द्वारा लिखित 'घृणा-गीत'—इन सभी बातोंके कारण सारे संसारमें घृणा और भय छा गया। अपने प्रतिपक्षियोंकी दृष्टिमें जर्मन लोग, जो अपनेको धर्मात्मा, शान्तिप्रिय और ईश्वरके कृपापात्र मानते थे, आधुनिक अट्टिलाकी अध्यक्षतामें हूणोंसे प्रतीत होते थे जो सारी दुनिया-में अपना प्रभाव जमानेके स्वप्नको पूरा करनेके लिए संसार-भरको रण-रक्तके पारावारमें डुबानेके लिए प्रस्तुत थे।

तुरन्त रणक्षेत्रमें उपस्थित हो कर कार्य करनेकी जर्मन सेनाकी तत्परताकी ख्याति भी सारे संसारमें फैली हुई थी। कैसरको सिर्फ इतना ही कहनेकी आवश्यकता थी कि "देशपर आक्रमण हुआ है—वास्तवमें आक्रमण हुआ है या नहीं इसका निर्णय भी वही करते थे। सभी स्थानोंमें नोटिसें चिपका कर आज्ञा दे दी जाती थी कि ऐसे सभी लोग, जिनसे काम लिया जा सकता है, जनरल स्टाफ (सेनापति) के आज्ञानु-सार अभीष्ट स्थानपर भेजे जानेके लिए अमुक स्टेशनपर मौजूद रहें और जो लोग इस आज्ञाका उल्लङ्घन करेंगे वे कारा-वास या प्राणदण्डके भागी होंगे। जब अनिवार्य सैनिक कार्य-के लिए प्रस्तुत होनेकी घोषणा कर दी गयी तो सारे देशमें मुल्की शासनके स्थानमें फौजी शासन शुरू हो गया। संवत् १९७१ के मध्य श्रावणमें जर्मनी-निवासी यह समझते थे कि रूसके विरुद्ध युद्ध छेड़ा जा रहा है, किन्तु जो सैनिक बेल्जि-यमकी सीमापर भेजे गये थे उन्हें इस बातका अनुमान भी

नहीं था कि हम लोग कहाँ जा रहे हैं। ऐसे कार्यको ही सैनिकवाद और स्वेच्छाचार कहना उचित है।

दोनों युद्धकारी दलोंके मध्य पुनः शान्ति स्थापित करना कितना कठिन कार्य था, इसका पता युद्धके तृतीय वर्षमें प्रकट किये गये सन्धि विषयक विचारोंसे भलीभाँति मिल जाता है। संवत् १९७३ के मार्गशीर्ष-पौष (दिसम्बर, १९१६) में जब कि मध्ययूरोपीय राष्ट्रोंका पोलैंड, सर्बिया और रूमानियापर अधिकार हो गया था और जर्मनी चारों ओर विजयी सा प्रतीत होता था, उस समय जर्मनीने सन्धिके लिए सन्देश भेजा और यह प्रस्ताव किया कि किसी तटस्थ स्थानमें सन्धिकी शर्तोंको तै करनेके लिए युद्धकारी राष्ट्र अपने अपने प्रतिनिधि भेजें। जर्मन सरकार इस बातको भलीभाँति समझती रही होगी कि मित्रदल उस हालतमें सन्धि करनेके लिए तैयार न होगा जब कि उसके शत्रुओंको पूर्ण सैनिक विजय प्राप्त हो रही थी। यह प्रस्ताव घृणाके साथ अस्वीकार कर दिया गया पर इससे जर्मनीवालोंको यह कहनेका मौका मिल गया कि इस भयंकर युद्धको जारी रखनेकी जिम्मेदारी मित्रदलपर ही है। युद्ध छेड़नेका दायित्व चाहे जिसपर रहा हो, पर इसे अन्त करनेका प्रस्ताव सर्वप्रथम जर्मनीकी ही ओरसे हुआ। कैसर गर्वपूर्वक कह सकते थे कि मित्रदलने अन्तमें अपने कपटका पर्दा हटाकर अपनी विजय-लालसा स्पष्ट प्रकट कर दी है।

विरोधियोंके सन्धिपर विचार करनेसे इनकार करनेपर जर्मनोंको जलान्तरवाही पोतोंको अधिकाधिक प्रयोगमें लानेका बहाना मिल गया। जर्मनोंकी यह दलील थी कि यदि मित्रदल जर्मनीके विनाशपर तुला हुआ है तो उसके लिए आत्मरक्षाका कोई भी उपाय निष्ठुर नहीं समझा जा सकता।

मित्रदल जर्मनीके सन्धिविषयक सन्देशका उत्तर देने भी न पाया था कि प्रेसिडेंट विलसन बीचमें आ पड़े (१८ दिसम्बर)। उन्होंने दोनों युद्धकारी पक्षोंके नाम एक विज्ञप्ति निकालकर उन लोगोंका ध्यान इस विषयकी ओर आकर्षित किया कि दोनों दल यह बात कबूल करते हैं कि शान्ति बनाये रखनेके लिए एक संघका होना आवश्यक है जिसमें छोटे राष्ट्रोंका बचाव हो सके पर दोनोंमेंसे किसी पक्षने यह स्पष्ट नहीं किया कि किन विषयोंको लेकर वे युद्ध कर रहे हैं। उन्होंने सन्धि सम्बन्धी आवश्यक शर्तोंके सम्बन्धमें एक कांफ्रेंस करनेका विचार प्रकट किया। जर्मनीने सन्धि सम्बन्धी शर्तोंपर विचार करनेके लिए प्रतिनिधियोंकी एक सभा करनेकी रजामन्दी जाहिर की । मित्रदलने इस प्रस्तावका समर्थन नहीं किया और सन्धिके सम्बन्धमें बातचीत करनेसे इनकार कर दिया बल्कि प्रेसिडेंट विलसनको उत्तरमें यहांतक लिख दिया (जनवरी १०, १९१७ ईसवी)कि प्रायः प्रयुक्त होनेवाले "प्रत्यावर्त्तन', 'क्षतिपूर्ति' और 'रक्षा-वचन' * इन शब्दोंकी व्याख्या हो जानी चाहिये ।

मित्रदल चाहता था कि मध्य यूरोपीय राष्ट्र युद्धकालमें जीते गये सभी स्थान खाली कर दें, युद्धके कारण जो हानि पहुँची है उसके लिए क्षतिपूर्ति करें, और पूर्वमें मित्रदलसे जो स्थान बलपूर्वक या प्रजाकी इच्छाके प्रतिकूल छीने गये हैं वे लौटा दिये जायँ । राष्ट्रीयताका सिद्धान्त माना जाय, इटालियन, दक्षिणी तथा उत्तरीय स्लाव और रूमानियन लोग विदेशी शासनके भारसे मुक्त कर दिये जायँ, जो स्थान तुर्कोंके अत्याचारपूर्ण शासनमें हैं वे स्वतंत्र कर दिये जायँ और तुर्कोंका

* Restoration, Restituton and Guarantee.

यूरोपसे पूर्णतः बहिष्कार कर दिया जाय। पोलैंड जारके आधिपत्यमें ले लिया जाय, अन्ततः स्थायी शासन-प्रणालीके जरिये सारे यूरोपके पुनः संघटनका निश्चय हो। जर्मन उपनिवेशोंके सम्बन्धमें इंग्लैंड तथा जापानके उच्च कर्मचारियोंका यह कथन था कि उनपर विजेताओंका ही आधिपत्य बना रहना चाहिए।

इसका मतलब यह था कि मध्य यूरोपीय राष्ट्र अपना कुसूर मानें और हानियोंके लिए क्षतिपूर्त्ति करें। जर्मनी अलसेस-लारेनसे हाथ धोवे और आस्ट्रिया-हंगरी राष्ट्रीयताका सिद्धान्त माननेके लिए भारी भेंट दे। बलगेरिया सर्बियाका राज्यांश मिलानेका विचार छोड़ दे और तुर्की यूरोपसे अलग हो जाय, साथ ही एशियायी जातियोंका नियंत्रण भी वह छोड़ दे। मध्य यूरोपीय राष्ट्रोंकी असाधारण सैनिक सफलता और जर्मनीके इस दावेके लिहाजसे कि हम तो आरम्भसे केवल आत्मरक्षा भावसे प्रेरित होकर कार्य कर रहे हैं, ट्युटानिक मित्र-दलने इन शर्तोंको असह्य और हास्यास्पद कह कर तिरस्कृत कर दिया।

८ माघ, संवत् १९७३ को प्रेसिडेंट विलसनने सिनेटमें भाषण करते हुए कहा कि और बातोंके साथ साथ सन्धिमें छोटे बड़े दोनोंके समान अधिकार, अधीन जातियोंकी रक्षा, प्रत्येक बड़ी जातिके लिए समुद्रमें प्रवेश-मार्ग, समुद्रकी स्वतंत्रता और सेनाको परिमित करनेकी भी व्यवस्था होनी चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि ऐसी कोई सन्धि स्थायी नहीं हो सकती जो इस सिद्धान्तको नहीं मानती कि सरकारकी सारी उचित शक्ति शासितकी ही रजामन्दीसे प्राप्त होती है और ऐसा कोई हक नहीं हो सकता जिससे जातियाँ जाय

दादकी तरह एक शासकसे छीनकर दूसरे शासकके सिपुर्द की जाती रहें। यदि सैनिक आयोजन अधिकाधिक बढ़ानेकी ओर सर्वत्र प्रवृत्ति बनी रहे तो राष्ट्रोंमें समानता और निरापद होनेका भाव ही नहीं आ सकता। संसारके राजनीतिज्ञोंको सन्धिकी योजना तैयार करनी चाहिए और जिस प्रकारसे राष्ट्रोंने युद्धका आयोजन किया है और निर्दयतापूर्ण युद्ध करनेमें अपनी तत्परता दिखलायी है उसी प्रकार उन्हें अब अपनी नीति शान्तिस्थापनाके अनुकूल बना लेनी चाहिए। सैनिक आयोजनका प्रश्न भी मानव जाति तथा राष्ट्रोंके भावी अभ्युदयके लिहाजसे बहुत आवश्यक और महत्त्वपूर्ण हो गया है।

रूसकी राज्यक्रान्तिसे सन्धिके पक्षमें एक और कारण उपस्थित हो गया। रूसके श्रमजीवियोंने दूसरे देशोंके श्रमजीवियोंके नाम एक निवेदनपत्र निकाल कर उनसे यह प्रार्थना की कि आप लोग स्वेच्छातन्त्रके विरुद्ध क्रान्ति खड़ी कर इस युद्धका अन्त करें जिसका कारण पूँजीपति और देश-विजयकी लालसा है। ड्यमाने यह निश्चय किया कि रूस, प्रशा और आस्ट्रियाके अधिकारमें पोलैण्डके जो टुकड़े हैं उनको पोलिश राष्ट्रके नामसे एकमें पुनः मिला देना चाहिए और उसे अपनी शासन-प्रणाली स्वयं निश्चित करने देना चाहिए। ५ ज्येष्ठ (१६ मई) को रूसके परराष्ट्र-सचिवने ऐसी सन्धि करनेका प्रस्ताव किया जिससे न तो कोई प्रदेश राज्यमें मिलाया जाय और न क्षतिपूर्ति की जाय और उसका आधार राष्ट्रोंके स्वयं अपना भाग्य-निर्णय करनेके अधिकारपर हो। पर उस समयकी रूस सरकारने मित्रदलका परित्याग कर पृथक् सन्धि करनेका, जैसा कि जर्मनी और आस्ट्रिया चाहते थे, ख्यालतक करनेसे इनकार कर दिया।

संवत् १९७४ के अन्तमें मध्य यूरोपीय राष्ट्रों तथा बोलशेवियोंके, जिनका इस समय रूस सरकारपर अधिकार था, प्रतिनिधियोंमें सन्धिके सम्बन्धमें बातचीत शुरू हुई। पौषके आरम्भमें पोलैण्डकी पूर्वीय सीमापर स्थित ब्रेस्टलिटोव्हस्कमें ये प्रतिनिधि इकट्ठे हुए। रूसी प्रतिनिधियोंने न तो किसी स्थानपर अधिकार करने और न क्षतिपूर्ति करनेका मन्तव्य उपस्थित किया और इस बातकी शिकायत की कि मध्य यूरोपीय मित्रोंने रूसी प्रदेशोंको खाली करने और छोटे तथा पीड़ित राष्ट्रोंके ध्वस्त अधिकारोंको पुनः स्थापित करनेके सम्बन्धमें अपना विचार स्पष्ट नहीं किया है।

पर जर्मनीकी माँगोंके सामने बोलशेवी लोगोंका कोई चारा नहीं चला। फिनलैंड तथा यूक्रेनने, जो दक्षिणी रूसमें दूर तक फैले हुए हैं, संभवतः जर्मनीके प्रभावमें आकर, अपनी स्वतंत्रताकी घोषणा की। संवत् १९७४ के १९ फाल्गुनको बोलशेवियोंने मध्य यूरोपीय राष्ट्रोंके साथ सन्धि की जिसके द्वारा उन्होंने फिनलैंड और यूक्रेनको खाली करना कबूल किया और पोलैंड, लिथुआनिया, कूरलैंड तथा काकेशसके अन्तर्गत कुछ स्थान जर्मनीको भेंट किये जिनमेंसे प्रत्येक अपने इच्छानुसार अपनी शासन-प्रणाली स्थापित कर सकता था। इसके बाद शीघ्र ही राजधानी पेट्रोग्रेडसे मास्को हटा दी गयी। इसका परिणाम रूसका अंग-विच्छेद हुआ। रूसका यह विच्छेद स्थायी होगा या नहीं, यह कोई नहीं कह सकता। स्थितिकी अन्य जटिलताओंके साथ रूसमें पुनः शान्ति-स्थापनाकी एक और जटिलता खड़ी हो गयी है।

संवत् १९७४ के २४ पौष (८ जनवरी १९१८) को प्रेसिडेंट विलसनने सारे संसारकी शान्तिके निमित्त एक मन्तव्य

निकाला जिसमें १४ बातें रखी गयी थीं। उनमेंसे मुख्य मुख्य ये हैं—गुप्त रूपसे अन्तर्राष्ट्रीय समझौते या सन्धियाँ न हों; शान्ति तथा युद्ध-कालमें पोतोंका गमनागमन स्वतंत्र रूपसे हो, हाँ, अन्तर्राष्ट्रीय समझौतेके अनुसार समुद्रके कुछ भागोंमें गमनागमन रोक दिया जा सकता है; आर्थिक उलझनें दूर कर दी जायँ और सेना घटा दी जाय; औपनिवेशिक हक़ोंकी निष्पक्ष व्यवस्था की जाय; बेल्जियम पुनः पूर्व स्थितिमें कर दिया जाय और युद्धकालमें मध्य यूरोपीय राष्ट्रोंने जो स्थान अधिकृत किये हैं वे खाली कर दिये जायँ; जर्मनीने अलसेस-लारेनपर अधिकार कर फ्रांसको जो हानि पहुँचायी है उसे वह पूरा कर दे; तुर्कीके अधीन जो एशियायी राज्य हैं वे स्वतंत्र कर दिये जायँ और छोटे बड़े सभी राष्ट्रोंकी स्वाधीनता सुरक्षित रखनेके निमित्त राष्ट्रोंकी एक साधारण समिति कायम की जाय। इंग्लैंडके श्रमियोंके प्रतिनिधियोंने इस सारे कार्यक्रमको हृदयसे स्वीकार कर लिया। जर्मनीके विरुद्ध सारे संसारकी मैत्रीका क्या प्रयोजन है, यह बात इस कार्यक्रमसे इतनी स्पष्ट हो गयी जितनी पहलेकी किसी घोषणासे नहीं हुई थी।

महासमरका अन्त ।

संवत् १९७४ के ७ चैत्र (२१ मार्च १९१८) को जर्मनोंने पश्चिमी युद्धस्थलमें जोरोंका हमला शुरू किया। उनको यह आशा थी की हम मित्रदलपर पूर्ण विजयी होकर उन्हें सन्धिके लिए प्रार्थना करनेपर बाध्य करेंगे। जर्मनीकी ओरसे बड़ी शीघ्रता हो रही थी क्योंकि उसको भली भाँति मालूम था कि उसके जलान्तरवाही पोत इंग्लैंडको माथा झुकानेके लिए विवश नहीं कर रहे हैं। संयुक्त राज्यसे दिनों दिन

अधिकाधिक संख्यामें सैनिक आने लगे हैं, और रूससे सामग्री प्राप्त करनेके प्रयत्नोंमें उसे (जर्मनीको) बहुत ही कम सफलता हो रही है। इसके साथ ही जर्मन प्रजाजनोंको कई प्रकारकी तकलीफें सहनी पड़ती थीं और वे कभी इस बातकी शिकायत शुरू कर दे सकते थे कि कैसरने जिस अन्तिम विजयकी आरम्भसे ही प्रतिज्ञा की है वह जल्द प्राप्त होनेवाली नहीं दिखती!

पश्चिमी युद्धस्थलके दक्षिण और पूर्व भागमें फ्रांसोसी सेनाएँ स्थित थीं, उत्तर भागमें अंग्रेज सैनिक थे। हिण्डेनबर्ग तथा और और जर्मन सेनापतियोंने सोममें अंग्रेजी सेनाके सबसे दक्षिणी भागपर आक्रमण करनेका निश्चय किया। यदि वे इसे परास्त करनेमें समर्थ होते तो उनका ख्याल था कि वे अंग्रेजी तथा फ्रांसीसी दोनों सेनाओंका सम्बन्ध-विच्छेद कर परस्पर साहाय्य-प्रदान रोक देते। पहले तो कई दिनोंतक जर्मन लोग विजयी रहे और अंग्रेजोंको करीब करीब आमीन्स तक पीछे हटा ले गये पर फ्रांसीसी लोग शीघ्र अपने मित्रोंकी सहायताको पहुँच गये, आक्रमण रोक दिया गया और आमीन्स, प्रमुख रेलकी सड़कोंके साथ, बचा लिया गया। इस युद्धमें जैसी भयंकर मारकाट हुई वैसी पहले कभी नहीं हुई थी। इसमें चार लाखसे अधिक सैनिक हताहत या रणबन्दी हुए। जर्मनोंको कुछ विनष्ट स्थान ही हाथ लगे जहाँसे उन्हें एक वर्ष पूर्व हटना पड़ा था पर उनका आगे बढ़नेका कठिन प्रयास व्यर्थ गया। जिस भयंकर आपत्तिमें मित्र राष्ट्र इस समय पड़े हुए थे उसने इनको इस बातका यकीन दिला दिया कि उनकी भलाई सभी सेनाओं—फ्रांसीसी, अंग्रेजी, इटैलियन, तथा अमेरिकासे आनेवाली नयी सेना—को एक

ही प्रधान सेनापतिकी अध्यक्षतामें रहने देनेमें है। सबने इस बातको कबूल किया कि फ्रांसीसी सेनापति फर्डिनैंड फाक ही सम्भवतः विजय प्राप्त करानेमें समर्थ हो सकते हैं। उनका यह विश्वास ठीक होता हुआ भी देख पड़ने लगा क्योंकि शीघ्र ही स्थिति सुधरने लग गयी।

यह बात सभी लोगोंको मालूम थी कि जर्मन लोग शीघ्रही डेढ़ सौ मील लम्बी सैन्य-पंक्तिपर कहीं न कहीं अवश्य आक्रमण करेंगे, पर उनका यह आक्रमण किस स्थलपर होगा, मित्र राष्ट्र इसका केवल अनुमान ही कर सकते थे। २६ चैत्र (९ अप्रैल) को यह नया आक्रमण आरम्भ हुआ। आरास और ईपर*के बीच कैसरके सैनिकोंने कैले तथा इंग्लिश चैनल पहुँचनेके उद्देश्यसे अँग्रेजी सैनिकोंकी पंक्ति तोड़नी चाही। कुछ कालतक तो अंग्रेज लोग किंकर्त्तव्य विमूढ़ रहे पर कुछ मील पीछे हटनेपर उन्होंने मोर्चा लिया और उनके सेनापतिने आज्ञा दी कि अगर जरूरत पड़े तो अपनी जगहपर ही वीरगति प्राप्त करो। इस प्रकार पंक्ति तोड़नेका जर्मनोंका दूसरा प्रयत्न भी व्यर्थ गया। ज्येष्ठके पूर्वार्द्धमें जर्मन सेनाने तीसरी बार आक्रमण किया पर अब यह आक्रमण पेरिसकी दिशामें हुआ। उन्होंने स्वासन्स और शाटोटेयरीपर अधिकार कर लिया जिससे वे फ्रांसीसी राजधानीसे लगभग चालीस मीलके भीतर आगये। ज्येष्ठके अन्तमें, प्रथम आक्रमणमें विजित प्रदेशका और बढ़ानेके लिए, उन्होंने प्रयत्न किया। इसी स्थानपर पहले पहल अमेरिकन सेनासे जर्मनोंका मुकाबला हुआ। युद्धमें उन्होंने बड़ी वीरता तथा उत्साह दिखलाया। इसी स्थानपर जर्मनोंकी विजयका अन्त हुआ।

---

* Ypres

अमेरिकन सेनाकी पहली टुकड़ी जनरल पर्शिङ्गके नेतृत्वमें ज्येष्ठ (जून १९१७) में फ्रांस पहुँची । पर्शिङ्ग महाशय कई युद्धोंमें ख्याति प्राप्त कर चुके थे, चढ़ती अवस्थामें वे पश्चिम-में अमेरिकनोंसे लड़े थे, स्पेन युद्धमें भी उन्होंने काम किया था और फिलिपाइन द्वीपमें भीषण मोरोस लोगोंका दमन किया था ।

संवत् १९७५ के मध्य आषाढ़ तक लगभग दस लाख अमेरिकन सैनिक फ्रांस पहुँच गये । ये लोग या तो युद्धमें लड़ रहे थे या शीघ्रताके साथ शिक्षित किये जा रहे थे । इन्होंने संवत् १९७५ के मध्य ज्येष्ठतक पहली बार एक नगर ले लिया और फ्रांसीसियोंके साथ मिल कर जर्मनोंको, जो शाटोटेयरी-के समीप सैन्य-पंक्ति तोड़नेका प्रयत्न कर रहे थे, विफल करने-में बड़ी ख्याति प्राप्त की । ज्येष्ठके अन्तमें उन्होंने उक्त नगर-से उत्तर-पश्चिममें कैसरके उन चुने हुए सैनिकोंको पीछे हटाया जो उनके विरुद्ध भेजे गये थे । इन युद्धोंमें अमेरिकन युद्ध-पोतोंने बहुत कुछ काम किया । बादके सप्ताहोंमें जर्मनोंने छोटे छोटे युद्धोंमें अपने हजारों सैनिक खोये । अन्तमें ३१ आषाढ़, संवत् १९७५ (१५ जुलाई १९१८) को जर्मनोंने रीम्स लेने और बलात् पेरिस पहुँचनेके उद्देश्यसे अपना अन्तिम आक्रमण किया, पर इस आक्रमणमें उन्हें सफलता न हुई । उन्हें उलटे पाँव भागना पड़ा । दूसरे महीनेमें, फ्रांसीसियों और अमेरिकनोंने अपने सम्मिलित प्रयत्नसे जर्मनोंको मार्नसे बहुत दूर पीछे हटा दिया । इससे जर्मनोंकी पेरिसपर चढ़ आनेकी आशा सदाके लिए जाती रही । फ्रांसीसी सेनापति मैंगिनने अमेरिकनोंकी वीरताकी बड़ी प्रशंसा की । अब अंग्रेजोंने आमीन्सके दक्षिण-पूर्वमें, सोमपर

आक्रमणात्मक कार्य शुरू किया। आश्विनके मध्यतक जर्मन लोग हटते हटते पुरानी हिंडेनबर्ग सीमापर आ गये। उन लोगोंकी सैन्य-पंक्ति भी कई जगह टूट गयी और मित्रदलकी सेना लारेन सीमासे कुछ ही मील दूर रह गयी।

रणविराम-पत्रपर हस्ताक्षर होने (११ नवम्बर, १९१८) के पूर्व बीस लाखसे कुछ अधिक अमेरिकन सैनिक फ्रांसके पश्चिमी युद्धस्थलपर इतस्ततः फैले हुए थे और ऐसा अनुमान है कि लगभग चौदह लाख सैनिकोंने जर्मनोंके विरुद्ध भयानक युद्धमें प्रत्यक्षरूपसे भाग लिया। इस स्थलपर उन सभी युद्धोंका नामोद्देश करना असम्भव है जिनमें अमेरिकनोंने फ्रांसीसियोंके साथ साथ वीरतापूर्वक लड़कर शत्रुओंको पीछे हटाया। भाद्रपदके अन्तमें अमेरिकन सैनिकोंने सान-मीयेलको एकाएक जीत कर और मेट्ज़ दुर्गके सन्निकट पहुँच कर बड़ी ख्याति प्राप्त की। अंग्रेज सैनिकोंको सहायता पहुँचाते हुए उन्होंने सुदूर उत्तरमें सेण्ट क्वेंटिनपर, जहाँ हजारों सैनिक मारे गये, कब्जा कर आश्चर्यजनक वीरता दिखलायी। आर्गन वन और विशेषकर सीदानपर अधिकार करनेमें (७ नवम्बर) अमेरिकन सेनाने प्रमुख भाग लिया। संवत् १९७५ के ज्येष्ठ (जून) से मध्य मार्गशीर्ष (नवम्बर) तक अमेरिकन सेनाके लगभग ढाई लाख सैनिक हताहत, गुम या रणबन्दी हुए। अमेरिकन सैनिकोंने इस बातको स्पष्ट कर दिया कि मनुष्य, लगातार बहुत दिनोंतक शिक्षा पाये बिना भी, बड़ी बहादुरीके साथ लड़ सकता और विजयपर विजय प्राप्त कर सकता है।

फ्रांसीसी सेनापति फॉकने जो महत्वपूर्ण कार्यक्रम निश्चित कर रखा था उसका एक अंश सर्बियामें देख पड़ा। बालकन

प्रायद्वीपस्थ सर्बियन, ग्रीक, अंग्रेजी और फ्रांसीसी फौजोंने एक बार और ज़ोर मारा और बलगेरियन लोगोंको, जिन्होंने तीन वर्ष पहले जर्मनों और आस्ट्रियनोंकी मददसे सारे देशको रौंद डाला था, बड़ी शीघ्रताके साथ पीछे हटा दिया। जर्मनी और आस्ट्रिया दोनोंमेंसे कोई भी अपने मित्रको सहायता नहीं पहुँचा सका, फलतः १३ आश्विन, संवत् १९७५ को बलगेरियनोंने विवश होकर रण-विरामके लिए प्रार्थना की। शत्रुओंने पूर्ण समर्पणकी शर्तपर इसे स्वीकार कर लिया। बलगेरियन लोग अपनी सेना भंग करना तथा आस्ट्रिया-हंगरी और तुर्कीके विरुद्ध युद्ध जारी रखते समय राज्य, रेल और साधनोंको प्रयोगमें लानेका अधिकार मित्रदलको देना कबूल कर युद्धसे पृथक् हो गये। बलगेरियाके हट जानेके कारण युद्धका कुछ निपटारा होगया। यह भी स्पष्ट था कि पश्चिमी राष्ट्रोंसे सम्बन्ध-विच्छेद होजाने पर तुर्की लड़ाई जारी नहीं रख सकता था और आस्ट्रिया हंगरी भी बलगेरिया होकर आक्रमण होनेकी हालतमें शीघ्र ही हार मान लेगा। इसके बाद तुर्कीने भी आत्म-समर्पण किया। फिलस्तीनमें सेनापति एलेनबीने जरूसलेमपर कब्जा करते हुए तुर्कोंका निर्दयतापूर्वक पीछा किया। अंग्रेजी और फ्रांसीसी सेनाओंने शामको शीघ्र ही जीत लिया और दमास्कस तथा बेरूटके प्रधान नगर ले लिये। अब सीरियन लोगोंको कई सदियोंके बाद तुर्कीके अत्याचारसे फुरसत मिली। ईराककी तुर्की सेना भी अंग्रेजोंके हाथ पड़ गयी। अब तुर्कीको भी बलगेरियाकी तरह मित्रदलकी शर्तोंपर समर्पण करनेके लिए विवश होना पड़ा (१४ कार्तिक)।

इस प्रकार 'शान्तिके निमित्त किया गया जर्मनोंका बहुउद्घोषित आक्रमण' पश्चिमी रणस्थलमें पलायनके रूपमें परि-

णत हो गया और उनके पूर्वीय मित्र उनसे पृथक् हो गये। अतलांतिक पारसे आनेवाली नयी अमेरिकन सेनाओंने मित्र-दलके हृदयमें नयी आशाका संचार कर दिया क्योंकि यह सेना बहादुर, नूतन-शक्ति-सम्पन्न और जोशीली थी तथा इसका पृष्ठपोषक एक ऐसा विशाल और समृद्ध देश था जिसने अपने अटूट साधन युद्धक्लान्त मित्रदलके लिए समर्पित कर दिये थे।

अब जर्मनोंको इस बातका अनुभव होने लगा कि हमारे नेताओंने हमें बहुत बुरी तरह धोखा दिया है। पनडुब्बियोंके अन्धाधुन्ध प्रयोगसे इंग्लैंड तो शरणागत हुआ ही नहीं उलटे उसके कारण अतलांतिक पारका एक बड़ा शक्तिशाली देश भी जर्मनीका शत्रु बन गया जिसकी सेनाएँ जर्मन पनडुब्बियोंके होते हुए भी अतलांतिक महासागर पार करनेमें समर्थ हुईं। जर्मनोंने रूसके कुछ प्रान्तोंको अपमानजनक सन्धि करनेपर इसलिए बाध्य किया था कि जिसमें उन प्रान्तोंके आचार-भ्रष्ट, दुर्भिक्षपीड़ित लोग जर्मन सेना रखनेमें सहायता दें। इस उपायसे जर्मनीका कष्ट दूर नहीं हो सका। उसका व्यापार तहस-नहस हो गया, उसकी नामवरी धूलमें मिल गयी, उसका राष्ट्रीय ऋण बहुत अधिक हो गया और वह रुपये चुकानेके लिए शत्रुओंको बाध्य करनेमें भी असमर्थ था। अब उसका एक भी सच्चा मित्र नहीं रह गया। उसके दोनों पूर्वी मित्रोंने उसका साथ छोड़ दिया। केवल आस्ट्रिया-हंगरी उसको संसारके संघर्षके विरुद्ध, जो उसकी नीति और उद्देश्यके कारण उत्पन्न हुआ था, मरते-गिरते सहायता दे रहा था।

अब आस्ट्रिया हंगरी भी उसका साथ देनेमें पिछड़ने लगा। आन्तरिक मतभेद, भिन्न भिन्न अधीन जातियोंके विद्रोहकी

आशंका, खाद्य पदार्थोंके अभावजन्य निरुत्साह और पश्चिमी रणस्थलके विपरीत परिणामोंसे प्रेरित होकर उसने २१ आश्विन (७ अक्टूबर) को रणविरामपर विचार करनेके निमित्त प्रेसिडेण्ट विलसनके पास एक प्रार्थनापत्र भेजा। कार्तिकके मध्यतक उसकी सेनाएँ इटैलियनोंके सामनेसे पराङ्मुख होने लगीं। इटैलियनोंने पीआवके युद्धमें आस्ट्रियनोंको उत्तरी इटलीसे निकाल बाहर ही नहीं किया बल्कि तुरन्त ही ट्रेण्ट और ट्रीस्ट बन्दरपर कब्जा भी कर लिया। १७ कार्तिक (३ नवम्बर) को आस्ट्रिया-हंगरीने मित्रदलकी कठोर शर्तें स्वीकार करते हुए आत्मसमर्पण कर दिया।

किन्तु यूरोपके मानचित्रसे आस्ट्रिया-हंगरी पहले ही विलुप्त हो चुका था। ज़ेको-स्लोवेकियाके प्रजातंत्रकी घोषणा हो चुकी थी और जुगोस्लाव लोग भी आस्ट्रिया और हंगरीके साथ अपने पहले संबन्धको माननेके लिए तैयार नहीं थे। स्वयं हंगरीमें ही विद्रोह मचा हुआ था और प्रजातंत्रकी घोषणा कर दी गयी थी। इन्हीं कारणोंसे प्रेरित होकर २५ कार्तिकको हैप्सबर्ग वंशके आस्ट्रियन सम्राट् तथा हंगरीके नरेशने राजसिंहासन खाली कर दिया।

जर्मनी भी करीब करीब तबाह हो चला था जैसा कि बादमें प्रमाणित हुआ। आश्विनके उत्तरार्द्धमें उसके सैनिक शासकोंको यह बात साफ साफ मालूम होगयी कि मित्रदलकी बाढ़ रोक सकनेकी संभावना नहीं है। प्रधान मन्त्रीने रणविराम तथा सन्धिके सम्बन्धमें स्विस मिनिस्टरके जरिये प्रेसिडेण्ट विलसनके साथ पत्र-व्यवहार शुरू किया। प्रेसिडेण्ट विलसनने यह स्पष्ट कर दिया कि मित्रदल तबतक आगे बढ़ना बन्द न करेंगे जबतक जर्मनी आत्मसमर्पण करने और

ऐसी शर्तें माननेके लिए तैयार न हो जिनसे फिर युद्ध छिड़नेकी आशंका न हो, क्योंकि "संसारके राष्ट्र उन लोगोंकी बातोंका न कोई विश्वास करते और न कर ही सकते हैं जो अब तक जर्मन नीतिके सूत्रधार बने हुए थे।"

जर्मन युद्ध-परिषद्ने, जिसमें कैसर और युवराज भी शामिल थे, पुरानी पद्धतिको बचानेकी निष्फल चेष्टा की। सेनापति लुडेनडार्फ, जो अपने तीव्र जर्मन भावोंके कारण विशेष प्रसिद्ध थे, पृथक् कर दिये गये और मित्रदलको इस बातकी सूचना दे दी गयी कि शासनमें आमूल परिवर्तन किया जा रहा है जिसके कारण अब देशके शासनपर ही नहीं बल्कि सैनिक कर्मचारियोंपर भी जनताका पूरा पूरा अधिकार रहेगा (१० कार्तिक)।

शीघ्र ही जर्मन सरकार तत्परताके साथ सीधे सेनापति फॉकसे रणविरामके लिए पत्र-व्यवहार करने लगी क्योंकि जर्मनीके आकाशमें एक बड़ी भारी क्रांतिके बादल मंडरा रहे थे। इसके अलावा मित्रदलकी सेनाएँ चारों ओरसे जर्मनीको घेरती आ रही थीं और जर्मन सैनिक मनुष्यों और सामग्रीकी विशेष क्षति उठाते हुए भाग रहे थे। २३ मार्गशीर्ष (९ नवम्बर) के दिन सारे संसारको यह सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि सम्राट् द्वितीय विलियमने सिंहासन-त्याग कर दिया है। वह तुरन्त ही भाग कर हालैंड चले गये और जगत्पीडक होहेंजोलर्न वंशका प्रभाव अब अतीतके गर्भमें विलीन हो गया। इसके एक ही दिन पूर्व बवेरियाके नरेशको अपना सिंहासन छोड़नेपर विवश होना पड़ा था। इसके अतिरिक्त जर्मन साम्राज्यके अन्तर्गत और जो जो राजतंत्र देश थे वे भी शीघ्र ही प्रजातंत्र हो गये। २४ कार्ति

(१० नवम्बर) को बर्लिनमें एक क्रान्ति हुई और फ्रेडरिक ईबर्ट नामक एक साम्यवादी नेताने पूर्वप्रधान मन्त्रीकी अनुमतिसे मन्त्रित्व ग्रहण कर लिया । अब प्रशामें प्रजातन्त्रको स्थापना हो गयी, जर्मन साम्राज्यका अस्तित्व ही न रह गया ।

इसी बीच रण-विरामके लिए लिखा-पढ़ी भी होती रही । २२ कार्तिकको जर्मन सरकारके प्रतिनिधियोंने सैन्य पंक्तियोंको पारकर सेनापति फॉकसे भेंट की और मित्रदल द्वारा तैयार की गयी शर्तोंको ग्रहण किया ।

इनके अनुसार जर्मनोंसे कहा गया था कि वे सभी विजित स्थानों—बेल्जियम, उत्तर-पूर्वी फ्रांस, लक्समबर्ग और अलसेस-लारेन—को दो सप्ताहके भीतर खाली कर दें, जर्मन सेनाको राइन नदीके दक्षिण तटके परे हटा दें और नदीके पश्चिमके स्थानपर, जो जर्मनीके अन्तर्गत था, मित्र दलकी सेनाको कब्जा करने दें। उन सभी स्थानोंसे, जो पहले आस्ट्रिया-हंगरी, रूमानिया, तुर्की और रूसके थे, जर्मन सेना शीघ्र ही हटा ली जाय । जर्मनी अपने युद्धपोत, पनडुब्बियाँ तथा युद्ध-सामग्री मित्रोंके सिपुर्द कर दे और राइनके वामतट-की रेल-सड़कें तथा समाचार भेजनेके साधन मित्रदलके हाथमें दे दे । ये तथा अन्यान्य शर्तें जर्मनीकी ओरसे पुनः युद्धारम्भ असम्भव करनेके लिए ही रखी गयी थीं । शर्तोंके इतनी कठोर होनेपर भी जर्मनोंने उन्हें स्वीकार कर लिया । २५ कार्तिक (११ नवम्बर १९१८) को रणविराम-पत्रपर हस्ताक्षर हुए और विश्वव्यापी समरका अन्त हुआ ।

सा अनुमान किया जाता है कि इस महासमरमें छः करोड़ सैनिक प्रस्तुत किये गये थे जिनमें लगभग अस्सी लाख युद्धमें मारे गये और लगभग एक करोड़ अस्सी लाख आहत

हुए । जो लोग चङ्गे हो गये उनका चतुर्थांश जन्म भरके लिए पंगु या निकम्मा हो गया । दुर्भिक्ष, महामारी तथा कत्ल-के कारण असैनिक जनताके भी लगभग एक करोड़ सत्तर लाख मनुष्योंके प्राण गये ।

युद्धमें भाग लेनेवाले राष्ट्रोंका राष्ट्रीय ऋण बहुत बढ़ गया —मध्य यूरोपीय राष्ट्रोंका ५ अरबसे बढ़कर ४५ अरब और मित्रदलका २१ से बढ़कर ८६ अरब डालर हो गया । ५६२२ अंग्रेजी व्यापारिक पोत डुबाये गये जिनमें लगभग आधे अपने आरोहियोंके साथ डुबाये गये । फ्रांसके प्रतिनिधिमंडलने जर्मनों द्वारा उत्तर फ्रांसमें की गयी क्षतिका अन्दाजा १३ अरब डालर लगाया है । इन अंकोंसे यह स्पष्ट मालूम हो जाता है कि महासमरमें धनजनकी जो हानि हुई वह अनु-मानके परे है ।

जब संयुक्त राज्य अमेरिका युद्धमें सम्मिलित हुआ उस समय सभी युद्धकारी राष्ट्र थककर युद्धसे तङ्ग आ गये थे । संयुक्त राज्यकी जनसंख्या और प्रभूत सम्पत्तिके लिहाजसे यूरोपीय युद्धकारियोंकी हानिके आगे उसकी धन-जन सम्बन्धी हानि कुछ नहीं थी, फिर भी इसी हानिसे उसको युद्धकी भयं-करताका काफी अनुभव हो गया और इस बातका विश्वास हो गया कि भविष्यमें ऐसी प्रलयकारिणी घटनाको रोकनेके लिए संसारके अन्य भागोंके साथ सहयोग करनेकी आव-श्यकता है ।

वर्सेल्जकी सन्धि और राष्ट्रसंघ ।

मित्र राष्ट्रोंने यह निर्णय किया कि हमारे प्रतिनिधि विजितों-के साथ सन्धिकी शर्तोंका निश्चय करनेके निमित्त पेरिस तथा

उसके निकटस्थ वर्सेल्जमें एकत्र हों। वाद-विवाद तथा अन्तिम निर्णयमें पाँच बड़े राष्ट्रों—ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस, संयुक्त राज्य अमेरिका, इटली और जापान—ने प्रमुख भाग लिया। इनके अतिरिक्त कनाडा, आस्ट्रेलिया, न्युजीलैंड, दक्षिण अफ्रिका, भारत, ब्राजिल और अन्यान्य ग्यारह लैटिन अमेरिकन प्रजातंत्र, बेल्जियम, सर्बिया, यूनान, रूमानिया, पोलैंड, जेकोस्लोवेकिया, हजाज, चीन, स्याम, और लाइबीरियाके भी प्रतिनिधि इसमें शामिल हुए थे। इस प्रकार भूमंडलमें चारों ओर फैले हुए ३२ राज्योंने इसमें भाग लेने, या कमसे कम, इसकी महत्वपूर्ण कार्यवाहीपर दृष्टि रखनेके निमित्त अपने प्रतिनिधि भेजे थे। जो राष्ट्र तटस्थ थे वे इसमें शामिल नहीं किये गये।

संघके सार्वजनिक अधिवेशन बहुत ही कम और उत्साहहीन होते थे। सभी कार्य कमीटियोंमें विभक्त होकर होते थे और सबकी रिपोर्ट "पञ्च महत्" के पास भेजनी पड़ती थी। परामर्श करनेवालोंमें प्रेसिडेण्ट विलसन, लायड जार्ज, और वयोवृद्ध क्लेमेंशो सबसे प्रमुख थे। प्रेसिडेण्ट विलसन सन्धिमें राष्ट्रसंघको शामिल रखनेपर तुले हुए थे जिसमें भविष्यमें युद्ध छिड़नेकी संभावना न रह जाय। क्लेमेंशो अपने राष्ट्रकी ओरसे कह रहे थे कि वह जर्मनीको इतना कमज़ोर करनेके लिए व्यग्र है जिसमें वह संवत् १९७१ की तरह पुनः फ्रांसपर आक्रमण करने योग्य न रह जाय। शांतुंग चीनको मिले या जापानको और फ्यूम नगर इटलीको दिया जाय या नहीं, इन प्रश्नोंको लेकर एक बार ऐसा प्रतीत हुआ मानो पंच-महत् आपसमें ही लड़ जायँगे। फिर भी सभी टेढ़े प्रश्नोंपर अन्तमें सुचारु रूपसे समझौता हो गया और जर्मनीके साथ सन्धि सम्बन्धी शर्तें, जो कमसे कम ढाई-तीन सौ पृष्ठोंमें आयँगी, सन्धि-सम्मेलनके

सामने पेश की गयीं और स्वीकृत हो गयीं (१६ वैशाख, संवत् १९७६)।

जब जर्मनीको इन शर्तोंका हाल मालूम हुआ तो उन्होंने इस सन्धिको प्रतीकारात्मक और अपने देशके लिए विघातक कहना शुरू किया, पर उनके लिए दूसरा कोई मार्ग न था। १४ आषाढ़को उनके प्रतिनिधियोंने, वर्सेल्जके उसी राजभवनमें, जहाँ संवत् १९२७ में प्रथम विलियम तथा बिस्मार्कने जर्मन साम्राज्यकी घोषणा की थी, अनिच्छापूर्वक सन्धिपत्रपर हस्ताक्षर कर दिये। इसके ठीक पाँच वर्ष पहले, इसी दिन फर्डिनण्डकी हत्या हुई थी जिससे युद्धके लिए तात्कालिक कारण उत्पन्न हुआ था और जर्मनी पूरी आत्मनिर्भरताके साथ झटपट उसमें प्रवृत्त हो गया था। युद्धसे निकलने पर उसने अपनेको अत्यन्त निर्बल और अपमानित पाया।

जर्मनीने अलसेस-लारेन फ्रांसको दे दिया. पोज़ेन और पश्चिमी प्रशाका अधिकांश भाग उसने पोलैंड प्रजातंत्रको दे दिया और यह कबूल किया कि कुछ पूर्वी प्रान्त भी, यदि वहाँके निवासी चाहें तो, उसमें शामिल हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त यदि श्लेसविगवाले डेन्मार्कमें मिलना चाहें तो उनको भी उसने वही अधिकार दे दिया। उसने अफ्रिका तथा प्रशान्त महासागरके सभी उपनिवेश समर्पित कर दिये जिन्हें ब्रिटिश साम्राज्य, फ्रांस और जापानको दे डालनेका निश्चय हुआ।

सन्धिद्वारा यह निर्धारित किया गया कि जर्मनीकी सैन्य-संख्या कभी एक लाखसे अधिक न हो और वहाँसे अनिवार्य सैनिक सेवा उठा दी जाय। जर्मनीके युद्धपोत घटाकर १२ कर दिये जायँ और वह पनडुब्बियोंका प्रयोग न कर सके।

राइनके दक्षिण तटवर्ती किले और हेलिगोलैंडका किला तोड़ दिया जाय। जबतक सन्धिकी शर्तोंका पालन न हो तबतक मित्र-दलकी सेना राइनके पश्चिमी किनारेपर डटी रहे। जर्मनी युद्ध सामग्री न तो बाहर भेजे और न बाहरसे मँगावे और अपने यहाँ परिमित मात्रामें ही तैयार करे। ये धाराएँ जर्मन सैनिकवाद-जनित खतरेको सर्वदाके लिए दूर करनेके निमित्त रखी गयी थीं।

जर्मनीने युद्धकालमें मित्र-राष्ट्रोंको जो असीम क्षति पहुँचायी थी उसका दायित्व उसने अपने ऊपर ले लिया। नष्ट किये गये वणिक पोतोंकी पूर्त्ति उसे अपने युद्ध पोतोंको वणिकपोतोंमें परिणत कर तथा नये पोत बनवा कर करनेको कहा गया। इसके अतिरिक्त यह भी तै हुआ कि उसे जर्मन सेना द्वारा की गयी क्षतिके बदलेमें क्षति पूर्ति स्वरूप भारी रकम देनी पड़ेगी जिसमें ५ अरब डालर तो आरम्भमें ही देने पड़ेंगे और पीछे अन्तर्राष्ट्रीय क्षतिपूर्ति परिषद् जो रकम दिलाना उचित समझेगी वह सब भी देनी होगी। फ्रांसको, उसकी विशेष हानियोंकी पूर्तिमें, सरेंका कोयलावाला स्थान दिया गया।

सन्धिका सर्वप्रथम और सर्वप्रसिद्ध अंश राष्ट्र-संघकी योजना है। यह योजना मानव-जातिके इतिहासमें विशेष महत्त्व-पूर्ण और व्यापक योजनाओंमेंसे एक है। इस संघमें वे राज्य तथा उपनिवेश सम्मिलित हो सकेंगे जो स्वच्छन्द रूपसे अपना शासन आप करते हैं, बशर्त्ते कि वे इसमें शामिल होना चाहें और शामिल कर लिये जायँ। आरम्भमें जर्मनी और उसके मित्र कुछ कालके लिए बाहर रहेंगे और रूस तथा मेक्सिको तबतक शामिल नहीं किये जायँगे जबतक उनमें सुदृढ़ शासन भलीभाँति स्थापित न हो जाय। संघका स्थायी कार्यालय

तथा कर्मचारी जिनेवामें रहेंगे। इसमें एक एसेम्ब्ली होगी जिसमें प्रत्येक सदस्यको एक एक मत देनेका अधिकार होगा—इसमें ब्रिटिश साम्राज्यके अंग भी शामिल होंगे। इसके अलावा एक कौंसिल होगी जिसमें पंच-महत्—संयुक्त राज्य अमेरिका, ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस, इटली और जापान—के और ऐसे चार राज्योंके प्रतिनिधि होंगे जिनका चुनाव एसेम्ब्ली द्वारा समय समयपर हुआ करेगा। एसेम्ब्ली और कौंसिलकी बैठकें नियत समयपर हुआ करेंगी, कौंसिलकी बैठक वर्षमें कमसे कम एक बार होगी। विशेष महत्वपूर्ण निर्णयके लिए सर्वसम्मतिका होना आवश्यक है।

युद्ध या युद्धकी धमकी या कोई ऐसा विषय, जिससे संसारकी शान्तिपर प्रभाव पड़ता हो, संघसे सम्बन्ध रखने वाला विषय माना जायगा और राष्ट्रोंकी शान्ति-रक्षाके लिए संघ उचित काररवाई करेगा। संघके सदस्य अपने ऐसे झगड़ोंको, जिनसे युद्ध ठन जानेकी संभावना रहती है, पंचायत अथवा एसेम्ब्ली या कौंसिल द्वारा जाँचके लिए पेश करना स्वीकार करते हैं। यदि झगड़ा पंचायतके लिए सिपुर्द हुआ तो इसका आशय यही है कि वे युद्धका आश्रय न ले सकेंगे, वे पंचायतका निर्णय माननेके लिए बाध्य हैं। यदि झगड़ा जाँचके लिए पेश किया गया है तो कौंसिल या एसेम्ब्लीको पूरी जाँच कर छः मासके भीतर रिपोर्ट तथा इसके सम्बन्धमें अपनी सिफारिश भेज देनी चाहिए। यदि वादी-प्रतिवादीको छोड़ कर सभी राष्ट्र रिपोर्ट तथा सिफारिशके सम्बन्धमें एकमत हों तो वादी-प्रतिवादी युद्धका आश्रय न लेंगे और यदि सभी एकमत न हों तो वादी-प्रतिवादी रिपोर्टके तीन मासके भीतर किसी भी हालतमें युद्ध न छेड़ेंगे।

यदि इन शर्तोंकी अवहेलना कर कोई सदस्य युद्ध छेड़ दे तो उसका यह कार्य संघके सभी सदस्योंके विरुद्ध युद्ध छेड़ना समझा जायगा। इस हालतमें वे सदस्य उस अपराधी सदस्यके साथ सभी प्रकारका व्यापारिक तथा आर्थिक सम्बन्ध-विच्छेद कर देंगे और नागरिकोंमें भी सभी प्रकारका सम्पर्क रोक दिया जायगा। संघके सदस्य एक दूसरेके प्रदेशोंकी तथा उनकी राजनीतिक स्वतंत्रताकी रक्षा और सम्मान करनेकी प्रतिज्ञा करेंगे।

संघके समय-पत्रमें स्थायी अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालयकी भी व्यवस्था की गयी है। सङ्घकी कौंसिल शस्त्रास्त्र घटाने और यौद्धिक सामग्रीकी तैयारीका नियंत्रण करनेके लिए एक योजना तैयार करेगी। सभी सन्धियोंकी रजिस्ट्री संघमें की जायगी और वे सर्वसाधारणमें प्रकाशित कर दी जायँगी।

कुछ प्रदेश तथा अर्द्धसभ्य जातियाँ, जो पहले मध्य यूरोपीय राष्ट्रोंके अधीन थीं और अपने पैरोंपर खड़ी होने योग्य नहीं हैं,—यथा तुर्क साम्राज्यका कुछ अंश, मध्य तथा दक्षिण-पश्चिम अफ्रिका और प्रशान्त महासागरके दक्षिणी द्वीप—संघकी अभिभावकतामें रहेंगी। 'शासनादेश'की प्रथाके अनुसार इन जातियोंकी अभिभावकता सभ्य राष्ट्रोंको दे दी जायगी और उन्हें इनकी भलाई और उन्नतिका ध्यान रखना होगा। 'शासनादेश' प्राप्त राष्ट्रोंके अधिकारोंकी पूरी पूरी व्याख्या कर दी जायगी और उन्हें प्रतिवर्ष संघके पास अपनी रिपोर्ट भेजनी होगी। सन्धि द्वारा राष्ट्रसंघकी देख-भालमें एक "अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर संघटन" स्थापित करनेकी व्यवस्था भी की गयी क्योंकि मजदूरोंकी शारीरिक, मानसिक और नैतिक उन्नतिका अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिसे विशेष महत्व है। इस संघटनका

उद्देश्य सारे संसारमें श्रमियोंकी दशा सुधारना और पुरुषों, औरतों तथा बच्चोंके लिए सुविधाजनक परिस्थिति उत्पन्न करना है ।

महासमरके परिणाम स्वरूप यूरोपका मानचित्र बहुत कुछ परिवर्तित हो गया । जर्मनीका आकार बहुत कुछ घटा दिया गया और मित्रदलकी शर्तोंने उसकी सेनाको बड़ी सावधानीसे परिमित कर दिया । हैप्सबर्गका प्राचीन राज्य आस्ट्रिया-हंगरी टुकड़े टुकड़े हो गया ।

संवत् १९७६ (सितम्बर, १९१९) की एक सन्धिके अनुसार आस्ट्रियाने हंगरी, ज़ेकोस्लोवेकिया, पौलैंड, और जुगोस्लावियाकी पूर्ण स्वतन्त्रता स्वीकार कर ली । जर्मन आस्ट्रियाने एक छोटे स्वतन्त्र प्रजातंत्रका रूप धारण कर लिया । कुछ प्रदेशोंके जेकोस्लोवेकिया, रूमानिया तथा जुगोस्लावियामें मिल जानेके कारण हंगरीकी सीमा बहुत संकुचित हो गयी । पोलैण्डके उत्तरमें पुराने रूस साम्राज्यके अंशसे बने हुए कुछ नये स्वाधीन राज्य—लिथुआनिया, लटाविया, एस्थोनिया और फ़िनलैंड—मानचित्रमें देख पड़ते हैं ।

अब इटलीका विस्तार एड्रियाटिकके उत्तर-पूर्व तक है और यूनान इजीयन सागरके पारतक पहुँच गया है । तुर्क सुलतानका पुराना साम्राज्य घट कर कुस्तुन्तुनिया और लघु-एशियामें रह गया है, और काकेशस, शाम तथा ईरानमें नये नये राज्योंकी सृष्टि होती हुई सी प्रतीत होती है । साधारणतः अब मानचित्रका विभाग अधिकतया राष्ट्रीयताके अनुसार ही देख पड़ता है । यही एक महासमरका अभ्रान्त और आशाजनक परिणाम है क्योंकि इससे परस्पर मतभेद उत्पन्न होनेका एक प्राचीन कारण दूर हो जाता है ।

जर्मनीकी पराजयके बाद यूरोप तथा अमेरिकाके लिए, सबसे अधिक चिन्ताजनक बात रूसकी स्थिति थी। लेनिनके नेतृत्वमें साम्यवादियोंने पूर्ण सामाजिक तथा आर्थिक क्रान्ति उत्पन्न करनेका प्रयत्न किया जिसका उद्देश्य यह था कि मजदूर श्रेणीको केवल वहाँके शासनपर ही नहीं बल्कि भूमि, कारखाने और आम व्यवसायपर अधिकार प्राप्त हो जाय और उनकी व्यवस्था मजदूरोंके हितकी दृष्टिसे होने लगे। किसानोंको बड़े बड़े भूमिपतियोंकी रियासत और धनी किसानों तककी भूमि ले लेनेका अधिकार दे दिया गया। मजदूरोंके लाभके लिहाजसे राष्ट्रने कारखानों, बैंकों और खानोंपर अधिकार कर लिया।

पुराने शासनके स्थानमें सोवियत (कौंसिल) प्रथा चलायी गयी। इन कौंसिलोंके प्रतिनिधि पहलेकी तरह भिन्न भिन्न क्षेत्रोंके निवासियों द्वारा निर्वाचित होनेके बदले भिन्न भिन्न कारखानों, व्यापारों और पेशोंके मजदूरों तथा दिहातोंके किसानों द्वारा चुने गये।

स्वभावतः इन क्रान्तिकारी परिवर्तनोंके कारण तीव्र विरोध उत्पन्न हो गया। इस विरोधपर विजय पानेके लिए साम्यवादियोंने स्वतंत्रताके कई तरीकोंको दबा दिया और कुछ ऐसे मनमाने उपायोंका आश्रय लिया जिनसे वे जारके स्वेच्छाचारी शासनके समयमें चिर कालतक परिचित थे। ट्राट्स्कीने मजदूर श्रेणीको सर्वेसर्वा बनानेके उद्देश्यसे 'लाल' ॐ सेनाका संघटन किया। वर्तमान व्यवसाय-प्रथाको बलात् दूर कर देने और व्यक्तिगत सम्पत्तिपर अधिकार कर

ॐ "लाल" रंग साम्यवादका परिचायक चिह्न है। साम्यवादियोंने यह चिह्न आमतौरसे सभी मनुष्योंकी नसोंमें बहनेवाले रक्तके रंगसे

लेनेसे जो अत्याचार हुए उनके कारण यूरोपीय राष्ट्र क्षुब्ध हो गये। ब्रेस्ट लिटोव्स्ककी सन्धिके पश्चात् उनको इस बातका यकीन होगया कि साम्यवादी जर्मनोंके पक्षपाती हैं। उनके रूसस्थित दूतोंने साम्यवादियोंके विरुद्ध लोगोंको भड़काना शुरू किया। जेकोस्लोवेकियाकी फौजकी टुकड़ियोंने, जो युद्धके समयमें रूसमें भाग गयी थीं, साइबीरियापर कब्जा कर लिया और इनको अंग्रेजी, जापानी तथा अमेरिकन फौजोंने, जो साम्यवादियोंको दबाने और वहाँ अमन-चैन कायम करनेके लिए ब्लाडीवास्टॉकमें उतरी थीं, विशेष सहायता पहुँचायी। रणविरामके बाद भी साम्यवादियोंके साथ शत्रुता चलती रही। बाहरवालोंके आक्रमण, गृहकलह उपस्थित होनेकी सम्भावना, और उनके नेताओंको मार डालनेकी कोशिशसे साम्यवादियोंने पैशाचिक शासन शुरू कर दिया जो कई महीनोंतक कायम रहा। साथ ही यह धमकी दी जाती थी कि रूसकी यह साम्यवादी क्रान्ति और देशोंमें भी पहुँचायी जायगी और दरअसल जर्मनी तथा हंगरीमें ऐसे प्रयत्न हुए भी थे। यह बहाना पेश कर कि साम्यवादी सारे रूस देशके प्रतिनिधि नहीं हैं, रूसमें साम्यवादके विरोधमें कई सरकारें कायम हो गयीं पर ये सभी नष्ट कर दी गयीं। पूर्वी साइबीरिया-स्थित जापानी सेनाको छोड़ सभी विदेशी सेनाएँ वापस बुला ली गयीं और साम्यवादी रूसके स्वामी हो गये।

जिस प्रकारसे संयुक्त राज्य अमेरिकाको युद्धमें अनिवार्य रूपसे सम्मिलित होना पड़ा उससे यह बात स्पष्ट हो गयी है कि अबसे उसका इतिहास शेष सभ्य संसारके इति-

---

ग्रहण किया है। उनका यह ख्याल है कि इस रक्त-रंगके सम्बन्धसे सभी मजदूरोंको, चाहे वे कहीं हों, अपना सुहृद समझना चाहिए।

हासके साथ बँधा रहना अनिवार्य है। वाष्प-पोतों और तारके कारण भूमण्डलके देशोंकी दूरी बहुत कम हो गयी है और राष्ट्रोंका पारस्परिक सम्बन्ध पहलेसे अधिक घनिष्ठ हो गया है। इसे स्पष्ट करनेके लिए केवल यही बतला देना काफी है कि संयुक्त राज्यके लोगोंको भी रूसकी परिस्थितिसे भय उत्पन्न हो गया था कि कहीं वहाँ भी रूसकी देखा-देखी सारी व्यावसायिक प्रथा उलट-पुलट न जाय।

अनुक्रमणिका ।

अनुक्रमणिका

अ

अंग्रेजी राजनीति, बीसवीं सदीके मध्यमें १७५

अंग्रेजोंका आक्रमण, ईराक इत्यादिपर २३३

अगडिरमें जर्मन क्रूजर २१६

अड्रियानोपुलका घेरा २१८

अधिकारपत्र, अठारहवें लूईके समयका १११

" , इंग्लैंडका ११

अनिवार्य सैनिक सेवा, अमेरिकामें २४६

" , इंग्लैंड इत्यादिमें २३९

अन्तर्राष्ट्रीय क्षतिपूर्त्ति परिषद् २८०

अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय २५४, २८२

अन्तर्राष्ट्रीय मजदूरसंघटन २८२

अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति-सम्मेलन १७४

अब्दुल हमीदकी च्युति १८९

अमेरिकनोंकी वीरता २७०, २७१

अमेरिका का सम्बन्धविच्छेद, जर्मनीसे २४५

" की रणघोषणा, जर्मनीके विरुद्ध २४२

अमेरिका की सहानुभूति, फ्रांस और इंग्लैंडके साथ २४३

" के युद्धमें शामिल होनेका परिणाम २४६

" , दक्षिण, में स्पेनके आधिपत्यका अन्त १७२

अलबानिया, स्वतंत्र राज्यके रूपमें २२०, २२१

अलसेस-लारेन का प्रश्न १५२

" की प्राप्ति फ्रांसको २७९

अलैकजेंडर प्रथम ९१

" और नेपोलियनमें मनोमालिन्य १००, १०१

" की योजना, इंग्लैंड और फ्रांसमें मैत्रीके लिए ८८

आ

आदम स्मिथ १६३, १६७

आयरलैंडका प्रश्न १८२

आरासका आक्रमण २६९

आरेंज वंशका शासन, हालैंडपर १०६

आर्टवाके काउण्टका देशत्याग ४५

आर्टवाके काउण्टका प्रयत्न, प्रतिघातके निमित्त १११,११२
आर्थर यंग ८
आस्किथ १८१,१९८,२२७
" का प्रस्ताव, इंग्लैंडकी लार्डसभाके विरुद्ध १७९
" की प्रतिज्ञा, साम्राज्य-संघटनके सम्बन्धमें १८४
आस्ट्रियन सम्राट्का सिंहासन-त्याग २७४
आस्ट्रिया और पीडमांटमें सुलह १४२
" और प्रशाके बीच युद्ध-घोषणा १४८
" की क्षणिक सन्धि, फ्रांसके साथ ६९
" की पराजय, जर्मनी द्वारा २०८
" " नेपोलियन द्वारा ६८,६९,१००
" " फ्रांस द्वारा ६१
" " माजेण्टामें तथा सालफेरिनोमें १४२
" की प्रधानता, यूरोपमें, वियेना कांग्रेसके बाद १२४
" की युद्ध-घोषणा, फ्रांसके विरुद्ध ९९
" " संवत् १९७१ में २२५
" की सन्धि, फ्रांसके साथ ७९
आस्ट्रिया के साथ फ्रांसका युद्ध ५१-५३,८९
" पर आक्रमण करनेका रूसका प्रयत्न २३१
" , मध्य यूरोपकी उन्नतिका बाधक १३०

इ

इंग्लैंड और जर्मनीकी प्रतिद्वन्द्विता २१४
" " जापानमें मैत्री २१४
" " नेपोलियन ८७
" " फ्रांसमें युद्ध ८८,८९
" " फ्रांसमें समझौता २१४
" " रूसमें मेल २१४
" का अधिकार, स्वेज नहरपर १७२
" का नौबल २०९,२२२
" का राज्यविस्तार १७२
" का संरक्षण, मिश्रपर १७२
" का समुद्रपर आधिपत्य २३४
" की युद्धघोषणा, जर्मनी-के विरुद्ध २२७
" की सैन्यवृद्धि, युद्ध-स्थलमें २३७
" के उपनिवेश १७३
" के साथ फ्रांसका युद्ध ७२

इंग्लैंडमें दरिद्रताकी समस्या १९९
इटली का प्रथम स्वातंत्र्ययुद्ध १३१
,, का प्रयत्न, स्वाधीन होनेके निमित्त १२०-१२४,१२६, १३०,१३१
,, का युद्धमें शरीक होना, मित्र-राष्ट्रोंके पक्षमें २३३
,, का शस्त्रग्रहण, आस्ट्रियाके विरुद्ध १३३
,, का संघटन १५५
,, की युद्धघोषणा, तुर्कीके विरुद्ध २१८
,, के साथ तुर्कीका युद्ध १८९
,, ,नेपोलियनके पतनके बाद १२०
,, पर आष्ट्रियाका पंजा १२०,१२१
,, में राजनीतिक एकताका अभाव ११९,१३३
,, में सुधार, नेपोलियनकृत ११९
इटैलियन पार्लमेंट, प्रथम १४३
इटैलियन संघ १३१

उ

उपनिवेश, यूरोप वालोंके १७२
उत्तमाशा अन्तरीप १७२

ए

एकरका युद्ध ७४
एण्टवर्पके दुर्गपर जर्मनोंका अधिकार २२९
एल्बाद्वीपमें नेपोलियन १०५, १०७
एवेअर ६३
एस्टेट्स जेनरल २६,२७,२९,३०, ३१,३७
,, का प्रथम अधिवेशन ३१
,, को आमंत्रण २९

ऐ

ऐक्य तथा उन्नति-समिति, तुर्कीकी १८८

औ

औस्टर्लिट्जका युद्ध ८९,९१

क

कम्पो फर्मियोकी सन्धि, आस्ट्रिया और फ्रान्सके बीच ६९,७२,८९
कम्यून, पेरिसका नगर-शासन ३५
करेन्स्की, रूसके राष्ट्र-सूत्रधार १९४, १९५
कांस्टेण्टाइन, राजा, का निर्वासन २३८
कागजी अवरोध,ब्रिटिश द्वीपोंका ९४
,, ,, फ्रांसीसी तथा मित्रोंके नौस्थानोंका ९४
कागजी सिक्कोंकी बहुलता, फ्रांसीसी क्रान्तिके समय ४१

कामंससभा का प्राधान्य, इंग्लैंड-
में १७५-१७९
„ पर धावा, स्त्रियोंका १९६
कारखानोंकी प्रथासे लाभ १६२-१६४
कारलस, पुर्तगालनरेश, की
हत्या १८६
कार्नोकी सैनिक विजय ६१
कार्बोनरी संस्था, इटलीकी १२०-१२२
कार्ल्सबाडमें जर्मन राष्ट्रसंघका
अधिवेशन ११६
कावूर १४१,१५५
„ और तृतीय नेपोलियनकी
मंत्रसभा १४१
कास्टोटजाके युद्धमें चार्ल्स एल-
बर्टकी पराजय १३३,१३६
किआऊ-चाऊपर जापानका
अधिकार २३२
किलोंका भस्मीकरण, फ्रांसके
सामन्तोंके ३६
कुलीनोंका प्रयत्न, फ्रांसपर आक्र-
मण करनेका ४५
कुस्तुन्तुनिया का बलवा १८९
„ लेनेका प्रयत्न,
अंग्रेजोंका २३३,१५८
कूरलैंड इत्यादिपर जर्मनोंका
अधिकार २३१
कृषक-दासताका अंत, प्रशामें १०३
„ „ फ्रांसमें ३६
केसमेंट, सर राजर, प्रभृतिको
प्राणदण्ड १८३
कैथरिन, द्वितीय १५६
कैलोन का भाषण, राज्यकी
स्थितिके सम्बन्धमें
२६,२७
„ की नियुक्ति, प्रधान
अर्थ-सचिवके पदपर २४
„ की पदच्युति २७
„ के प्रस्ताव, बुराइयोंके
सम्बन्धमें २५
कैसरका दावा, प्रजाकी राज-
भक्तिका २५७,२५८
कोड नेपोलियन ८५
कोलबर्ट १६७
कोशूट, हंगरी प्रजातंत्रका
अध्यक्ष १३६
क्रान्तिकारी आन्दोलन, इटली
इत्यादिमें १२६
क्रान्ति न्यायालय, पेरिसका ६१
क्रीमियन युद्ध १७३
„ और इंग्लैंड १५८
„ का सूत्रपात १४०,१४१
क्रोएशियनोंका बलवा, हंगरी-
के विरुद्ध १३५
क्षतिपूर्त्तिका लिया जाना, फ्रांससे १५२
क्षमाप्रदानकी घोषणा, फ्रांसमें
४७,८४

ख

खाई युद्ध, यूरोपीय महासमरमें २३१
खाद्य पदार्थोंका रोका जाना, इंग्लैंड द्वारा २३५

ग

गृहयुद्ध, फ्रांसमें ५९-६१
गेरीबाल्डी १५५
,, , सिसिलीका अध्यक्ष १४२, १४३
गोरीजियापर कब्जा, इटलीका २४०
ग्रे, सर एडवर्ड २२६
ग्लैडस्टन १८२

घ

घोषणा, पिलनिट्जकी ४८,४९
,, ,फ्रांसीसी प्रजातंत्रकी ५४
,, ,चीनी प्रजातंत्रकी १९०
,, ,ब्रंजविककी ५३
,, ,युद्धकी, बलगेरिया द्वारा २३७
,, ,स्वातंत्र्यकी, ,, १८९
घोषणापत्र, फ्रांसके नागरिकोंका ३७-३९

च

चर्चिल १७८
,मजदूरीके सम्बन्धमें २०१, श्रम तथा निर्धनताके सम्बन्धमें १९८
चार्ल्स एलबर्टका सिंहासनत्याग १३६
,, की पराजय १३३, १३६
चीन का गृहयुद्ध १९०, १९१
,, की रणघोषणा, जर्मनीके विरुद्ध १९१
,, में क्रान्तिकारी बलवे १९०
,, में प्रजातंत्र १७५
चीनी प्रजातंत्रकी घोषणा १९०

छ

छात्र-सभाएँ, जर्मनीकी ११६

ज

जनताकी अधिकार-वृद्धि, देशके शासनमें १७५
जन-प्रतिनिधित्व बिल १८१
जन सम्मतिविधि १२९
,, , फ्रांसमें ७६
जर्मन उपनिवेशोंपर अधिकार, मित्र राष्ट्रोंका २३२
जर्मन मोर्चोंकी प्रबलता २३७
जर्मन राज्यों, दक्षिणी, का संघटन ९१
जर्मन राज्योंकी प्रजातंत्रमें परिणति २७५
जर्मन राष्ट्रसंघका नियंत्रण, विश्वविद्यालयों और प्रेसोंपर ११७
,, का पुनः संघटन १३१, १३२

जर्मन संघका संघटन
१४९, १५०, १५५
जर्मन साम्राज्य का अन्त २७६
,, ,, का स्थान, पश्चिमी
यूरोप की शक्तियोंमें १५४
जर्मन सेनाका संघटन १४४
जर्मन सैनिकोंकी तत्परता २५७, २६१
जर्मनी और इंग्लैंडमें प्रतिद्वन्द्विता २०९, २१४
'जर्मनी ऐंड दि नेक्स्ट वार' २६०
जर्मनी का अधःपतन ८१
,, का उदारदल ११५, ११६
,, का बर्ताव, बेल्जियम
वालोंके साथ २२९
,, का राष्ट्रसंघ १०७, ११४
,, का संघटन ११३, ११४
,, का सुधार-आन्दोलन १८६
,, का सैनिकवाद २५६,
२५७, २६१, २६२
,, की छात्र-सभाएँ ११६
,, की तत्परता, युद्धके लिए २२४
,, की युद्ध-घोषणा, रूस
और फ्रांसके विरुद्ध २२५
,, की सभ्यता २५५, २५६, २५९
,, के प्रधान मंत्रीका उत्तरदायित्व १८४
,, के लिए महासमरका
परिणाम २७९
जर्मनी के विरुद्ध युद्धघोषणा,
पनामा, ब्राजिल, चीन
इत्यादिकी २४६
,, पर आक्रमण, फ्रांसीसियोंका ५५
,, पर नेपोलियनके अधिकारके परिणाम ११३
जर्मनों का अधिकार, कूरलैंड
इत्यादिपर २३१
,, ,, स्वासन्स और
शाटोटेयरीपर २६९
,, की दृष्टिमें अंग्रेज और
फ्रांसीसी २५६
,, की धारणा, स्वदेश और
स्वजातिके सम्बन्ध
में २५५-२५६
,, की विजयका अन्त २६९
जलान्तरवाही पोत, जर्मनीके
२३४-२३६
जापान और इंग्लैंडमें मैत्री २१४
जापान का अधिकार, कियाऊचाऊपर २३२
,, की युद्धघोषणा, जर्मनीके विरुद्ध २२७
जाफर का सम्मान २२९
,, का हमला, जर्मनीपर २२९
जार का सिंहासन-त्याग १७५, १९३
,, की स्वेच्छाचारिता १९२

जार निकोलस २१०
जिनोवा, सार्डीनियाके अधिकारमे १०७
जिरांडी दल, फ्रांसका ५७-६१
जिरांडी लोगोंकी गिरफ्तारी ५९
जेजुइट लोग १७
जेकोस्लोवेकियाका प्रजातंत्र २७४
जेनामें प्रशाकी पराजय ९२,१०२
जेफर्सन, टामस ८
जेरूसलेमपर कब्जा अंग्रेजोंका २३३
" " एलेनबी द्वारा २७२
जेरोम बोनापार्टका वेस्टफेलिया-त्याग १०४
जैकोबिन-संस्था ४९,५०
" का अन्त ६४
" के कार्य ५०
जोजेफ ९१,९८
जोजेफीनको तलाक १००

ट

टरगट १६७
" की कठिनाइयाँ, सुधार कार्यान्वित करनेमें २१
" की नियुक्ति, अर्थसचिवके पदपर २०-२२
" की पदच्युति २३
" द्वारा सुधार, अन्नके व्यापारमें २२
टिलसिटकी सन्धि ९३,९८,१००
टेल नामक का ५,११,२३,२५,२६
टेलिरैंड, कूटनीतिज्ञ १०८
ट्राट्स्की, बोलशेविक नेता १९५
ट्रेफलगारका युद्ध ९३,९४
ट्वीलरिजका दरबार ८४
ट्वीलरिज प्रासाद का भस्मीकरण १५३
" पर आक्रमण ५२,५३,१२७
" में लूईका लाया जाना ४०
डंकर्कका घेरा ६१
डबलिनका बलवा १८३
डांटन ६२
डी वेलरा, आयरिश प्रजातंत्रके नेता १८४
डुमूरी की पराजय तथा देश-द्रोह ५७
" की विजय, प्रशाकी सेनापर ५५
डेनमार्कके साथ युद्ध, आस्ट्रिया और प्रशाका १४७
" के साथ युद्ध, चतुर्थ फ्रेडरिक विलियमका १४६
डेसेकी मृत्यु ७९
ड्यूमाका निश्चय, पोलैंडके सम्बन्धमें २६५

ड्रेस्डेनमें नेपोलियनकी विजय १९४

त

तटावरोध, जर्मनीका २३५,२४४
तरुण तुर्कदल १८८
तुर्क साम्राज्य की अव्यवस्था १८९
,, , महासमरके बाद २८३
तुर्की और रूसका युद्ध १५७,१५९
,, का युद्ध, इटलीके साथ १८९
,, की क्रान्ति १८८-१९०
,, की नयी पार्लमेंट १८८
,, की निर्दयता, विद्रोहियों के प्रति १५८,१५९
,, की पराजय १५९
,, की युद्ध-घोषणा, फ्रांसके विरुद्ध ७४
,, के राज्यका बटवारा १५९
,, जर्मनीके पक्षमें २३२
,, पर आक्रमण, पड़ोसी राज्योंका २१८
,, , यूरोपीय १५६,१५७
तुर्कोंकी हार २१९
त्योहार, क्रान्तिके समयके ८३

द

दमास्कसपर अधिकार, मित्र-दलका २७२
दरिद्रताकी समस्या, इंग्लैंडमें १९९
देशों, दूरस्थ, का सम्बन्ध, आधुनिक साधनके कारण १७१

ध

धर्मसङ्घकी स्थापना, जर्मनीमें ११६
धर्मसंस्था का पुनःसङ्घटन, फ्रांसमें ४१,४२
,, की अवस्था, फ्रांस-में, क्रान्तिके पूर्व ५-७, १६,४०,४१
,, में सुधार, फ्रांसकी ८१, ८३,८४
धर्माचार्योंका असन्तोष, नयी पद्धतिसे, फ्रांसमें, ४२
धर्माधिकारियोंकी कर्त्तव्यभ्रष्टता ६
धार्मिक करका अन्त, फ्रांसमें ४१

न

नगरोंका उद्भव तथा अभ्युदय १६६, १६७
नयी शासनविधि, फ्रांसकी ७५
नये राज्योंकी सृष्टि, गत महा-समरके बाद २८३
नवयुग १
नांटका आज्ञापत्र ५
नांट-निवासियोंकी हत्या ६२
नागरिक सभा का अन्त ६४
,, , क्रान्तिकी नेत्री ५३

नागरिक सभाओंकी स्थापना, फ्रांसमें ३५
नागरिक सभा (पेरिस) द्वारा निर्दोष व्यक्तियों-की हत्या, ५४
नामूरका मोर्चा २२८
नील नदीका प्रथम युद्ध ७३
नेकर की नियुक्ति, प्रधान अर्थ-सचिवके पदपर २३
,, ,, (दुबारा) ३०
,, की पदच्युति ३३,३५
,, द्वारा क्रान्तिकी प्रगतिमें सहायता २३
नेदरलैंड का विद्रोह, हालैंडके विरुद्ध १२४
,, पर अधिकार, फ्रांसका ६८,८२
नेपिल्स का विद्रोह १२१
,, के राजाकी च्युति ९१
,, , मुरतके अधिकारमें ९८
नेपोलियन ४५,६५-६७
,आजीवन कौंसल ८५
और इंग्लैंड ८७
और रूसमें गुप्तसन्धि ९३
का अभिषेक ८५,८६
का आक्रमण, तुर्कीपर ७४
,, , पोलैंडपर ९३
,, , मिश्रपर ७३

नेपोलियन
का आदर्श ८७
का आभ्यन्तर सुधार ८३,८४
का इटलीका राजा बनाया जाना ८९
का दरबार ६९
का निर्वासन, सेंट-हेलीनामें १०५
,, ,, कार्सिकासे ६७
का निवास, एल्बाद्वीपमें १०४
का फ्रांसपर पुनः आधिपत्य १०५
का फ्रांसीसी साम्राज्य ९१
का राज्यत्याग १०४
का षड्यन्त्र, शासक-मंडल तोड़नेका ७४
का सामना, आस्ट्रिया और साडी-नियाके साथ ६८
की क्षति, रूसी आक्रमणमें १०१
की नियुक्ति, सेना-पतिके पदपर ६७
की पराजय, लाइ-पसिकके पास १०४
की योग्यता ७०,७१

नेपोलियन
की विजय, आस्ट्रियन सेनापर ७८,७९
" " आस्ट्रिया और रूसपर ८९
की शासनपद्धति ७५
की सन्धि, पोपसे ८३
की सफलताका रहस्य ७१
की सम्राट्की उपाधि ९०
की स्वेच्छाचारिता ९७
के रक्षित राज्य ८२
के समयमें संघटित राष्ट्रोंका अभाव ७२
के सार्वजनिक कार्य ९६
के हाथमें शासनकी बागडोर ७५
को सम्राट्की उपाधि, ८५
द्वारा रूसपर आक्रमण १०१
प्रधान कौंसलके पदपर ७७
नेपोलियन, तृतीय १४१
" और कावूरकी मंत्र-सभा १४१
" की निराशा १५०
" के साथ बिस्मार्ककी गुप्त सन्धि १४७
नेलसनकी विजय, ट्रैलफलगारमें ९४
" ",फ्रांसीसी बेड़ेपर ७३

प

'पंच महत्' २२८
पंचशतीय सभा, फ्रांसकी ६४
पंचायती न्यायालय, राष्ट्रोंका २१०
पर्वतीय दल, फ्रांसका ५८
पर्शिङ्ग, अमेरिकन सेनापति २७०
पाईअस, ९ वें, के कार्य १२३
पादरियोंके प्रति व्यवहार, फ्रांसीसी क्रान्तिके समय ५१,८३
" के विशेषाधिकार, फ्रांसमें ५
पारस्परिक ईर्ष्या, विभिन्न राष्ट्रोंमें २१३,२१६,२१७,२२१
पारस्परिक सम्बन्ध, आधुनिक राष्ट्रोंका १७१,१७२,२५२,२५३
पार्लमेंट सभाएँ, फ्रांसकी १२,१३
पार्लमेंट सभाकी नोकझोंक, मंत्रिमंडलके साथ २७
पिरामिडका युद्ध ७३
पिलनिट्जकी घोषणा ४८, ४९
पीआवका युद्ध २७४
पीडमांट १३१, १४०-१४२
" और आस्ट्रियामें सुलह १४२
पीडमांट वालोंकी विजय १४२
पुर्तगाल-नरेशकी हत्या १८६, १८७
पुर्तगालमें प्रजातंत्रकी स्थापना १८७
पेट्रोग्रेडमें बलवा १९३
पेरिस का विद्रोह १५२

पेरिस की नागरिक सभाद्वारा निर्दोष व्यक्तियोंकी हत्या ५४
,, पर घेरा १५१
,, में सन्धि-सम्मेलन २७८
,, लेनेका प्रयत्न, जर्मनों द्वारा २२८, २२९, २७०
पैंकहर्स्ट, इम्मेलिन, का आन्दोलन, स्त्री-मताधिकारके लिए १९६,१९७
,, के दलका कार्य, महासमरमें १९७
पैशाचिक शासन, फ्रांसमें १, ६२-६५
,, की उत्पत्ति ४४
,, के दृश्य ६२
पोप, इटलीके उद्धारका बाधक १२३, १३२
,, का पलायन, इटलीसे १३४
,, के अधिकार और पद १५६
पोर्ट आर्थर १७३
पोलैंड का बटवारा ५६, ६८, ११२
,, , फ्रांसके अधीन ९३, १०७
पोलैंड राज्यकी समस्या १०७
प्रजातंत्र की घोषणा, फ्रांसमें ५४
,, स्थापना, चीनमें १७५
,, ,, ,पुर्त्तगालमें १८७
प्रजातंत्रवादी दलकी उत्पत्ति, फ्रांसमें ४७
प्रतिघातके चिन्ह, पैशाचिक शासनके बाद, फ्रांसमें ६४
प्रतिनिधि-सभा की घोषणा, पेरिसकी, प्रजातंत्र-स्थापनामें सहायता देनेकी ५६
,, का विसर्जन, फ्रांसकी, ६५
,, की बैठक, फ्रांसकी ५४
,, विशेष, का विसर्जन, फ्रांसकी ६५
,, के कार्य ६४,६५
प्रवीण सभा, फ्रांसकी ६४
प्रशा और आस्ट्रियाके बीच युद्ध १४८
,, ,, फ्रांसका युद्ध १५१
,, का अधिकार, वर्डूनके दुर्गपर ५५
,, का स्थान, जर्मनसंघमें १५५
,, की नूतन शासनविधि १३८,१३९
,, की पराजय, जेनामें ९२
,, की मैत्री, आस्ट्रियाके साथ ५२
,, की सन्धि, फ्रांसके साथ ६८
,, की सेनापर विजय ५२
,, में युगान्तर १४४
,, में राष्ट्रीय जोश, नेपोलियनकी जबर्दस्तीसे ९२
प्रशा, पूर्वी, पर आक्रमण २३१
प्रशियन सेना, आधुनिक, की उत्पत्ति २०७

प्राचीन प्रथा, फ्रांसकी १,३२,३५,७७
प्राणदण्ड, केसमेण्ट आदिको १८३
,, , नेताओंको फ्रांसमें ६३
,, , मेरी अंटोनेटको ६२
,, , लूईको ५५
,, , रोबेस्पियरको ६३
,, ,लूईकी स्त्रीको ६२
प्रेस बर्गकी सन्धि ८९,९०
प्रोटेस्टैंट विद्रोह १
प्लेबिसाइट—देखो 'जनसम्मति-विधि

फ

फर्डिनण्ड, फ्रेंसिस, की हत्या २२३
फर्डिनण्ड फाककी अध्यक्षतामें मित्रदलकी सेनाएँ २६९
फिनलैंडकी स्वातंत्र्य-घोषणा २६६
फुल्टन, वाष्पोतका आवि-ष्कर्त्ता १६४
फैशोदा अफेयर २१३
फ्रांस ७२
और इंग्लैंडमें युद्ध ८८,८९
,, ,, समझौता २१४
,, प्रशाका युद्ध १५१
का अधिकार, नेदरलैंड्ज इत्यादिपर ६८,८२
का उद्देश्य, आस्ट्रियाके साथ युद्ध छेड़नेमें ५२
फ्रांसका युद्ध, आस्ट्रियाके साथ ५१-५३,८९
का शक्तिह्रास, नेपोलियनकी महत्वाकांक्षाके कारण ९५
का समावेश, राष्ट्रपरिवारमें १०७
की अवस्था, क्रान्तिके पूर्व३ १९ ऐतिहासिक पार्थक्य, प्रदेशोंका २ कुलीनोंका विशेषाधिकार ५,६,७ कृषकदासताके अवशिष्ट चिन्ह ६ कृषकोंकी अवस्था ८,९ चुङ्गीकी सीमा ३,४,१९ जातीय भेदभाव ४,५ टेल नामक कर ५ दंड-संग्रहोंकी बहुलता ३ धर्मसंस्थाकी शक्तिसम्पन्नता ५ धार्मिक कर, सर्व-साधारण पर ५ पादरियोंका विशेषाधिकार ५ लवण-करकी विषमता ४ लेखकोंका दमन १४ व्यापारमें हस्तक्षेप १९
की अवस्था, पन्द्रहवें लूईकी मृत्युके समय २०
की आर्थिक दशा, क्रान्तिके पूर्व २१,२३,२४,२६

फ्राँसकी क्रान्ति, दूसरी बार ११२
की नयी शासनपद्धति ७५
की सन्धि, शत्रुराष्ट्रोंसे ७९
की सड़कोंपर मारकाट १२८
की सामाजिक तथा अन्य बुराइयाँ ३०
की हार ५६,५७
के समाचार-पत्र १४,२८-३०,४९
के सामंतोंके किलोंका भस्मीकरण ३६
द्वारा क्षतिपूर्ति, प्रशाकी १५२
पर आक्रमण, जर्मनीद्वारा २२८
में कागजी सिक्के ४१
में प्रजातंत्र, तीसरी बार १५१
में प्रतिघातके चिन्ह, नेपोलियनके पतनके बाद १०५,१०९,१११
फ्रांसीसियोंका आक्रमण, दक्षिणी अलसेसपर २३०
फ्रांसीसियों द्वारा स्वेच्छातंत्र का स्वागत ८५
फ्रांसीसी क्रान्तिके कारण २,८,९
फ्रांसीसी नरेशकी स्वेच्छा-चारिता ८-११,१९
फ्रांसीसी प्रजातंत्र, द्वितीय, की स्थापना १२६,१२७
फ्रांसीसी राज्यका विस्तार १००
फ्रांसीसी शासन-विधि १५३,१५४
फ्रांसीसी सरकारका स्थान-परिवर्तन २२९
फ्रांसीसी साम्राज्य ९१
फ्रीडलैंडमें नेपोलियनकी विजय ९३
फ्रेडरिड ईबर्ट, जर्मन साम्य-वादी नेता २७६
फ्रेडरिक महान्, १८ वीं सदीका सर्वश्रेष्ठ वीर २०७
फ्रेडरिक विलियम, चतुर्थ, का डेनमार्कके साथ युद्ध १४६
,, का सम्राट् बननेसे इनकार १३९
फ्रेडरिक विलियम, तृतीय ९२
,, का घोषणा-पत्र १०२,१०३
फ्रैंकफर्ट की राष्ट्रीय सभा १३२, १३७, १३८
,, में जर्मन राष्ट्रसंघका अधिवेशन ११५
फ्रैंसिस जोजफ प्रथमका राज्यारोहण १३६
फ्रैंसिस द्वितीयका पदत्याग ८८,८९
फ्लारेंसमें प्रजातंत्रकी घोषणा १३३
बगदाद तक रेल २२३
,, पर कब्जा, अंग्रेजोंका २३३
बजट, इंग्लैंडका क्रान्तिकारक १७८
बथमन हालवेग २२६

बमबाजी, वायुयानों द्वारा २४२
बर्नहार्डी, जर्मन सेनापति २६०
बर्लिन की कांग्रेस १५९, २१७
„ में क्रान्ति २७६
बलगेरिया का अलग होना, महासमरसे २७२
„ की युद्ध-घोषणा सर्बियाके विरुद्ध २३७
„ की स्वातंत्र्यघोषणा १८९
बवेरिया-नरेशका सिंहासन-त्याग २७५
बवेरियामें पार्लमेंटकी स्थापना ११८
बाइलेन का युद्ध ५८
बालकनपरिस्थिति २१७
बालकनयुद्ध, द्वितीय, का आरंभ २२०
बिस्मार्क १४३-१४५, १५१, १५२, १५९
„ की गुप्त सन्धि, तृतीय नेपोलियनके साथ १४७
„ की योजना, आस्ट्रियाको नीचा दिखानेकी १४५
„ „ स्लेजविग हालस्टाइनके सम्बन्धमें १४६, १४७
„ के कार्य २०७, २०८
बुखारेस्ट की सन्धि २२०
„ पर अधिकार, जर्मनीका २४१
बुद्धिदेवीकी पूजा, फ्रांसमें ६३
बून्देस्राट् १४९
बूरबनवंशीय अन्तिम राजा ११२
बूलोनमें सैन्यसंग्रह, नेपोलियन द्वारा ८८
बेडेनमें नयी शासनविधि ११८
बेकारीका प्रश्न, इंग्लैंडमें २००
बेरूटपर अधिकार, मित्रदलका २७२
बेल्जियम की तटस्थता २२६
„ की स्वतंत्रता १२५
„ को अन्तिम सूचना २२५
बेस्टील का पतन ३४
„ की घोषणा १२७
बेस्टीलपतनकी जयन्ती ४५
बोअर युद्ध २१३
'बोनापार्टका इतिहास' का नाम-परिवर्तन ९७
बोनिफेस, अष्टम ५
बोरोडीनोका युद्ध १०१
बोर्डोका विद्रोह ६०
बोस्निआका आस्ट्रियामें मिलाया जाना १८९, २१७
„ में तुर्कोंके विरुद्ध बलवा १५८, १५९
बोहीमिया १३२, १३४
„ में वैध शासनविधि १३०
बोहीमियावालोंका प्रयत्न, वियेनासे स्वतंत्र होनेका १३४

ब्रंजविकका ड्यूक १९२
ब्रंजविकके ड्यूककी घोषणा,
लूईके सम्बन्धमें ५३
ब्रिटनीका विरोध, क्रान्तिके
प्रति ६०
ब्रूसेल्सपर जर्मनीका अधिकार २२८
ब्राजील, पुर्तगालके अधीन १७२
ब्रेस्टलिटोव्स्क की सन्धि २८५
" में सन्धिकी बात-
चीत २६६

भ

भाफका प्रयोग, यंत्र चलानेमें
१६१,१६२

म

मकदूनियाकी अशान्ति १८९
मजदूर प्रतिनिधि सभा, इंग्लैंड-
की १७६
मजदूरोंकी रक्षा १६१
मताधिकारकी व्यापकता १६९
मरक्कोका प्रश्न २१५, २१९
महान् परिवर्तन, यूरोपके तीन १,२
महासमर—
आस्ट्रियाका
आत्मसमर्पण २७४
जनहानि २४०,२७७
जर्मन युद्धपरिषद् २७५
महासमर—
जर्मनीका पत्र-व्यवहार,
सन्धिके लिए २७४
जर्मनीका प्रबल आक्रमण २६७
जर्मनीकी तबाही २७४
जर्मनीकी स्थिति,
अन्तिम कालमें २७३
जर्मनी द्वारा मित्र दलकी
शर्तोंका इनकार २६४
जर्मनोंका पलायन,
पश्चिमी रणस्थलसे
२७२,२७३
जर्मनोंकी करतूत २६०,२६१
तुर्कोंका आत्मसमर्पण २७२
बलगेरियाकी प्रार्थना,
रणविरामके लिए २७२
मित्र दलकी प्रस्तावित
शर्तें, सन्धिके
सम्बन्धमें २६३,२६४
रणविरामकी शर्तें,
जर्मनीके लिए २७६
विचारणीय विषय २५१
विजित स्थानोंका प्रश्न २५२
विलसनका बीच-बिचाव २६३
सन्धि-कांफरेंसकी
योजना २६३
सन्धिका सन्देश,
जर्मनीकी ओरसे २६२

सन्धिकी शर्तोंके
सम्बन्धमें विलसन
२६४,२६५
सन्धिसे इनकार, मित्र
-राष्ट्रोंकी
ओरसे २६२ २६३
महासमरका अन्त २७७
,, का दायित्व २१७,२५८
,, की भयंकरता २०६
,, की विश्वव्यापकता
२४६,२४७
,, के प्रधान कारण २१२
मांटीनिग्रोका स्वातंत्र्य-लाभ १५९
मांटुआका घेरा ६८
मांटेस्क्यू १८
माइकेल ग्रांड ड्यूककी अस्वी-
कृति, राज्यग्रहण करने-
में १९३
माजेण्टाका युद्ध १४२
मार्नका युद्ध २२९
मार्लें १५
मार्सेल्सका विद्रोह ६०
मास्कोपर गोलाबारी, बोलशे-
वियों द्वारा १९५
मिराबो ३३
,, को कारावास ११
मिलानमें नेपोलियनका प्रवेश
६८,७८
मिलानमें विक्टर इमैन्युएलका
प्रवेश १४२
मिलानवालोंका विद्रोह १३०-१३१
मिश्र की स्वातन्त्र्य घोषणा २३२
,, पर आक्रमण, नेपोलियन
द्वारा ७२,७३
,, पर इंग्लैंडका संरक्षण १७३
मुक्तवाणिज्य नीति १६७,१६८
मुद्रण-कलाकी प्रगति १६३
मुद्रा सम्बन्धी सुविधाएं १६५
मुरत, नेपोलियनका साला ९१,९८
मुहम्मद पंचम, तुर्कीके सुलतान १८९
मुहरयुक्त पत्र ११,३४
मेक्सिकन सरकारको पत्र, जर्मन
पराराष्ट्र सचिवका २४५
मेजिनी १२२,१३४
मेटरनिच—जर्मनीके अनुदार
दलका नेता ११६
,, , इटलीके सम्बन्धमें
११८,११९
,, का पतन १३०
,, का प्रयत्न, इटलीमें
सुधारोंके विरुद्ध
१२१,१२२-जर्म-
नीको पंगु बनाये
रखनेका ११८
,, की नीतिका विरोध
इंग्लैंड-फ्रांसद्वारा १२२

मेटरनिच फ्रांसकी दूसरी
क्रान्तिके विषयमें १२९
मेट्सका युद्ध १५१
मेरिया लुइसासे विवाह,
नेपोलियनका १००
मेरी अण्टोनेटको प्राणदंड ६२
मैन्युएल, द्वितीय, का पलायन,
इंग्लैण्डको १८७
,, का सिंहासनारोहण १८७

य

यंग इटली नामक संस्थाकी
स्थापना १२२
यंत्रोंका आविष्कार १६०-१६१
युद्धकारी दल, महासमरके
द्वितीय वर्षके आरम्भमें २३३
युद्धकारी देश २४७-२४९
यूआन शीकाई—चीनी प्रजा-
तंत्रके अध्यक्ष १९०
,, का विश्वासघात, प्रजा-
तंत्रके साथ १९१
यूक्रेनकी स्वातंत्र्य-घोषणा २६६
यूनान का बलवा, तुर्कोंके विरुद्ध १२४
,, की स्वतंत्रता १२४
यूनानियोंका स्वातंत्र्य-युद्ध १२४,
१५७
यूरोप, संवत् १८७२ तथा
१९७१ में १०८,१०९

र

राइन संघ ९१
राइस्टागमें समाजवादी १८५
राजकीय परिषद् ११,१२
राजतंत्रका अंत, फ्रांसमें ३५
राजप्रासादपर आक्रमण, लूईके ३९
राज्यक्रान्ति, फ्रांसीसी, का
कारण २,८,९
,, का प्रभाव १,२
,, का संस्मरण १
,, के कार्य २
,, से भ्रम १
राष्ट्रका नियंत्रण, व्यवसायोंपर २०५
राष्ट्रसंघकी योजना २८०,२८१
राष्ट्रीय ऋण, युद्धकारी राष्ट्रोंका २७७
राष्ट्रीय प्रतिनिधि सभाकी स्था-
पना, फ्रांसमें ३२
राष्ट्रीय बीमाविधान, इंग्लैण्डका २०१
राष्ट्रीय शासनविधि स्थापित
करनेका प्रस्ताव ३१
राष्ट्रीय सभाका अधिवेशन,
फ्रांसकी ३२
,, की भूल ४२,४३
,, के कार्य ३३,३६,३७,४७
राष्ट्रोंका पारस्परिक सम्बन्ध
२८५,२८६
रासपुटिनकी हत्या १९२
रूमानियाकी युद्धघोषणा २४१

रूमानिया की स्वातंत्र्य-प्राप्ति १५९
" पर आक्रमण २४१
रूस और इंग्लैंडमें मेल २१४
" " तुर्कीका युद्ध १५७,१५९
" " नेपोलियनमें गुप्त सन्धि ७३
" का अंग-विच्छेद २६७
" का आक्रमण,आस्ट्रियापर २४०
" का प्रयत्न, कुस्तुन्तुनिया लेनेका १५८
" की वातचीत, जर्मनीके साथ सुलहके लिए २५१
" की राज्यक्रान्तिका प्रभाव, महासमरपर २६५
" की राज्यवृद्धि १७३
" की स्थिति, महासमरके पूर्व १९१
" " ", महासमरके बाद २८४
" तथा फ्रांसकी स्थिति २४०,२४१
" में अशान्ति १९१-१९३
" में गृहयुद्ध २५१
" में पैशाचिक शासन २८५
" में समाजवादियोंका प्राधान्य १९४
रूसी राजतंत्रका अंत १९३
रूसो, जीन जेक्स १७,१८
रेडमंड, आयरिश दलके नेता १८२
रेड रिपब्लिकनों द्वारा विरोध, फ्रांसकी स्थायी सरकारका १२८
रेलोंका विस्तार १६५
रोबेस्पियर ६३
" का शिरश्छेद ६३
रोमन प्रजातंत्रकी घोषणा १३४
रोमपर अधिकार, इटलीका १५५
रोमसामाज्य (पवित्र) का अन्त ९०
रौसीकी हत्या १३४

ल

लक्षम्बर्गपर जर्मनीका अधिकार २२५
ला मार्टीन १२७
लायड जार्ज १७६,१८१,१८३
" की करयोजना १७६
लार्ड सभा और कांमस सभाका संघर्ष १७७,१७९
लार्डस् वीटो बिल १७९,१८०
लाल सेनाका संघटन, ट्राट्स्की द्वारा २८४
ला वाण्डेका विरोध, क्रान्तिके प्रति ६०
लिगूरियन प्रजातंत्र ८८,८९
लियोपोल्ड, द्वितीय, का प्रयत्न, क्रान्ति दबानेका ४८

लिस्बनमें विद्रोह १८७
लीजके दुर्गोंका पतन २२८
लीजन आफ ऑनर ९६,९७
लीयन्सका विद्रोह ६०
लीयन्सवालोंकी हत्या ६२
लुनेविलेकी सन्धि ८०,१०८
लुसियन बोनापार्ट, नेपोलियन-
का भाई ७४
लुसियानाकी प्राप्ति, फ्रांसको ८०
लूई, १४ वाँ, २,३,९,१०,१५
लूई, १५ वाँ १०,२०,७६
लूई, १६ वाँ ३,९,१०,१४,१५,२०,
२३,३२,३९
" का पत्रव्यवहार, बाहरी
शक्तियोंसे ४७,५२
" का पलायन ४६
" का प्रयत्न, राष्ट्रीयसभाको
दबानेका ३३
" की गिरफ्तारी ४६
" की स्वीकृति, धर्म-संस्थाके
पुनः संघटनपर ४२
" के प्रति सन्देह, राष्ट्रीय
सभाका ५२
" के भाईका सिंहासनारोहण ४५
" , कैदीकी हालतमें ४०
" को प्राणदण्डाज्ञा ५५
लूई, १८ वाँ, ४५,१११
" का अभिषेक १०६
लूई की मृत्यु ११२
लूई, नेपोलियनका भाई ९१
लूई नेपोलियन, फ्रांसीसी
प्रजातंत्रका प्रधान १२९
लूई फिलिप का देश-त्याग १२७
" का सिंहासनारोहण ११२
" की सिंहासन-च्युति
१२६,१२७
लूई ब्लान १२७
लूडेनडार्फकी पदच्युति २७५
लूसीटेनिया जहाजका डुबाया
जाना २३६
लेखकोंका दमन, फ्रांसमें १४
लेटर-डि-कशा ३४
लेनिन—बोलशेविक नेता १९५
" के नेतृत्वमें रूसकी
सामाजिक क्रान्ति २८४
लेफेवेट—फ्रांसकी दक्षिणी
सेनाका नायक ३५
" की उदासीनता, रानी-
को बचानेमें ३९
लोकमतका दबाव, फ्रांसीसी
नरेशपर १४
लोकरक्षिणी समिति, फ्रांसकी
५७,६१

व

वर्डूनके दुर्गपर अधिकार, प्रशाका ५५

वर्डूनके दुर्गपर आक्रमण २३८,२३९
वर्सैल्ज ७,३१
,, की सन्धि २७९,२८०
वाग्रामका युद्ध ९९
वाट १६१
वाटर्लूका युद्ध १०५
वायुयानों द्वारा आक्रमण
२४१,२४२
वार्साका समपर्ण, रूसियों द्वारा
२३१
वार्साकी ग्रांड डची ९३,१०७,१०८
वालटेयर १५,१६,२७
वाष्पपोतोंका आविष्कार १६४
विंटसन चर्चिल १७८
विक्टर इमैन्युएल १५५
,, का अधिकार, नेपिल्स-
पर १४३
,, का कार्य १४१
,, का युद्ध, आस्ट्रियाके
साथ १४१
,, का राज्यारोहण १३७
विनीशियाका आस्ट्रियाको
दिया जाना १०७,१४२
,, इटलीको दिया जाना १५५
वियेनाका बलवा १३०
वियेनाकी कांग्रेस १०६,११३,११५
,, ,, के निर्णय
१०७,१०८
वियेनाकी क्रान्ति १३५
विलियम प्रथम १४३,१४४
,, का अभिषेक, जर्मन
सम्राट्के पदपर १५४
,, के कार्य २०७,२०८
विलियम, द्वितीय, का सिंहासन-
त्याग २७५
विलसन का प्रस्ताव, जर्मनीके
विरुद्ध शस्त्रग्रहणका
२४५,२४६
,, का मन्तव्य, संसारकी
शान्तिके लिए २६७
,, की शिकायत, जर्मन
पनडुब्बियोंके सम्ब-
न्धमें २४३
विशेषाधिकारोंका अन्त, फ्रांसमें
३६
वृद्धवृत्ति विधान, इंग्लैंडका २००
वृद्धवृत्ति, फ्रांसमें २०२
वेनिजिलोज, यूनानी राज-
नीतिज्ञ २१८,२२८,२४६
वेनिस प्रजातंत्रकी घोषणा १३३
वेस्टफेलिया १०४
,, का राज्य ९३
वैज्ञानिक आविष्कारोंका प्रयोग,
युद्धमें २५५
वैधशासनविधि, हंगरी, नेपिल्स,
रोम इत्यादिमें १३०-१३२

व्यवस्थापक सभाका आदेश, प्रवासी कुलीनों तथा पादरियोंको ५०
" की पहली बैठक, फ्रांसकी ४७
व्यावसायिक क्रान्तिका प्रभाव, यूरोपपर १६६

श

शासनकार्यमें जनताका हाथ १६९
शासनादेशकी प्रथा २८२
शामपर अधिकार, मित्र राष्ट्रों-का २७२
शिक्षाकी वृद्धि १७०
शिनफेन दलका बलवा १८३
श्रम-समितियाँ १६८
श्रम-सहायक-विधान १७६
" की धाराएँ, घरेलू नौकरों इत्यादिके लिए १९९
श्लेजविग-हालस्टाइन समस्या १४६
श्वार्ट्सेनवर्गका प्रादुर्भाव १३६

स

'सभ्य संसारके नाम'—जर्मनोंकी अपील २५८
समर रोकनेका प्रयत्न, शान्ति प्रेमियों द्वारा २२२
समाचारपत्र, फ्रांसीसी क्रान्तिके समयके ४९
समाचार-पत्रोंका प्रभाव, फ्रांस-में १४,२८-३०,४९
समाचार भेजनेके साधन १६५
समाजवाद का प्रभाव, राष्ट्रोंकी शान्तिपर २११,२१२
" का युद्ध विषयक सिद्धान्त २१२
" की प्रगति २०३-२०५,२११,२१२
समाजवादियोंका प्राधान्य, रूसमें १९४
समुद्रपर आधिपत्य,इंग्लैण्डका २३४
सरदारोंके विशेषाधिकार ७
सर्बियाकी आशा, स्लाविक राज्य कायम करनेकी २१७
" की महत्वाकांक्षा २१९,२२०
" की राज्यवृद्धि २२०
" को अन्तिम सूचना २२३
सर्व जर्मनवाद २२२
सर्व स्लाविक वाद २२१
सर्बियनोंका बलवा, हंगरीके विरुद्ध १३५
सर्बियाका विद्रोह, तुर्कोंके विरुद्ध १५७
" स्वतंत्र होना १५९
साडोवामें आस्ट्रियाकी पराजय १४८

सानमीयेलकी विजय २७१
सामन्त प्रथाका अंत, फ्रांसमें ३६
सामन्तीय सभाका अन्त, फ्रांसकी ३२
सामाजिक क्रान्ति, रूसमें २८४
सामाजिक विधान, जर्मनी इत्यादिके २०३
सार्डीनियाकी क्षणिक सन्धि, फ्रांसके साथ ६८
सालफेरिनोका युद्ध १४२
सिंहासन-त्याग, जर्मन और आस्ट्रियन नरेशोंका १७५
सिसलपाइनका प्रजातंत्र ६९,७९
सीबष्टोपोलका घेरा १५८
सुदूर पूर्वका प्रश्न १७३
सुधारोंका आरंभ, फ्रांसमें ३६
सुनयात सेन, चीनी प्रजातंत्रके अध्यक्ष १९०
सूदान समस्या २१३
सेंट क्वेंटिनपर अधिकार, मित्र दलका २७१
सेंट हेलीनामें नेपोलियन १०५
सेडानका युद्ध १५९
सेवायका पृथक्करण, फ्रांससे १०६
सैनिक क्षेत्र, इंग्लैंडके चारों ओरका समुद्र २३५
" की घोषणा, जर्मनी द्वारा २३५,२४४,२४५
सैनिक प्रतियोगिता २०८, २०९,२१६, २२२
" " यूरोपीय राष्ट्रोंमें १७१
सैनिक वाद २०७,२५५
" की प्रधानता, प्रशामें २०७,२०८
सैलोनिकामें बलवा १८८
सोमका आक्रमण २७१
सोमका युद्ध २३९,२४०,२६८
सोवियत प्रथा, रूसमें २८४
सोशल कांट्रैक्ट १७
स्टाइन—प्रशाका एक प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ ९२,१०२
" का सुधार-कार्य ११३
स्टोलीपिनकी हत्या १९२
स्त्रियोंका मताधिकार १८३
" " भिन्न भिन्न देशोंमें १९५-१९७
स्त्रियोंका मताधिकार बिल १९६
स्पेन का गरीला युद्ध ९९
" का विद्रोह, जोजफके विरुद्ध ९८
" की पराजय ९८,९९
" की मुक्ति, नेपोलियनसे १०४
" की सन्धि, फ्रांसके साथ ६८
" के आधिपत्यका अन्त, दक्षिण अमेरिकामें १७२
" के उपनिवेश १९२

स्पेन, जोजफके अधिकारमें ९८
स्लावजातीय सभा, प्रेगमें १३४
स्वतंत्रता, बोलने या लिखनेकी, फ्रांसमें ३८
स्वातंत्र्य युगका आरम्भ, फ्रांसमें ३४
स्वाधीनताकी घोषणा, मेक्सिको इत्यादि द्वारा १७२
स्विटजलैंडकी शासनविधिमें सुधार ८०
" स्वतंत्रता १०७
स्वेच्छातंत्रका स्वागत, फ्रांसीसियों द्वारा ८५
स्वेजनहर, इंग्लैंडके अधिकारमें १७२

ह

हंगरी और आस्ट्रियामें युद्ध १३६
" की स्वाधीनता १३६
" के विरुद्ध बलवा १३५
" में प्रजातंत्रकी घोषणा २७४
" में वैध शासनविधि १३०
हत्याकांड, यूनानमें, तुर्की द्वारा १०४
हत्या, पुर्तगाल नरेशकी १८६,१८७
" नाण्ट निवासियोंकी ६२
" फर्डिनण्ड फ्रैन्सिसकी २२३
हत्या निर्दोष व्यक्तियोंकी, पेरिस नागरिक सभा द्वारा ५४
" रासपुटिनकी १९२
" रोसीकी १३४
" लीयन्सवालोंकी ६२
" स्टोलीमिनकी १९२
हनोवर का प्रश्न ९२
" पर नैपोलियनका अधिकार ८८
हर्जेगोविना का आस्ट्रियामें मिलाया जाना १८९,२१७
" में बलवा, तुर्कीके विरुद्ध १५८,१५९
हर्टलिंग, काउण्ट वान १८६
हस्तक्षेप, वाणिज्यनीतिमें १९
हार्डेनबर्गका सुधार-कार्य ११३
हालैंड, औरेंजवंशके अधीन १०६
हिंडेनबर्ग २३१,२६८
हिंडेनबर्ग सीमा २५०,२७१
हिंसात्मक क्रान्ति, फ्रांसमें ४४
हेग-सम्मेलन २५४
" की योजना, जार निकोलसकी २१०,२११
होमरूल बिल १७३
होहेनलिंडनमें फ्रांसकी विजय ७९
ह्यू कैपेट २

[सूचना—पृ० ३०२ पर "बर्लिनका आदेश, ८४" छूट गया है।]

अध्याय ४५

महासमरके बादका यूरोप ।

महायुद्धके समय मित्रराष्ट्र कहा करते थे कि यह युद्धान्तकारी युद्ध है और इस बार विजय पानेपर जो सन्धि होगी वह अटूट शान्ति स्थापित करेगी। युद्धमें मित्रराष्ट्र जीते। जर्मनी और उसके साथी इतने शक्तिहीन हो गये कि उन्हें ऐसे सन्धि-पत्र पर हस्ताक्षर करनेके लिए मजबूर होना पड़ा जिसका मसविदा तैयार करनेमें उनका कोई हाथ नहीं था। हस्ताक्षर करते समय जर्मन प्रतिनिधियोंके ऊपर इतनी कड़ी बन्दिश थी कि यदि उनको कोई एतराज़ करना हो तो उसे वे कह नहीं सकते थे, केवल उसे लिख कर देनेकी आज्ञा थी। जिस व्यापक सन्धि द्वारा महायुद्धसे जर्जरित समस्त यूरोप ही नहीं, सारे संसारके पुनर्निर्माणकी आशा की जाती हो, उसमें यदि जर्मनी, रूस, आस्ट्रिया, टर्की और बलगेरियाका सहयोग एवं हार्दिक स्वीकृति न हो, तो उसके टिकाऊ, शान्तिप्रद और युद्धान्तकारी होनेमें विश्वास करना इतिहासकी उपेक्षा करना है। जो इस बातको समझते हैं कि वर्सेल्ज़* की सन्धि फ्रैंकफर्टकी सन्धि [१८७१ ई०] का प्रत्यक्ष, सजीव, और प्रतिशोधपूर्ण उत्तर है, वे इस बातकी कल्पना सहज ही कर सकते हैं कि पचास वर्ष बाद बर्लिन अथवा विएनामें एक सन्धि-सम्मेलन होगा जिसमें जर्मनीके तत्कालीन राजनीतिज्ञ क्लीमांसो और लायड जार्जका स्थान ग्रहण करेंगे। मित्रराष्ट्रोंके राजनीतिज्ञ ऐसी कल्पना-शक्तिसे वंचित नहीं हैं, परन्तु संकुचित जातीयताका विपाक्त भाव इतना उग्र है कि वह किसी भी युद्धको अन्तिम नहीं बनने देता। जबतक राष्ट्रोंमें साम्राज्य-विस्तारकी लालसाका एक कण भी शेष रह जायगा, तबतक किसी युद्धके लिए 'बस' नहीं कहा जा सकता।

---

* फ्रांसीसी भाषामें इस शब्दका उच्चारण "वर्साय" है।

वर्सेल्ज़की सन्धिसे महासमरका अन्त हुआ अवश्य, परन्तु एक दूसरे प्रकारका महासमर शुरू हो गया। यह नवीन युद्ध तोपों या मशीनगनोंका नहीं है, वरन् यह है ,सम्मेलनोंका, परिषदोंका और समझौतोंका। इस युद्धमें सेना और सेनापतियोंका स्थान पर-राष्ट्र-विभागके कर्मचारी लेते हैं। महा युद्धमें मित्र अथवा शत्रु प्रत्यक्ष, ज्ञात और निश्चित थे। इसमें सब लड़नेवाले अकेले हैं। किसीको अपने मित्र अथवा शत्रुका निश्चय नहीं है। पिछले दस वर्षोंमें जितने सम्मेलन और समझौते हुए हैं और उनमें जितने महत्व-पूर्ण विषयोंपर विचार हुआ है, उतने विषयोंपर पहिले कभी नहीं हुआ। इतने कालमें राष्ट्रोंके पारस्परिक सम्बन्धमें बड़ा परिवर्तन हो गया है। युद्धके बादका इतिहास दो भागोंमें विभक्त किया जा सकता है। प्रथम श्रेणीमें उन विचार-प्रवर्तक आन्दोलनोंका स्थान है जिन्होंने अपनी तीव्र प्रगतिसे संसारका ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है और जिन्होंने समाज-संगठन तथा राज्यप्रणालीका ढाँचा ही बदल डाला है। ऐसे आन्दोलनोंने संसारके इतिहास और राजनीतिकी धाराको स्थायी रूपसे बदलनेका पूरा प्रयत्न किया है और अब भी कर रहे हैं। इनमें बोलशेविक और फासिस्ट आन्दोलन विशेष महत्वके हैं। दूसरी श्रेणीमें हम उन सब चेष्टाओंको रख सकते हैं जिनके द्वारा मित्रराष्ट्रोंने कूटनीति तथा सैनिकबल द्वारा वर्सेल्ज़[1], सेन्ट जर्मेन[2], सेव्रे[3], न्यूली[4] और ट्रिआनन[5] की सन्धियोंको कार्यान्वित करनेका प्रयत्न किया।

१—महासमरके बाद मित्रराष्ट्र तथा मध्ययूरोपीय शक्तियोंके बीच भिन्न भिन्न समयपर जो सन्धियाँ हुईं, उन सबमें मुख्य वर्सेल्ज़की सन्धि है। यह मित्र-पक्ष तथा विपक्षके नेता जर्मनीके मध्य २८ जून १९१९ ई० को हुई।

२—मित्रपक्ष तथा आस्ट्रियामें १० सितम्बर १९१९ ई० को हुई।

३—मित्रपक्ष तथा टर्कीमें १० अगस्त १९२० ई० को हुई। तुर्क जाति ने सुल्तान द्वारा स्वीकृत इस सन्धिको नहीं माना। इसके रद्द होने पर लोज़ानकी सन्धि हुई। इसका जिक्र आगे मिलेगा।

४—मित्रपक्ष तथा बलगेरिया में २७ नवम्बर १९१९ ई० को हुई।

५—मित्रपक्ष तथा हंगरी में ४ जून १९२० को हुई।

वास्तवमें जितने सम्मेलन और समझौते पिछले दिनोंमें हुए हैं वे सब वर्सेल्ज़ तथा उससे सम्बद्ध अन्य सन्धियोंके संशोधन और परिवर्तन मात्र हैं। स्पा, सानरीमो, वाशिंगटन, जेनोवा, लोज़ान और लोकार्नोके सम्मेलन यूरोपीय इतिहासमें हमेशाके लिए स्थान पा चुके हैं। इसी कोटिमें डावेसका कार्यक्रम भी है। इन सम्मेलनोंमें ऐसे प्रश्नोंकी विवेचना हुई और ऐसे झगड़े तै किये गये जो सन्धिमें तै नहीं हो पाये थे अथवा जिस रूपमें सन्धि द्वारा उनका निर्णय किया गया था वह असुविधा-जनक या अप्रयुज्य प्रतीत हुआ। यूरोपीय राजनीतिज्ञोंके सामने प्रधानतः तीन प्रश्न उपस्थित हुए हैं। पहिला क्षतिपूर्ति और हर्जानेकी रकम निश्चय करना और उसकी वसूलीका क्रम तथा उपाय और मित्रोंमें उसके बटवारेका अनुपात नियत करना, दूसरा सैनिक तथा सामुद्रिक निःशस्त्रीकरणके कार्यक्रम पर विचार करना, और तीसरा है बोलशेविक रूसके प्रचारके उद्योगको रोकना और उसको मित्र-रहित बनाना तथा इस उद्देश्यसे जर्मनीके साथ घनिष्ठता बढ़ाना जिससे रूस और जर्मनीकी मित्रता न हो सके। इसमें सन्देह नहीं कि यूरोपका कोई समझौता जिसका रूस और जर्मनी मिलकर विरोध करें कामयाब नहीं हो सकता। अतः मित्रराष्ट्रोंके लिए यह नितान्त आवश्यक था कि वे जर्मनीको अपने 'समाज' में निमंत्रित करते जिससे वह १९१४ ई० में बहिष्कृत कर दिया गया था। लोकार्नोके सम्मेलनसे यह प्रयत्न सफल हुआ। जर्मनीके राष्ट्रसंघमें प्रवेश करते ही इंग्लैण्ड और फ्रांसका रुख रूसके प्रति बदल गया है। यदि जर्मनी संघमें प्रविष्ट न हो गया होता तो रूससे दौत्य-सम्बन्ध-विच्छेद करनेमें इंग्लैंडको कुछ आगे पीछे सोचना पड़ता।

महासमरके बाद जो सन्धियाँ हुईं, उनको विजित पक्षने बिना सैनिक बल-प्रयोगके ही मान लिया। जो कुछ सुधार व परिवर्तन सन्धियोंमें हुए वे सब समझौतोंसे हुए, लड़ाईसे नहीं। परन्तु टर्की इसमें अपवाद है। सेव्रेकी सन्धिके बाद यूरोपसे टर्कीका अस्तित्व उठ गया था और एशियामें भी मेसोपोटामियाँ, सीरिया, पैलेस्टाइन और हेजाजके प्रान्त निकल गये थे। टर्कीके सुल्तानने इस सन्धिको स्वीकार कर लिया था

परन्तु कमालपाशाने अंगोराको केन्द्र बनाते हुए देशमें एक ऐसी शक्तिका संघटन किया जिसने मित्र राष्ट्रोंकी अन्यायपूर्ण सन्धिको सशस्त्र प्रयत्नसे उलटनेका निश्चय किया। इंग्लैंडने यूनानकी आड़में टर्कीके पुनरुत्थानके उद्योगको दबानेकी भरसक कोशिश की परन्तु तुर्कोंने अपनी वीरता और बलिदानसे विजय प्राप्त की। वास्तवमें मित्र राष्ट्रोंकी सम्मिलित शक्तिको परास्त करना तुर्कोंके लिए बड़े गौरवकी बात है। सैनिक दृष्टिसे टर्कीका युद्ध महासमरके बाद सबसे बड़ी घटना है। तुर्कोंकी जीतसे सेव्रेकी सन्धि रद्द हो गयी। लोजानमें सन्धि-सम्मेलन हुआ। लोजानकी सन्धिसे कुस्तुन-तुनियाके आस पास जो थ्रेसका प्रान्त है वह टर्कीको वापिस मिल गया। ईजियन समुद्रके बहुतसे टापू जो यूनानके पास चले गये थे टर्कीको मिल गये थे। लोजानकी सन्धि इस दृष्टिसे बड़ी महत्वपूर्ण है कि मित्र राष्ट्रों द्वारा किया हुआ बन्दोबस्त स्थायी नहीं रह सकता, यह प्रत्यक्ष होगया।

सेव्रेमें क्रिश्चियन संसारने यह समझ लिया था कि यूरोपसे तुर्कोंकी शक्ति हमेशाके लिए लुप्त होगयी। परन्तु कमालपाशाने यह सिद्ध कर दिया कि अभी एशियामें ऐसी शक्ति पैदा हो सकती है जो यूरोपका किया हुआ बन्दोबस्त उलट दे। यद्यपि राज्य-विस्तारकी दृष्टिसे टर्की इस समय बहुत ही छोटा हो गया है परन्तु टर्कीकी जैसी धाक इस समय है वैसी पिछले दो सौ वर्षमें कभी नहीं थी। लेवाण्टोकी लड़ाईसे टर्कीके ह्रासका क्रम शुरू हुआ था, सेव्रेमें उसकी पराकाष्ठा होगयी, और लोजानमें टर्कीका पुनर्जन्म हुआ। इस समय टर्की उन्नतिशील देशोंमें है। प्राचीन रूढ़ियाँ कानूनके जोरसे दबायी जा रही हैं। धर्म और राजनीतिका कोई सम्बन्ध नहीं रह गया है। मुल्ला मौलवियोंका समाजके ऊपरसे प्रभाव हट रहा है। निरक्षरता, बहुविवाह, बालविवाह और परदे आदिकी प्रथाएँ बन्द होगयी हैं। समाजके हर एक अंगमें नयी स्फूर्ति आगयी है। देशका शासन भी सुसंघटित हो गया है। इस समय टर्की प्रजातंत्र राष्ट्र है। लोजानकी सन्धिके समय पुराने उस्मान वंशका भी नाश हो गया। उस्मान वंशके साथ उन सब खराबियोंका भी अन्त हो गया जिनके कारण यूरोपमें यह खयाल बैठा हुआ था कि पूर्वी शासन उत्तरदायित्वहीन होता है। जिस गतिसे टर्की

इस समय आगे बढ़ रहा है, उससे आशा की जाती है कि वह थोड़े समय-के बाद 'निकटपूर्व' में एक शक्तिशाली राष्ट्र होकर यूरोपके साम्राज्यवाद-को रोकनेके लिए समर्थ होगा ।

वर्सेल्ज़की सन्धिके बाद सम्मेलनोंकी भरमार हुई । परन्तु इनमें सर्व प्रथम और मुख्य सानरीमोका सम्मेलन है । जिन प्रश्नोंपर विचार हुआ उनमें शासनादेशोंका प्रश्न मुख्य है । इसी अवसरपर सीरियाका शासनादेश फ्राँसको और पैलस्टाइन तथा ईराकका इंग्लैण्डको दिया गया । इस सम्मेलनसे जर्मनीकी सरकारने प्रार्थना की थी कि देशमें शान्ति स्थिर रखनेके लिए सेनाकी संख्या दूनी करनेकी आज्ञा मिल जाय परन्तु युद्ध महापरिषदने यह प्रार्थना अस्वीकार कर दी । इस सम्मेलनने निश्चय किया कि शीघ्र ही एक दूसरा सम्मेलन हो जिसमें दूसरे जरूरी मसलोंपर विचार हो । तीन महीने बाद स्पामें सम्मेलन हुआ ।

वर्सेल्ज़की सन्धिके छूटे हुए कामको पूरा करनेके लिए जो सम्मेलन हुए उनमें स्पाका सम्मेलन इस दृष्टिसे विशेष महत्वपूर्ण है कि मित्रराष्ट्रोंके प्रतिनिधियोंने पहिली बार जर्मनीके प्रतिनिधियोंसे समताका व्यवहार किया । इसके पेश्तरके सम्मेलनोंमें जर्मनीके प्रतिनिधि सम्मिलित नहीं किये गये । केवल सम्मेलनका निश्चय न्यायालयके फैसलेकी तरह उन्हें सुना दिया जाता था । ज़बानसे बोलनेका अधिकार उनको नहीं था, यदि कोई विशेष बात उनको कहनी होती थी तो वह लिखकर दी जाती थी । इस बार जर्मनीके प्रतिनिधियोंने वाद-विवादमें भाग लिया ।

स्पा सम्मेलनके सम्मुख दो प्रश्न थे । वर्सेल्ज़की सन्धिमें निरस्त्रीकरणके तथा जर्मनी द्वारा कोयलेकी अदायगीके सम्बन्धमें जो शर्तें थीं वे किस प्रकार कार्यान्वित की जायँ और हरजानेकी रकमका मित्रोंमें बटवारा किस अनुपातसे हो ? निरस्त्रीकरण और कोयलेके सम्बन्धमें जर्मन प्रतिनिधि ऐसे प्रोटोकोलपर हस्ताक्षर करनेके लिए मजबूर किये गये जिसमें उनको बड़ी आपत्ति थी । जर्मनीको इस बातकी धमकी दी गयी कि यदि वह इन शर्तोंको पूरा नहीं करेगा तो रूरमें सैनिक अधिकार कर लिया जायगा । क्षतिपूर्तिकी रकमको बाँटनेके लिए 'मित्रदल' ने एक अनुपात

निश्चित किया जिसके अनुसार जर्मनीसे प्राप्त सम्पत्तिका फ्रांसको ५२, ब्रिटिश साम्राज्यको २२, इटलीको १०, बेलजियमको ८ तथा औरोंको ८ प्रतिशत देनेकी राय ठहरी। ब्रिटिश साम्राज्यके हिस्सेमेंसे ८७ प्रतिशत इंग्लैण्डको मिला और बचा हुआ भारत तथा समस्त उपनिवेशोंमें वितरण किया गया।

पेरिस-शान्ति-सम्मेलनके बाद वाशिंगटनका सम्मेलन (नवम्बर १९२१ ई०) विशेष महत्वका है। इस सम्मेलनके सामने निरस्त्रीकरण तथा प्रशान्त महासागरकी उलझनोंको ठीक करनेका प्रश्न था। निरस्त्रीकरण-में जलशक्ति घटानेकी ओर विशेष ध्यान दिया गया। अमेरिकाके प्रति-निधि तथा सम्मेलनके सभापति श्री ह्यूने राष्ट्रपति हार्डिंगकी प्रेरणासे यह प्रस्ताव रखा कि दस वर्ष नौका-निर्माण-विभागको बिल्कुल छुट्टी रहे। और पुराने बेड़ेकी भी काँट-छाँट की जाय। बृहत् शक्तियोंने यह समझौता किया कि अमेरिका, इंग्लैंड, जापान, फ्रांस और इटलीका क्रमशः ५ : ५: ३ : १·७५ : १·७५ का अनुपात रखा जाय। अमेरिका और इंग्लैंड पाँच लाख टनके जहाज रख सकते हैं। जापानको अपनी शक्ति तीन लाख टनमें परि-मित करनेमें आपत्ति थी परन्तु निरस्त्रीकरणमें साथ देनेके विचारसे उसने यह स्वीकार कर लिया। फ्रांस और इटली यद्यपि बहुत बड़ी जल-शक्तियाँ नहीं हैं, फिर भी उन्हें पौने दो लाख टनके जहाज रखनेका अधिकार मिल गया। इन शक्तियोंने भी इस समझौतेको बिना आपत्तिके स्वीकार नहीं किया। वाशिंगटन सम्मेलनमें अमेरिकाने सबसे अधिक उत्साह प्रदर्शित किया परन्तु आश्चर्य है कि अब अमेरिकाने नये जहाज बनानेका निश्चय किया है और बीस वर्ष तक इस विभागमें एक बड़ी भारी रकम खर्च की जायगी। इसपर श्री राष्ट्रपति कुलीज कहते हैं कि अमेरिकाका कृत्य वाशिंगटनके समझौतेके खिलाफ नहीं है। इससे यही सिद्ध होता है कि राष्ट्रोंके बीच जो समझौते होते हैं वे पूरी तरहसे निभानेकी नीयतसे नहीं किये जाते।

प्रशान्त महासागरकी समस्याको सुलझानेके लिए संयुक्त राज्य अमे रिका, इंग्लैंड, जापान और फ्रांसमें एक नयी सन्धिकी योजना की गयी। दस वर्षकी अवधिके लिए एक सन्धि-पत्र लिखा गया जिसके अनुसार परस्पर

वस्तु-स्थिति (स्टेटस को) बनाये रखनेका वचन दिया गया। इंग्लैंड और जापानकी मित्रता-सूचक सन्धि, जो १९०२ ई० में हुई थी, रद्द कर दी गयी। प्रशान्त महासागरमें जो द्वीप-समूह जर्मनीके अधीन था उसका आदेश जापानको दिया गया परन्तु अमेरिकाने यह स्वीकार नहीं किया। प्रशान्तकी राजनीतिसे चीनका घनिष्ट सम्बन्ध है। इस सम्मेलनमें चीनसे सम्बन्ध रखनेवाले जटिल प्रश्नोंका निर्णय किया गया। वर्सेल्ज़की सन्धिके अनुसार शान्तुङ्गका प्रान्त जापानको मिल गया था। चीनने इस फैसलेका तीव्र विरोध किया परन्तु किसीने उसपर ध्यान नहीं दिया। चीनने सन्धि-पर हस्ताक्षर नहीं किये। वाशिंगटनमें चीनको शान्तुंग वापिस मिल गया। इसके अतिरिक्त चीन-प्रजातंत्रका अक्षुण्ण प्रभुत्व * स्वीकृत हुआ। इसके अनुसार सब शक्तियोंने यह निश्चय किया कि चीनमें विशेष अधिकार प्राप्त करनेका प्रयत्न न किया जाय। इस सम्बन्धमें अमेरिकाकी पुरानी 'मुक्तद्वार' (ओपन-डोर) की नीतिका समर्थन किया गया। 'इक्स्ट्रा-टेरिटोरियल' अधिकारोंके उठानेके सम्बन्धमें विचार करनेके लिए एक कमीशन नियुक्त किया गया। आयात-निर्यात-करोंके नियमोंको दुहरानेके लिए भी अन्तर्राष्ट्रीय समितिकी स्थापना हुई। इस प्रकार वाशिंगटन सम्मेलनने प्रशान्त सागरमें शान्ति स्थापित करनेकी कोशिश की परन्तु इसी समय इंग्लैंडने सिंगापुरमें जहाजी अड्डा बनानेका काम प्रारम्भ कर दिया।

आर्थिक प्रश्नोंपर विचार करनेके लिए जो सम्मेलन हुए उनमें जेनोआ सम्मेलन मुख्य है। इसका प्रधान उद्देश्य था यूरोपका आर्थिक, व्यापारिक तथा औद्योगिक पुनर्संगठन करना। महासमरके कारण जर्मनी, आस्ट्रिया, तथा रूससे सम्बन्ध टूट गया था। यूरोपका आर्थिक संगठन इन देशोंके सहयोगके बिना असम्भव है। अतः इसमें सभी देशोंके प्रतिनिधि निमंत्रित किये गये। यह पहिला ही अवसर है जब कि यूरोपके बन्दोबस्तमें सोवियट रूसका सहयोग आवश्यक समझा गया। केवल टर्कीको छोड़ कर अन्य सब यूरोपियन राष्ट्र तथा ब्रिटिश उपनिवेश इसमें सम्मिलित किये गये। संयुक्तराज्यने निमंत्रण स्वीकार नहीं किया।

* Sovereignity

यह बात ध्यानमें रखने योग्य है कि रूसको शामिल करनेके पक्षमें इंग्लैंडके प्रतिनिधि लायड जार्जका विशेष आग्रह था। निश्चय ही इससे प्रकट होता है कि जर्मनी और रूसके प्रति इंग्लैंडकी नीति उतनी कड़ी और प्रतिशोधात्मक नहीं थी जितनी फ्रांसकी। फ्रांसने अपनी अनुदारताका परिचय इस सम्मेलनमें तथा इसके बाद होनेवाले रूर प्रान्तके अधिकार करनेमें प्रदर्शित किया। जिस समय जेनोआ-सम्मेलनका निमंत्रण भेजा गया था उस समय फ्रांसके प्रधान मंत्री ब्रियाँ थे। आप साधारणतः उदार नीतिके समर्थक हैं, अतः आपको सम्मेलनके उद्देश्यसे सहानुभूति थी। परन्तु इसी समय फ्रांसके मंत्रिमण्डलमें परिवर्तन होगया। अनुदार दलके नेता प्वाँकारे प्रधान मंत्री हुए। उन्होंने सम्मेलनको असफल बनानेकी पूरी कोशिश की। परन्तु पूर्व सरकारसे स्वीकृत निमंत्रणकी अवहेलना वे नहीं कर सकते थे, इसलिये उन्होंने वारथूको अपना प्रतिनिधि बनाकर भेजा। फ्रांसकी कट्टर नीतिका यह असर हुआ कि सम्मेलनको सफलता नहीं हुई। परन्तु फ्रांसकी अड़ंगेकी नीतिका एक तात्कालिक और महत्वपूर्ण फल हुआ। जर्मनी और रूसपर फ्राँसकी नीतिने सीमण्टका काम किया। जब जेनोआ-सम्मेलनकी बैठकें हो रही थीं उसी समय जर्मनी और रूसके प्रतिनिधियों (राथनाउ और चिचेरिन) ने रापालो नामक स्थानमें एक सन्धि की (अप्रेल १६, १९२२) जिसके अनुसार दो राष्ट्रोंमें राजनीतिक तथा दौत्य-सम्बन्ध स्थापित हो गया। जर्मनीने रूसको हर प्रकारकी क्षतिपूर्तिसे मुक्त कर दिया। व्यापार और उद्योग-धन्धोंकी पारस्परिक उन्नतिके लिए सहयोग करनेकी योजना निश्चित हुई और 'ख़ास रियायती राष्ट्र' * का नियम दोनोंने एक दूसरेको प्रदान किया। इस सन्धिसे यूरोपमें बड़ी हलचल मची। प्वाँकारेकी विद्वेषाग्निमें इस सन्धिने घीका काम किया। फ्राँस तथा बेलजियमने इस सन्धिको विशेष भयावह प्रकट किया। उनकी रायमें यह सन्धि फ्राँसपर आक्रमण करनेकी पहिली सीढ़ी थी। निरपेक्ष दृष्टिसे यदि इस सन्धिपर विचार किया जाय तो यह प्रकट हो जायगा कि फ्राँसकी 'त्राहि' 'त्राहि' की पुकार केवल इंग्लैंडकी शक्तिका लाभ उठानेके लिए थी। जो थोड़ी-बहुत आशा थी वह भी इस घटनासे जाती रही।

* Most Favoured Nation Clause.

जब कोई सम्मेलन अनिश्चयकी चट्टानसे टकराता है तब प्रायः ऐसा होता है कि सम्मेलनके कर्णधार अपनी असफलतापर आवरण डालनेके लिए दो चार उपसमितियाँ बना देते हैं। यही प्रणाली इस सम्मेलनने अख़्तियार की। विभिन्न समस्याओंपर जाँच कर रिपोर्ट पेश करनेके लिए विशेषज्ञोंकी समितियाँ नियुक्त की गयीं। इन समितियोंकी बैठक शीघ्र ही हेगमें हुई। समितियोंको सम्मेलनसे अधिक सफलता नहीं हुई। यद्यपि जेनोवा-सम्मेलन निरर्थक हुआ तो भी इसका महत्त्व कम नहीं है। रूससे सम्बन्ध स्थापित करनेका यह पहिला प्रयत्न है। क्षति-पूर्तिके प्रश्नको पुनर्निर्माणकी दृष्टिसे सुलझानेका यह प्रथम प्रयास है।

सन्धिकी शर्तोंको सैनिक बल-प्रयोग द्वारा मनवानेका भीषण उदाहरण फ्राँस द्वारा रूरपर अधिकार करना है। क्षतिपूर्ति-कमीशन* ने जो माँगें जर्मनीके सामने रखी थीं उनको पूरा करनेमें जर्मनीने असमर्थता प्रकट की। जर्मनीका कहना था कि जब तक जर्मनीका व्यवसाय व व्यापार पुरानी स्थितिमें नहीं आजाता वह हर्जाना चुकानेमें कामयाब नहीं हो सकता। क्षतिपूर्तिके सम्बन्धमें इंग्लैंड और फ्राँसके दृष्टि-कोणमें बड़ा अन्तर था। फ्राँसकी नीयत थी कि जर्मनीके प्रति ऐसे उपाय काममें लाये जायँ जिससे जर्मनी पंगु हो जाय, चाहे वह क्षतिपूर्ति करनेमें असमर्थ ही क्यों न हो। इंग्लैंडकी नीति थी कि जर्मनीके व्यापारको बढ़नेके लिए पूरी सहायता दी जाय जिससे जर्मनी शीघ्र क्षतिपूर्ति करनेमें समर्थ हो। २२ दिसम्बर १९२२ ई० की क्षतिपूर्ति कमीशनकी बैठकमें निश्चय हुआ कि जर्मनी अपनी देनदारीको अदा करनेमें बहानेबाज़ी कर रहा है। वह देने योग्य है। बृटिश प्रतिनिधिकी राय इसके विरुद्ध थी। वर्सेल्ज़की सन्धिकी अठारहवीं धाराके अनुसार फ्राँसने अकेले ही जर्मनीको कोयलेकी अदायगीके लिये मजबूर करनेका निश्चय किया और रूरकी खानोंपर कब्ज़ा करनेका विचार किया।

रूर प्रान्त जर्मनीकी जान है। वर्तमान समयके उद्योग धन्धोंके लिए कोयलेकी कितनी आवश्यकता है, यह बतानेकी आवश्यकता

* Reparation Commission

नहीं । जर्मनीमें तीन जगह कोयलेकी खानें हैं—सार, अपर साइलीसिया, तथा रूर । सार फ्रांस ले चुका था और अपर साइलीसिया पोलैंड । इस समय केवल रूरपर जर्मनीके कल कारखाने निर्भर थे । लोहेके कारखानोंका जितना बड़ा केन्द्र रूर था, उतना संसारमें दूसरा नहीं है । जगत्-विख्यात क्रप, स्टाइन्स, और थाइसेनके कारखाने रूरमें ही हैं । ऐसे प्रान्तको अपने अधिकारमें करनेके दो उद्देश्य थे । प्रथम तो कारखानोंकी आमदनीसे क्षतिपूर्ति करना और दूसरे जर्मनीको हमेशाके लिए तबाह कर देना । इस उद्देश्यसे प्वाँकारेने जनवरी १९२३ में रूरपर अधिकार करनेकी आज्ञा दी । रूरका अधिकार महासमरके बाद यूरोपकी सबसे बड़ी रोमांचकारी घटना है । दो जातियोंमें ऐसा विचित्र, भीषण तथा दयनीय संघर्ष लड़ाईके समय भी नहीं हुआ था । जर्मनीको युद्ध-क्षेत्रमें परास्त करना फ्रांसकी शक्तिके बाहर था । अतः इस समय प्वाँकारेने अपनेको बीसवीं सदीका नेपोलियन बनानेके लिये निहत्थे जर्मनीपर अत्याचार किया । परन्तु संसार प्वाँकारेको नेपोलियन नहीं मान सकता था । नेपोलियनने अपने बलसे यूरोपको जीता था और प्वाँकारे मित्रमंडलके बलपर अवलम्बित थे । यद्यपि इंग्लैंडने रूर काण्डका समर्थन नहीं किया, तो भी उसकी मदद फ्रांसके पीछे थी । यदि जर्मनी प्रतिघात करता तो उसी समय इंग्लैंड फ्रांसकी रक्षाको अग्रसर होता । अतः इंग्लैंड रूरकाण्डके अपराधमें बेदाग़ नहीं है ।

जर्मनीमें लड़नेकी शक्ति नहीं थी । सम्भव है, यदि केवल बेलजियम और फ्रांस होते तो जर्मनी किसी दूसरे मार्गका अवलम्बन करता, परन्तु 'मित्रों' की सम्मिलित शक्तिका विरोध करना असम्भव था । अतः उसके सामने एक ही रास्ता था—सत्याग्रह । ज्यों ही फ्रेंच सेना रूरमें प्रविष्ट हुई, जर्मन मजदूरोंने खानोंमें काम करना छोड़ दिया । रेलके कर्मचारियोंने रेल चलानी छोड़ दी । जर्मन सरकारने आज्ञा निकाली, कोई व्यक्ति फ्रांसको सहायता न दे । फ्रांसवालोंके लिए जर्मनीकी खानोंकी मशीनरीको समझना ही कठिन हो गया । एक टन कोयला पाना भी मुश्किल हो गया । फ्रांसकी सेनाने जर्मन जनतापर बड़ा अमानुषिक अत्याचार

किया । गाँव जला दिये गये । लोग कोड़ोंसे पीटे गये । सैकड़ोंको फाँसी और हजारोंको जेल और निर्वासन हुआ । कारखानेके संचालकोंको और मालिकोंको फ्रेंच अधिकारियोंने हुक्म दिया कि कोयला निकलवानेमें मदद दें, परन्तु उन्होंने इनकार कर दिया । इसपर बहुतसे संचालक जिनमें स्वयं क्रप थे गिरफ्तार किये गये और प्रत्येकको पन्द्रह सालकी सज़ा तथा भारी जुर्माना हुआ । ये लोग आठ मासके बाद छोड़े गये । दस महीनेतक रूरकी प्रजा और कारखानोंके मजदूर तथा अन्य सरकारी कर्मचारियोंने पूरी हड़ताल जारी रखी । इनको जर्मन सरकारकी तरफसे खर्च मिलता था । कितनी बार जर्मन लोगोंपर सेनाके हमले हुए परन्तु उन्होंने पूर्ण शान्ति पालन की । केवल दो तीन अवसरोंपर उन्होंने प्रतिघात किया जिससे बीस पच्चीस फ्रेंच सैनिक मारे गये ।

दस महीनेतक इस प्रकार सत्याग्रह चलता रहा । अन्तमें जर्मनीकी हालत ख़राब होने लगी । सिक्केकी क़ीमतका इतना ह्रास हुआ कि लाखों काग़ज़ी मार्कोंकी क़ीमत एक सोनेके मार्कके बराबर होती थी । व्यापार बिलकुल नष्ट हो गया था । बवेरियामें विप्लव होगया । इस समय जर्मनीकी दशा इतनी डाँवाडोल और चिन्ताजनक हो गयी कि उसके कर्णधारोंको दबना पड़ा । फ्राँसको भी यह ज्ञात होगया कि दस महीनेके प्रयत्नसे वह जर्मनीसे अपनी माँग पूरी नहीं करा सका । रूरका अधिकार करना झंझट और बदनामीकी जड़ सिद्ध हुआ । जर्मनीने सत्याग्रह बन्द करनेकी आज्ञा निकाली और समझौतेकी कोशिश की । परन्तु अभीतक प्वाँकारेका पारा नहीं उतरा था । उन्होंने वही माँग पेश की जो नवम्बर १९२१ ई० में निश्चित हुई थी जिसके अनुसार जर्मनीको २ खरब २६ अरब स्वर्ण मार्क देना था । जर्मनीने इसको स्वीकार नहीं किया । इसपर क्षतिपूर्ति कमीशनने एक कमेटी क़ायम की जिसका यह काम था कि वह जर्मनीकी अदा करनेकी शक्तिकी जाँच करे और एक ऐसा कार्य-क्रम पेश करे जिसके अनुसार जर्मनी आसानीसे अपनी देनदारी चुका सके ।

इस कमेटीके प्रधान अमेरिकाके जनरल डावेस थे । इस कमेटीने १९२४ ई० में जनवरी से अप्रेलतक जाँच की । यद्यपि इस कमेटीके सामने प्रत्यक्ष

रूपसे रूरका प्रश्न नहीं था परन्तु बिना इस समस्याको सुलझाये हुए जर्मनी के साथ समझौता होना असम्भव था । कमेटीने अपनी रिपोर्टका मूलसिद्धांत यह रखा कि जर्मनीको अपने उद्योग धन्धोंको चलानेकी पूरी सुविधा दी-जानी चाहिये । द्रव्य-प्रचलनका स्थैर्य (स्टैबिलिटी आफ करेन्सी) तथा बजट अन्योन्याश्रित है, अतः प्रचलनको स्थिर करना अत्यावश्यक था । इसके लिये राइशबैंक (Reich Bank) का नवीन संघटन करनेकी सिफारिश की गयी । स्वर्ण प्रतिभू पर्याप्त रखना, बैंकरोंके बैंकका काम करनेके लिए मितिकाटाकी दर सरकारी तौरसे निश्चित करना, सरकारी बैंकरका काम करते हुए भी सरकारका हस्तक्षेप न होना, सरकारको परि-मित पेशगी देना, क्षतिपूर्तिका स्थायी कोष बनाना इत्यादिकी सिफारिश कमेटीने विशेष रूपसे की । साधारण वर्ष (स्टेण्डर्ड ईयर) में क्षतिपूर्तिकी रकम ढाई अरब स्वर्ण मार्क रखी गयी । एक अन्तर्राष्ट्रीय समिति स्थापित की गयी जिसका काम यह था कि जर्मनीसे जो रकम मार्कमें मिले उसको दूसरे देशोंके सिक्कोंमें बदल कर उन देशोंमें भेजना । ज्यों ज्यों जर्मनीकी समृद्धि बढ़ती जायगी यह रकम भी बढ़ती जायगी । समृद्धिकी जाँच उसके आयात-निर्यातके अंकोंसे की जायगी । अदायगीकी ज़मानतमें कर, रेलवे तथा औद्योगिक डिबेंचर रखे गये । इस प्रकारसे डावेस कमेटीने एक ऐसा कार्यक्रम बनाया जो कामिल हो सकता है । ३० अगस्त १९२४ ई० में लन्दनमें इससे सम्बन्ध रखनेवाली शक्तिओंने इसे स्वीकार किया । शीघ्र ही इसपर अमल होने लगा और अभीतक यह कार्यक्रम अच्छी तरहसे चल रहा है । डावेस कार्य-क्रमका यूरोपीय राजनीतिक प्रश्नोंपर अच्छा प्रभाव पड़ा । जर्मनी और मित्रराष्ट्रोंमें घनिष्ठता बढ़ानेमें यह सहा-यक हुआ; जर्मनीके सिक्केकी क़ीमत ठीक हो गयी और व्यापारकी उन्नति होने लगी । कार्य-क्रमके विधाता जनरल डावेसकी ख्याति इससे बहुत बढ़ी और उनको शान्तिका नोबल पुरस्कार दिया गया । यद्यपि इनके साथ अशान्तिके प्रवर्त्तक चेम्बरलेन तथा ब्रियाँको भी यह सम्मान दिया गया है, जिससे शान्ति-पुरस्कारका वास्तविक महत्व कम हो जाता है, फिर भी यह मानना पड़ेगा कि जनरल डावेसने बड़ी सहृदयता और ईमानदा-

रीसे काम किया और मित्रराष्ट्रोंसे इससे अच्छी शर्तें पानेकी आशा जर्मनी नहीं कर सकता था।

डावेस कार्यक्रमने एक ऐसे युगका उद्घाटन किया जिसको यूरोपीय राजनीतिज्ञोंने 'शान्ति-युग' का नाम दिया है। इस युगका प्रवर्तक है लोकार्नोका सम्मेलन और समझौता। लोकार्नोका मुख्य उद्देश्य जर्मनीको उस समाजमें मिलाना था जो अपनेको संसारकी शान्तिका संरक्षक कहता है। उस समाजकी गोष्ठी है राष्ट्रसंघ। जर्मनीके राष्ट्रसंघसे बाहर रहते हुए संघका यूरोपमें मान्य होना असम्भव था। अतः जर्मनीको संघमें मिलानेके उद्देश्यसे जर्मनीकी सीमापर जो झगड़ेके कारण उपस्थित थे उनके सम्बन्धमें जो निश्चय किये गये वही लोकार्नोका समझौता है।

१९२५ ई० के प्रारम्भसे ही जर्मनीसे समझौतेके लिए उपयुक्त वातावरण पैदा हो रहा था। क्षतिपूर्तिका झगड़ा डावेस कार्यक्रमसे समाप्त हो चुका था। रूर भी खाली कर दिया गया था, क्योंकि इस समय फ्रांसको अपना सैनिक बल मोरक्को तथा सीरियामें लगाना पड़ा। मोरक्कोमें अब्दुल करीमके नेतृत्वमें रिफ़ जातिने स्वतंत्रताका झंडा उठाया था। सीरियामें द्रूसे जातिने स्वाधीन होनेकी चेष्टा की। इन लड़ाइयोंके कारण फ्रांसकी आर्थिक स्थिति खराब हो गयी। इस समय फ्रैंककी क़ीमत गिरने लगी। अब फ्रांसके लिए यह नितान्त आवश्यक हो गया कि वह जर्मनीकी तरफसे निश्चिन्त हो जाय जिससे वह अपनी शक्ति एकाग्र होकर इन उपद्रवोंको दबानेमें लगा सके।

इसी समय फ्रांसमें साम्यवादी सरकार आगयी जिसके प्रधान श्री एरियो* थे। इनके उदार विचारोंके कारण समझौतेमें अड़चन नहीं हुई जो प्वाँकारेके कारण होती। अक्तूबर मासमें सम्मेलन बड़े समारोहसे प्रारम्भ हुआ। इसमें चेम्बरलेन, ब्रियाँ, मुसोलिनी, लूथर स्ट्रेस्मान, बीनीस (ज़ेकोस्लोवाकिया) एक्रिजिन्स्की (पोलैंड) तथा वाँदरवाल्डे† ने भाग लिया। दस दिनके विचार-विनिमयके बाद निश्चित हुआ कि

---

* Heriot † Vandervalde

जर्मनीकी पश्चिमी सीमापर वस्तु-स्थिति (स्टेटस को) बनाये रखनेके लिए राइन नदीके दोनों तट पचास मीलतक निस्सैन्य भूमि ‡ करार दिये गये। जो इसकी अवहेलना करेगा उसका प्रतीकार हस्ताक्षर करने-वाले मिलकर करेंगे। यह सन्धि फ्रांस, बेलजियम और जर्मनीके बीच हुई। जर्मनीकी पूर्वी सीमापर वस्तुस्थिति स्थिर रखनेके लिए भी पोलैंड, जेकोस्लोवाकिया और जर्मनीके बीच एक सन्धि हुई। केवल आत्मरक्षाके लिए युद्धकी शरण लेनेकी प्रतिज्ञा की गयी। साथ ही यह तै हुआ कि जो कोई झगड़ा हो वह राष्ट्रसंघकी पंचायतमें पेश किया जायगा। सन्तोष न होनेपर संघकी कौंसिलमें पेश किया जायगा। यदि कौंसिलकी सर्व-सम्मतिसे स्वीकृत निष्पत्तिका उल्लंघन कोई करेगा तो उसके विरुद्ध इंग्लैंड और इटली लड़ेंगे। इंग्लैंड और इटली इस समझौतेके नियामक ¶ बनाये गये क्योंकि इनका इस समझौतेसे प्रत्यक्ष कोई संबन्ध नहीं है। जर्मनी राष्ट्रसंघमें शामिल होगा और उसको कौंसिलमें स्थायी स्थान दिया जायगा। इन निश्चयोंपर उसी समय प्रारम्भिक हस्ताक्षर हो गये।

इस समझौतेकी बड़ी प्रशंसा हुई परन्तु इसके पूर्ण रूपसे स्वीकृत होनेमें बड़ी अड़चनें थीं। जब जेनेवामें जर्मनीको स्थायी स्थान देनेका प्रश्न उपस्थित हुआ तब फ्रांसने अड़ंगा लगाना शुरू किया। पोलैंड और जेकोस्लोवाकिया फ्रांसके पिट्ठू हैं। इन देशोंने भी कौंसिलमें स्थायी स्थान चाहा। जर्मनीने इसपर एतराज़ किया। वह यह नहीं चाहता था कि फ्रांसके सहायकोंका इस प्रकार प्राधान्य हो जाय। इस समय बेलजि-यम, ब्राजील, स्पेन, स्वीडन तथा चीन भी स्थायी कौंसिलके उम्मीदवार हो गये। ऐसा प्रतीत होता था कि लोकार्नोकी सब आशाएँ मिट्टीमें मिल जायँगी। इंग्लैंडकी पार्लमेण्टने फ्रांसकी नीतिका समर्थन नहीं किया परन्तु चेम्बरलेनने अपनी ही जिम्मेदारीपर फ्राँसकी माँगोंका समर्थन किया। जर्मनीने इस बातको स्वीकार नहीं किया कि उसके संतुलनमें ब्राजील और पोलैंड रखे जायँ। उसकी इच्छा थी कि पहिले वह सम्मि-

---

‡ Demilitarised zone
¶ Guarantors

लित कर लिया जाय, फिर दूसरोंके ऊपर विचार किया जाय जिसमें जर्मनी भी विचारमें सम्मिलित हो सके। चीन व पर्शिया (ईरान) ने जर्मनीकी इस बातका समर्थन किया, परन्तु अप्रैल १९२६ की बैठकमें जर्मनीके संघ-प्रवेशका प्रश्न तै नहीं हो पाया और वह सितम्बरके लिए स्थगित कर दिया गया।

इसके बाद ही जर्मनीने इस प्रश्नके प्रति बिलकुल उदासीनता प्रकट की, क्योंकि लोकार्नोंसे उसका कोई विशेष फायदा नहीं था। जब फ्रांसने अडंगा लगाया तो जर्मनीने २४ अप्रैल १९२६ ई० के दिन रूससे सन्धि कर ली। इसके अनुसार रापालोकी सन्धिका समर्थन करते हुए यह निश्चय हुआ कि यदि रूस अथवा जर्मनीपर कोई तीसरी शक्ति आक्रमण करे तो ये उसमें तटस्थ रहेंगे। यदि मित्रराष्ट्र रूस अथवा जर्मनीके आर्थिक बहिष्कारके लिए गुट बनाएंगे तो ये उसमें शामिल नहीं होंगे।

इस सन्धिका फ्रांस और इंग्लैंडपर खूब प्रभाव पड़ा। जर्मनीने इस बातकी आशा दिलायी कि इस सन्धिका उद्देश्य केवल व्यापारिक तथा आत्मरक्षाका है। इस सन्धिने जर्मनीकी स्थिति अच्छी कर दी। इसके कारण सितम्बरकी बैठकमें जर्मनीने बिना किसी अड़चनके राष्ट्रसंघमें प्रवेश किया। उसको कौंसिलमें स्थायी स्थान दिया गया। इस प्रकार लोकार्नोंका समझौता काममें आया। वास्तवमें जर्मनीके राष्ट्र-संघमें प्रवेश करनेपर ही महासमरका अन्त हुआ। लोकार्नोंकी सन्धिने यह सिद्ध कर दिया कि वर्सेल्ज़की सन्धि नहीं चल सकती थी। लोकार्नोंने यूरोपमें शान्ति स्थापित करनेमें बड़ा भारी काम किया, इसमें सन्देह नहीं, परन्तु अभी यूरोपके सामने बहुतसे प्रश्न हैं जिन्होंने यूरोपके राजनीतिज्ञों-का ध्यान आकर्षित कर रखा है।

लोकार्नोंके बाद निरस्त्रीकरणका प्रश्न महत्वपूर्ण है। उसके लिए बृहत् शक्तियोंकी एक प्रारम्भिक समितिकी बैठक गत वर्षसे हो रही है परन्तु अभीतक कोई निश्चित नीति निर्धारित नहीं हो सकी। कोई शक्ति सच्चे दिलसे निरस्त्रीकरणके लिए तैयार नहीं है। इस समय स्थल तथा जल-शक्तिकी अपेक्षा वायुयानोंकी शक्तिपर विशेष स्पर्द्धासे काम हो रहा

है। भविष्यमें जो युद्ध होगा उसमें आकाशकी लड़ाईका अधिक महत्व रहेगा।

गत वर्ष निरस्त्रीकरणकी प्रारम्भिक समितिकी बैठकमें लार्ड सेसिलने इस कारण त्याग-पत्र दे दिया कि इंग्लैंडकी सरकारकी जो नीति निरस्त्रीकरणके सम्बन्धमें है वह इतनी अनुदार है कि उसके साथ अन्य शक्तियोंका सहयोग नहीं हो सकता। जब लार्ड सेसिल जैसे साम्राज्यवादी भी ब्रिटिश सरकारकी नीतिसे असन्तुष्ट हैं तो यह स्पष्ट हो जाता है कि निरस्त्रीकरणके आन्दोलनमें कितना कम तथ्य है। इस समय युद्ध-शक्ति बढ़ानेमें इंग्लैंड और अमेरिकामें विशेष स्पर्द्धा है। इस वर्ष अमेरिकाने अपने बजटमें एक बहुत बड़ी रकम युद्ध-पोत बनानेके लिए रखी है और बीस वर्षतक यह क्रम चलेगा। इस बातको देखते हुए यह कह सकते हैं कि निरस्त्रीकरणका आन्दोलन अवनति कर रहा है। १९२२ में वाशिंगटनमें अमेरिकाने ही जल-शक्ति कम करनेका प्रस्ताव किया था जिसके अनुसार उसके साढ़े आठ टनके जहाज नष्ट करनेकी सिफारिश की गयी थी।

लोकार्नोकी सन्धि होनेके बादसे रूसके प्रति इंग्लैण्ड और फ्रांसका भाव बदल गया है। मई १९२३ ई० में इंग्लैंडने रूसके लंदन स्थित दूतावास 'आर्कस हाउस' पर धावा किया। दूतावासके कर्मचारियोंपर यह दोषारोपण किया गया कि वे इंग्लैंडमें कम्यूनिज़्म फैलानेमें मदद करते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय विधानकी दृष्टिसे दूतावास साधारण कानूनकी धाराओंसे मुक्त रहता है। उसके भीतर पुलिस तलाशी वगैरह नहीं ले सकती। परन्तु इंग्लैंडकी सरकारने रूसके साथ साधारण नियमका भी पालन नहीं किया। इसके बाद ही रूसके दूतसे इंग्लैंड छोड़ देनेके लिए कहा गया। इस प्रकार दोनोंके बीच दौत्य-सम्बन्ध-विच्छेद हो गया। इधर फ्रांसने भी अपना बदला हुआ भाव प्रगट किया। पेरिसमें रायकोफ़ रूसके राजदूत थे। फ्रांसमें ये अपने विचारोंके कारण अप्रिय हो गये। फ्रांसने रूसको उन्हें बुला लेनेके लिए बाध्य किया। यदि रूस बिना किसी दोषके अपने राजदूतको वापिस बुलानेमें एतराज़ करता तो निश्चय था कि फ्रांस और रूसका सम्बन्ध टूट जाता।

जबसे जर्मनीने राष्ट्रसंघमें प्रवेश किया है तबसे उसकी नीति रूसके प्रति सहसा बदल गयी है। असलमें इंग्लैंड और फ्रांस जर्मनी तथा रूसकी बढ़ती हुई घनिष्ठतासे चिन्तित थे। लोकार्नोकी सन्धि द्वारा वे जर्मनीको अपने साथ करनेमें सफल हुए। यह कहनेकी आवश्यकता नहीं है कि रूस और जर्मनीकी घनिष्ठता किसी सिद्धान्तकी दृढ़ नींवपर स्थित नहीं थी। प्रजातंत्र जर्मनी अब भी उतना ही पूंजीवादका कायल है जितना पहले कभी था। रूससे जर्मनीको उतना ही परहेज है जितना इंग्लैंड, फ्रांस अथवा अमेरिकाको। ऐसी स्थितिमें जर्मनी यदि रूससे मिलनेकी कोशिश करता था तो इसका एक मात्र कारण यह था कि वह अकेला था। अब जर्मनी और रूसके दर्मियान मन-मुटाव बढ़ता जा रहा है। गत मार्च मासमें जर्मनीने रूससे व्यापारिक सम्बन्ध तोड़ दिया। उसके लिये कोई पर्याप्त कारण नहीं था। जर्मनीके कुछ इनजीनियर सोवियट सरकारके कारखानोंमें नौकर थे। सोवियट सरकारने उनको राज्यके प्रति गुप्त षडयंत्र रचनेके अपराधमें गिरफ्तार किया। इसीसे नाखुश होकर जर्मनीने व्यापारिक सन्धि तोड़ दी। यह घटना साधारण होते हुए भी जर्मनीकी मनोवृत्तिको सूचित करनेके लिए काफी है। इस समय धीरे धीरे रूसके विरुद्ध जर्मनी, इंग्लैंड, और फ्रांसमें मिलनेकी प्रवृत्ति नज़र आती है।

सन् १९२८ के प्रारम्भमें रूसने राष्ट्रसंघके सामने निरस्त्रीकरणकी एक योजना पेश की। इस योजनाके अनुसार केवल आन्तरिक रक्षाके अतिरिक्त सेना रखना वर्जित होता। यूरोपीय देशोंके राष्ट्रोंके प्रतिनिधियोंने रूसके प्रस्तावपर विचार करनेका सौजन्य दिखाया परन्तु योजनाको स्वीकार नहीं किया। साथ ही उन्होंने रूसके उद्देश्यकी सचाईपर टिप्पणी करते हुए कहा कि रूसने यूरोपीय राष्ट्रोंके सम्मुख ऐसा अप्रयुज्य प्रस्ताव इसलिए रखा है कि जिससे निरस्त्रीकरण आन्दोलनके हामियोंकी पोल खुल जाय। रूसका उद्देश्य चाहे जो कुछ हो, उससे यह स्पष्ट हो गया कि यूरोपके राष्ट्र निरस्त्रीकरणकी किसी गम्भीर तथा फलप्रद योजनाको अपनानेके लिए तैयार नहीं है।

निरस्त्रीकरणकी समस्यासे हार मान कर अब फ्रांस और अमेरिका इस प्रयत्नमें लगे हैं कि बड़े राष्ट्रोंके बीच एक ऐसी सन्धि हो जाय जिससे युद्ध सर्वथा विधान-विरुद्ध करार दिया जाय। इस कार्यमें फ्रांस अग्रसर हुआ है। श्री ब्रियाँने अपनी योजनाकी सूचना इंग्लैंडको नहीं दी। अमेरिका और फ्रांसके बीच इतने महत्वपूर्ण विषयपर लिखापढ़ी चलती रही और इसकी सरकारी सूचना इंग्लैंडकी सरकारको नहीं दी गयी, यह बात इंग्लैंडके राजनीतिज्ञोंको बहुत खटकी। अतः इस योजनासे इंग्लैंड-की सहानुभूति नहीं हैं। ॐ इस प्रकारके आन्दोलनोंमें सफलताकी आशा

ॐ इस प्रकरणके प्रेसमें चले जानेके बाद अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिमें एक अत्यन्त महत्वपूर्ण सन्धिकी आयोजना हो रही है। ऊपर लिखा जा चुका है कि कुछ मास पूर्व फ्रांस और अमेरिकाने युद्धको विधान-विरुद्ध करार देनेके सम्बन्धमें बातचीत चलायी थी। फ्रांसके प्रस्तावपर समझौता नहीं हो सका। इसके उपरान्त अमेरिकाके परराष्ट्र-सचिव श्रीकेलौगने नयी शर्तें पेश कीं! इन शर्तोंको सबसे पहिले जर्मनीने स्वीकार किया। तदु-परान्त रूस तथा चीनके अतिरिक्त प्रायः संसारके सभी मुख्य राष्ट्रोंने इन्हें स्वीकार कर लिया। शीघ्र ही पेरिसमें सन्धि-पत्र पर सब देशोंके परराष्ट्र-सचिव हस्ताक्षर करेंगे। लोकार्नोकी सन्धिके बाद यह घटना अत्यन्त महत्व-पूर्ण होगी। लोकार्नोमें केवल युद्धकी सम्भावनाओंको दूर करनेका प्रयत्न किया गया था। पेरिसकी सन्धिके अनुसार राष्ट्र अप-नेको इस प्रतिज्ञामें बद्ध करते हैं कि युद्ध करेंगे ही नहीं। जिस प्रकार साधारण दैशिक विधानकी दृष्टिमें मारपीट, चोरी, डाका अपराध है वैसे ही अन्तर्राष्ट्रीय विधानमें युद्ध करना अपराध समझा जायगा। परन्तु कौनसी शक्ति अपराधीको दण्ड देनेमें समर्थ होगी, यह प्रश्न अब भी उतना ही अनिश्चित है जितना अन्तर्राष्ट्रीय विधानकी सृष्टिके समय था। यह सन्धि वास्तवमें युद्धावरोधक हो सकेगी या नहीं, इस प्रश्नका उत्तर भविष्य ही देगा। परन्तु इतना स्पष्ट प्रतीत होता है कि यह साम्राज्यवादियोंका दलित अथवा विरोधी राष्ट्रोंके विरुद्ध एकत्र होनेका उद्योग है। (२७ अगस्त १९२८ को पेरिसमें कैलोग-सन्धिपत्रपर हस्ताक्षर हो गये।)

नहीं की जा सकती क्योंकि इनके विधायकोंमें सत्यनिष्ठताकी कमी है। वे जिस बातका प्रस्ताव करते हैं, उसको स्वयं पालन करनेका विचार नहीं रखते। एक ओर युद्धके उपकरणोंको बढ़ानेकी घोर प्रतिस्पर्द्धा चल रही है और दूसरी ओर इस बातका झूठा प्रयत्न हो रहा है कि युद्धको विधान-विरुद्ध करार दिया जाय। यह कैसे सम्भव हो सकता है?

अध्याय ४६

बोलशेविक रूसमें नीति-परिवर्तन।

महासमरके अन्तिम दिनोंमें किस प्रकार ज़ारशाहीका अन्त हुआ और किस प्रकार उसके स्थान पर 'सोवियट' प्रणालीके पञ्चायती राज्यकी स्थापना हुई, इसका दिग्दर्शन पिछले परिच्छेदमें करा दिया गया है। शताब्दियोंकी क्रूर दासताकी बेड़ियोंसे सहसा मुक्त होने पर स्वतंत्रताकी मर्यादा रखना तथा उसका सदुपयोग करना आसान काम नहीं है। क्रान्तिके समय सफलताके जोशसे अथवा पुरानी बातोंके प्रतिशोधके भावसे कुछ ऐसे कार्य हो जाना स्वाभाविक और अनिवार्य्य है जो बादको अहितकर सिद्ध होते हैं।

नव-स्थापित बोलशेविक सरकारने अपने सिद्धान्तोंको बिना इस बातका विचार किये हुए कि वे चल सकने योग्य हैं अथवा नहीं, क़ानूनके ज़ोरसे चलानेकी कोशिश की। सरकारने लोगोंके आर्थिक, सामाजिक तथा धार्मिक जीवनका नियमन करनेके लिए अनेक ऐसे क़ानून बनाये जिनको जनता केवल ऊँचे आदर्शोंके नाम पर नहीं मान सकती। रूसकी राज्यक्रान्ति इस बातको सिद्ध करनेमें एक बढ़िया दलील हो सकती है कि मानव-समाजके ऊपर आर्थिक प्रवृत्तिका आकर्षण सबसे जबरदस्त है। बोलशेविक दलने रूसकी प्रजाको पुराने शासनसे स्वतंत्रता तथा कौमी खतरेके मौक़ेपर रक्षा प्रदान की थी। इसके लिए रूसके किसान, मजदूर तथा सिपाही उसके कृतज्ञ थे। बोलशेविक दलके प्रति अपनी कृतज्ञताका इजहार उन्होंने इस समय दिया जब रूसका भविष्य अन्धकारमय था, जब रूसको चारों तरफसे दुश्मनोंने घेर लिया था और 'मित्र पक्ष' तथा जर्मनी दोनों रूसके विरुद्ध लड़ रहे थे, रूसमें गृह-कलहकी भीषण अग्नि प्रज्वलित हो रही थी, मित्र राष्ट्रोंके एजण्ट कोलचक और डेनिकिन अपनी सैनिक शक्तिसे स्वदेशको कुचल कर विदे-

शियोंके हाथ समर्पण करनेपर तुले हुए थे। ऐसे संकट-कालमें रूसके किसानों और मजदूरोंने बड़ी बहादुरीसे और अनेक मुसीबतोंका सामना करके विजय प्राप्त की। परन्तु बोलशेविक दलका इस प्रकार साथ देते हुए भी रूसके लोग इस दलके नियमोंको माननेके लिए तैयार नहीं थे। यही कारण है कि काफी तजुर्बेके बाद लेनिनने अपने कार्यक्रमको ढीला कर दिया।

काम्यूनिस्ट सरकारने अधिकारारूढ़ होते ही दो प्रकारके कानूनों द्वारा अपना कार्यक्रम कार्यान्वित करना प्रारम्भ कर दिया। पहिलेके अनुसार पूँजीपतियोंके हाथसे सम्पत्ति छीनने तथा कम करनेके भिन्न भिन्न साधन निकाले गये। इस श्रेणीके नियमोंमें विशेष महत्व उनका है जिनके द्वारा बैंक ज़ब्त किये गये। हिस्सोंका लाभांश (डिविडेण्ड) बाँटना और हुण्डियोंका क्रय-विक्रय बन्द कर दिया गया। दस हज़ार रूबल्स * से ऊपरकी हुण्डियाँ सरकारी कोषमें सम्मिलित कर ली गयीं। सरकारके देशी विदेशी ऋण-पत्र रद्द कर दिये गये। धनी लोगोंकी निजी सम्पत्ति सरकारी ख़ज़ानेमें शामिल कर ली गयी। व्यक्तियोंको निजी व्यापार करनेका अधिकार नहीं रहा। इससे देशकी समस्त व्यापारिक संस्थाएँ नष्ट हो गयीं। उत्पत्तिके सभी उद्योग धन्धे सरकारी प्रबन्धमें चलाये जाने लगे। भूमिके वितरणके सम्बन्धमें ऐसे नियम बनाये गये जिनके अनुसार किसानकी स्वतंत्रताकी रक्षा हो। बड़े बड़े ज़मीदारोंसे जमीन छीन कर किसानोंमें बाँट दी गयी और सिद्धान्ततः ज़मीन पर ग्राम पंचायतका अधिकार हो गया।

दूसरी श्रेणीमें सामाजिक सुधार सम्बन्धी नियम हैं। यूरोपीय राष्ट्रों-में रूस शिक्षाके क्षेत्रमें बहुत पिछड़ा हुआ था। बोलशेविक सरकारने इस कमीकी पूर्ति करनेका खूब प्रयत्न किया है। बहुतसे नये विद्यापीठ स्थापित किये गये। विभिन्न अवस्था तथा श्रेणीकी आवश्यकतानुसार शिक्षाके प्रबन्धके लिए अनेक प्रकारके स्कूलोंका प्रबन्ध गाँव गाँवमें किया गया। बड़ी उम्रके स्त्री पुरुषोंके लिए भी अक्षरज्ञान तथा साधारण शिक्षा अनिवार्य कर दी गयी। मज़दूरोंकी शिक्षापर विशेष ध्यान दिया गया।

* Rouble = २॥ शि० = १॥ रु० लगभग

कामके दो घंटे कम कर उस समयमें पढ़ानेका प्रबन्ध किया गया। बहुतसे ऐसे कानून बनाये गये जिनसे ऐसी प्रथाएँ बन्द कर दी गयीं जिनसे समाजकी हानि होती हो अथवा किसीकी वैयक्तिक स्वतंत्रतामें आघात होता हो। धार्मिक विचारोंकी पूरी स्वतंत्रता दे दी गयी।

उपर्युक्त दोनों प्रकारके सुधार परस्पर आश्रित हैं। शिक्षा सम्बन्धी तथा अन्य सार्वजनिक सुविधाओंकी वृद्धि करनेवाले सुधारोंके लिए प्रचुर द्रव्यकी आवश्यकता होती है। उक्त सुधारोंके कारण राष्ट्रका व्यय बहुत बढ़ गया और आय बहुत कम हो गयी। कुछ समय तक उस द्रव्यसे काम चलता रहा जो धनी लोगों तथा बैंकोंसे छीन लिया गया था। परन्तु विना स्थायी आयके राष्ट्रका काम नहीं चल सकता।

सोवियट सरकारके आर्थिक सुधारोंके कारण कारखानोंकी उत्पत्ति कम होने लगी। मजदूरोंसे कम घंटे काम कराने तथा अधिक मजदूरी देनेके कारण चीजोंकी लागत बढ़ने लगी। जिस लाभसे राष्ट्रका व्यय चलानेकी आशा सोवियटने की थी वह निष्फल हुई। निजी उद्योग धन्धोंके बन्द हो जानेसे प्रतिस्पर्द्धाका भाव जाता रहा। इस कारण व्यापारकी अवनति होने लगी। उत्पत्तिका परिमाण घट गया। उद्योग धन्धोंके गिर जानेसे तथा निजी व्यापारके बन्द हो जानेसे करके जरिये भी नहीं रह गये।

आर्थिक सुधारोंके कारण यह सबसे बड़ी समस्या पैदा हो गयी कि निजी व्यापारकी अनुपस्थितिमें जनताकी आवश्यकताकी वस्तुओंका विनिमय कैसे हो? सोवियटने इस सम्बन्धमें जो नियम बनाये वे सर्वथा अप्रयुज्य तथा हानिकारक सिद्ध हुए। नियमानुसार यह निश्चित किया गया था कि किसान जो अन्न पैदा करें उसमेंसे अपनी आवश्यकताके लिए बचाकर शेष शहरमें ले जावें और अपनी आवश्यकताकी चीजें बदल कर ले आवें। चूँकि शहरोंमें कारखानोंकी उत्पत्ति बन्द हो गयी थी इसलिये किसान अपना अन्न नहीं ले जाते थे। बचे हुए अन्नको वसूल करनेके लिये कड़े नियम बनाये गये। और इन नियमोंको बरतनेमें बड़ा अत्याचार किया जाता था। किसानोंने अपनी आवश्यकतासे अधिक पैदा करना ही छोड़ दिया। आधीसे भी अधिक भूमि बिना जुती रह जाती थी। खाद्य

पदार्थोंकी कमी इतनी अधिक हो गयी कि शहरोंमें खाना मिलना दुष्कर हो गया। जिस मिकदारमें राशन देना तै हुआ था उसका पचीसवाँ हिस्सा दिया जा सकता था। तीन साल लगातार गृह-कलहसे और विदेशी व्यापारके बन्द हो जानेसे राष्ट्रका संघटन अव्यवस्थित हो गया। जब सरकारी खजानेमें धन नहीं रहा तो सरकारने विना धातु-कोष रखते हुए कागजी सिक्का बढ़ाना शुरू कर दिया। इससे रूब्लकी कीमत तेजीसे गिरने लगी। सन् १९२१ ई० के अन्तमें रूब्लकी कीमत एक लाखवाँ हिस्सा रह गयी और दूसरे वर्षके अन्त में उसकी चौथाई रह गयी। जिस प्रकार जर्मनीमें मार्ककी दर इस कदर घट गयी थी कि एक स्वर्ण मार्कमें लाखों कागजी मार्क आ सकते थे वैसे ही रूसमें एक सोनेके रूबलमें ढाई करोड़ कागजी रूबल खरीदे जाते थे।

क्रान्तिके कारण जनताके विचारोंमें इतना परिवर्तन हो गया था कि वे किसी प्रकारके शासनके नीचे रहनेको तैयार नहीं थे। साधारणतः क्रान्तिके समय अनजान जनता यह समझती है कि नयी व्यवस्थामें किसी प्रकारका कर न देना पड़ेगा और जितनी तकलीफें हैं दूर हो जावेंगी। लेकिन कोई शासन ऐसा नहीं है जिसमें कर न देना पड़े और सब शिकायतें दूर हो जाँय। रूसकी प्रजाने जिस समय क्रान्तिमें सहायता दी थी उसका भी यही खयाल था कि बोलशेविक राज्य होने पर मनमाना राज्य हो जायगा। इस भावके कारण शासकोंको बड़ी दिक्कत हुई। लोगोंमें 'स्वतंत्रता' के विषयमें ऐसा ख्याल बैठ गया था कि हर एक काम बहुमतसे होना चाहिये। एक अमेरिकन लेखकने लिखा है कि सिपाहियोंने समितियाँ बना ली थीं और वे लोग विचार करते थे कि कौन सी आज्ञा माननीय है और कौन सी नहीं। स्कूलके विद्यार्थी अपनी समितियोंमें निश्चय करते थे कि शिक्षकको क्या पढ़ाना चाहिये। एक अस्पतालमें रोगियोंने कमेटी नियुक्त की और प्रस्ताव पास किया कि खिड़कियाँ बन्द होनी चाहिये और दाइयोंको हमेशा उनके पास बैठना चाहिये। इससे यह स्पष्ट है कि साधारण जनता मनमानेपनको ही स्वतंत्रता और 'डिमाँक्रेसी' समझती है। कोई भी शासन-प्रणाली वास्तविक 'डिमॉक्रेसी' नहीं हो सकती।

तीन सालके अनुभवके बाद जब लेनिनने देखा कि किसानोंमें असन्तोष बढ़ता जा रहा है, शहरोंमें बेकारी बढ़ रही है, सरकारी कोष खाली है और देशकी औद्योगिक अवस्था ख़राब हो रही है, तो उसने बोलशेविक नीतिमें परिवर्तन करनेका निश्चय किया। लेनिनको यह निश्चय हो गया कि वर्तमान स्थिति नहीं चल सकती। यद्यपि बोलशेविक सिद्धान्तपर उसका अटल विश्वास बना रहा तो भी उसने यह समझ लिया कि बिना परिवर्तन किये शासन चलाना असम्भव है। लेनिनके सामने यह बड़ा भारी प्रश्न था क्योंकि जिस सिद्धान्तके लिए इतना बृहत् प्रयत्न किया गया उसमें परिवर्तन करनेसे उसके अनुयायियोंके अप्रसन्न होनेका डर था। ट्रॉटस्की तथा उनके और बहुतसे साथी लेनिनकी परिवर्तनकारी नीतिके खिलाफ़ थे। लेनिनने अपने व्यक्तित्वके प्रभावसे तथा अपने आत्म-विश्वासके बल पर नयी नीति निर्धारित करनेका निश्चय किया।

९ अगस्त १९२१ ई० को सोवियट सरकारने नयी आर्थिक नीतिकी घोषणा की। इसके अनुसार निजी सम्पत्ति रखनेका अधिकार हो गया। किसानोंके असन्तोषको दूर करनेके लिए उनको बचा हुआ अन्न बेचनेका अधिकार दिया गया। इसके पहिले अन्न बेचना सख्त जुर्म था। किसानसे करके स्थानपर अनाज लिया जाने लगा। कर देनेके बाद जो बचता था उसके बेचनेकी आज्ञा मिल जानेसे किसानोंको अधिक पैदा करनेका उत्साह हुआ। इसके पहिले उन लोगोंने खेतीकी ओर ध्यान देना छोड़ दिया था। छोटी मात्रामें निजी व्यापार करनेका हक दिया गया। छोटे कारखाने जिसमें बीससे कम मजदूर काम करते हों, लोग चला सकते हैं। बड़ी मात्राका व्यापार अथवा बड़ा कारखाना सह-उद्योग-समिति द्वारा चलाया जाता है। पुरानी आर्थिक नीतिके अनुसार प्रत्येक व्यक्तिके लिए राशन बँधा हुआ था। अब राशनका तरीका उठा दिया गया। प्रत्येक व्यक्ति अपना प्रबन्ध स्वयं कर सकता है। इस समय सरकार किसी व्यक्तिको भोजन देनेकी जिम्मेदार नहीं है। हर एक आदमी कामकी तलाश कर सकता है और खानेकी चीजें बाज़ारमें ख़रीद सकता है। इस समय दूकानें जो बन्द हो गयी थीं फिर से खुल गयी हैं।

सरकारी कर्मचारियोंको वेतनके रूपमें बहुत छोटी रकम दी जाती है। ऊँचेसे ऊँचे पदाधिकारीको बीस पौंडसे अधिक नहीं दिया जाता। परन्तु उनकी आवश्यकताएँ पूरी कर दी जाती हैं। इसका यह तात्पर्य है कि साधारण जरूरियात सबकी बराबर हैं, इसलिये सबकी आर्थिक आवश्यकताएँ भी बराबर हैं। यदि कोई बड़ा पदाधिकारी है तो उसके सम्मान तथा सहूलियतका प्रबन्ध कर दिया जाता है जिससे काममें बाधा न हो। कोई व्यक्ति मरने पर १५ हजार रुपयेसे अधिक अपने वारिसोंके लिए नहीं छोड़ सकता।

नयी आर्थिक नीतिके घोषित करनेके बाद रूसमें भयंकर दुर्भिक्ष हो गया। खानेकी कमीसे अनुमानतः दो करोड़ जनोंकी हानि हुई। जब तक दुर्भिक्षका कोप रहा, नयी आर्थिक नीति चालू न हो सकी। १९२३ ई० से नयी व्यवस्थाके अनुसार काम होने लगा। थोड़े ही समयमें व्यापारकी उन्नति हो गयी। नये नये कारखाने खोले गये। विदेशी पूँजीको भी देशमें उत्साहित करनेका उपाय किया गया। खेती और गृह-शिल्पमें उन्नति होने लगी। मजदूरोंका वेतन और कामका समय सरकारसे निश्चित हो गया। इस समय मजदूरोंकी हालत उस समयसे अच्छी है जब कि सारा काम सरकार द्वारा होता था। उनकी तथा उनकी सन्तानकी शिक्षा और आमोद-प्रमोदके पर्याप्त साधन उपस्थित किये गये हैं। हर एक मजदूर किसी न किसी संघका सदस्य है। मजदूरोंकी आवश्यकताओंके लिए सहकारी भण्डार खुले हुए हैं।

पूँजी और श्रमका समन्वय हो जानेसे रूसमें व्यापारिक और औद्योगिक उन्नति होने लगी। किसानोंके सन्तुष्ट हो जानेसे खेतीमें भी उन्नति हो रही है। रूसकी नयी आर्थिक नीतिका विदेशोंमें अच्छा प्रभाव पड़ा। रूस-की सरकारने घोषणा की थी कि 'रूसमें असीम प्राकृतिक भण्डार है केवल उसमें काम करनेकी आवश्यकता है और उसके लिए पूँजी तथा वैज्ञानिक शिक्षाकी कमी है। चूँकि इन दोनों चीजोंका रूसमें अभाव है, अतः सोवियट सरकार विदेशी पूँजीपतियोंका सहयोग सहर्ष स्वीकार करेगी और उन्हें हर प्रकारकी सुविधाएँ देनेका प्रयत्न किया जायगा।'

विदेशी व्यापारियों और पूँजीको रूसमें आनेकी सुविधा हो गयी। इन सुधारोंके कारण अन्य यूरोपीय राष्ट्रोंका कोप भी कम होने लगा। रूसके भी लोग अन्य राष्ट्रोंसे सम्बन्ध स्थापित करनेके लिए उत्सुक थे। १९२१ ई० ही इंग्लैण्ड और टर्कीसे व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित हो गया। १९२२ ई० में रपालोकी सन्धि द्वारा जर्मनीसे राजनीतिक तथा व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित हो गया। इसके बाद धीरे धीरे इटली, स्वीडन, नॉर्वे, आस्ट्रिया तथा यूनान-से दौत्य-सम्बन्ध स्थापित हो गया। जब इंग्लैण्डमें मजदूर दलके हाथमें शासन आया तो उससे भी सम्बन्ध स्थापित करनेकी कोशिश होने लगी।

ऐसे समयमें जब कि लेनिन रूसको संघटित, समृद्ध और सम्मानित बनानेकी हर प्रकारसे कोशिश कर रहा था और क्रान्तिका असर दूर हो रहा था, मृत्युने उसको इस दुनियासे उठा लिया (जनवरी १९२४)। यह कहनेकी आवश्यकता नहीं है कि लेनिनकी मृत्युसे रूसका बड़ा भारी नुकसान हुआ, विशेष कर ऐसे समयमें जब कि रूसकी नाव डाँवाडोल हो रही थी। लेनिनके व्यक्तित्वके कारण सब आपसी झगड़े दबे हुए थे। जनताका पूरा विश्वास उसपर था। बोलशेविक प्रणाली स्थापित करनेका श्रेय उसीको है और उसमें समूल परिवर्तन करना भी उसीके साहसका काम है। यह काम साधारण नेताकी शक्तिके बाहर था।

इसमें सन्देह नहीं कि लेनिनकी मृत्युके बाद भिन्न भिन्न व्यक्तियोंने लेनिनका स्थान प्राप्त करनेकी कोशिश की और उससे दलबन्दियाँ भी हो गयीं परन्तु रूस उसी मार्गका अनुगमन कर रहा है जिसमें लेनिनने उसको छोड़ा था। उसके मरनेके थोड़े दिन बाद रूस और इंग्लैण्डमें दौत्य-संबन्ध स्थापित हो गया। प्वाँकारेकी सरकार बदलनेके बाद फ्रांसने भी रूसकी सरकारको मान लिया। १९२४-२५ ई० में यह आशा होने लगी थी कि अब रूस यूरोपीय राष्ट्रोंके समाजमें पुनः सम्मिलित हो जायगा। किन्तु उस समय रूसके साथ सम्बन्ध होनेका कारण यह था कि उस समय थोड़े समयके लिए प्रत्येक देशमें साम्यवादी अथवा मजदूर दलके हाथमें शासनका सूत्र आ गया था। अनुदार दलके शासनारूढ़ होते ही बर्तावमें अन्तर होने लगा। १९२७ ई० के मई मासमें इंग्लैण्डने दौत्य-सम्बन्ध-विच्छेद कर दिया